उपकार

सामान्य अध्ययन

मध्यकालीन भारत का इतिहास

संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग तथा अन्य प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उपयोगी

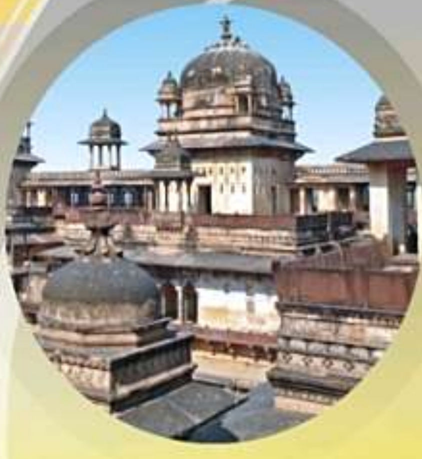

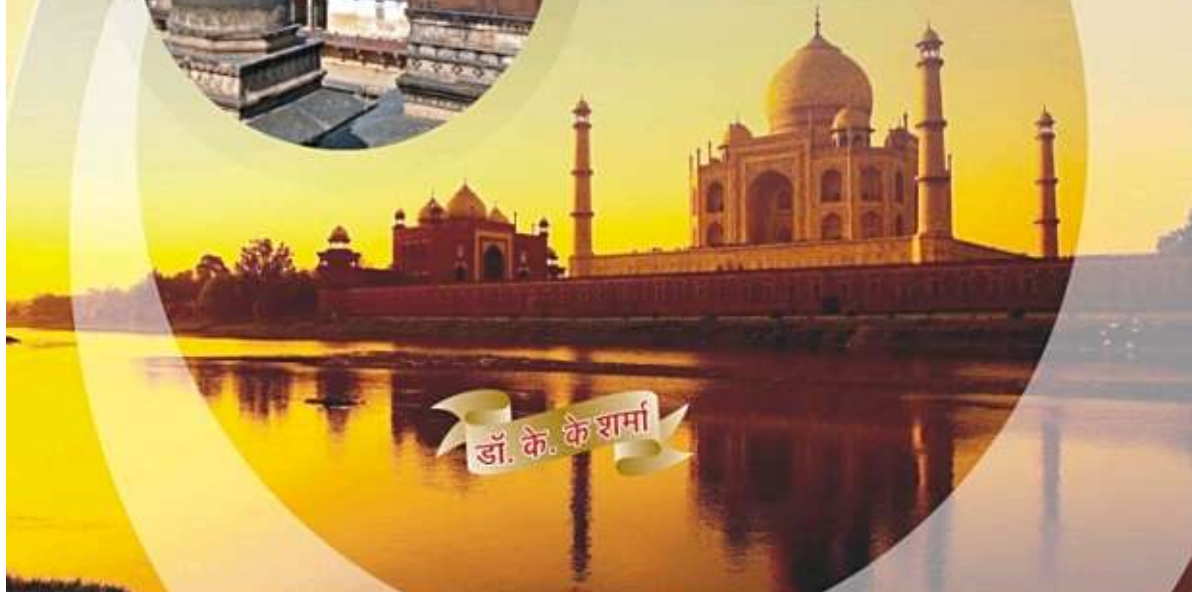

डॉ. के. के शर्मा

उपकार

सामान्य अध्ययन

मध्यकालीन भारत का इतिहास

संघ एवं राज्य लोक सेवा तथा
अन्य प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उपयोगी

लेखक
डॉ. के. के. शर्मा

उपकार प्रकाशन, आगरा-2

Introducing Direct Shopping

Now you can purchase from our vast range of books and magazines at your convenience :

- Pay by Credit Card/Debit Card or Net Banking facility on our website *www.upkar.in* *OR*
- Send Money Order/Demand Draft of the print price of the book favouring 'Upkar Prakashan' payable at Agra. In case you do not know the price of the book, please send Money Order/Demand Draft of ₹ 100/- and we will send the books by VPP (Cash on delivery).

(Postage charges FREE for purchases above ₹ 100/-. For orders below ₹ 100/-, ₹ 20/- will be charged extra as postage)

© प्रकाशक

प्रकाशक

उपकार प्रकाशन

(An ISO 9001 : 2000 Company)

2/11 ए, स्वदेशी बीमा नगर (शाह सिनेमा के सामने), **आगरा–282 002**

फोन : 4053333, 2530966, 2531101; **फैक्स** : (0562) 4053330, 4031570

E-mail : care@upkar.in, **Website :** www.upkar.in

ब्रांच ऑफिस :

4845, अन्सारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली–110 002
फोन : 011–23251844/66

पीरमोहनी चौक, कदमकुआँ,
पटना–800 003
फोन : 0612–2673340

1-8-1/B, आर. आर. कॉम्प्लेक्स (सुन्दरैया पार्क के पास, मनसा एन्क्लेव गेट के बगल में),
बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद–500 044 (आ. प्र.)
फोन : 040–66753330

28, चौधरी लेन, श्याम बाजार,
मेट्रो स्टेशन के निकट, गेट नं. 4
कोलकाता–700004 (W.B.)
फोन : 033–25551510

B-33, ब्लंट स्क्वायर, कानपुर
टैक्सी स्टैण्ड लेन, मवइंया,
लखनऊ–226 004 (U.P.)
फोन : 0522–4109080

- *इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी त्रुटि के लिए प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा.*
- *इस पुस्तक को अथवा इसके किसी अंश को बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के, किसी भी रूप–फोटोग्राफी, विद्युत-ग्राफिक, यान्त्रिकी अथवा अन्य रूप में किसी भी प्रकार से उपयोग के लिए नहीं छापा जा सकता है.*
- *किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र केवल आगरा ही होगा.*

ISBN : 978-93-5013-615-7

मूल्य : ₹ 150·00 मात्र
(Rs. One Hundred Fifty Only)

Code No. 2341

मुद्रक : उपकार प्रकाशन (प्रिंटिंग यूनिट) बाई-पास, आगरा

विषय-सूची

1. प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत (750 ई. से 1200 ई. तक).. 3–37

[प्रमुख राजवंश, चोल साम्राज्य, कृषि एवं राजनैतिक संरचनाएँ, राजपुत्र. सामाजिक गतिशीलता की सीमा. स्त्रियों की स्थिति, सिन्ध में अरबों का विस्तार, गजनवी राज्य, सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ, धार्मिक स्थितियाँ; मन्दिरों तथा मठ संस्थाओं का महत्व; शंकराचार्य; इस्लाम; सूफी परम्परा, साहित्य एवं विज्ञान, अलबेरूनी का भारत, कला तथा स्थापत्य]

2. तेरहवीं एवं चौदहवीं शताब्दी का भारत.. 38–85

[गौरी विजय; कारण एवं परिणाम. गुलाम शासकों के अन्तर्गत दिल्ली सल्तनत, अलाउद्दीन खिलजी, विजय अभियान, प्रशासनिक, कृषिक एवं आर्थिक उपाय, मुहम्मद तुगलक के अभिन्न परिवर्तन, फिरोज तुगलक और दिल्ली सल्तनत का ह्रास, वाणिज्य तथा नगरीकरण का विकास, साहित्य, स्थापत्य, प्रौद्योगिकी में परिवर्तन]

3. पन्द्रहवीं एवं प्रारम्भिक सोलहवीं शताब्दी का भारत.. 76–110

[प्रमुख प्रान्तीय राजवंश, विजयनगर साम्राज्य, लोदी राज्य, मुगल साम्राज्य का प्रथम चरण, बाबर, हुमायूँ, सूर साम्राज्य एवं प्रशासन, पुर्तगाल. एकेश्वरवादी आन्दोलन : कबीर, गुरुनानक एवं सिख धर्म, भक्ति आन्दोलन, क्षेत्रीय साहित्यिक विधाओं में वृद्धि, कला एवं संस्कृति]

4. 1556 ई. से 1707 ई. तक का भारत.. 111–127

5. मानचित्र अध्ययन.. 128–144

6. इतिहास के चुने हुए उद्धरण/प्रसंग.. 145–155

7. मध्यकालीन ऐतिहासिक व्यक्तित्व.. 156–174

- प्रश्नकोश 175–204
- परिशिष्ट.. 205–232

मध्यकालीन भारत का इतिहास

1

प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत

(Early Medieval India)

(750 ई. से 1200 ई. तक)

(प्रमुख राजवंश, चोल साम्राज्य, कृषि एवं राजनैतिक संरचनाएँ, राजपुत्र. सामाजिक गतिशीलता की सीमा. स्त्रियों की स्थिति, सिन्ध में अरबों का विस्तार, गजनवी राज्य, सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ, धार्मिक स्थितियाँ; मंदिरों तथा मठ संस्थाओं का महत्त्व; शंकराचार्य; इस्लाम; सूफी परम्परा, साहित्य एवं विज्ञान. अलबेरूनी का भारत, कला तथा स्थापत्य)

(Major dynasties; the Chola Empire, Agrarian and political structures, The Rajaputras, Extent of social mobility, Position of women, The Arabs in Sind and the Ghaznavides, Cultural trends, Religious conditions : importance of temples and monastic institutions; Sankaracharya; Islam, Sufism, Literature and Science, Alberuni's 'India', Art and Architecture.)

उत्तरी भारत के प्रमुख राजवंश (Important States of North India)–आठवीं शताब्दी में सिन्ध विजय के अतिरिक्त तीन शक्तिशाली राज्यों–गुर्जर-प्रतिहार, पाल एवं राष्ट्रकूट का उदय हुआ. इसी दौरान आठवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से दसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक कन्नौज पर स्वामित्व के लिए त्रिदलीय संघर्ष चलता रहा, जिसमें भाग लेने वाले राजा प्रमुख रूप से वत्सराज, नागभट्ट द्वितीय, मिहिरभोज, रामभद्र, महेन्द्रपाल (गुर्जर प्रतिहार राज्य से) देवपाल, धर्मपाल, विग्रहपाल, नारायण पाल (पाल शासक) एवं ध्रुव गोविन्द तृतीय, कृष्ण द्वितीय, अमोघवर्ष प्रथम (राष्ट्रकूट-वंश) थे.

कन्नौज पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए हुए संघर्ष में उत्तरी भारत की दो शक्तियों–बंगाल के पाल एवं मांडव्यपुर (मंदौर) के गुर्जर-प्रतिहारों का उदय हुआ.

बंगाल के पाल

(The Palas of Bengal)

तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ एवं रामचरित के लेखक संध्याकरनन्दी के अनुसार पाल शासक क्षत्रिय वंश के थे. आर्यमंजूश्रीमूलकल्प के अनुसार पालवंश का संस्थापक शूद्र बतलाया गया है. 'अष्टसहस्रिकाप्रज्ञापारमित' नामक बौद्ध ग्रन्थ के अनुसार पाल वंश का संस्थापक किसी सैनिक अधिकारी राजभट्ट से सम्बन्धित था.

तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ के अनुसार पाल वंश के संस्थापक गोपाल का जन्म पुण्ड्रवर्धन (बोगरा जिला) या वरेन्द्री (पूर्व बंगाल) के पास हुआ था एवं उसे बंगाल का राजा निर्वाचित किया गया था. राष्ट्रकूट अभिलेख के अनुसार पालों की आदिभूमि गौड थी. पालवंश के संस्थापक गोपाल के राजा निर्वाचित होने का उल्लेख 'खलीमपुर-ताम्रपत्र अभिलेख' में किया गया है. खलीमपुर-ताम्रपत्र अभिलेख के अनुसार गोपाल के पिता का नाम वप्यट एवं पितामह का नाम दयित विष्णु था.

पाल वंश के शासकों का परिचय

गोपाल (750-770 ई.)

पाल वंश के संस्थापक एवं प्रथम शासक गोपाल ने बंगाल में व्याप्त अव्यवस्था को दूर करने एवं पालों की शक्ति का विस्तार करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया.

गोपाल ने पुण्ड्र, वंग, अंग, मगध, कामरूप पर अधिकार कर अपने राज्य की सीमा का विस्तार किया. देवपाल के मुंगेर ताम्रफलक के अनुसार गोपाल समुद्र-पयन्त भूमि का विजेता था. गोपाल बौद्ध धर्म से प्रभावित था, अतः उसने मगध विजय के बाद बिहार शरीफ के पास ओदन्तपुरी विहार की स्थापना की थी. आर्यमंजूश्रीमूलकल्प के अनुसार गोपाल ने 27 वर्षों तक शासन किया एवं लामा तारानाथ के अनुसार उसका काल 750-770 ई. तक था.

धर्मपाल (770-810 ई.)

धर्मपाल पाल वंश का सर्वाधिक योग्य शासक था. धर्मपाल के समय में कन्नौज में त्रिदलीय संघर्ष चल रहा था. अपने शासनकाल में धर्मपाल ने मगध, वाराणसी, प्रयाग पर अधिकार कर कन्नौज पर आक्रमण किया. उसी समय चक्रायुध को कन्नौज का राजा बनाया गया था.

खलीमपुर ताम्रपत्र अभिलेख के अनुसार धर्मपाल ने एक दरबार आयोजित किया था, जिसमें भोज (बरार), मत्स्य (जयपुर), मद्र (पंजाब), कुरू (थानेश्वर), यदु (मथुरा या द्वारिका), यवन (सिन्ध का अरब शासक), अवन्ती (मालवा), गांधार (उत्तरी-पश्चिमी सीमा), कीड (कांगडा) के शासकों ने भाग लिया था.

11वीं शताब्दी के गुजराती कवि सोड्ढल ने उदयसुन्दरी कथा में उसे 'उत्तरापथ स्वामी' कहा है. धर्मपाल ने परमसौगात, महाराजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक की उपाधियाँ धारण की थी. नारायण के भागलपुर अभिलेख में उसे 'समान कर लगाने वाला' कहा है. विक्रमशिला और सोमापुर विहारों की स्थापना एवं बोधगया में चतुर्मुख महादेव की मूर्ति धर्मपाल ने स्थापित की थी.

देवपाल (810-850 ई.)

देवपाल एक पराक्रमी शासक था. उसके विजय अभियानों की जानकारी मुंगेर, भागलपुर एवं बादल अभिलेखों से प्राप्त होती है. देवपाल ने हूणों, उत्कलों, गुर्जर, प्रतिहारों एवं द्रविड़ों को परास्त किया था. उत्तर में हिमालय से दक्षिण में विन्ध्य तक आक्रमण कर साम्राज्य का विस्तार किया था.

अरब यात्री सुलेमान के अनुसार राष्ट्रकूट एवं गुर्जरों से भी देवपाल अधिक शक्तिशाली था. शासन के अन्तिम चरण (843-850 ई.) के मध्य मिहिरभोज ने देवपाल को पराजित किया. घोस रांवा (बिहार) के अभिलेख के अनुसार देवपाल ने नालंदा महाविहार का आचार्य नग्रहार निवासी एक ब्राह्मण को नियुक्त किया. देवपाल ने अपने समय में अपनी सत्ता का विस्तार पूर्व में कामरूप, दक्षिण में कलिंग, पश्चिम में विन्ध्य एवं मालवा तक किया था.

प्रथम पाल साम्राज्य का पतन

देवपाल के पश्चात् प्रथम पाल साम्राज्य का पतन हो गया. अयोग्य उत्तराधिकारियों में साम्राज्य के लिए संघर्ष होने लगा. फलतः पाल साम्राज्य बंगाल एवं बिहार तक ही सिमटकर रह गया. देवपाल के बाद पाल साम्राज्य में निम्न-लिखित अयोग्य राजा हुए–

विग्रहपाल (850-854 ई.), नारायणपाल (854-915 ई.), राज्यपाल (915-940 ई.), गोपाल द्वितीय (940-960 ई.), विग्रहपाल द्वितीय (960-988 ई.) हुए. इन राजाओं के अयोग्यता के कारण पालों की सत्ता बिहार में ही सिमटकर रह गई. बनगढ़ अभिलेख के अनुसार विग्रहपाल द्वितीय सेना के साथ भटकने वाला राजा था.

द्वितीय पाल साम्राज्य का उदय

महीपाल प्रथम (988-1038 ई.)

पालों की शक्ति को पुर्नस्थापित करने वाला द्वितीय पाल साम्राज्य का प्रथम शासक महीपाल प्रथम था. महीपाल प्रथम पालों के सर्वाधिक शक्तिशाली देवपाल के समान पराक्रमी शासक था. अभिलेखों के अनुसार उसने समतट (दक्षिण पूर्वी बंगाल), वरेन्द्र (पूर्वी बंगाल), राढ़ (पश्चिमी बंगाल), दक्षिणी बिहार तिरहुत (तीर भुक्ति) एवं बनारस पर अधिकार किया था.

महीपाल प्रथम राजेन्द्र चोल एवं गांगेय देव (कलचूरी) से परास्त हुआ था. महीपाल प्रथम ने बोधगया, नालंदा, सारनाथ, बनारस के अनेक विहारों, मन्दिरों का जीर्णोद्धार एवं निर्माण कराया था.

नयपाल (1038-1055 ई.)

पाल साम्राज्य का पतन पुनः होने लगा था. नयपाल का कलचुरि शासक कर्ण से संघर्ष चला, जिसके लिए विक्रमशिला महावीर के प्रधान आचार्य दीपंकरश्री. ज्ञानअतिश की सलाह से आपस में समझौता कर लिया गया, जिसके फलस्वरूप मगध में स्वतन्त्र राज्यों का उदय हुआ.

विग्रहपाल तृतीय (1055-1072 ई.)

विग्रहपाल इस दौरान उत्तर-बिहार तक सिमटकर रह गया. अंग में राष्ट्रकूट, गया में चिकोर वंश, गुजरात में चालुक्य एवं उड़ीसा में सोमवंशी शासकों का अधिकार हो गया. विग्रहपाल के काल से पालवंश का पुनः पतन प्रारम्भ हो गया. इसके बाद के शासक महिपाल द्वितीय (1070-1075 ई.) को कैवर्तों ने मार दिया. महिपाल द्वितीय की मृत्यु के बाद दो पाल शासकों-शूरपाल द्वितीय एवं रामपाल में सत्ता के लिए संघर्ष हुआ, जिसमें रामपाल विजयी रहा.

रामपाल (1077-1130 ई.)

रामचरित के लेखक संध्याकरनन्दी के अनुसार रामपाल ने बिहार और बंगाल के 13 सामन्तों की सहायता से कैवर्त शासक भीम की हत्या कर दी थी. रामपाल ने बंगाल के साथ-साथ कामरूप एवं उड़ीसा पर भी आक्रमण किया एवं विजय प्राप्त की. अपने मित्र मथनदेव की मृत्यु से दुःखी होकर रामपाल ने गंगा में प्राण विसर्जित कर दिये थे.

इसके बाद कुमारपाल एवं मदनपालों ने पाल वंश का अन्त किया. सन् 1160 ई. में पालों के अन्तिम शासक गोविन्दपाल को पदच्युत कर गहडवालों ने मगध पर आक्रमण कर लिया था.

सामाजिक जीवन

पाल शासनकाल में समाज में अनेक जातियाँ एवं उपजातियाँ थी. वृहद्-धर्मपुराण में ब्राह्मण के अलावा 36 गैर

ब्राह्मण जातियों का उल्लेख मिलता है. वृहद्-धर्मपुराण में उत्तम (कर्ण, उग्र, गान्धिक), मध्यम (तक्षण, रजक, आभीर) एवं अधम जातियों का उल्लेख मिलता है. इस काल में समाज में क्षौर-कर्म, जातकर्म, उपनयन, अन्नप्राशन, विवाह इत्यादि संस्कार, दुर्गा, गणेश एवं अन्य देवताओं का पूजनोत्सव, होली तथा काम महोत्सव मनाये जाने का उल्लेख मिलता है. पालकालीन समाज में सामन्ती व्यवस्था प्रचलित थी. गणिकाएं, स्त्री दासी एवं देवदासी का प्रचलन था. शतरंज और पासा खेल खेला जाता था. घोड़ागाड़ी, हाथी, नाव, बैलगाड़ी का प्रयोग किया जाता था. बहुविवाह का प्रचलन था. विवाह में गोत्र एवं जाति तथा परिवार का ध्यान रखा जाता था.

आर्थिक व्यवस्था

पालकालीन अर्थव्यवस्था ग्रामीण परिवेश पर आश्रित थी. इस काल में प्रमुख रूप से कपास, सुपारी, पान, धान, गन्ना एवं आम की खेती की जाती थी. मंदिरों, बौद्ध विहारों, ब्राह्मणों, नागरिकों और सैन्य अधिकारियों को भूमि कर मुक्त दान में प्रदान की जाती थी. पालकाल में निम्नलिखित पदाधिकारियों का उल्लेख मिलता है–षष्ठाधिकृत, विषयपति, ग्रामपति, दशअपराधिक, चौरोद्धरणिक, क्षेत्रपाल, महाअक्ष-पटलिक, ज्येष्ठ कायस्थ.

राज्य की आमदनी हिरण्य, शुल्क, दंस अपराध चौरोद्धरण से होती थी. भूमि पर उपरिकर, भाग (1/6), भोग, कर लगाये जाते थे. धर्मपाल के एक अभिलेख के अनुसार

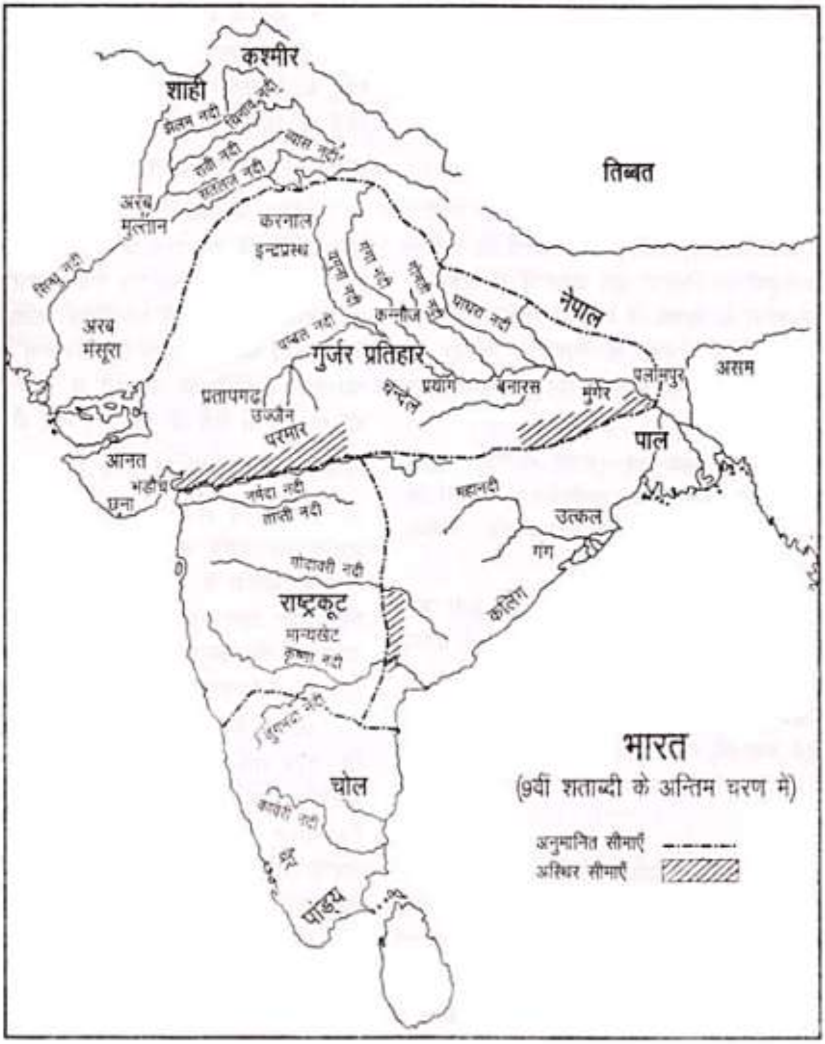

भारत
(9वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में)

इस काल में द्रम (द्रम्म) नामक सिक्के का प्रचलन था. पालकालीन समाज में वस्त्र-उद्योग, चीनी, नमक-उद्योग, पत्थर व मिट्टी के बर्तन, कलात्मक मूर्तियों का निर्माण होता था. पालों के समय दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों एवं चीन से व्यापार किया जाता था. 9वीं शताब्दी का अरबयात्री सुलेमान इस काल के निर्मित वस्त्रों की प्रशंसा करता था.

प्रशासनिक व्यवस्था

पालों की राजधानी अक्सर बंगाल और बिहार में ही परिवर्तित होती रहती थी. यहाँ पर वंशानुगत राजतन्त्र था. परमेश्वर, भट्टारक, परमभट्टारक, परमसौगात, महाराजाधिराज इनकी उपाधियाँ होती थीं. पालों में गोपाल के काल में चुनाव के प्रमाण मिले हैं. प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से सारा साम्राज्य भुक्ति, विषय, विधि, मण्डल एवं ग्राम में विभक्त था.

राजा के शासन के लिए उनके सहयोगियों में राजामात्य, महाकर्ताकृतिक, महाप्रतिहार, विषयपति, दण्डिक, ग्रामिक होते थे. पालों के प्रमुख मन्त्री–गर्ग, दर्भपाणि, केदार मिश्र, गौरव मिश्र थे.

कलात्मक प्रगति

पालों के साम्राज्य में धर्म समन्वित कला का विकास हुआ. ओदंतपुरी, विक्रमशिला, सोमापुर महाविहारों की स्थापना एवं पहाड़पुर के स्तूपों का विस्तार इस काल में ही हुआ था. गया में नयपाल राजा के समय में गदाधर एवं बटेश्वर के मन्दिरों का निर्माण हुआ. गया के विष्णुपद मन्दिर का अर्द्धमण्डप पालों ने बनवाया था. पालकालीन दुर्ग निम्नलिखित थे–

मुद्गगिरि (मुंगेर), जयनगर (लखी सराय), इंडपे, सूरजगढ़ा, नौलागढ़, जयमंगलागढ़, अलौलीगढ़, बटपर्वतक, सुल्तानगंज (बटेश्वर स्थान), शाहघाट, चम्पानगर, अमौना, कुर्किहार, धरावत, अफसढ़ एवं पाटलिपुत्र.

मध्यकालीन कला की पूर्व शैली का उद्भव इसी काल में हुआ था. अभिलेखों से पालकालीन नालन्दा के दो प्रसिद्ध शिल्पकार 'धीमान एवं विटपाल' का नाम प्राप्त होता है. अष्टसहस्त्रिकाप्रज्ञा पारमिता, पंचरक्ष तत्कालीन चित्रित पाण्डुलिपियाँ एवं महा श्री तारा एक चित्र था जो वर्तमान में भी उपलब्ध है.

शिक्षा एवं साहित्य

पालकालीन शिक्षा के विख्यात केन्द्र बौद्ध विहार थे. गोपाल ने ओदंतपुरी एवं धर्मपाल ने सोमापुर एवं विक्रमशिला महाविहारों को स्थापित किया था. गौडीय रीति इस काल की संस्कृत साहित्य की प्रमुख रीति थी. इस काल के प्रमुख विद्वानों में चक्रपाणिदत्त, भवदेवभट्ट, हरिभद्र एवं संध्याकरनन्दी प्रमुख थे.

सन्ध्याकरनन्दी ने रामचरित, चक्रपाणिदत्त ने चिकित्सा संग्रह, आयुर्वेददीपिका, जीमूतवाहन ने दाय भाग, व्यवहार मातृका एवं काल विवेक की रचना की थी. वज्रदत्त ने 'लोकेश्वरशतक एवं बौद्ध-चर्यापदों की रचना पालों के काल में होने लगी थी. इस काल के बौद्ध विद्वानों में कमलशील, दीपंकर श्रीज्ञानअतिश, राहुलभ्रद प्रमुख थे. पालों के अधीन संस्कृत, बंगला लिपि एवं जनभाषा का विकास हो चुका था.

बंगाल के सेन (The Senas of Bengal)

देवपाड़ा अभिलेख के अनुसार वीरसेन चन्द्रवंशीय सेनवंश का आदिपुरुष था. मधाई नगर अभिलेख में सेनों के लिए कर्णाट-क्षत्रिय शब्द का प्रयोग हुआ है. सेनों का मूल उद्गम क्षेत्र कर्णाट प्रदेश (पश्चिमी आंध्र एवं उत्तरी मैसूर) था. सामंतसेन को ब्रह्मवादी (वेदों का पाठ करने वाला) कहा गया है. राढ़ में स्वतन्त्र राज्य की स्थापना के बाद सेनों का प्रमुख केन्द्र बंगाल बन गया था. आरम्भ में सेनवंश के लोग स्वयं को ब्राह्मण मानते थे, लेकिन सत्ता प्राप्ति के बाद उन्होंने स्वयं को क्षत्रिय माना.

सामन्त सेन एवं हेमन्त सेन

बंगाल में सेन वंश का संस्थापक सामन्त सेन था. सामन्त सेन ने राढ़ एवं कर्णाट में अपने राज्य को स्थापित किया. सामन्त सेन का पुत्र हेमन्त सेन था. जिसे अभिलेखों में 'महाराजाधिराज' से सम्बोधित किया है. बंगाल के कैवर्त विद्रोह एवं कलचुरी कर्ण के आक्रमण के बाद हेमन्त सेन ने ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की थी. हेमन्त सेन भी राढ़ क्षेत्र तक ही सीमित रहा था.

विजय सेन (1095-1158 ई.)

विजयसेन सेन वंश का पहला लोकप्रिय एवं प्रतापी शासक था. उसके कार्यों के सम्बन्ध में देवपाड़ा अभिलेख में उल्लेख मिलता है. विजयसेन ने नेपाल, मिथिला, कामरूप गौड़ एवं अन्य राज्यों पर विजय प्राप्त की थी. देवपाड़ा अभिलेख के अनुसार नान्य, वीर, राघव, वर्द्धन नाम के राजाओं से विजयसेन ने युद्ध किया.

विजय सेन की दो राजधानियाँ विक्रमपुर एवं विजयपुरी थी. पाल शासक मदनपाल को हराकर उत्तरी-बंगाल में सत्ता स्थापित करना उसकी सर्वाधिक उत्कृष्टतम उपलब्धि थी. विजयसेन शैव मत को मानने वाला था. परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर इत्यादि उसकी उपाधियाँ थी. देवपाड़ा के निकट प्रद्युम्नेश्वर शिव मंदिर का निर्माण विजयसेन ने कराया था उसकी प्रशंसा में हर्ष नामक कवि द्वारा विजयप्रशस्ति एवं गौडोर्विशप्रशस्ति नामक काव्यों की रचना की थी. उसने 'अरिराजवृषभशंकर' नामक उपाधि भी धारण की थी.

वल्लालसेन (1158-1178 ई.)

गौडेश्वर की उपाधि से विभूषित वल्लालसेन सेनवंश का दूसरा प्रतापी शासक था. उसकी गतिविधियों के सम्बन्ध में 'नैहट्टी अभिलेख' में उल्लेख मिलता है. आनन्दभट्ट की कृति वल्लालचरित के अनुसार वारेन्द्र, वंग, राढ़, वागड़ी, मिथिला, उत्तरी-विहार पर वल्लालसेन ने आक्रमण किया था.

वल्लालसेन भी शैव सम्प्रदाय से सम्वद्ध था. परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परममाहेश्वर, निःशंकशंकर, अरिराज निःशंकशंकर इत्यादि उसकी उपाधियाँ थी. विद्वान के स्वरूप में वल्लालसेन ने अद्भुतसागर एवं दानसागर नामक स्मृति ग्रन्थों की रचना की थी. वल्लालसेन का साहित्यिक गुरू विद्वान अनिरूद्ध था. अपने अन्तिम काल में वल्लालसेन ने त्रिवेणी में संन्यास लिया था.

लक्ष्मण सेन (1178-1205 ई.)

वृद्धावस्था में शासन संभालने वाला सेनवंश का अन्तिम शासक लक्ष्मण सेन था. विश्वरूप सेन के मदनपाड़ा अभिलेख में लक्ष्मण सेन को अश्वपति, गजपति, नरपति, गौडेश्वर, परमभट्टारक इत्यादि उपाधियों से विभूषित किया गया है. कलिंग, कामरूप, इलाहावाद, वनारस एवं कन्नौज तक लक्ष्मण सेन ने अपना अधिकार कर लिया था. खाड़ी मण्डल एवं मेघना नदी के पूर्व वाले क्षेत्र पर भी लक्ष्मण सेन का अधिकार हो चुका था. वख्तियार खिलजी एवं लक्ष्मण सेन के युद्ध का वर्णन 'मिन्हाज के तवकात-ए-नासिरी' नामक ग्रन्थ में प्राप्त होता है. जयदेव, हलायुध, श्रीधरदास, धोयी, शरण गोवर्धन लक्ष्मण सेन के दरवार के प्रमुख विद्वान थे. लक्ष्मण सेन ने लक्ष्मण सम्वत् का प्रचलन किया था.

विश्वरूप सेन एवं केशव सेन

लक्ष्मण सेन की मृत्यु के पश्चात् विश्वरूप सेन एवं केशव सेन ने सेनवंश का बंग पर शासन संभाला. मिनहाज के अनुसार 1260 ई. तक बंग पर सेनवंश शासकों का अधिकार रहा. यवनों से संघर्ष के बाद सेनवंश का अन्त हो गया.

निष्कर्ष

सेन वंशीय शासकों का बंगाल में एक शताब्दी तक शासन रहा था. अभिलेखों के अनुसार सेन प्रशासन में निम्न-लिखित अधिकारी थे–

भुक्तिपति, मण्डलपति, विषयपति, महामन्त्री, पुरोहित, महापुरोहित, महासंधिविग्रहाधिकृत, महामुद्राधिकृत, महाधर्माध्यक्ष, महापिलुपति, महाव्यूहपति, अध्यक्षसर्वग, गूढ़पुरुष, दूत इत्यादि. सेन प्रशासनिक व्यवस्था का आधार सामन्ती पद्धति थी. सेनों के सम्पूर्ण काल में सर्वाधिक साहित्यिक प्रगति वल्लाल सेन एवं लक्ष्मण सेन के समय में हुई. गीतगोविन्द–जयदेव, व्राह्मण सर्वस्व–हलायुध, पवनदूत–धोयी, सदुक्तिकर्णामृत–श्रीधरदास की रचनाओं का इसी काल में प्रणयन हुआ था.

गुर्जर-प्रतिहार
(The Gurjara-Pratihars)

राजनीतिक इतिहास

गुर्जर प्रतिहारों का उल्लेख बौक के जोधपुर अभिलेख में मिलता है विद्वानों के अनुसार हूणों के साथ भारत में गुर्जर आये एवं पंजाब से राजपूताना तक प्रसारित हो गए. उनके पूर्वज (लक्ष्मण) ने रामचन्द्र के द्वारपाल (प्रतिहार) का कार्य किया, जिसके फलस्वरूप उन्हें 'गुर्जर-प्रतिहार' कहा गया. गुजरानवाला, गूजरगढ़, गूजरखान, गुजरात जैसे नाम उनके अस्तित्त्व एवं लोकप्रियता को स्पष्ट करते हैं.

प्रमुख शासक

नागभट्ट प्रथम (730-756 ई.)

गुर्जर-प्रतिहारों का पहला एवं प्रतापी शासक नागभट्ट प्रथम था. मिहिरभोज की ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार इस शासक ने अरवों को परास्त कर मालवा से गुजरात तक अपनी सीमा का विस्तार किया था. राष्ट्रकूटों के साथ भी नागभट्ट प्रथम का संघर्ष हुआ. वाण के हर्षचरितम् एवं चालुक्यराज पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में नागभट्ट प्रथम का उल्लेख किया गया है.

वत्सराज (783-795 ई.)

गुर्जर-प्रतिहारों का दूसरा प्रतापी शासक वत्सराज था. वत्सराज ने पाल शासक धर्मपाल को पराजित किया था. राजस्थान के मध्यभाग तथा उत्तरी भाग के पूर्वी भाग पर उसने अधिकार किया. राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने उसे पराजित कर भागने पर मजवूर कर दिया था.

नागभट्ट द्वितीय (795-833 ई.)

ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार नागभट्ट द्वितीय ने आन्ध्र, सिन्ध, विदर्भ, कलिंग, वत्स, मत्स्य एवं अरवों से संघर्ष कर उन पर अधिकार कर लिया था. 810 ई. में राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय ने नागभट्ट द्वितीय को पराजित कर मालवा एवं गुजरात पर आक्रमण कर लिया था था. रामभट्ट (833-836) इस वंश का सर्वाधिक असफल शासक था.

मिहिरभोज (836-889 ई.)

इसे भोज प्रथम के नाम से भी जाना जाता था. मिहिर-भोज गुर्जर-प्रतिहार वंश का सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वाधिक शक्ति-शाली शासक था. अपने पिता रामचन्द्र (833-836) को मार कर इसने सत्ता प्राप्त की थी. पाल शासक देवपाल, विग्रहपाल एवं राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय को मिहिरभोज ने परास्त

किया था. मिहिरभोज की राजधानी कन्नौज थी. पंजाब, मालवा, राजपूताना, काठियावाड़ मध्यप्रदेश मिहिर भोज के साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे. अरब यात्री सुलेमान के अनुसार वह अत्यधिक सैन्य-शक्ति वाला एवं अरबों का दुश्मन शासक था. अभिलेखों में उसे आदिवाराह की उपाधि प्रदान की गई है.

महेन्द्रपाल प्रथम (890-910 ई.)

महेन्द्रपाल एक प्रतापी शासक था. जिसका साम्राज्य हिमालय से विन्ध्याचल एवं पूर्वी समुद्रीतट से पश्चिमी समुद्रतट तक फैला हुआ था. महेन्द्रपाल प्रथम का संरक्षित विद्वान राजशेखर था. राजशेखर ने कर्पूरमंजरी (प्राकृत नाटक), बालरामायण, काव्यमीमांसा, बालभारत, प्रचण्ड-पाण्डव, विद्धसालभंजिका, हरविलास, भुवनकोष की रचना की थी.

महीपाल प्रथम (912-944 ई.)

गुर्जर प्रतिहार वंश का अन्तिम शक्तिशाली एवं प्रभावशाली शासक महीपाल प्रथम था. इस काल में कन्नौज पर सर्वाधिक आक्रमण हुए. 915 से 918 ई. तक राष्ट्रकूट शासक इन्द्रतृतीय ने कन्नौज पर आक्रमण कर खूब लूटपाट की थी. गुर्जरों की मदद के लिए राष्ट्रकूट वंश के शासक आगे आये तथापि गुर्जर प्रतिहार वंश का अनवरत विघटन होने लगा था. विकृत परिस्थितियों में भी दोआब, बनारस, ग्वालियर, काठियावाड़ पर महीपाल प्रथम ने अधिकार कर लिया था.

गुर्जर प्रतिहार वंश का पतन—महीपाल की मृत्यु होते ही गुर्जर साम्राज्य के पतन का आरम्भ हो गया था. महीपाल प्रथम के बाद महेन्द्रपाल द्वितीय, देवपाल, विनायकपाल देव, विजयपाल आदि अयोग्य शासकों ने गुर्जर राजवंश को संभाला. इस विकृत परिस्थिति का लाभ उठाकर राष्ट्रकूट, पाल, चालुक्य, चंदेल, कलचुरी, परमार, गुहिल, चौहान सबने स्वतन्त्र राज्यों को स्थापित कर लिया. गुर्जर वंश के राजपाल शासक के दौरान 1018 ई. में कन्नौज पर महमूद गजनवी ने आक्रमण कर दिया. राजपाल भाग गया और चंदेल शासक गण्डदेव ने उसे मार दिया. राजपाल के बाद त्रिलोचनपाल गुर्जर राजवंश का शासक बना. गुर्जर प्रतिहार वंश का अन्तिम शासक यशपाल था. गहड़वालों ने 1080 ई. में कन्नौज पर अधिकार कर गुर्जर प्रतिहार वंश का अन्त कर दिया.

गुर्जर-प्रतिहार शासन की महत्ता

- उत्तर भारत में समस्त साम्राज्यों को एकसूत्र में बाँधकर गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य के रूप में गुर्जर-प्रतिहार शासकों ने राजनीतिक एकता स्थापित की.
- अरबी आततायियों को सिन्ध पर आने से रोकने का श्रेष्ठकार्य गुर्जर-प्रतिहारों ने किया.
- प्रतिहार महाराजा, महाराजाधिराज की उपाधि धारण करते थे. भुक्ति, मण्डल, विषय प्रशासनिक इकाईयाँ थीं. दण्डपाशिक, महाप्रतिहार, दण्डनायक, बलाधिकृत प्रतिहारों के प्रमुख पदाधिकारी थे.
- महाकवि राजशेखर गुर्जर-प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल के दरबारी कवि थे, जिन्होंने बालरामायण, कर्पूरमंजरी इत्यादि ग्रन्थों की रचना की थी. चण्डकौशिक के रचनाकार सोमेश्वर इसी काल के थे.
- ब्राह्मण धर्म का इस काल में सर्वाधिक विकास हुआ. वैष्णव धर्म का सर्वाधिक प्रचलन था. शिव, गणेश, सूर्य, शक्ति की इस काल में पूजा होती थी. पश्चिमी भारत एवं राजपूताना में जैन धर्म का भी प्रचलन था.

राजपूत राज्यों का उदय

गुर्जर-प्रतिहार राज्यों के अवशेष पर कई नये राज्यों का उदय हुआ. 10वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा 11वीं शताब्दी के प्रारम्भ में कई स्वतन्त्र राज्यों का आविर्भाव हुआ, जिन्हें 'राजपूत राज्य' माना जाता है.

राजपूतों की उत्पत्ति

- राजपूत राज्यों के इतिहास के साक्ष्य के रूप में प्रमुख ऐतिहासिक ग्रन्थ—हम्मीरमहाकाव्य, कुमारपालचरित, नवसाहसांकचरितम् पृथ्वीराज रासो इत्यादि है.
- कर्नल टॉड के अनुसार राजपूत शक-कुषाण एवं हूणों की सन्तान थे.
- वी. ए. स्मिथ एवं विलियम क्रुक के अनुसार राजपूत विदेशी थे. आर. जी. भण्डारकर तथा डॉ. ईश्वरी प्रसाद का भी यही मत है.
- चन्दबरदाई के अनुसार राजपूतों की उत्पत्ति यज्ञकुण्ड से हुई थी. नवसाहसांकचरितम्, हम्मीररासो, पृथ्वीराज रासो एवं सिसाणा अभिलेख में इस मत की पुष्टि की गई है.
- पृथ्वीराज रासो के अनुसार परशुराम द्वारा क्षत्रियों को समाप्त कर देने पर सम्पूर्ण जगत में अव्यवस्था फैल गई थी, अतः धर्म की सुरक्षा के लिए ब्रह्मा की आज्ञा से विश्वामित्र, गौतम, अगस्त्य ने आबू पर्वत पर यज्ञ करना प्रारम्भ किया था. उस समय दैत्यों ने बाधा पहुँचाई, उससे बचने के लिए वशिष्ठ मुनि ने अग्निकुण्ड से तीन वीर पुरुषों—प्रतिहार, चालुक्य, परमार को पैदा किया, लेकिन वे धर्म की रक्षा करने में नाकाम रहे. तब एक नये अग्निकुण्ड से वशिष्ठ ने चौहानों को पैदा किया. जिन्होंने राक्षसों को मार भगाया. यह कथा नवसाहसांकचरितम्, हम्मीररासो, पृथ्वीराजरासो एवं सिसाणा अभिलेख में भी वर्णित है.
- प्रतिहार, राष्ट्रकूट, सिसोदिया एवं चालुक्य अपना सम्बन्ध राम या कृष्ण के साथ जोड़ते हैं.
- जी. एच. ओझा एवं सी. वी. वैद्य के अनुसार राजपूत वैदिककालीन क्षत्रियों की सन्तान थे.
- डॉ. दशरथ शर्मा एवं विश्वंभरशरण पाठक के अनुसार ब्राह्मणों से राजपूतों की उत्पत्ति हुई थी.

- प्रतिहार, चौहान, चंदेल, गुहिल राजवंशों के संस्थापक ब्राह्मण ही थे. गुप्त साम्राज्य एवं गुप्तोत्तरकाल में अरबों के आक्रमण से बचने के लिए ब्राह्मणों ने शास्त्रों से शस्त्र धारण करना प्रारम्भ कर दिया था.
- वी. ए. स्मिथ के अनुसार राजपूत प्राचीन आदिम-जातियों गोंड, भर, खरवार आदि के वंशज थे.
- गुर्जर-प्रतिहारवंश की स्थापना हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण शासक ने की थी.

महत्त्वपूर्ण राजपूत राज्य

11वीं-12वीं शताब्दी के दौरान प्रमुख राजपूत राज्यों पर निम्नलिखित राजवंशों का शासन था–

गहड़वाल वंश

1.	संस्थापक	यशोविग्रह
2.	अन्य सम्बन्धित वंश	ययाति, राष्ट्रकूट, कौशाम्बी के चन्द्र-वंशीय क्षत्रिय.
3.	वंश का दूसरा नाम	गहरवार, गुहिलोत (गहलोत).
4.	संस्थापना स्थल	मिर्जापुर की पहाड़ियों में.
5.	गहड़वाल वंश के प्रमुख शासक	राजा चन्द्रदेव (1080-1085 के मध्य)
6.	राजा चन्द्रदेव के दौरान के उल्लेखनीय तथ्य	1. राष्ट्रकूटों से कन्नौज को मुक्त कर अपनी राजधानी वाराणसी से कन्नौज को बनाया. 2. राष्ट्रकूटवंशीय सामंत गोपाल को पराजित किया. 3. सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश पर आधिपत्य किया. 4. गहड़वाल शासक चन्द्रदेव के विषय में चन्द्रावती अभिलेख में वर्णन मिलता है. 5. वह काशी, कन्नौज, अयोध्या, इन्द्रप्रस्थ जैसे धार्मिक स्थलों का संरक्षक था. 6. राजा चन्द्रदेव शांति व्यवस्था का संरक्षक था.
7.	गहड़वाल वंश का दूसरा शासक	मदनपाल (1104-1114 ई.)
8.	मदन पाल द्वारा सम्पादित कृत्य एवं उल्लेखनीय तथ्य	1. बसही एवं सारनाथ अभिलेखों में वर्णन मिलता है. 2. तुर्कों के साथ संघर्ष, लेकिन तुर्क आक्रमणकारियों ने उसे बन्दी बना लिया था. 3. मदनपाल सर्वाधिक निर्बल शासक था. 4. मदनपाल का पुत्र गोविन्दचन्द्र (1114-1154) गहड़वाल वंश का अग्रिम शासक था.
9.	गोविन्दचन्द्र का शासनकाल	1. गोविन्द चन्द्र सर्वाधिक शक्तिशाली शासक सिद्ध हुआ. मगध, मालवा, उड़ीसा, कलिंग, कश्मीर, गुजरात पर आधिपत्य स्थापित किया. 2. उसने चौल राजाओं से मित्रता की. 3. तुर्की आक्रमणकारियों को सिन्ध पर आने से रोका. 4. उसके सन्धिविग्रहिक लक्ष्मीधर ने 'कृत्य-कल्पतरू' की रचना इसी काल में की थी. 5. रानी कुमारदेवी के सारनाथ अभिलेख में बनारसवासियों को तुर्की आततायियों से बचाने के कारण उसे 'हरि का अवतार' कहा गया है. 6. विजयचन्द्र (1154 से 1170 ई.) उसका उत्तराधिकारी शासक था.
10.	विजयचन्द्र का शासनकाल	1. मगध पर विजय प्राप्त की तथा चौहान शासक विसलदेव द्वारा पराजित हुआ. 2. इस दौरान दिल्ली का प्रदेश गहड़वालों के हाथों से निकलकर चौहान शासकों के पास चला गया. 3. इसका उत्तराधिकारी शासक जयचन्द्र (1154 से 1170 ई.) था.
11.	जयचन्द्र का शासनकाल	1. गहड़वाल वंश का अन्तिम महान शासक था. 2. दिल्ली के अजमेर के चौहानों के साथ उसकी शत्रुता थी. 3. जयचन्द्र के निमन्त्रण पर मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज पर आक्रमण किया था एवं इसी के फलस्वरूप तराईन के युद्ध में उसकी हार हुई थी. 4. 1194 ई. में चन्दावर के युद्ध में जयचन्द पराजित होकर मारा गया था. 5. नैषधीयचरितम् के रचनाकार कवि श्रीहर्ष जयचन्द के दरबारी कवि थे. खण्डनखद्य उनका ही ग्रन्थ था. 6. आख्यानों के अनुसार जयचन्द्र की पुत्री संयोगिता का अपहरण पृथ्वीराज तृतीय ने किया था. 7. देवगिरी के यादवों, गुजरात के सोलंकियों एवं तुर्कों के हराने पर विजय की खुशी में उसने राजसूय यज्ञ किया था. 8. 1225 ई. में इल्तुतमिश ने तुर्की सत्ता की स्थापना कर गहड़वाल वंश का अन्त कर दिया था.

चौहान वंश

- राजपूतों के राज्य में गहड़वालों के पश्चात्त चौहान राज्य प्रमुख दूसरा राज्य था. इसकी प्रमुख शाखा शपादलक्ष के चौहान राज्य की स्थापना सातवीं शताब्दी में वासुदेव ने की थी. इस राज्य की राजधानी अजमेर के पास शाकम्भरी (सांभर) थी.
- चौहान वंश के प्रारम्भिक राजा गुर्जर-प्रतिहारों के सामन्त थे. 10वीं शताब्दी के लगभग वाक्पतिराज प्रथम ने प्रतिहारों से मुक्त होकर स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की थी.
- वाक्पतिराज के पुत्र सिद्धराज ने चौहान वंश की सत्ता उत्तराधिकारी के रूप में सँभाली थी. सिद्धराज ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी.
- चौहान वंश के शासक अजयराज ने अजमेर नगर को बसाया था. इसी वंश के शासक अर्णोराज ने अजमेर पर आक्रमण करने वाले तुर्कियों को परास्त किया था.
- 1153-1164 ई. के मध्य विग्रहराज चतुर्थ **'बीसलदेव'** ने चौहान वंश की सत्ता सँभाली थी. चौहानों की शक्ति का सर्वाधिक विस्तार इसी काल में हुआ था. विग्रहराज चतुर्थ ने दिल्ली, झाँसी पर कब्जा किया तथा तुर्की आततायियों को पराजित किया था. 'ललित विग्रहराज' नामक ग्रन्थ सोमेश्वर ने विग्रहराज के सम्मान में लिखा था. पंजाब, पश्चिमी-उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान में उसका साम्राज्य फैला हुआ था. राजपूताना एवं मालवा के कई शासकों ने उसकी अधीनता स्वीकार की थी.
- चौहान वंश का अन्तिम महान् शासक पृथ्वीराज तृतीय था. उसने चौलुक्य, चंदेल राजाओं से युद्ध किया था. इस शासक ने बुन्देलखण्ड के चन्देल शासक परमार्दि देव को युद्ध में पराजित किया था. वीर योद्धा आल्हा-ऊदल इसी युद्ध में मारे गये थे, जिनके ऊपर 'आल्हाखण्ड' लिखा गया था. तराईन के प्रथम युद्ध 1191 ई. में मुहम्मद गौरी पृथ्वीराज के हाथों परास्त होकर भाग गया था. तराईन के द्वितीय युद्ध 1192 ई. में मुहम्मद गौरी ने उसी को बन्दी बना कर मार दिया था. चन्दवरदाई द्वारा लिखित 'पृथ्वीराज रासो' में उसके प्रताप का वर्णन किया गया है. तुर्कों ने अजमेर और दिल्ली पर आक्रमण कर चौहान वंश का अन्त कर दिया था. 1192 ई. में कुतुबद्दीन ऐबक ने चौहान वंश की सत्ता का अन्त कर दिया था. चौहान शासक गोविन्द, हरिराज पृथ्वीराज के पश्चात्त भी तुर्कों के अधीनस्थ शासक रहे.

चन्देल वंश

- चन्देल वंश का उदय जेजाक-भुक्ति या बुन्देलखण्ड में हुआ था. जिसकी राजधानी खजुराहो थी. चन्देल राज्य की स्थापना 9वीं शताब्दी में नन्नुक ने की थी. ये प्रतिहारों के अधीनस्थ थे, लेकिन हर्षदेव और यशोवर्मन के समय चन्देल स्वतन्त्र हो गये. चन्देलों को चन्द्रवंशीय माना गया था तथा राजपूतों के 36 कुलों में इनका नाम मिलता है.
- चन्देल वंश के संस्थापक नन्नुक के पौत्र जयसिंह या जेजा के नाम पर बुन्देलखण्ड का नाम जेजाक-भुक्ति पड़ा था.
- चन्देल शासक यशोवर्मन (925-950 ई.) ने प्रतिहार शासकों को परास्त कर कालिंजर पर अधिकार कर लिया. कलचुरी, परमार, उड़ीसा के सोमवंशीय शासकों को इसी चन्देल शासक ने परास्त किया था. उसने कश्मीर, गौड और मिथिला के साथ भी संघर्ष किया था. खजुराहों के प्रसिद्ध विष्णु मंदिर का निर्माण यशोवर्मन ने ही कराया था.
- यशोवर्मन का पुत्र धंगदेव (950-1002 ई.) चन्देलों का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था. प्रतिहारों से पूर्णतः मुक्त कराने का श्रेय धंगदेव (धंग) को ही दिया जाता है. काँची, बरार, लंका, कोशल के शासकों को उसने परास्त किया था. पालों से राढ़ (पं. बंगाल) तथा अंग छीनने वाला शासक धंगदेव ही था. हिन्दू राजा जयपाल को तुर्की आक्रमणकारियों के विरुद्ध सहायता उसने ही की थी. जिननाथ, विश्वनाथ तथा वैद्यनाथ के मंदिरों को खजुराहों में बनाने का कार्य उसी ने किया था. उसकी महत्त्वपूर्ण सफलता ग्वालियर विजय थी.
- धंगदेव का पुत्र गण्डदेव (1002 से 1019 ई.) अगला चन्देल शासक बना. कन्नौज के राजा जयपाल की हत्या कर त्रिलोचन पाल को शासक गण्डदेव ने ही बनाया था. गण्डदेव का पुत्र विद्याधर भी महान शासक था.
- गण्डदेव के पश्चात्त चन्देलवंश में विजयपाल, देववर्मन, कीर्तिवर्मन, सलक्षणवर्मन, जयवर्मन, पृथ्वीवर्मन, मदनवर्मन इत्यादि अनेक शासक हुए. इनका इतिहास पर अधिक प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता.
- चन्देल वंश का अन्तिम महान राजा परमर्दि या परिमल था, जिसने 1162 से 1202 ई. के मध्य शासन किया. परमर्दि के समय वीर योद्धा आल्हा-ऊदल इतिहास में उल्लेखनीय है, उन्होंने पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध किया था. 1203 ई. में कुतुबद्दीन ऐबक ने कालिंजर पर आक्रमण कर लिया था. चन्देलों की सत्ता का पूर्णतः अन्त अलाऊद्दीन खिलजी के समय हुआ था.

परमार वंश

- गुर्जर-प्रतिहारों की सत्ता समाप्ति के बाद मालवा में 20वीं शताब्दी में परमार वंश का उदय हुआ. धारा (उज्जैन-मालवा, लाट), वागड (बांसवांडा), चन्द्रावती (आबू), जालौर, मालवा (धारा-उज्जैन) में उनकी शाखाएँ थी. मालवा के परमार सर्वाधिक प्रसिद्ध थे. परमार राष्ट्रकूटों के सामन्त थे. परमार वंश का संस्थापक उपेन्द्र था.
- वैरिसिंह प्रथम, सियक प्रथम, वाक्पति प्रथम, वैरिसिंह द्वितीय–परमार वंश के प्रमुख प्रारम्भिक शासक थे.
- परमार वंश का पहला स्वतन्त्र एवं शक्तिमान शासक सीयक या श्री हर्ष था.
- प्रारम्भिक शासकों में सर्वाधिक शक्तिशाली शासक वाक्पति मुंज (973 से 995 ई.) था. त्रिपुरी, लाट, कर्णाट, केरल एवं चोल साम्राज्य तक उसने अपने साम्राज्य को फैलाया था. चालुक्य नरेश तैलप द्वितीय को उसने कई बार हराया था, लेकिन उसकी मृत्यु भी उसी युद्ध में हुई थी.
- वाक्पति पुंज के काल में उज्जयिनी की प्रसिद्धि चारों दिशाओं में फैल गई थी. वह एक महान् एवं विद्वान शासक था. पद्मगुप्त ने नवसाहसाङ्कचरितम्, धनंजय ने दशरूपक तथा धनिक ने यशोरूपावलोक की रचना इसी काल में की थी.
- सिन्धुराज (995 से 1000) परमार वंश का अगला शासक था. चौलुक्य राजा सत्याश्रय को उसने परास्त किया था. दक्षिण कोशल, लाट एवं अपरान्त से भी उसने युद्ध किया था. चालुक्य राजा मुण्डराज ने युद्ध में उसे परास्त कर दिया था.
- भोज (1000-1055) परमारों का सर्वाधिक शक्तिशाली, श्रेष्ठ एवं महान शासक था. चेदि, गुजरात, कर्णाट, लाट और गुर्जर राजाओं से युद्ध करने के साक्ष्य उदयपुर प्रशस्ति में प्राप्त हुए. कल्याणी का चालुक्य राजा विक्रमादित्य चतुर्थ को उसने परास्त किया था. भोज ने कलचुरी शासक गांगेयदेव को हराकर बिहार में आरा के पास भोजपुर पर अपना अधिकार कर लिया था. भोजपुर की स्थापना परमार शासक भोज ने ही की थी. राजा भोज ने परमारों की राजधानी उज्जयिनी से धारा बनाई थी. कलचुरी और सोलंकियों के सम्मिलित आक्रमण से उसकी मृत्यु हुई थी.
- उदयपुर प्रशस्ति के अनुसार परमार शासक भोज ने रामेश्वर, केदारेश्वर तथा सोमनाथ में मन्दिर का निर्माण कराया था.
- भोजसर तालाब का निर्माण, धारी नगरी के चौराहों पर चौरासी मन्दिरों की स्थापना, शारदासदन का निर्माण, शारदा मन्दिर में सरस्वती की प्रतिमा की स्थापना परमार शासक भोज ने ही की थी.
- धारा नगरी के शारदासदन में दीवारों पर पारिजातमंजरी नाटक अर्जुनवर्मा ने खुदाया तथा भोजकृत कूर्मशतक उसके द्वारा खुदवाया गया था.
- राजा भोज ने सार्वभौम, त्रिभुवननारायण, मालवचक्रवर्ती जैसी उपाधियाँ धारण की थीं. वह कविराज के उपनाम से ख्यात था.
- भोज प्रसिद्ध लेखक, विद्वान तथा विद्वानों का संरक्षक था. भोज द्वारा लिखित ग्रन्थ निम्नलिखित थे–
  (1) समरांगणसूत्रधार (शिल्पशास्त्र)
  (2) सरस्वतीकंठाभरण (अलंकार शास्त्र)
  (3) शृंगारप्रकाश (अलंकार शास्त्र)
  (4) पातञ्जलयोगसूत्रवृत्ति (योगशास्त्र)
  (5) कूर्मशतक (काव्य नाटक)
  (6) चम्पू रामायण (काव्य नाटक)
  (7) शृंगारमंजरी (काव्य नाटक)
  (8) आयुर्वेद सर्वस्व (आयुर्वेद)
  (9) तत्त्व प्रकाश (शैव ग्रन्थ)
  (10) नाममालिका (शब्दकोष)
  (11) शब्दानुशासन (शब्दकोष)
- भोज के पश्चात् प्रथम जयसिंह (1055-1070) उदयादित्य (1070-1086), लक्ष्मदेव (1086-1094), नरवर्मा (1094 से 1133 ई.) यशोवर्मा (1133-1142 ई.), जयवर्मन तथा लक्ष्मणवर्मन प्रमुख शासक हुए थे. आन्तरिक दुर्व्यवस्था के फलस्वरूप 1233 ई. में मालवा पर इल्तुतमिश ने आक्रमण कर लिया था. मालवा से परमारशक्ति का पतन अलाउद्दीन खिलजी ने किया था.

सोलंकी या चौलुक्य वंश

- सोलंकी या चौलुक्य वंश का उदय गुजरात में अणहिलवाड़ में हुआ था. चौलुक्य वंश की सत्ता को मूलराज प्रथम (942-955 ई.) ने स्थापित की थी.
- चौलुक्यशासक भीमराज प्रथम (1022-1064 ई.) के समय में सोमनाथ पर महमूद गजनवी ने आक्रमण किया था. 1025 ई. सोमनाथ पर आक्रमण के समय महमूद गजनवी से डरकर भीमराज भाग गया था.
- चौलुक्य या सोलंकी वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक जयसिंह सिद्धराज था, जिसने 1044 से 1145 ई. तक शासन किया था. उसने चौहान, परमार, चन्देल कल्याणी के चालुक्यों को पराजित कर अपनी शक्ति का विस्तार किया था.
- चौलुक्य शासक मूलराज द्वितीय के समय 1178 ई. में मुहम्मद गौरी ने सोलंकियों पर आक्रमण किया था, जो चौलुक्य शासक भीम के द्वारा पराजित कर दिया गया था.

- 1178 ई. में कुतुबद्दीन ऐबक ने भीम द्वितीय को परास्त कर गुजरात पर अधिकार कर लिया.
- चौलुक्य वंश का अन्त बघेलों ने किया था.

कलचुरी वंश

- 9वीं शताब्दी में कोक्कल प्रथम ने त्रिपुरी या चेदि. जबलपुर के निकट डाहलमण्डल में कलचुरी वंश को स्थापित किया था.
- गांगेयदेव कलचुरी वंश का सर्वाधिक प्रतापशाली शासक था, जिसने 1019 से 1040 ई. तक शासन किया था. गांगेयदेव ने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी. उत्कल, भागलपुर, बनारस पर उसने अधिकार प्राप्त किया था.
- कलचुरि वंश का अन्तिम महान शासक लक्ष्मीकर्ण था, जिसने 1042 से 1072 ई. तक शासन किया था. उसने चोल, पाण्ड्य एवं कुन्तल शासकों को पराजित किया था. इलाहाबाद एवं पश्चिमी बंगाल पर भी उसने विजय प्राप्त की थी. 1211 ई. में चन्देलों ने कलचुरि वंश की सत्ता को समाप्त कर दिया था.

राजपूत राज्यों की प्रशासनिक एवं सामाजिक स्थिति

राजपूत प्रशासन

- नीतिवाक्यामृत, वीरमित्रोदय, कृत्यकल्पतरू, मानसोल्लास, ज्ञानपंचमीकथा राजपूत काल के प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत हैं, जो राजपूत राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रकाश डालते हैं.
- राजपूत काल (800-1200) में गणतन्त्र पूरी तरह समाप्त हो चुके थे. वंशानुगत अनियन्त्रित एवं निरंकुश राजतन्त्र गणतन्त्र के स्थान पर स्थापित हो गये थे. राजा के हाथों में सम्पूर्ण शक्ति केन्द्रित थी.
- मानसोल्लास के अनुसार राजपूत काल में राजा द्वारा स्वयं शासित शासन को सर्वोत्तम एवं मंत्रियों द्वारा नियन्त्रित राज्य को निम्न कोटि का शासन माना जाता था.
- महेश्वरसूरि के ज्ञानपंचमी कथा के अनुसार–"केवल वही शासक भूपाल है, जो सचमुच ही पृथ्वी की रक्षा करता हो. अन्यायी शासक तो केवल एक चोर अथवा डाकू के समान हैं."
- राजपूत काल में राजा प्रजा पालक होते थे. ब्राह्मण, विद्वानों का आदर-सत्कार करना, गरीबों-असहायों की सहायता करना, धर्म का पालन करना या करवाना राजा के प्रमुख कर्त्तव्य होते थे. सैनिक, न्यायिक, प्रशासनिक उत्तरदायित्व राजा का होता था. प्रशासन और राज्य का सर्वस्व राजा को माना जाता था.
- राजत्व और देवत्व में सर्वाधिक घनिष्ठता इसी काल में परिलक्षित होती थी. महाराजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक, सकलसामंतचक्रचूड़ामणि, नारायण परम-माहेश्वर, आदिवाराह, गजपति, त्रिकलिंगाधिपति, हयपति, नरपति, त्रिविक्रम, विक्रमादित्य–इत्यादि उपाधियाँ राजा धारण करते थे.
- अधिकांशतः राजा का उत्तराधिकारी उसका ज्येष्ठ पुत्र होता था. उत्तराधिकारी के लिए यदा-कदा संघर्ष भी होता था. प्रशासन में युवराज की प्रमुख भागीदारी होती थी. राज्याभिषेक भी किया जाता था. राजकीय उपाधियाँ युवराज भी ग्रहण करते थे.
- युवराज की अयोग्यता या कम उम्र के समय रानियाँ संरक्षिका बतौर शासन का भार सँभालती थीं. महिषी राजमहिषी, महादेवी रानियों की प्रमुख उपाधियाँ थीं.
- गहड़वाल शासक मदनपाल की रानी पृथ्वीसिका, पृथ्वीराज तृतीय (चौहानवंशीय) की माता कर्पूरदेवी, चौलुक्य राजा जयसिंह सिद्धराज की माता मयणल्ला देवी, कश्मीर की रानी दिद्दा प्रमुख संरक्षिका शासिका थीं.
- प्रशासन में राजा की सहायता के लिए मंत्री होते थे. इसका पद वंशानुगत होता था. सामान्यतः ब्राह्मणों को ही मंत्री पद दिया जाता था. राजा मंत्री की सलाह मानने को बाध्य नहीं होता था. मंत्रिपरिषद् में सामन्त अधीनस्थ शासक, महापुरोहित, विभागीय प्रधान नियुक्त होते थे.

राजपूतकालीन प्रमुख पदाधिकारी

1. प्रधानमंत्री	प्रधान अमात्य या महामंत्री
2. राजा	राज्य का सर्वोच्च शासक
3. महासंधिविग्रहिक	केन्द्रीय प्रशासन से सम्बद्ध प्रमुख पदाधिकारी युद्ध और शांति का मंत्री
4. अक्षपटलाधिकृत	राजकीय दस्तावेज विभाग का प्रमुख
5. अक्षपटलिक	दस्तावेज विभाग के अधीनस्थ कर्मचारी
6. भाण्डगारिक	राजकोष का प्रधान
7. महाप्रतिहार (दौवारिक)	राजमहल का प्रमुख सुरक्षा पदाधिकारी
8. महादण्डनायक	सैन्य विभाग का प्रधान
9. धर्मस्थ	न्याय विभाग का प्रधान
10. महापुरोहित	धार्मिक मामलों का प्रधान
11. माण्डलिक	मण्डल का प्रधान
12. राष्ट्रपाल	राष्ट्र का प्रधान
13. तन्त्रपाल	स्थानीय प्रशासक
14. विषयपति	विषय या जिले का प्रधान
15. ग्रामिक	ग्राम का मुखिया
16. स्थानीय	नगर का प्रमुख
17. कोट्टपाल	दुर्गों का रक्षक
18. व्यवहारिक	प्रमुख न्यायाधिकारी
19. साधनिक	पुलिस अधिकारी

राजपूतकालीन राजस्व व्यवस्था

- राजपूतकाल में आय का मुख्य स्रोत भूमि कर था. राजपूतकालीन निम्नलिखित कर थे–

(1) भाग	(9) स्कन्धक
(2) उद्रंग	(10) मार्गणक
(3) धान्य	(11) प्रस्थ
(4) हिरण्य	(12) खलभिक्षा
(5) दानी	(13) चोल्लाक
(6) भोग	(14) वैणी
(7) शुल्क	(15) मयूत
(8) दशापराध	(16) विष्टि

- राजपूतकाल में कर की मात्रा निश्चित नहीं थी. पैदावार के अनुसार घटाई और बढ़ाई जा सकती थी. हिरण्य और दानी नकद वसूलने वाले कर तथा विष्टि वेगार के अन्तर्गत आने वाला कर था.
- राजकीय आय का एक वड़ा हिस्सा राजा, उसके दरवार सैनिक संगठन, युद्ध, शिक्षा, कला, विकास एवं दान-पुण्य पर व्यय होता था.

सैन्य व्यवस्था

- राजपूत काल में सैनिक पदाधिकारी नागरिक प्रशासन से जुड़े हुए होते थे. राज्य की स्थायी सेना कम होती थी. राजा अधिकतर सामन्त एवं अधीनस्थों के सैनिकों पर आधारित होते थे.
- अभिलेखों में महादण्डनायक, दण्डनायक, वलाधिकृत, महावलाधिकृत, पीलूपति, अश्वपति, महाअश्वपति, महायुधपति प्रमुख सैनिक पदाधिकारियों का उल्लेख मिलता है.
- सैन्य व्यवस्था में दुर्गों (कोट) की भी भूमिका महत्त्वपूर्ण थी. कोटपाल इनका संरक्षण करते थे. सैनिकों के लिए स्कन्धवार (शिविर) लगाये जाते थे.
- सेना में पैदल, हाथी, घोड़े की टुकड़ी भी होती थी. रथ एवं जल सेना भी होती थी. अरबी घोड़े सेना में रखे जाते थे. मध्यप्रदेश और राजस्थान में ऊँट की टुकड़ियाँ भी सेना में होती थी. सैनिक पदाधिकारियों को सेवा के बदले भूमि अनुदान, सामन्ती उपाधि प्रदान की जाती थी.

राजपूतकालीन सामन्ती व्यवस्था

- राजपूतकाल में सामंत–भूपाल, भोक्ता, भोगिका, राजा, राजजनक, राजपुत्र, रान्नक, ठकुर, महासामंत, मण्डलिक, महासामंताधिपति, मण्डलेश्वर इत्यादि उपाधि धारण करते थे.
- सामन्तों को प्रशासनिक व्यवस्था एवं सैनिक संगठन में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता था.
- राज्य की ओर से सामन्तों को कर मुक्त, पूर्ण प्रशासनिक अधिकारों सहित भूमि और गाँव दान में दिये जाते थे.
- राज्य, किसान एवं आम जनता के मध्य मध्यस्थों की क्रमवद्ध शृंखला सामन्ती वर्ग के नाम से पहचानी जाती थी.
- सामन्तों का मुख्य कर्त्तव्य राजा को सेना उपलब्ध कराना, प्रशासनिक मामलों में सहयोग करना और कुछ हद तक न्याय व्यवस्था को स्थापित करना इत्यादि होता था.
- कई सामन्त राजा के दरवार में ही रहते थे, जिनका राजकुल से वैवाहिक सम्बन्ध भी हो जाता था.

राजपूतकालीन भूमि व्यवस्था

- राजपूतकालीन भूमि का स्वामी राजा होता था. वह किसानों से राजस्व लेता था. जमीन खेती करने के लिए निम्न दो वर्गों को प्रदान की जाती थी–

  (1) भूमिया वर्ग–जमीन पर पैतृक अधिकार रखने वाले.

  (2) गिरसिया वर्ग–जमीन पर संरक्षण का अधिकार रखने वाले.
- किसानों के लिए जमीन लगान के बदले खेती करने के लिए दी जाती थी, उनका उस पर पैतृक अधिकार नहीं होता था. कृषि कार्य शूद्र वर्ग करते थे.
- राजपूत काल में किसानों की दो श्रेणियाँ थीं–

  1. कुटुम्बी–स्वतन्त्र किसान

  2. सीरिन–हिस्सेदार, बँटाई वाले.
- कुटुम्बी किसान कृषि के वदले राज्य को कई प्रकार के भूमि-कर देते थे.
- सीरिन हिस्सेदार होते थे. इनको पैदावार का 1/3 से 1/4 भाग मिलता था.
- जमीन की माप, सिंचाई के साधन एवं खाते रखने की प्रथा प्रचलित थी.
- सिंचाई की व्यवस्था का पूर्ण उत्तरदायित्व स्थानीय प्रशासन का होता था.
- किसानों को कर के अलावा स्थानीय अधिकारियों सामन्तों, सेना की आवश्यकताएँ पूरी करनी पड़ती थी.
- कायस्थ और अक्षपटलिक भूमि व्यवस्था में संलग्न पदाधिकारी थे.

- राजपूतकाल में भूमि अनुदान में दी जाती थी. मन्दिरों, बौद्ध विहारों, ब्राह्मणों एवं वेतन के बदले भूमि का दान दिया जाता था. दानग्रहीता को कर एवं सेवामुक्त भूमि दी जाती थी.
- प्रतिहार, परमार, पाल, चन्देल, गहड़वाल अभिलेखों में भूमि दान का उल्लेख किया गया है.

राजपूतकालीन समाज

- राजपूतों के काल में समाज वर्ण एवं जाति व्यवस्था पर आधारित था. राष्ट्रीयता से अधिक राजपूतों की मान-मर्यादा को अधिक महत्त्व दिया जाता था.
- राजपूत-कालीन समाज में भाईचारा एवं समानता देखने को भी नहीं मिलती थी.
- खुददर्बा के अनुसार राजपूतकालीन हिन्दु समाज में निम्नलिखित सात जातियाँ विद्यमान थीं–

जाति		वर्ग
1. सवकूफरिया	–	सत-क्षत्रिय
2. ब्रह्म	–	ब्राह्मण
3. कतारिया	–	क्षत्रिय
4. वैसुर	–	वैश्य
5. सुदरिया	–	शूद्र
6. संडलिया	–	चाण्डाल
7. लहूद		

- अल-इदरिसी खुददर्बा के द्वारा वर्णित लहूद जाति के स्थान पर जकिया नामक जाति का उल्लेख करता है.
- अलबेरूनी ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के अतिरिक्त आठ अन्त्यजों का वर्णन किया है.
- कल्हण की राजतरंगिणी में 64 उपजातियों का उल्लेख किया गया है.
- राजपूतकालीन समाज में ब्राह्मणों का स्थान सर्वोच्च होता था. उनको राजनीतिक, सामाजिक, न्यायिक एवं आर्थिक विशेषाधिकार प्राप्त थे.
- राजपूत ब्राह्मणों की रक्षा एवं सम्मान के संरक्षण का कार्य करते थे.
- मंत्री, राजपुरोहित के रूप में ब्राह्मणों का ही चयन किया जाता था. ब्राह्मणों को कर मुक्त भूमि एवं गाँव दान में दिये जाते थे. ब्राह्मणों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर बसाने के उल्लेख विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों में मिलते हैं. ब्राह्मण कई शाखाओं एवं उपशाखाओं में विभक्त थे.
- क्षत्रियों का मुख्य कार्य राज्य करना एवं युद्ध करना था. राजपूतों में इस समय कुलाभिमान, जात्याभिमान की भावना थी. वे अहंकारी होते थे. राजपूतों का समय अक्सर भोगविलास, सामन्तों से युद्ध करने एवं कला, साहित्य, धर्म को संरक्षण देने में व्यतीत होता था.
- वैश्य व्यापार-व्यवसाय में संलग्न रहते थे.
- शूद्र शिल्प और सेवा के अलावा कृषि कार्य करने लगे थे. ब्राह्मणों की सेवा करना उनका परम कर्त्तव्य माना जाता था.
- दास एवं अन्त्यजों की हालत बेकार थी. समाज में छुआछूत, अस्पृश्यता की भावना विद्यमान थी.
- अस्पृश्य जातियाँ, चाण्डाल जैसे लोग नगर की सीमा से बाहर रहते थे और सूचना देकर नगर में प्रवेश करते थे.
- विवाह अपनी जाति में ही होते थे. अन्तर्जातीय विवाह प्रतिबन्धित थे. अनुलोम और प्रतिलोम विवाह होते अवश्य थे, लेकिन उन्हें कुत्सित समझा जाता था.
- राजपूतकालीन समाज में बाल विवाह, बहु-विवाह, सती प्रथा एवं जौहर प्रथा का अस्तित्व विद्यमान था.
- राजपूतकालीन समाज में स्त्रियों की हालत बेकार थी. राजवंश की स्त्रियाँ प्रशासनिक गतिविधियों में भाग लेती थीं. धार्मिक अनुदान, कला, शिक्षा भी स्त्री प्राप्त करती थीं, लेकिन सामान्य स्त्रियों को यह सुविधा प्राप्त नहीं थी. गणिकाओं, वेश्याओं, देवदासियों का अस्तित्व था. स्त्रियों को चारदीवारी में ही रखा जाता था और भोग विलास की वस्तु समझा जाता था.
- सम्पूर्ण समाज दो वर्गों में विभक्त हो चुका था– सुविधाभोगी एवं सुविधाविहीन समाज. राज्य, प्रशासन एवं धर्म पर सुविधाभोगी वर्ग का अधिकार था और सुविधाविहीन वर्ग का जीवन कष्टमय था, उसे सामन्तों के अत्याचार सहने पड़ते थे.

भारत पर तुर्की आक्रमण

- 11वीं-12वीं शताब्दी के दौरान भारत पर तुर्कियों ने आक्रमण कर विजय प्राप्त की तथा तुर्की सत्ता को स्थापित किया. तुर्की आक्रमण के नेतृत्व करने वाले दो नेता महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी थे.
- कई इतिहासकारों के अनुसार भारत में तुर्की आक्रमण का प्रमुख कारण इस्लाम धर्म का प्रचार तथा मूर्ति पूजा को समाप्त करना था.

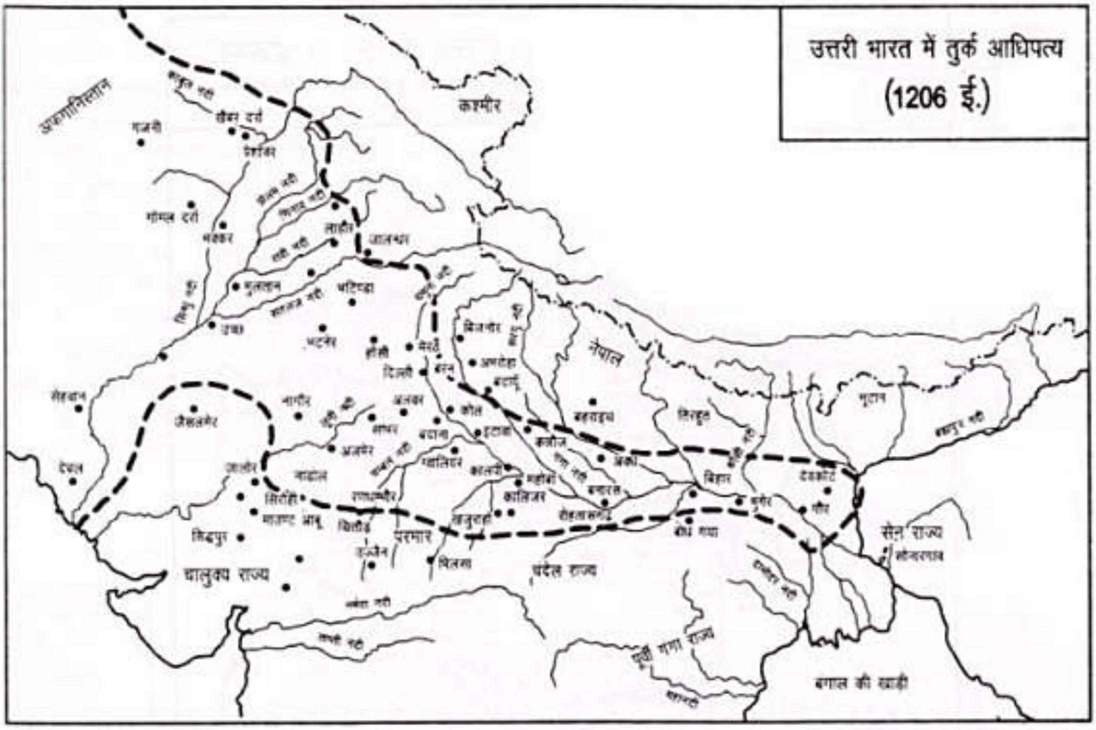

- प्रो. हबीब निजामी के अनुसार तुर्की आक्रमणकारियों ने मध्य-एशिया में विशाल साम्राज्य स्थापित करने के लिए भारतीय मंदिरों से धन लूटकर आर्थिक व्यवस्था के लिए आक्रमण किया था.
- तुर्की आक्रमण का प्रमुख कारण राजनीतिक परिस्थिति भी थी. 11वीं-12वीं शताब्दी में सम्पूर्ण भारतवर्ष विभिन्न संघर्षों में लिप्त था और उसकी सम्पन्नता विश्व में प्रसिद्ध थी, अतः उस पर अधिकार कर सम्पूर्ण मध्य-एशिया में सत्ता की स्थापना तुर्की आक्रमणकारियों का प्रमुख लक्ष्य था.

महमूद गजनवी का आक्रमण

- दसवीं शताब्दी में अब्बासी खिलाफत के पतन के बाद ताहिरिर, सफाविद, समानिद एवं बुईद नामक स्वतन्त्र राज्यों का उदय हुआ था.
- समानिद राज्य की सत्ता समाप्ति के बाद अलप्तगीन ने गजनी साम्राज्य की स्थापना की थी.
- अलप्तगीन समानी साम्राज्य के प्रशासकों में तुर्की गुलाम था. जिसने मौका देखकर मध्य-एशिया में अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया जिसकी राजधानी गजनी थी.
- अलप्तगीन के पश्चात अबू-बक्र लायक गजनी वंश का शासक बना, जिसे अलप्तगीन के गुलाम सुबुक्तगीन ने पदच्युत कर गजनी पर अधिकार कर लिया.
- अलप्तगीन ने हिन्दुशाही राजा जयपाल को पराजित कर अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य कर दिया. अफगानिस्तान, खुरासान, बल्ख तथा भारत के पश्चिमोत्तर भाग तक अपना साम्राज्य को विस्तारित किया था.
- महमूद गजनवी सुबुक्तगीन का पुत्र था, जिसने 998 से 1030 ई. तक शासन किया था. उसने सीस्तान के राजा को हराकर स्वयं ने सुल्तान की उपाधि धारण की थी. खलीफा ने उसे यमीनुद्दौला (साम्राज्य का दाहिना हाथ) एवं अमीन-उल-मिल्लत (मुसलमानों का संरक्षक) की उपाधि से सम्मानित किया था. महमूद गजनवी का वंश यामिनी वंश के नाम से प्रसिद्ध था. उसने 1000 से 1026 ई. के मध्य भारत पर सत्रह बार आक्रमण किये थे.
- महमूद गजनवी ने सबसे पहले 1000 ई. में सीमान्त दुर्गों पर आक्रमण कर तुर्की आक्रमण की शुरूआत की थी.
- 1001 में महमूद गजनवी ने हिन्दुशाही राजा जयपाल पर सेना के साथ आक्रमण किया था. पेशावर के समीप हुए इस युद्ध में जयपाल पराजित हुआ और उसी युद्ध में उसकी मृत्यु हो गई.

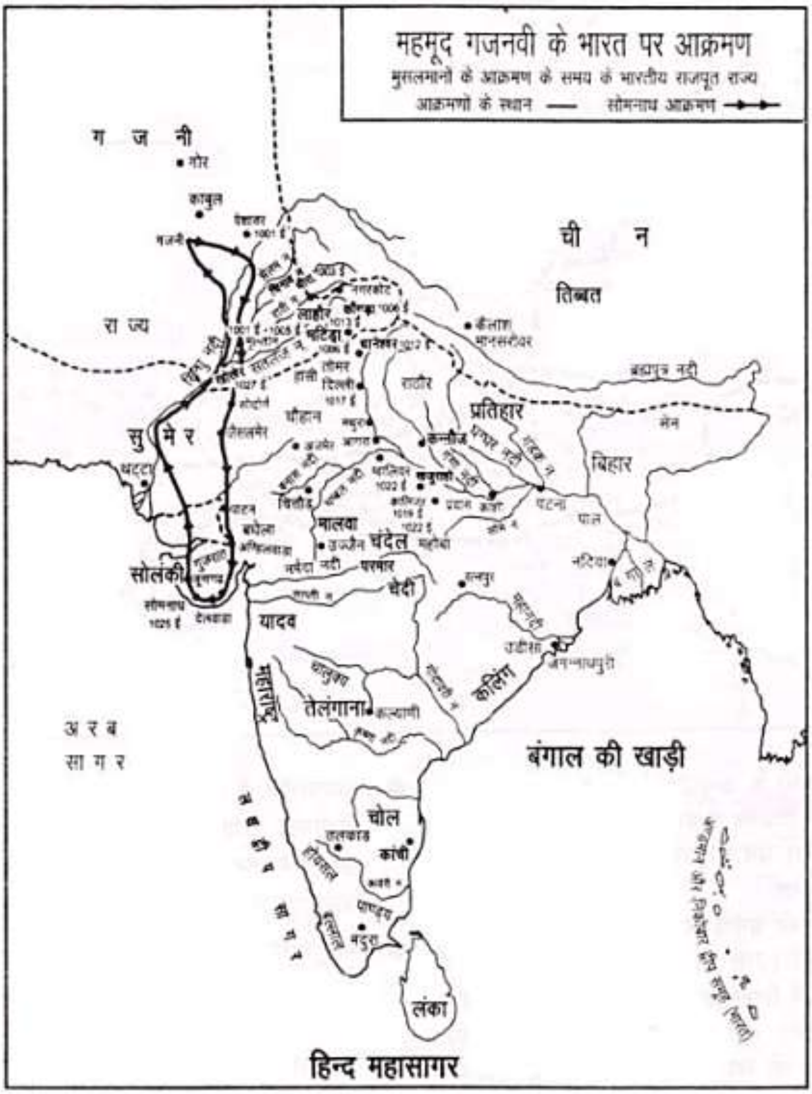

- जयपाल पर विजय प्राप्त करने के पश्चात 1004-1005 में महमूद गजनवी ने मुलतान के शासक अबुल फतह दाऊद पर आक्रमण किया था. अबुल फतह दाऊद शिया (कमराथी) सम्प्रदाय का मानने वाला था. उसे पराजित कर नौशाशाह को यहाँ का प्रतिनिधि राजा बनाकर महमूद गजनवी ने भटिण्डा पर आक्रमण किया.
- महमूद गजनवी 1008 में पुनः मुलतान आया और दाऊद को मुलतान का शासक बनाया. 1010 में दाऊद के गड़बड़ी करने पर मुलतान को महमूद गजनवी ने गजनी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया.
- इसके पश्चात महमूद गजनवी ने पंजाब पर आक्रमण किया. 1008-1009 में पेशावर के पास वैहिंद नामक स्थल पर आनन्दपाल (जयपाल के पुत्र) एवं महमूद गजनवी में भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें आनन्दपाल पराजित हुआ तथा नागरकोट के दुर्ग में छिप गया.
- प्रसिद्ध इतिहासकार उतबी (उत्बी) के अनुसार नागरकोट (भीमनगर) के दुर्ग में आक्रमण करने पर महमूद गजनवी को सम्पत्ति के नाम पर 70,000 दिरहम के सिक्के, 7 लाख दिरहम का सोना-चाँदी जिनका वजन 400 मन था. असंख्य मोती, सुन्दर वस्त्र, चाँदी का बना एक घर (तीन गज लम्बा एवं 15 गज चौड़ा), दो सोने और दो चाँदी के खम्भों पर टिका हुआ रोमी कपड़े का शामियाना उसे लूट में प्राप्त हुआ था.
- आनन्दपाल ने नन्दन को अपनी राजधानी बना ली थी. 1013 ई. में महमूद ने नन्दन पर आक्रमण पर आनन्दपाल के पुत्र त्रिलोचनपाल को दो बार युद्ध में

परास्त कर दिया था. 1026 ई. में पंजाब को गजनी साम्राज्य में मिला लिया गया.

- महमूद गजनवी ने थानेश्वर नगर के चक्रस्वामी मन्दिर को लूटा तथा 1014 में कन्नौज पर आक्रमण करने के उद्देश्य से बुलन्दशहर, महावन (मथुरा के पास), मथुरा पर विजय प्राप्त करते हुए वह कन्नौज पहुँच गया. कन्नौज के राजा राजपाल को अधीनता स्वीकार करवाकर वह आगे बढ़ा, लेकिन कन्नौज के राजा विद्याधर के बनने पर महमूद गजनवी ने पुनः कन्नौज पर आक्रमण कर दिया. इसी दौरान ग्वालियर और कालिंजर पर उसने अधिकार कर लिया.
- सोमनाथ के शिव मन्दिर की ख्याति एवं सम्पदा के बारे में सुनकर महमूद गजनवी ने इस ओर अपना रुख कर लिया था. सोमनाथ इस दौरान चौलुक्यों के अधीन था.
- 1024 ई. में सोमनाथ पर आक्रमण के लिए वह चौलुक्य की राजधानी अण्हिलवाड़ा के शासक भीमदेव को अधीनता स्वीकार करवाकर सोमनाथ मन्दिर तक पहुँच गया था. उसने सोमनाथ को लूटकर अक्षय सम्पत्ति प्राप्त की थी. लौटने पर खोखरों के विरोध करने के कारण 1027 ई. में खोखरों को भी उसने अपने अधीन कर लिया था. 1030 ई. में महमूद गजनवी की मृत्यु हो गई थी.

मुहम्मद गौरी का आक्रमण

- गजनी साम्राज्य के बाद मध्य-एशिया में गोर राजवंश का उदय हुआ था. गोर गजनी के सामन्त थे. गजनी की शक्तिक्षीण होते ही गजनी पर गोरवंश (शंसवानी वंश) ने अधिकार कर लिया.

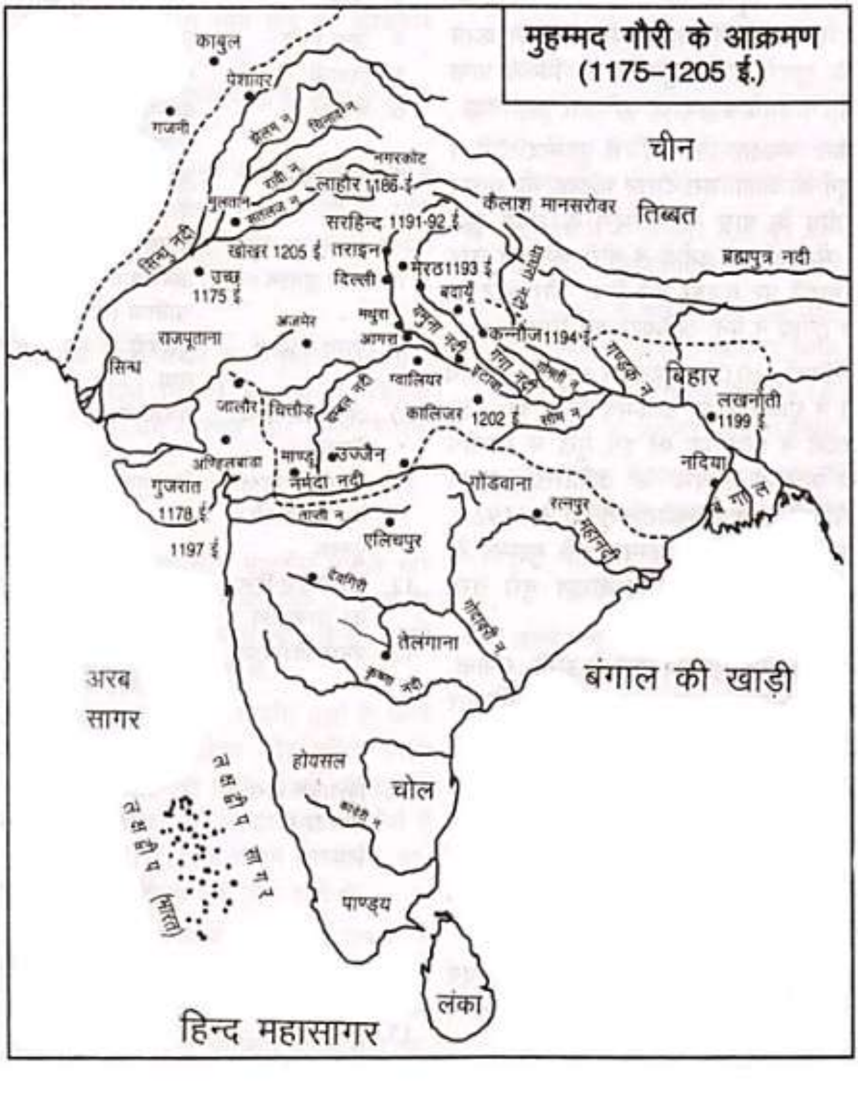

- 1173 ई. में गजनी का शासक शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी (मुइजुद्दीन मुहम्मद बिन-साम) ने गजनी का शासन संभाला था.
- भारतीय दुर्बल राजनीति एवं मध्य-एशिया की राजनीति को देखकर मुहम्मद गौरी ने 1175 से 1205 ई. के मध्य भारत पर कई बार आक्रमण किये थे.
- मुहम्मद गौरी ने 1175 ई. में पहला भारतीय आक्रमण किया था. गोमल दर्रा, मुलतान, उच्छ पर उसने सफलतापूर्वक विजय प्राप्त की थी.
- 1178 ई. में राजपूताना के मार्ग से गुजरात जाते समय आबू पर्वत के समीप चौलुक्यवंशीय शासक मूलराज से मुहम्मद गौरी को बुरी तरह परास्त होना पड़ा, जिससे वह पुनः गजनी भाग गया.
- मुहम्मद गौरी ने राजपूताना में प्रवेश नहीं करने का निर्णय लेकर 1179 ई. में पेशावर पर अधिकार करते हुए लाहौर के खुसरो मलिक मुहम्मद पर विजय प्राप्त कर 1186 ई. में उसने पंजाब पर अधिकार कर लिया.
- लाहौर को केन्द्र बनाकर 1189 ई. में मुहम्मद गौरी ने भटिण्डा के दुर्ग को जीता. उस दौरान भटिण्डा का शासन पृथ्वीराज तृतीय के पास था. तराईन के प्रथम युद्ध (1191 ई.) में पृथ्वीराज तृतीय ने गौरी को बुरी तरह परास्त कर भागने पर मजबूर कर दिया और भटिण्डा पर पृथ्वीराज तृतीय ने पुनः अधिकार कर लिया.
- 1,20,000 सैनिकों, 10,000 घुड़सवार धनुर्धरों के साथ मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज पर आक्रमण किया था. 150 राजपूत राजाओं ने पृथ्वीराज को इस युद्ध में सहयोग दिया कन्नौज के राजा जयचन्द के अतिरिक्त लगभग 3,00,000 सैनिकों के साथ पृथ्वीराज तृतीय ने 1192 ई. में तराईन के द्वितीय युद्ध में मुहम्मद गौरी मुहम्मद के साथ युद्ध किया. इस युद्ध में पृथ्वीराज बुरी तरह पराजित होकर भाग गया.
- तराईन के युद्ध के बाद मुहम्मद गौरी ने हाँसी, समाना, मेरठ, कोयल (अलीगढ़) और सरस्वती पर अधिकार कर दिल्ली को अपनी राजधानी बना लिया.
- 1194 ई. में मुहम्मद गौरी ने कन्नौज पर आक्रमण किया. वहाँ के शासक जयचन्द्र के साथ चन्दावर का युद्ध हुआ, जिसमें जयचन्द्र मारा गया. उसके पुत्र हरिश्चन्द्र को अधीनस्थ बनाकर बनारस पर आक्रमण करते हुए गौरी गजनी चला गया.
- गौरी 1195 ई. में भारत आया तथा बयाना एवं ग्वालियर पर दिल्ली की दक्षिणी सीमा को सुरक्षित करने के उद्देश्य से अधिकार कर लिया.
- अन्तिम रूप से 1205 ई. में मुहम्मद गौरी भारत खोखरो को नियन्त्रित करने आया था, लेकिन 1206 में लौटते समय रास्ते में उसे मार दिया गया.

अलबेरूनी का भारत विवरण

1200 ई. के काल का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत अलबेरूनी का भारत विवरण है. अलबेरूनी 1017 ई. महमूद गजनवी द्वारा ख्वारिज्म पर आक्रमण कर युद्धवन्दी के रूप में गजनी लाया गया था.

अलबेरूनी : सम्पूर्ण जानकारी

1. वास्तविक नाम	अबुरैहान मुहम्मद इब्न अहमद
2. प्रसिद्ध नाम	अलबेरूनी या अलबिरूनी
3. जन्म	मध्य एशिया में ख्वारिज्म (खींवा) में
4. जन्म तिथि	973 ई.
5. निवासी	मूलतः ईरान का
6. संरक्षण	प्रारम्भ में ख्वारिज्म के मैमुनिद वंश के संरक्षण में रहा था.
7. अन्य संरक्षण	जुरजान (कैस्पियन सागर के दक्षिण पूर्व में स्थित) में शम्सुल माली कबुस बासमगीर के दरबार में
8. प्रथम पुस्तक	अथरूल बाकियाँ–अल-कुरून अल-खालिया (वासमगीर को समर्पित)
9. भारत में प्रवेश	युद्धबंदी के रूप में गजनवी द्वारा लाया गया.
10. अधिकांश समय बिताया	गजनी में.
11. गजनी में भारत के लिए लिखी पुस्तक	किताबुल हिन्द या तहकीके हिन्द
12. तहकीक-ए-हिन्द का रचनाकाल	लगभग 1030 ई. में.
13. प्रमुख विशेषताएँ	1. ख्वारिज्मी, हिब्रू, सिरिक, संस्कृत, ग्रीक, अरबी एवं फारसी भाषा का ज्ञाता था. 2. वह प्रसिद्ध विद्वान था.
14. किताबुल हिन्द के सम्बन्ध में विवरण	1. किताबुल हिन्द में 80 अध्यायों और कई उपअध्यायों में विभक्त थी. 2. 11वीं शताब्दी के भारतीय सामाजिक जीवन पर विशिष्ट विवरण वर्णित है. 3. महमूद गजनवी के सम्बन्ध में क्षणिक उल्लेख मिलता है.
15. मृत्यु	75 वर्ष की उम्र में

अलबेरूनी का विवरण

हिन्दू धर्म की स्थिति

- अलबेरूनी के किताबुल-हिन्द या तहकीक-ए-हिन्द में वर्णित विवरण के अनुसार पूर्व मध्यकालीन भारत में हिन्दू-मुस्लिम धर्म से पूरी तरह भिन्न थे. इसका एकमात्र कारण संस्कृत भाषा थी. हिन्दू धर्म का शिक्षित और अशिक्षित वर्ग, सामान्य लोग संस्कृत भाषा बोलते थे, जबकि मुस्लिम धर्म के लोग इससे अपरिचित थे.
- विदेशियों को तत्कालीन भारत में मलेच्छ माना जाता था. खान-पान, विवाह एवं अन्य सामाजिक सम्पर्क विदेशियों के साथ नहीं होते थे. विदेशियों के सम्पर्क में आने वाली हर वस्तु को भारतीय दूषित एवं अपवित्र मानते थे.
- भारतीय हिन्दू धर्म स्वीकारने करने पर किसी को भी सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार नहीं था.
- अलबेरूनी के अनुसार हिन्दू-मुसलमानों के नाम से अपने बच्चों को डराया करते थे.
- अलबेरूनी के अनुसार–"हिन्दुओं में यह दृढ़ विश्वास है कि उनके देश के समान और कोई देश नहीं हैं, कोई ऐसा राष्ट्र नहीं हैं. कोई राजा उनके राजा के समान नहीं हैं तथा अन्य कहीं भी विज्ञान उनके विज्ञान के समान नहीं हैं."
- अलबेरूनी के एक अन्य कथन के अनुसार–"भारतीयों के पूर्वज इतने संकीर्ण विचारों के नहीं थे, जितनी वर्तमान पीढ़ी है, भारतीय घमण्डी और आत्माभिमानी हैं."

वर्ण व्यवस्था

- अलबेरूनी के अनुसार तत्कालीन भारतीय समाज चार वर्णों में विभक्त था. ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ होते थे. ब्रह्मा के सिर से उनकी उत्पत्ति मानी जाती थी. हिन्दू उनको मानव जाति में सबसे अच्छा मानते थे.
- अलबेरूनी के अनुसार क्षत्रियों की उत्पत्ति ब्रह्मा के कन्धे और भुजाओं से हुई थी. ब्राह्मण और क्षत्रिय उसके समय में लगभग समान स्थिति में थे. वैश्यों की उत्पत्ति ब्रह्मा की जांघ से तथा शूद्रों की उत्पत्ति ब्रह्मा के पैरों से हुई थी. शूद्र और वैश्य पूरी तरह समान थे. सराय, घर, गाँव, शहर में शूद्र और वैश्य एक साथ रहते थे.
- अलबेरूनी के अनुसार तत्कालीन भारतीय समाज में शूद्रों से निम्न वर्ग एक ओर था, जिसे 'अन्त्यज' कहा जाता था. उन्हें जाति और वर्ण से मुक्त रखा गया था. अन्त्यजों को आठ श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था. चर्मकार जुलाहा के अतिरिक्त टोकरी बुनने वाले, बाजीगर मछुआरे शिकारी इत्यादि वैवाहिक सम्बन्ध करते थे. चार वर्णों के लोग इनसे दूर रहते थे. अन्त्यज गाँव और नगर से बाहर रहते थे.
- अलबेरूनी के अनुसार–हादी, डोम, चाण्डाल, बड़हातू की गणना किसी भी व्यावसायिक संघ या जाति में नहीं होती थी. उनको सामान्यतः शूद्र पिता और ब्राह्मणी माता से उत्पन्न माना जाता था. वे अलग वर्ग में माने जाते थे और गाँव की सफाई का कार्य करते थे.
- इशीन, अग्निहोत्री, दीक्षित–ब्राह्मणों के वर्ग होते थे. विशिष्ट व्यवसाय के आधार पर लोगों का नामकरण होता था.
- डोम बाँसुरी बजाते थे और गाना गाते थे. बड़हातू नीची जातियों में सबसे निम्न श्रेणी के होते थे. बड़हातू मरे जानवर एवं कुत्तों का माँस खाते थे. 'हादी' नामक वर्ग गन्दे कार्य नहीं करते थे.
- चारों वर्णों के लोग अलग-अलग समूहों में खाना खाते थे. हिन्दू अवशिष्ट भोजन ग्रहण नहीं करते थे. ब्राह्मण और क्षत्रिय मोक्ष के अधिकारी होते थे.
- अलबेरूनी के अनुसार सात वर्ष की उम्र के बाद ब्राह्मणों का जीवन निम्नलिखित चार भागों में वर्गीकृत था–
  (1) आठ से पच्चीस वर्ष तक–वैदिककालीन ब्रह्मचर्याश्रम के अनुसार आचरण किया जाता था.
  (2) पच्चीस से पचास वर्ष तक–वैदिककालीन गृहस्थाश्रम के अनुसार आचरण किया जाता था.
  (3) पचास से पचहत्तर वर्ष तक–वैदिककालीन संन्यास आश्रम के अनुरूप आचरण होता था.
  (4) पचहत्तर से मृत्यु तक–वैदिककालीन वानप्रस्थ आश्रम के अनुरूप आचरण किया जाता था.
- अलबेरूनी के अनुसार दया, दान देना और लेना अध्ययन, अध्यापन और यज्ञ करना ब्राह्मणों का प्रमुख कर्त्तव्य होता था. ब्राह्मण पूर्व दिशा में होकर सारे कार्य करते थे. केवल अशुभ कार्य दक्षिण दिशा की तरफ होकर किये जाते थे. लहसुन, प्याज, कद्दू, क्रंच, नली का सेवन ब्राह्मणों के लिए वर्जित था. ब्राह्मणों का उत्तर में सिन्धु नदी से दक्षिण में चमर्णवती नदी के मध्य निवास करना आवश्यक था.
- अलबेरूनी क्षत्रियों का उल्लेख करता था, लेकिन राजपूतों का नहीं. उसके अनुसार क्षत्रिय वेदपाठ करते थे. वेदों की शिक्षा देना उनका कार्य नहीं था. क्षत्रिय एक धागे का यज्ञोपवीत धारण करते थे.

- अलबेरूनी की 'तहकीक-ए-हिन्द' के अनुसार वैश्यों का मुख्य कार्य पशुपालन, ब्राह्मण सेवा तथा कृषि कार्य होता था. शूद्र ब्राह्मणों के सेवक होते थे. वैश्य दो धागों का यज्ञोपवीत तथा शूद्र यज्ञोपवीत के रूप में मलमल का वस्त्र धारण करते थे.
- वेद का पाठ करना, अग्नि को आहुति देना, प्रार्थना करना शूद्रों के लिए वर्जित कर्म था.
- वैश्य और शूद्र द्वारा वेद का उच्चारण करने पर राजा की आज्ञा से उनकी जीभ काट ली जाती थी.
- ब्राह्मणों को दान देने, तपस्या करने का अधिकार शूद्र एवं वैश्य दोनों वर्णों को था.
- चाण्डालों के अलावा सभी गैर-हिन्दुओं को मलेच्छ कहा जाता था.
- निश्चित व्यवसाय से अलग कार्य करना पाप माना जाता था.

अलबेरूनी द्वारा वर्णित अन्य सामाजिक नियम

- तत्कालीन समाज में भेड़, बकरी, खड़हा, गैंडा, भैंस, गोरैया, पंडुक, कबूतर तथा मोर का मांस तथा मछली खाई जाती थी. गाय, घोड़ा, गदहा, खच्चर, ऊँट, हाथी, कौआ, तोता, बुलबुल का माँस तथा अण्डा खाना प्रतिबन्धित था. शूद्र शराब पी सकते थे, लेकिन माँस और शराब की बिक्री नहीं कर सकते थे. सामान्य लोग शराब नहीं पी सकते थे. पान सुपारी का प्रचलन था. राजा भरत के समय से हिन्दू और ब्राह्मणों ने माँस खाना बन्द कर दिया था.

विवाह-सम्बन्धी नियम

- हिन्दुओं का कम उम्र में विवाह होता था. तलाक, दहेज प्रथा प्रचलित नहीं थी. विवाह अभिभावक निश्चित करते थे. पत्नी को पति द्वारा उपहार दिया जाता था, जो स्त्रीधन कहलाता था.
- एक व्यक्ति चार विवाह कर सकता था. सती प्रथा का प्रचलन था. पुनर्विवाह वर्जित था. संतान वाली एवं अधिक उम्र की स्त्री के लिए सती होना आवश्यक नहीं था. सती प्रथा राजघरानों में अधिक होती थी. रक्त सम्बन्धों में हिन्दुओं में विवाह नहीं होता था. ब्राह्मण को चार, क्षत्रिय को तीन, वैश्य को दो, शूद्र को एक स्त्री से विवाह करने की अनुमति थी.
- अपनी जाति या नीची जाति की स्त्री से विवाह करने का नियम था. गर्भाधान, जातकर्म, नामकरण संस्कार का प्रचलन था. ब्राह्मणों को किसी भी जाति से विवाह करने की छूट थी.

मृत्यु-सम्बन्धी नियम

- अलबेरूनी के अनुसार शव को स्नान कराना, कफन और चन्दन तथा अन्य लकड़ियों के साथ जलाना, मृत व्यक्ति के उत्तराधिकारी का प्रमुख कर्त्तव्य था. जलने के बाद बचे हुए भाग को गंगा में बहाना पड़ता था. इसके पीछे नरक से मुक्ति एवं स्वर्ग प्राप्ति का तर्क था.
- मृत व्यक्ति के स्मारक बनाने, तीन वर्ष से कम उम्र के बच्चे को नहीं जलाने की प्रथा थी. ब्राह्मणों के लिए आत्मदाह करना कानूनी अपराध था. वैश्य और शूद्र आत्मदाह कर सकते थे.
- क्षत्रिय और ब्राह्मण संगम में ग्रहण के समय कूदकर आत्महत्या कर लेते थे.

उपवास-सम्बन्धी नियम

- एकनक्त, पारक क्रिछड चन्द्रायन, मासवास प्रमुख उपवास होते थे. अलबेरूनी के अनुसार विभिन्न मासों में उपवास से निम्नलिखित कार्यसिद्धि होती थी–
  1. चैत्र में उपवास करने से–धन प्राप्ति.
  2. वैशाख में उपवास करने से–शासन अधिकार प्राप्ति.
  3. ज्येष्ठ में उपवास करने से–स्त्री प्रेम की प्राप्ति.
  4. आषाढ़ में उपवास करने से–धन प्राप्ति.
  5. श्रावण में उपवास करने से–बुद्धि की प्राप्ति.
  6. भाद्रपद में उपवास करने से–धन प्राप्ति, शक्ति प्राप्ति तथा पशुधन में वृद्धि होती थी.
  7. आसौज में उपवास करने पर–शत्रु पर विजय प्राप्ति.
  8. कार्तिक में उपवास करने पर–मनोकामना की पूर्ति.
  9. मार्गशीर्ष में उपवास करने पर–सुन्दर, उपजाऊ प्रदेश में जन्म.
  10. पौष में व्रत करने पर–उच्च प्रतिष्ठा की प्राप्ति.
  11. माघ में उपवास करने पर–विपुल धन की प्राप्ति.
  12. फाल्गुन में उपवास करने पर–अन्य लोगों के प्यार की प्राप्ति.
- अलबेरूनी के अनुसार पूरे वर्ष तक सिर्फ व्यूह उपवासों को तोड़ने के पश्चात्त उपवास करने पर 10,000 वर्षों तक स्वर्ग की प्राप्ति होती थी तथा उच्चकुल में जन्म होता था.
- अलबेरूनी के अनुसार तत्कालीन भारत में बनारस, मथुरा, थानेश्वर (कुरूक्षेत्र), कश्मीर, मुलतान प्रमुख धार्मिक तीर्थस्थल थे.

प्रमुख त्यौहार एवं प्रथाएँ

- अलबेरूनी द्वारा वर्णित हिन्दुओं के प्रमुख त्यौहार निम्नलिखित थे–

मास	त्यौहार
चैत्र का दूसरा दिन	— कश्मीर में तुर्कों की विजय के उपलक्ष्य में
चैत्र का ग्यारहवाँ दिन	— हिण्डोला चैत्र
चैत्र की पूर्णिमा के दिन	— वहन्द उत्सव (स्त्रियों के लिए)
चैत्र के 22वें दिन	— चैत्र षष्ठी
वैशाख के तीसरे दिन	— गौरी तृतीया
वैशाख का आठवाँ दिन	—
ज्येष्ठ का पहला दिन	—
आसीज के आठवें दिन	— महानवमी
भाद्रपद में	— पितृपक्ष
कार्तिक की प्रतिपदा को	— बलिराज (दिवाली)
फाल्गुन की पूर्णिमा को	— ढोला (होली)
फाल्गुन के सोलहवें दिन	— शिवरात्रि

- हिन्दुओं के लिए शरीर के बाल कटाना मना था. मूँछ और लम्बे नाखुन हिन्दू रखते थे. खाने का स्थान गोबर से पुता होता था. एक-एक कर खाना खाते थे. जूठा भोजन नहीं किया जाता था एवं थाली का प्रयोग नहीं होता था.
- अलबेरूनी के अनुसार हिन्दू गोमूत्र पीते थे, लेकिन गोमांस नहीं खाते थे. मिट्टी की थाली का प्रयोग करते थे.
- पुरुष भुजबन्द, अंगूठी एवं कान की बाली पहना करते थे. बिना जीन के घोड़े पर सवार होते थे.
- अलबेरूनी के अनुसार पाराशर के पुत्र व्यास ने हिन्दुओं की वर्णमाला आविष्कृत की थी, जिसमें 50 अक्षर थे.
- अलबेरूनी द्वारा वर्णित वर्णमालाएँ निम्नलिखित थीं–

नाम वर्णमाला	प्रचलित प्रदेश
1. सिद्धमातृका वर्णमाला	बनारस, मध्यदेश, कन्नौज, कश्मीर
2. नागर लिपि	मालवा
3. अर्द्धनागरी लिपि	भाटिया और सिन्ध में
4. मालवाड़ी लिपि	दक्षिण सिन्ध में
5. सैन्धव लिपि	अल-मंसुरा में
6. कर्णाट लिपि	कर्णाट देश में
7. आंध्री लिपि	आन्ध्रप्रदेश में
8. द्राविड़ लिपि	द्रविड़ देश में
9. लारी लिपि	लाट देश में
10. गौड़ी लिपि	पूर्व देश में
11. भीक्षुकी लिपि	बौद्ध द्वारा व्यवहृत लिपि

- दक्षिण भारत के हिन्दू ताड के पत्ते पर तथा उत्तरी भारत के हिन्दू भोजपत्र पर लिखते थे.
- अलबेरूनी के अनुसार हिन्दू पुस्तकों का शीर्षक प्रारम्भ में न लिखकर अन्त में लिखते थे.
- अलबेरूनी ने अपने वर्णन में सिन्धु, सरस्वती, गोमती, गण्डकी, झेलम, व्यास, शुतुद्री, गंगा तथा सरयू नदियों को समाहित किया है.
- कल्प, मन्वंतर, चतुर्युग, कलियुग, विक्रम सम्वत्, शक सम्वत्, वल्लभ सम्वत्, गुप्त सम्वत्, हर्ष सम्वत् का उल्लेख अलबरूनी ने 'तहकीक-ए-हिन्द' में किया है.
- उत्तराधिकार, सम्पत्ति सम्बन्धी नियम, अपराध और दण्ड विधान मूर्तिपूजा, मुहूर्त, शुभ-अशुभ दिन, गणित, चिकित्सा, दर्शनशास्त्र, रसायन, ज्योतिषशास्त्र पर भी अलबेरूनी ने विशुद्धता से वर्णन किया है.

दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश

राष्ट्रकूट

- राष्ट्रकूटों का आविर्भाव वातापी के चालुक्य राज्य के अवशेषों पर हुआ था. आठवीं शताब्दी में यह स्थापित हुआ था और दो सौ वर्षों तक दक्षिण भारत की राजनीति में इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होता था.
- प्रो. अल्टेकर ने अशोक के अभिलेख में वर्णित 'रठिकों' को राष्ट्रकूटों का वंशज माना है, जिनको सातवाहन अभिलेखों में 'महरठियों' का नाम दिया गया है.
- कुछ विद्वानों के अनुसार राष्ट्रकूट 'यादव' या तेलुगुरेडी वंश से सम्बन्धित थे.
- डॉ. फ्लीट के अनुसार राष्ट्रकूट उत्तरी भारत के राठौड़ क्षत्रिय या उनसे सम्बन्धित वर्ग के थे.
- कुछ इतिहासकारों के अनुसार राष्ट्रकूट (राष्ट्र के शासक) आन्ध्र प्रदेश के किसान थे, जो कालान्तर में राष्ट्रपति बन गये और उन्हें राष्ट्रकूट कहा जाने लगा.
- राष्ट्रकूट अभिलेखों में लट्टलूर (लाटूर, बीदर) इनका आदि निवास स्थान बताया गया है.
- राष्ट्रकूटों ने एलिचपुर (बरार) में अपनी सत्ता स्थापित की थी.

राष्ट्रकूट वंश के प्रमुख शासक

	नाम शासक	शासनकाल	सम्बन्धित जानकारी
1.	दन्तिदुर्ग	735-755 ई.	राष्ट्रकूटों का प्रथम महान शासक. राष्ट्रकूटों का स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने वाला शासक. वातापी के चालुक्यवंशीय शासक कीर्तिवर्मन को परास्त किया और राष्ट्रकूटों को स्वतन्त्र किया. मान्यखेट उसकी राजधानी थी. दशावतार गुहालेख, समनगढ़ ताम्रलेख प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत थे. काँची, कलिंग, कोशल, श्रीशैल मालवा, लाट, टंक के राजाओं को परास्त किया था. परमेश्वर, परमभट्टारक महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी. पृथ्वीवल्लभ के नाम से विख्यात था. दन्तिदुर्ग ने उज्जयिनी में हिरण्यगर्भ महायज्ञ किया था.
2.	कृष्ण प्रथम	756-772 ई.	दन्तिदुर्ग का चाचा. चालुक्य शासक कीतिवर्मन को परास्त कर 760 ई. में चालुक्यों की सत्ता का अन्त कर दिया. वेंगी के चालुक्य एवं मैसूर के गंग शासकों को परास्त किया. राहप्प को हराकर दक्षिणी कोंकण पर अधिकार कर लिया था. एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर का निर्माण कराया था. मध्य प्रदेश के सम्पूर्ण मरहठी प्रदेश तथा समस्त हैदराबाद पर अधिकार कर लिया था.
3.	गोविन्द II	773-780 ई.	अत्यन्त अयोग्य शासक था. उसके भाई ने सत्ता छीनकर स्वयं शासक बन गया था.
4.	ध्रुव	780-793 ई.	गोविन्द द्वितीय से सत्ता छीनकर शासन सँभाला. दक्षिण भारत में सत्ता का विस्तार किया. गंगराजा श्री पुरुष मुत्तरस को परास्त कर सम्पूर्ण गंगवाड़ी पर अधिकार कर लिया. दक्षिणी सीमा कावेरी नदी तक फैल गई. पल्लवों एवं वेंगी के चालुक्यों ने मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये. मालवा, कन्नौज पर अधिकार किया. उसने धर्मपाल (पाल शासक) एवं वत्सराज (प्रतिहार शासक) को परास्त किया था.
5.	गोविन्द तृतीय	783-814 ई.	राष्ट्रकूटों का सर्वोत्कृष्ट शासक. पल्लव शासक दन्तिवर्मन को गुलाम बनाया. कन्नौज के लिए गुर्जर प्रतिहार शासक नागभट्ट को पराजित किया. चक्रायुध एवं धर्मपाल को अधीनता स्वीकार करवाई. मालवा, कोशल, कलिंग, बंग, डाहल, प्रक पर अधिकार किया तथा हिमालय तक सैनिक अभियान किये. पल्लव, पाण्डय, केरल और गंग राजाओं के संघ को 802 ई. में नष्ट कर एकछत्र साम्राज्य स्थापित किया. विन्ध्य घाटी में कई मन्दिरों का निर्माण कराया. सिंहल नरेश से मित्रता कर सौहार्द्र कायम किया.
6.	अमोघवर्ष I	814-878 ई.	राष्ट्रकूटों का अन्तिम महान शासक. कर्क संरक्षक था. छोटी उम्र में शासक बना. कर्क के संरक्षण में चालुक्य राजा विक्रमादित्य को परास्त किया. गंग एवं वेंगी शासकों से युद्ध किया. अमोघवर्ष I विद्वानों का सम्मान करने वाला था. उसने स्वयं ने कन्नड़ भाषा में प्रश्नोत्तर मालिका, कविराज मार्ग की रचना की थी. वह जैन मतावलम्बी था. जिनसेन ने हरिवंश तथा महावीराचार्य ने गणित सारसंग्रह इसी के काल में लिखा था.
7.	कृष्ण II	878-914 ई.	वेंगी के चालुक्य राजा भीम को परास्त किया. चोलों एवं गुर्जरों ने उसे परास्त किया. इससे अधिक ऐतिहासिक स्रोतों में उल्लेख नहीं किया गया है.
8.	इन्द्र तृतीय	914-917 ई.	तीनों नाममात्र शासक थे. इनके समय से राष्ट्रकूटों की सत्ता का अन्त होना शुरू हो गया था.
9.	गोविन्द चतुर्थ	927-936 ई.	
10.	अमोघवर्ष III	936-939 ई.	
11.	कृष्ण तृतीय	939-967 ई.	राष्ट्रकूटों की क्षीण शक्ति को पुनर्स्थापित किया. गंगों की सहायता से चोलों को परास्त किया. तंजौर एवं राँची पर आक्रमण किया. पेंगी और उज्जयिनी पर शासन फैलाया. कृष्ण तृतीय ने रामेश्वरम् तक अपना प्रभाव स्थापित किया. गुर्जर राजा महिपाल को हराकर सौराष्ट्र पर अधिकार किया. चोल शासक राजादित्य को परास्त कर तोलमण्डलम पर अधिकार किया. उसने तंजैयस्कोंड की उपाधि धारण की थी . पाण्ड्य, केरल, सिंहल नरेशों पर विजय प्राप्त की. शान्तिपुराण की रचना उसके काल में ही कन्नड़ कवि पोन्न ने की थी. गण्डमार्तण्डादिव्य और कृष्णेश्वर के मन्दिर रामेश्वरम् में कृष्णा तृतीय ने निर्माण कराये थे. अकाल वर्ष की उपाधि राज्यारोहण के समय धारण की थी.
12.	खोटिक	967-972 ई.	वह अत्यधिक निकम्मा शासक था. सियक परमारों ने राष्ट्रकूटों की राजधानी पर आक्रमण कर दिया और लूटकर उसके शासन को छिन्न-भिन्न कर दिया.
13.	कर्क	972-975 ई.	राष्ट्रकूटों का अन्तिम शासक था. इसके काल में राष्ट्रकूटों के सामंत तैलप ने राष्ट्रकूटों की सत्ता को समाप्त कर 975 ई. कल्याणी के चालुक्य वंश की स्थापना की.

- राष्ट्रकूटों के शासनकाल में कुमारिल, वाचस्पति, कात्यायन, अंगिरस, हलायुध, विद्यानन्द, अवलक, जिनसेन, हरिवेण, प्रभाचन्द, गुणचन्द, सोमदेव इत्यादि प्रमुख विद्वान थे.
- राष्ट्रकूटकालीन प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ निम्नलिखित थीं–

रचना	रचनाकार
1. आदिपुराण	पम्प
2. विक्रमार्जुनविजय	पम्प
3. शान्तिपुराण	पोन्न
4. अजितपुराण	रन्न
5. हरिवंश	जिनसेन
6. नीतिवाक्यामृत	सोमदेव
7. यशस्तिलक चम्पू	सोमदेव
8. नलचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट
9. कविराज मार्ग	अमोघवर्ष प्रथम
10. कविरहस्य	हलायुध
11. श्लोकवार्त्तिका	कुमारिल
12. तन्त्रवार्तिका	कुमारिल
13. तुप्तिका	कुमारिल
14. न्याय कणिका	वाचस्पति

- राष्ट्रकूटों के काल में जैन, बौद्ध एवं ब्राह्मण तीनों धर्मों का प्रचलन था. ब्राह्मण धर्म के अन्तर्गत विष्णु, शिव, आदित्य, लक्ष्मी, पाण्डूरंग इत्यादि देवताओं की पूजा होती थी–

  कपास, ज्वार, चावल, नारियल, सुपारी, राष्ट्रकूट काल की प्रमुख फसलें थी. मुद्रा का प्रचलन नहीं था.

चोल वंश

चोल वंश के शासक

- मेगस्थनीज की इण्डिका एवं अशोक के अभिलेख में चोलों का उल्लेख किया गया है.
- चोलवंश का आविर्भाव तीसरी शताब्दी ई. में (संगम युग) में ही हो गया, लेकिन छठी शताब्दी ई. तक उनकी सत्ता समाप्त हो गई, जो पुनः 9वीं शताब्दी में विजयालय (871-907 ई.) नामक शासक ने स्थापित की. उसने तंजौर पर आक्रमण कर 'नरकेसरी' की उपाधि धारण की थी. उल्लेखनीय है कि वह पल्लव सामन्त था.
- चोल राष्ट्र पेन्नार और कावेरी नदियों के मध्य पूर्वी समुद्री तट पर अवस्थित था. चोल वंश के प्रमुख शासक अग्रांकित थे–

विजयालय (850-873 ई.)

- विजयालय पल्लव सामन्त था, लेकिन स्थिति को देखकर उसने तंजौर पर अधिकार कर लिया तथा चोल वंश की स्थापना की. उसका शासन काल 850-871 ई. था. उसने इस विजय पर 'नरकेसरी' की उपाधि धारण की थी.

आदित्य प्रथम (871-907 ई.)

- विजयालय का उत्तराधिकारी बनकर आदित्य प्रथम (871-907 ई.) ने शासन का कार्यभार संभाला था. आदित्य प्रथम ने पल्लव-पाण्ड्य संघर्ष में पल्लवों का साथ दिया था. पल्लव राजा अपराजित को हराकर सारे तोण्डमण्डलम पर उसने अधिकार कर लिया. पश्चिमी गंग एवं पाण्डय राजाओं को परास्त किया. आदित्य के काल में दक्षिण भारत में तजौंर प्रमुख शक्तिशाली केन्द्र बन गया.

परांतक प्रथम (907 ई. से 953 ई.)

- परान्तक आदित्य का पुत्र था, जिसने 907 ई. से 953 ई. तक चोल वंश पर शासन किया था. पाण्डय एवं सिंहल की सम्मिलित सेना को 915 ई. में वैल्लुर के युद्ध में परास्त कर परान्तक प्रथम ने मदुरा पर स्थायी रूप से आक्रमण कर लिया था. इसी उपलब्धि के कारण उसने मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण की. दो वाण राजाओं, वैडुम्बो तथा राष्ट्रकूटों को हराया. राष्ट्रकूट शासक कृष्ण II को हराकर पैनर नदी के दक्षिण भाग पर आक्रमण कर लिया. कृष्ण तृतीय से उसे परास्त होना पड़ा. 949 ई. में तक्कोलम के युद्ध में उसे भारी हानि उठानी पड़ी.

राजराज प्रथम (985 से 1014 ई.)

- चोल शक्ति का पुनर्स्थापन राजराज प्रथम (985 से 1014 ई.) ने किया था. उसके राज्यारोहण को 'चोल इतिहास की महत्ता का युग' कहा जाता है. केरल एवं गंगवासी शासकों को उसने बुरी तरह से पराजित किया. कुर्ग, मालाबार तट, सिंहलद्वीप एवं मदुरा पर विजय प्राप्त की थी. लक्षद्वीप, मालद्वीप समूह, कलिंग और चालुक्य राज्य पर उसने अधिकार कर लिया था. वेंगी और श्रीविजय साम्राज्य के राजाओं से मित्रता स्थापित की. तंजौर का राजराजेश्वर (शिवमन्दिर) उसके द्वारा निर्माण कराया गया था. वह उदार, कलावान, सहिष्णु एवं विद्वानों का संरक्षक था.

राजेन्द्र चोल (राजेन्द्र प्रथम 1014 से 1044 ई.)

- राजेन्द्र प्रथम 1014 से 1044 ई. चोलों का दूसरा शक्तिशाली एवं प्रतापी शासक था. वह राजराज प्रथम

का पुत्र था तथा उसे राजेन्द्र चोल के नाम से भी जाना जाता था. उसके पास सुदृढ़ जल एवं थल सेना थी. चालुक्यों पर विजय प्राप्त की तथा कदम्बों की राजधानी वनवासी पर आक्रमण किया. राज्याभिषेक के 5वें वर्ष में सम्पूर्ण लंका पर उसने एकाधिकार कर लिया था. पाण्ड्य, चेर, कलिंग, ओड्र के शासकों पर उसने विजय प्राप्त की थी. पाल शासक महीपाल को भी उसने परास्त किया था. गगैंकोण्डचोल उसकी उपाधि थी जिसको उसने इन विजयों की प्राप्ति के बाद धारण की थी. चिदम्बरम् के पास राजेन्द्र प्रथम ने अपनी राजधानी स्थापित की उसका नामकरण 'गगैंकोण्डचोलपुरम्' किया गया था. बंगाल के गंगाजल से इस नगर को शुद्ध किया गया था. 'चोलगंगम' नामक तालाब का निर्माण उसी ने कराया था. जावा, सुमात्रा, मलय प्रायद्वीप पर विशाल जल सेना के साथ आक्रमण करना एवं श्री विजय पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त करना उसके शासन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी.

राजेन्द्र चोल के उत्तराधिकारी एवं चोल साम्राज्य का पतन

- राजेन्द्र चोल के पश्चात्त राजाधिराज (1044-1052 ई.) राजेन्द्र द्वितीय (1052 से 1064 ई.), वीर राजेन्द्र (1064-1069 ई.) एवं अधिराजेन्द्र (1069-) शासक बने. सभी अयोग्य शासक थे. चालुक्यों और स्वयं के आन्तरिक संघर्ष के फलस्वरूप चोलवंश का अन्त हो गया.

चोल-चालुक्य वंश

- चोलों की मुख्य धारा के समाप्त होने के पश्चात्त चालुक्यवंशीय शासकों के सहयोग से चोल चालुक्य वंश का उदय हुआ जिसे चोल-चालुक्य वंश कहा गया. इस वंश का प्रथम शासक कुलोत्तुंग था, जो चोलवंशीय राजेन्द्र का बहनोई तथा स्वयं चालुक्य वंश का था. उसने 1070 से 1120 ई. तक चोल चालुक्य वंश पर शासन किया था. उसने चोलों की शक्ति को पुनर्स्थापित की थी. लंका, कन्नौज, कम्बोज, चीन के शासकों से उसने मित्रता की थी. कुलोत्तुंग ने पाण्ड्य, केरल पर विजय प्राप्त की. होयसल, कलिंग शासकों के साथ संघर्ष किया था. वेंगी के चालुक्य वंश को इसी काल में चोल वंश में सम्मिलित किया गया था. 1077 ई. में उसने 92 व्यक्तियों का प्रतिनिधि मण्डल भेजकर चीन के साथ व्यापारिक सम्पर्क स्थापित किये थे.
- कुलोत्तुंग के बाद विक्रम चोल (1122-1135 ई.), कुलोत्तुंग द्वितीय (1135-1150 ई.), राजराज द्वितीय (1150-1173 ई.), राजाधिराज द्वितीय (1173-1182 ई.), कुलोत्तुंग तृतीय (1182 से 1217), राजराज तृतीय (1216 से 1250 ई.), राजेन्द्र तृतीय (1250 से 1279 ई.) प्रमुख चोल-चालुक्य वंश के शासक बने थे.
- 1256 ई. में सुन्दर पाण्ड्य ने अन्तिम चोल राजा राजेन्द्र तृतीय को हराकर चोलों की स्वतन्त्र सत्ता का अन्त कर दिया.
- चोल चालुक्य वंश के विक्रम चोल (1122-1135 ई.) का शासनकाल सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रहा. उसने चिदम्बर के नटराज मन्दिर का विस्तार कराया, प्रदशिक्षा पथ को स्वर्ण जटित बनाया, शिखर और परिवेष्टनी का निर्माण कराया था.
- विक्रमचोल ने गोविन्द राज की वैष्णव मूर्ति को समुद्र में फेंक दिया था.

चोल वंश की देनें

चोलों की प्रशासनिक व्यवस्था

- चोल साम्राज्य में केन्द्रीय प्रशासन का सर्वोपरि अधिकारी राजा होता था. उसकी स्थिति प्रतिष्ठापूर्ण थी. राजपद वंशानुगत होता था. ज्येष्ठ पुत्र उत्तराधिकारी होता था.
- युवराज प्रशासन का महत्त्वपूर्ण अंग होता था. राजा मन्त्रियों एवं अनेक पदाधिकारियों की सहायता से शासन करता था. सरकारी पदाधिकारियों को वेतन के बदले भूमि प्रदान की जाती थी. न्याय व्यवस्था को राजा ही देखता था.
- चोलों के पास हस्तिदल, अश्वारोही, पैदल सैनिकों की टुकड़ियाँ होती थीं. चोलों के पास एक विशाल जलवेडा भी था. चोलों की सेना में अरबी घोड़े होते थे. सैनिकों को प्रशिक्षण दिया जाता था तथा शिविरों (जिन्हें कड़गम या पडैविडु कहा जाता था) में रखा जाता था. चोलों की सेना में 1,50,000 पैदल सैनिक तथा 60,000 हस्तिदल होते थे. चोल सम्राट अंगरक्षकों की एक टुकड़ी रखते थे, जिन्हें वैडेक्कार कहा जाता था.
- नायक, सेनापति, महादण्डनायक सेना व्यवस्था के लिए प्रमुख पदाधिकारी होते थे.
- 1/3 भाग भू राजस्व राजा लेता था. जमीन के सर्वेक्षण के पश्चात उपज के आधार पर लगान निश्चित किया जाता था. सिंचाई की व्यवस्था राजा द्वारा की जाती थी. बेगारी प्रथा का प्रचलन था. भूमिदान देने की प्रथा प्रचलित थी.
- सीमा शुल्क, भूमि कर, राहदारी, उद्योगकर, खदान एवं जंगल राज्य की आय के प्रमुख स्रोत थे. राजकीय आमदनी राजा, राजपरिवार, दरवार, सेना, प्रशासन पर खर्च की जाती थी.

- चोल साम्राज्य विभिन्न मण्डलों में बँटा हुआ था. मण्डल 7-8 थे और नाडु, कुर्रम में विभक्त थे. गाँव सबसे छोटी प्रशासन की इकाई होती थी. **उलर, सभा, महासभा, नाहुर**, उर स्थानीय स्वशासन के प्रमुख अंग थे.
- सभा ब्राह्मणों का संगठन था और उर साधारण सभा थी. नाट्टुर नाडुओं की समितियाँ, नगरत्तार व्यापारियों की समिति होती थी.
- चोलकालीन ग्राम 30 वार्डों में विभक्त होते थे, जिसमें निर्वाचित सदस्य होते थे. विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने के लिए महासभा द्वारा कई समितियाँ बनाई जाती थीं.

चोलकालीन समाज

- चोलकालीन समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित था. ब्राह्मण राजा के सहयोगी पुरोहित एवं समाज में सर्वश्रेष्ठ होते थे. क्षत्रिय ब्राह्मणों के संरक्षक तथा सैनिक व्यवस्था देखने वाले होते थे. व्यापारी एवं वर्ण-संकर जातियों का अस्तित्व था. देवदासी, दास प्रथा विद्यमान थी. स्त्रियों को सम्पत्ति एवं प्रशासन में भाग लेने का अधिकार था. सतीप्रथा एवं बहु विवाह का प्रचलन था. अनुलोम और प्रतिलोम विवाह का प्रचलन था. शैव एवं वैष्णव धर्म को चोल शासकों ने प्रोत्साहन दिया था.
- जीवन चिन्तामणि शूलमणि, कलिंगतुणणि, रामावतारम्, रसोलियम, कुण्डलकेशी, कल्लदम, नलवेम्ब, पेरियापुराणम् चोलों के शासन काल की प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ थी.
- चोलों ने द्रविड़ शैली में मन्दिरों का निर्माण कराया था. नरत्तमले का विजयालय, चोलेश्वर मन्दिर, श्रीनिवासनल्लूर, कोरण्डनाथ मन्दिरों का निर्माण चोल काल में ही हुआ था.
- 192 फीट (58·5 मीटर) ऊँचा मन्दिर चोल शासक राजराजेश्वर ने तंजौर में बनाया था. जिसे वृहदेश्वर या राजराजेश्वर मन्दिर के नाम से जाना जाता था. यह मन्दिर द्रविड़ शैली का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण था. ऐरावतेश्वर, त्रिभुवनेश्वर एवं गंगैकोण्डचोलपुरम् का मन्दिर अन्य चोलकालीन प्रमुख स्थापत्य कला एवं द्रविड़ शैली के उदाहरण थे.

निष्कर्ष–800 से 1200 ई. के काल में भारत अस्थिरता के दौर से गुजरा. विभिन्न राजपूत वंशों का उदय और अन्त हुआ. विकृत परिस्थितियों के फलस्वरूप भारत ने अपने मौलिक स्वरूप को इस काल में खोया भी, लेकिन सांस्कृतिक दृष्टिकोण से इस काल की समृद्धता एक अनूठी धरोहर सावित हो सकी. कला और स्थापत्य की विशिष्ट शैलियों का आविर्भाव, दर्शन और साहित्य का उत्कर्ष, धार्मिक मान्यताओं को प्रोत्साहन जितना अधिक इस काल में मिला उतना किसी भी काल में नहीं मिला.

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

1. 800 से 1200 के काल की शब्दावली

आदियान	—	दास
अलवार	—	वैष्णव सन्त (गाकर धर्म प्रचार करने वाले)
नयनार	—	शैव सन्त
उदयार	—	ईश्वर या मालिक
प्रवृत्ति रस	—	व्यापारिक संगठन
अनाश्रित	—	आत्मनिर्भर शूद्र
आश्रित	—	दूसरे पर निर्भर रहने वाले शूद्र
भोज्यान्ना	—	शूद्र द्वारा ब्राह्मण के लिए तैयार भोजन
वीरागल	—	वीर स्तम्भ
देशज	—	दस गाँवों का मुखिया
बसाढ़ी	—	जैन विहार
पुरोहित	—	राजदरबार का ब्राह्मण जो यज्ञादि कार्य करता था
देश्या	—	भूमि अनुदान
करज	—	भूमि अनुदान
भट्टारक	—	जैन धर्म के शिक्षक
साहिन्दी	—	अश्वसेन का अधिकारी
राष्ट्रभतारा	—	प्रान्तीय अधिकारी
स्कन्धावर	—	सैनिक शिविर
दुस्तसाध्य	—	पुलिस अधिकारी
विंशतिष	—	20 गाँवों का प्रमुख
पंचमहाशब्द	—	सामन्तीय विशेषाधिकार
कनिका	—	ग्रामीणों द्वारा अधिकारियों को दिया जाने वाला कर
शातेश	—	सौ गाँवों का प्रमुख
मण्डलान्तर	—	सामन्त का राज्य
चिट्टिरामेली	—	किसानों का संगठन
कोट्टम	—	चरागाह युक्त कृषि क्षेत्र
अर्धिक	—	हिस्सेदार
परिहार	—	कर से मुक्त व्यक्ति
वेलाकुला करना	—	बन्दरगाह का अधिकारी
पलिचन्दा	—	जैन और बौद्धों को दी जाने वाली भूमि
मण्डलामुडालि	—	मण्डल का सरदार
हसिन	—	हल चलाने वाला
देवदान	—	मन्दिरों को दिया जाने वाला दान
श्रोतिय	—	वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण
अग्रहार	—	ब्राह्मणों को दान में मिला गाँव
विदामिल विपट्टरमिल अधिकारी	—	भ्रमण करने वाला अधिकारी

अक्षपट्टालिका	—	राजस्व अधिकारी
एरिविपत्तना	—	गोदाम एवं वितरण केन्द्र
जलपथकाराना	—	राजमार्गों की देखभाल करने वाला
उर	—	गैर ब्राह्मण बस्ती या सभा
वेडैक्कार	—	राजा के अंगरक्षक
वरित्पोत्तराक्क	—	राजस्व विभाग का प्रमुख
पेरूंगुर्रि	—	महासभा
परैया	—	अछूत लोग
वेल्लाल	—	शूद्र कृषक
रथराज	—	वर्णसंकरों का वर्ग
पल्लियों	—	खेतीहर मजदूर
पण्डिका बलकूली	—	सुरक्षा कर
सन्धि सन्धिविग्रहिक	—	प्रशिक्षित कूटनीतिज्ञ
ओलई	—	मुख्य न्यायालय
शुडुगाड	—	शमशान घाट
युग	—	व्यवसायियों की समिति
कमावचेरि	—	शिल्पकारों के भवन

2. भारत पर महमूद गजनवी के 17 आक्रमण

क्र. सं.	सन्	क्षेत्र जिस पर आक्रमण किया	शासक जिसके काल मे आक्रमण हुआ
1.	1000 ई.	पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों पर	हिन्दुशाही राजा जयपाल
2.	1001 ई.	पेशावर	हिन्दुशाही राजा जयपाल
3.	1005 ई.	भटिण्डा	विजयराय
4.	1006 ई.	मुल्तान	दाऊद करमाथी
5.	1007-1008 ई.	मुल्तान	सुखपाल
6.	1008-1009 ई.	वैहिंद (पेशावर)	हिन्दूशाही राजा आनन्दपाल
7.	1009 ई.	नारायणपुर (अलवर)	
8.	1010 ई.	मुल्तान	सुखपाल
9.	1013 से 1014 ई.	थानेश्वर	राजाराम
10.	1014 ई.	नन्दन	त्रिलोचनपाल
11.	1015-1016 ई.	कश्मीर	संग्राम लोहार
12.	1018-1019 ई.	मथुरा एवं कन्नौज	प्रतिहार राज्यपाल
13.	1019 ई.	कालिंजर	गण्ड चन्देल एवं त्रिलोचनपाल
14.	1021 ई.	कश्मीर	स्त्री शासिका
15.	1022 ई.	ग्वालियर व कालिंजर	गण्ड चन्देल
16.	1025-1026 ई.	सोमनाथ मन्दिर पर	भीमदेव
17.	1027 ई.	सिन्ध के जाटों पर	

3. भारत में प्रचलित सम्वत्

संवत्	विवरण
विक्रम सम्वत	58 ई. पू. राजा विक्रमादित्य ने उज्जयिनी में शकों पर विजय प्राप्ति के अवसर पर प्रारम्भ किया था.
शक सम्वत	इसे शालिवाहन शकाब्द के नाम से भी जाना जाता था. कुषाण वंश के विख्यात शासक कनिष्क ने 78 ई. में इसे प्रारम्भ किया था. दक्षिण भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय है.
कलचुरि सम्वत	248 ई. में आभीरों के मध्य सबसे पहले इस सम्वत का प्रयोग हुआ था. कलचुरियों द्वारा प्रयोग करने के कारण कलचुरि सम्वत नाम पड़ा था.
गुप्त सम्वत	गुप्तवंशीय शासक चन्द्रगुप्त ने 319-320 ई. में प्रारम्भ किया.
बुद्ध सम्वत	544 ई. पू. श्रीलंका की गणना के अनुसार बुद्ध सम्वत का प्रारम्भ हुआ.
महावीर सम्वत	527 ई. पू. में महावीर स्वामी द्वारा प्रयोग किया, जो आज जैन सभा की गणनाओं में प्रयुक्त होता है.
सप्तर्षि सम्वत	लौकिक सम्वत के नाम से ख्यात था. 3076 ई. पू. में प्रारम्भ हुआ था तथा अलबेरूनी के काल में कश्मीर में चलता था.
कलिंग सम्वत	18 फरवरी 3102 ई. पू. प्रारम्भ हुआ. आर्य भट्ट ने इसकी गणना की थी.

4. प्रमुख मंदिर, स्थापत्य शैली एवं निर्माणकर्त्ता

नाम मंदिर	शैली	निर्माणकर्त्ता
कौणार्क का सूर्य मन्दिर	नागर शैली	नरसिंह देव (गंगवंश)
पुरी का जगन्नाथ मन्दिर	नागर शैली	अनन्त वर्मा चोदगंग
तिरूमलाई मन्दिर	द्रविड़ शैली	पाण्ड्य शासक ने
गंगैकोण्डचोलपुरम् मन्दिर	द्रविड़ शैली	राजेन्द्र चोल
लिंगराज मन्दिर	नागर शैली	
खजुराहो के मन्दिर	नागर शैली	चन्देल शासक
वृहदेश्वर मन्दिर	द्रविड़ शैली	
कंदरिया महादेव का मन्दिर	नागर शैली	धंगदेव चन्देल
कैलाश मन्दिर (काँची)	द्रविड़ शैली	पल्लव शासक
मोढ़ेरा का सूर्य मन्दिर	नागर शैली	
दिलवाड़ा के जैन मन्दिर	नागर शैली	राष्ट्रकूट शासक विमलशाह
मामल्लपुरम के मन्दिर	द्रविड़ शैली	पल्लव शासक
कैलाश मन्दिर (एलोरा)	बेसर शैली	कृष्ण प्रथम
दशावतार मन्दिर (झाँसी)	बेसर शैली	गुप्तकाल चन्द्रगुप्त II
ऐलिफेन्टा के मन्दिर (गुहा)	बेसर शैली	राष्ट्रकूट शासक

5. दक्षिण भारत के राज्य, राजधानी तथा संस्थापक

क्र.सं.	राजवंश	राजधानी	संस्थापक
1.	चोल	तंजौर	विजयालय
2.	चालुक्य (वेंगी)	वेंगी	विष्णुवर्द्धन
3.	चालुक्य (वातापी)	वातापी (वल्लभी)	जयसिंह प्रथम
4.	कलचुरिवंश	त्रिपुरी	कोकल्ल
5.	प्रतिहार	उज्जैन, कन्नौज	हरिश्चन्द्र (हरिचन्द्र)
6.	पाल	मुंगेर	गोपाल
7.	राष्ट्रकूट	मान्यखेत	दन्तिदुर्ग
8.	वाकाटक	नन्दिवर्धन	विन्ध्यशक्ति
9.	परमार	धारा, उज्जैन	उपेन्द्र/कृष्णराज
10.	चन्देल	खजुराहो	नन्नुक
11.	गहड़वाल	कन्नौज	चन्द्रदेव
12.	सोलंकी	अन्हिलवाड़ा	मूलराज प्रथम
13.	चालुक्य (कल्याणी)	मान्यखेट, कल्याण	विजयादित्य
14.	चौहान	अजमेर, दिल्ली	वासुदेव
15.	सेन	लखनौती, काशीपुर	सामन्तसेन
16.	शाही वंश	उद्भाण्ड	कल्लर
17.	पल्लव वंश	काँचीपुरम्	सिंह विष्णु

6. 800-1200 के मध्य लिखा गया साहित्य

रचना	रचनाकार	अन्य विवरण
रामचरित	संध्याकर नदी	गौडीय रीति में लिखा गया श्लेष काव्य
चिकित्साशास्त्र	चक्रपाणिदत्त	लेखक ने चरक और सुश्रुत पर टीकाएँ भी लिखी थीं.
दायभाग	जीमूतवाहन	पालों के शासनकाल में लिखी गई रचना.
लोकेश्वर शतक	वज्रदत्त	पालों के शासनकाल में लिखी गई रचना.
दानसागर	बल्लालसेन	ज्योतिषसागर की रचना की थी.
गीत गोविन्द	जयदेव	लक्ष्मणसेन का विद्वान संरक्षक.
पवनदूत	धोयी	
ब्राह्मणसर्वस्व	हलायुध	
सदुक्तिकर्णामृत	श्रीधरदास	
प्रबोध चन्द्रोदय	कृष्ण मिश्र	यह एक नाटक था.
कर्पूर मंजरी	राजशेखर	
चण्डकौशिक	सोमेश्वर	
कृत्यकल्पतरू	लक्ष्मीधर	गहड़वाल शासक गोविन्दचन्द्र का संरक्षक विद्वान था.
ललितविग्रहराज	सोमदेव	चौहान राजा विग्रहराज चतुर्थ के शासनकाल में लिखी गई रचना.
किरातार्जुनीयम्	भारवि	पल्लवों के संरक्षित कवि थे.
दशकुमारचरितम्	दण्डिन	पल्लवों के संरक्षित कवि थे.
मत्तविलास	महेन्द्र वर्मन	ये दोनों प्रहसन थे जिसे पल्लव शासक महेन्द्र वर्मन ने लिखा था.
भागवदज्जुक	महेन्द्र वर्मन	
कविराजमार्ग	अमोघवर्ष	राष्ट्रकूट शासक लेखक था, जिसने तमिल में काव्य रचना की थी.
आदि पुराण	पम्प	तीनों साहित्यिक रचनाएँ कन्नड़ भाषा में लिखी गई थीं.
शांति पुराण	पोन्न	
अजित पुराण	रन्न	
हरिवंश	जिनसेन	
नीतिवाक्यामृत	सोमदेव	
विक्रमार्जुन विजय	पम्प	
विक्रमांक देवचरितम्	विल्हण	विक्रमादित्य VI का राजकवि था.
मानसोल्लास	सोमेश्वर III	
तमिल रामायण	कम्बन	चोलों का संरक्षित कवि था.
रसोलियम	बुद्धमित्र	
परिआपुराणम्	शेक्किलार	
भावनाविवेक	मण्डन मिश्र	विख्यात मीमांसाकार थे.
भामति	वाचस्पति मिश्र	
न्यायसर्वज्ञ	भासर्वज्ञ	

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- सोमदेव का कथासरित्सागर 11वीं शताब्दी के विश्वकोष के रूप में प्रसिद्ध था.
- मनु के अनुसार शक व्रात्य-क्षत्रिय थे.
- कल्हण ने राजतरंगिणी की रचना 12वीं सदी में कश्मीर के शासक जयसिंह के शासन काल में पूरी की थी.
- महमूद गजनवी दुनिया का **'प्रथम सुल्तान'** माना जाता है.
- भारत में सबसे पहले कागज का प्रयोग मुसलमानों ने प्रारम्भ किया था.
- परमार शासक भोज की मृत्यु के बाद चारों तरफ एक कहावत–"विद्या और विद्वान दोनों निराश्रित हो गये (अद्यधारा निराधारा निरालम्बा सरस्वती) फैल गई थी.
- भीम प्रथम ने सोमनाथ के मन्दिर को विनष्ट होने के बाद पुनर्निर्मित कराया था.
- परमारों की प्रारम्भिक राजधानी उज्जैन थी, बाद में धारा नगरी बनी.
- आइने-अकबरी के अनुसार परमार शासक भोज की राजसभा में पाँच सौ विद्वान थे.
- अजन्ता के एक चित्र में ईरानी राजदूत का स्वागत करते हुए प्रदर्शित किया गया है, उसमें पुलकेशी द्वितीय स्वागत कर रहा है.

- विज्ञानेश्वर ने याज्ञवल्क्यस्मृति पर मिताक्षरा टीका लिखी थी.
- अरब आक्रमण के समय भारत मूर्ति-पूजकों के देश के रूप में जाना जाता था.
- ह्वेनसांग के समय बंगाल में चार स्वतन्त्र राज्य थे–पुण्ड्रवर्धन, कर्णसुवर्ण, समतट, ताम्रलिप्ति.
- "प्रत्येक क्षत्रिय, ब्राह्मण अथवा वैश्य अपने घर में राजा हो गया और सम्पूर्ण देश पर कोई राजा न रहा." यह कथन प्रसिद्ध तिब्बत यात्री लामा तारानाथ का था.
- घोसराँवा (बिहार) से प्राप्त एक अभिलेख के अनुसार पाल शासक देवपाल (810-850 ई.) ने नगहार निवासी एक ब्राह्मण (इन्द्रगुप्त) को नालन्दा महाविहार का प्रधान आचार्य नियुक्त किया था.
- बाल रामायण में राजशेखर ने कन्नौज की प्रशंसा करते हुए लिखा है–"उस नगर से ही देश की दिशाओं का मापन होता था, उस पवित्र नगर के लोग नई कविता के समान लालित्यपूर्ण थे, वहाँ की स्त्रियों के वस्त्र मनमोहक थे तथा उनके गहनों, केश प्रसाधन और बोली की नकल अन्य प्रदेशों की स्त्रियाँ करती थीं.
- महाकवि राजशेखर प्रतिहार शासक धर्मपाल के दरबारी कवि थे.
- वी. ए. स्मिथ के अनुसार राजपूत प्राचीन आदमजातियों गोंड, भर, खरवार आदि के वंशज थे.
- आल्हा-ऊदल दो चंदेल वीर योद्धा थे, जिनका उल्लेख **'आल्हाखण्ड'** में मिलता है.
- राजपूतकाल में समाज सुविधा भोगी एवं सुविधा विहीन दो वर्गों में विभक्त था.
- समीनार राज्य के बाद गजनी के स्वतन्त्र राज्य का उदय हुआ था.
- महमूद गजनवी ने 1000 से 1028 ई. के मध्य भारत पर सत्रह बार आक्रमण किये थे.
- महमूद गजनवी ने यमीनुद्दौला एवं अमीन-उल-मिल्लत नामक उपाधियाँ धारण की थीं.
- महमूद गजनवी ने सोमनाथ से 70,000 दिरहम के सिक्के, 7 लाख दिरहम का सोना-चाँदी (400 मन वजन) असंख्य मोती, सुन्दर वस्त्र, चाँदी का बना घर (3 गज लम्बा और 15 गज चौड़ा), दो सोने और दो चाँदी के खम्भों पर रोमी कपड़े का शामियाना लूट में प्राप्त किया था.
- तराईन के प्रथम युद्ध में मुहम्मद गौरी की हार पर लेनपूल ने कहा था–"इससे पहले कभी मुसलमानों की सेना हिन्दुओं द्वारा इतनी बुरी तरह परास्त नहीं की गई थी."
- पृथ्वीराज रासो के अनुसार तराईन के द्वितीय युद्ध में गौरी ने पृथ्वीराज को अन्धा करवाकर उसकी हत्या कर दी थी.
- प्रसिद्ध इतिहासकार हसन निजामी और मिन्हास-उस-सिराज भारत पर तुर्क विजय को दैवी कृपा मानते हैं.
- अलबेरूनी की पुस्तक **'किताबुल हिन्द'** 80 अध्यायों में विभक्त थी.
- "हिन्दुओं में यह दृढ़ विश्वास है कि उनके देश के समान और कोई देश नहीं है, कोई ऐसा राष्ट्र नहीं है, कोई राजा उनके राजा के समान नहीं है तथा अन्य कहीं भी विज्ञान उनके विज्ञान के समान नहीं हैं." यह अलबेरूनी का कथन था.
- हादी, डोम, चाण्डाल, बड़हातू आदि जातियाँ तत्कालीन समाज में किसी भी व्यावसायिक संघ या जाति में नहीं गिनी जाती थी.
- अलबेरूनी के भारत यात्रा के दौरान भारतीय विदेशियों को मलेच्छ मानते थे.
- अलबेरूनी के अनुसार सात वर्ष से मृत्युपर्यन्त तक का ब्राह्मणों का जीवन चार भागों में विभक्त था.
- पूर्व मध्यकाल में ब्राह्मण लहसुन, प्याज, कद्दू, क्रंच तथा नली का सेवन नहीं करते थे.
- अलबेरूनी के अनुसार तत्कालीन समाज में हिन्दू आत्मदाह नहीं करते थे. वैश्य और शूद्रों को आत्मदाह करने का अधिकार प्राप्त था.
- पूर्व मध्यकाल में सतीप्रथा का प्रचलन था, लेकिन पुत्रवती स्त्री एवं अधिक उम्र की स्त्री के लिए यह आवश्यक नहीं था.
- अलबेरूनी के अनुसार एक ब्राह्मण चार, क्षत्रिय तीन वैश्य दो और शूद्र एक स्त्री से विवाह कर सकते थे.
- अलबेरूनी के अनुसार ज्येष्ठ में उपवास करने से प्रेम की वृद्धि होती थी.
- अलबेरूनी के अनुसार हिन्दू गोमूत्र पीते थे, परन्तु गोमाँस नहीं खाते थे.
- डॉ. फ्लीट के अनुसार राष्ट्रकूट भारत के राठौर क्षत्रियों से सम्बद्ध थे.

- राष्ट्रकूटों का अन्तिम महान शासक अमोघवर्ष था, जिसका संरक्षक शासक कर्क था. अमोघवर्ष जैन मतावलम्बी था और उसने कविराज मार्ग तथा प्रश्नोत्तर मालिका की रचना की थी.
- चट्टानों को काटकर एलोरा की गुफा में कृष्ण I ने कैलाश मन्दिर बनवाया था.
- कैलाश मन्दिर में भित्ति चित्रों के द्वारा गंगा अवतरण एवं रावण द्वारा कैलाश पर्वत उठाने का दृश्य चित्रित किये गये हैं.
- चोलों के समय उर एक सर्वसाधारण की सभा थी. यह समूह से बड़ी संस्था थी. ग्रामों के अतिरिक्त नगरों में भी इसका अस्तित्व होता था.
- चोलकालीन मूल परूदियार नामक संगठन मंदिरों की व्यवस्था को देखता था.
- ह्वेनसांग के अनुसार सिन्ध और मतिपुर में शूद्र शासक थे.
- ग्यारहवीं शताब्दी में द्रविड़ भाषी क्षेत्रों में समाज दो वर्गों में विभाजित था–वलंगै (दाहिने हाथ) तथा इडंगै (बायाँ हाथ).
- पूर्व मध्यकाल में पाशुपत सम्प्रदाय दो उपसम्प्रदायों में विभक्त हो गया था–श्रौत (वैदिक) और अश्रौत (लौकिक).
- इस काल में वेदांत दर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए शंकराचार्य ने भारत की चार दिशाओं में निम्नलिखित चार मठ स्थापित किये थे–

    1. शृंगेरी मठ (रामेश्वरम्)
    2. शारदा मठ (द्वारिका)
    3. गोवर्द्धन मठ (जगन्नाथपुरी)
    4. ज्योर्तिमठ (बदरिकाश्रम).

- **नव ब्राह्मणवाद के संस्थापक–शंकराचार्य**

1. नाम (प्रारम्भिक)	शंकर
2. प्रसिद्ध नाम	शंकराचार्य, प्रच्छन्न बौद्ध
3. जन्म स्थान	कलादी (केरल)
4. परिवार	नम्बूदरीपाद ब्राह्मण परिवार
5. जन्म तिथि	788 ई.
6. पिता का नाम	शिवगुरू
7. उल्लेखनीय बातें	1. बाल्यकाल में पिता की मृत्यु हो गई थी. 2. आरम्भिक शिक्षा के बाद संन्यास ले लिया था. 3. वेदान्त दर्शन की पुनर्स्थापना के लिए सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया. 4. कुमारिल भट्ट, मण्डन मिश्र, भारती (मण्डन मिश्र की पत्नी), कापालिक, भैरवाचार्य को शास्त्रार्थ में परास्त कर वेदान्त दर्शन की सर्वोच्चता स्थापित की. 5. चार मठ–शृंगेरी, शारदा, गोवर्द्धन ज्योर्तिमठ स्थापित किये थे.
8. ज्ञान की शाखा	ज्ञानमार्गी शाखा
9. दर्शन की स्थापना	अद्वैतवाद
10. सिद्धान्त	1. ब्रह्म को परम सत्य मानते थे. 2. संसार को मिथ्या और मायाजनित मानते थे. 3. शैव और बौद्ध धर्म को समन्वित स्वरूप में स्वीकार करते थे. 4. उन्हें नवब्राह्मणवाद के संस्थापक कहा जाता था.
11. प्रकाशित पुस्तकें	1. ब्रह्मसूत्र भाष्य 2. गीता भाष्य 3. शिवस्तोत 4. आत्मबोध 5. विवेक चूड़ामणि 6. सौन्दर्य लहरी
12. मृत्यु	820 ई. में

- नागर शैली का विकास हिमालय से विन्ध्य पर्वतमाला के मध्य हुआ था. नागर शैली के मंदिर वर्गाकार तथा शिखर ऊपर की ओर वक्र होता था. खजुराहों का मन्दिर समूह नागर शैली का था.
- कोणार्क का सूर्य मन्दिर 13वीं शताब्दी में नरसिंहदेव द्वारा बनाया गया. कोणार्क के सूर्य मन्दिर को 'काला पैगोडा' भी कहा जाता था.
- वेसर शैली के मन्दिरों का आकार अर्द्धगोलाकार तथा द्रविड़ शैली के मन्दिरों का आकार अष्ट भुजाकार था.
- द्रविड़ शैली के मन्दिरों का निर्माण चोल एवं पल्लवों के काल में अधिक हुआ था.
- राजेन्द्र चोल द्वारा निर्मित गंगैकोण्डचोलपरम् के भव्य मन्दिर की ऊँचाई 150 फीट एवं चौड़ाई आयताकार में 340×110 फुट है.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हर्ष के बाद उत्तरी भारत के प्रभुत्व का प्रतीक नगर था–
   (A) कन्नौज (B) थानेश्वर
   (C) पाटलिपुत्र (D) मालवा
2. किसके निर्देशन में चालुक्य राजा कुमारपाल ने जैन सुधार कार्यक्रम आरम्भ किया था–
   (A) मल्लिनाथ (B) स्थूलभद्र
   (C) नयचन्द्र (D) हेमचन्द्र
3. निम्नलिखित में से कौन काकतीय राज्य का एक महत्त्वपूर्ण समुद्रपत्तन था ?
   (A) धरणीकोटा (B) मोटडुपल्ली
   (C) मचिकीपट्टम् (D) नेल्लुर
4. कलचुरी वंश का अन्तिम शासक था–
   (A) लक्ष्मीकर्ण (B) गांगेयदेव
   (C) कोम्कल (D) कोई नहीं
5. चौलुक्य वंश का उदय हुआ था–
   (A) मध्यदेश में
   (B) गुजरात (अन्हिलवाड़ा) में
   (C) मगध में
   (D) बिहार में
6. महमूद गजनवी का सोमनाथ पर आक्रमण था–
   (A) तेरहवाँ (B) चौदहवाँ
   (C) पन्द्रहवाँ (D) सोलहवाँ
7. रामचरित का लेखक था–
   (A) तुलसीदास ने (B) कालिदास ने
   (C) संध्याकरनन्दी ने (D) वाल्मिकी ने
8. पालों के समय जिन सिक्कों का प्रचलन था–
   (A) द्रम्म (B) कार्षापण
   (C) सिक्के (D) रुपया
9. महेन्द्रपाल के दरबारी कवि थे–
   (A) राजशेखर (B) कल्हण
   (C) विल्हण (D) कोई नहीं
10. किसके अनुसार राजपूत शक कुषाण एवं हूणों की सन्तान थे–
    (A) वी. ए. स्मिथ के अनुसार
    (B) कर्नल टॉड
    (C) आर. जी. भण्डारकर
    (D) ईश्वरी प्रसाद
11. अलबेरूनी जिसके द्वारा युद्ध बन्दी बनाकर लाया गया था–
    (A) मुहम्मद गौरी (B) अलाउद्दीन खिलजी
    (C) शाहजहाँ (D) महमूद गजनवी
12. पृथ्वीराज रासो का लेखक था–
    (A) चन्दबरदाई (B) लामा तारा नाथ
    (C) कल्हण (D) विल्हण
13. परमार वंश का पहला एवं स्वतन्त्र शासक था–
    (A) श्री हर्ष (B) वाक्पति प्रथम
    (C) वैरिसिंह प्रथम (D) कोई नहीं
14. गहड़वाल वंश का संस्थापक था–
    (A) यशोविग्रह (B) यशोवर्मन
    (C) राजपाल (D) कोई नहीं
15. अलबेरूनी की पुस्तक का नाम था–
    (A) किताबुलहिन्द (B) राजतरंगिणी
    (C) सी-यु-की (D) उपर्युक्त सभी
16. अलबेरूनी के काल में विदेशियों को समझा जाता था–
    (A) सम्माननीय (B) मलेच्छ
    (C) आर्य (D) शूद्र
17. मुहम्मद गौरी ने कन्नौज पर आक्रमण किया था–
    (A) 1194 ई. में (B) 1192 ई. में
    (C) 1191 ई. में (D) 1185 ई. में
18. चन्देल वंश का उदय हुआ था–
    (A) जेजाकभुक्ति (बुन्देलखण्ड) में
    (B) मगध में
    (C) धारा में
    (D) कन्नौज में
19. बंगाल में सेन वंश का संस्थापक था–
    (A) सामन्तसेन (B) वीरसेन
    (C) हेमन्तसेन (D) विजयसेन

20. किस पुराण में जातियों को उत्तम, मध्यम, अधम वर्ग में बाँटा गया है–
    (A) वृहद् धर्मपुराण में (B) कठोपनिषद में
    (C) स्कन्दपुराण में (D) वायुपुराण में

21. पालवंश का राजा गोपाल निर्वाचित शासक था. यह उल्लेख मिलता है–
    (A) राष्ट्रकूट अभिलेख में
    (B) प्रयाग प्रशस्ति में
    (C) खलीमपुर ताम्रपत्र अभिलेख में
    (D) उपर्युक्त सभी में

22. पालों का राजतन्त्र था–
    (A) वंशानुगत (B) निवार्चनानुसार
    (C) अ और ब दोनों (D) कोई नहीं

23. राजपूतकालीन पदाधिकारी कोट्टपाल होता था–
    (A) ग्राम का रक्षक (B) दुर्गों का रक्षक
    (C) सेना का रक्षक (D) राजा का रक्षक

24. निम्नलिखित में से कौनसी रचना परमार भोज के काव्य नाटकों में नहीं आती थी?
    (A) कूर्मशतक (B) चम्पू नारायण
    (C) शृंगार मंजरी (D) शृंगार प्रकाश

25. निम्नलिखित में से कौनसी उपाधि राजा भोज (परमार शासक) ने नहीं धारण की थी–
    (A) महाराज (B) मालव चक्रवर्ती
    (C) सार्वभौम (D) त्रिभुवन नारायण

26. राजपूत काल की कौनसी संरक्षिका रानी आगे चलकर स्वतन्त्र राज्य की शासिका बनी थी ?
    (A) मयणल्ला देवी (B) कर्पूर देवी
    (C) पृथ्वीसिका (D) दिद्दा रानी

27. राजपूत काल में अधिकांशतः मन्त्री होते थे–
    (A) ब्राह्मण (B) क्षत्रिय
    (C) वैश्य (D) शूद्र

28. साधनिक होता था–
    (A) एक पुलिस अधिकारी
    (B) अमात्य
    (C) दुर्ग रक्षक
    (D) कोई नहीं

29. कल्हण ने राजतरंगिणी में कितनी उपजातियों का वर्णन किया है–
    (A) 64 (B) 110
    (C) 15 (D) कोई नहीं

30. गजनी साम्राज्य का संस्थापक था–
    (A) अलप्तगीन (B) मुहम्मद गौरी
    (C) महमूद गजनवी (D) अलाउद्दीन खिलजी

31. अलबेरूनी का पूरा नाम था–
    (A) अबुरैहान खिलजी
    (B) अबुरैहान अलबरूनी
    (C) अबुरैहान गजनवी अलबरूनी
    (D) अबुरैहान मुहम्मद इब्न अहमद

32. अलबेरूनी ने तहकीक-ए-हिन्द की रचना की थी–
    (A) 1020 ई. में (B) 1025 ई. में
    (C) 1030 ई. में (D) कोई नहीं

33. पूरे वर्ष तक उपवास करने पर पूर्व मध्यकालीन व्यक्तियों के अनुसार मिलता था–
    (A) अतुल सम्पत्ति (B) 20,000 वर्षों तक स्वर्ग
    (C) प्रियतमा (D) खुशी

34. राजपूत काल में उत्तरी भारत के लोग जिस पर लिखते थे–
    (A) भोजपत्र पर (B) ताड़पत्र पर
    (C) कागज पर (D) चमड़े पर

35. भोक्षुकी लिपि थी–
    (A) राजस्थान की लिपि
    (B) कार्मट की लिपि
    (C) उत्तरी भारत की लिपि
    (D) महात्मा बुद्ध की लिपि

36. प्रारम्भिक मध्यकाल में हिन्दू पुस्तकों का शीर्षक लिखते थे–
    (A) प्रारम्भ में (B) अन्त में
    (C) मध्य में (D) नहीं लिखते थे

37. अमोघवर्ष I का संरक्षक शासक था–
    (A) कर्क (B) गोविन्द तृतीय
    (C) गोविन्द II (D) कृष्ण II

38. पोन्न की रचना थी–
    (A) शान्ति पुराण (B) अजित पुराण
    (C) आदि पुराण (D) हरिवंश पुराण

39. न्यायकणिका का लेखक था–
    (A) कुमारिल भट्ट (B) वाचस्पति
    (C) हलायुध (D) शंकर

40. 'काला पैगोडा' जिस मन्दिर को कहा जाता था–
    (A) कोणार्क के सूर्य मन्दिर को
    (B) राजराजेश्वर मन्दिर को

(C) गंगेकोण्डचोलपुरम् मन्दिर को
(D) कोई नहीं

41. शंकर का जन्म हुआ था–
(A) कलादी (केरल)
(B) टंकारा (सौराष्ट्र)
(C) मद्रास
(D) गुजरात (अन्हिलवाड़ा)

42. नवब्राह्मणवाद के संस्थापक दर्शनशास्त्री शंकर का जन्म हुआ था–
(A) 788 ई. में (B) 785 ई. में
(C) 712 ई. में (D) 700 ई. में

43. 11वीं शताब्दी के विश्वकोष के रूप में जाना जाता था–
(A) कथासम्पूर्णम् (B) कथासरित्सागर
(C) रामायण (D) महाभारत

44. वेल्यूरपाल्यम् अभिलेख के अनुसार विष्णु का अवतार था–
(A) नन्दिवर्द्धन
(B) दन्दिवर्मन
(C) परमार शासक भोज
(D) उपर्युक्त सभी

45. दुनिया का प्रथम सुल्तान माना जाता था–
(A) औरंगजेब (B) मुहम्मद गौरी
(C) महमूद गजनवी (D) शाहजहाँ

उत्तरमाला

1. (A)	2. (D)	3. (B)	4. (A)	5. (B)
6. (D)	7. (C)	8. (A)	9. (A)	10. (B)
11. (D)	12. (A)	13. (A)	14. (A)	15. (A)
16. (B)	17. (A)	18. (A)	19. (A)	20. (A)
21. (C)	22. (A)	23. (B)	24. (D)	25. (A)
26. (D)	27. (A)	28. (A)	29. (A)	30. (A)
31. (D)	32. (C)	33. (B)	34. (A)	35. (D)
36. (B)	37. (A)	38. (A)	39. (B)	40. (A)
41. (A)	42. (A)	43. (B)	44. (B)	45. (C)

विगत वर्षों में आई.ए.एस. (प्री.) में पूछे गये प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किस लेखक ने प्रसिद्ध पुस्तक 'किताब-अल हिन्द' का अंग्रेजी अनुवाद किया ?
(A) वाल्टर रोपर लारेंस
(B) ई. सी. सचाउ
(C) अल-मुकद्दसी
(D) एस. ए. रहीम

2. निम्नलिखित में से कौनसा एक स्थान पूर्व मध्यकालीन भारत में प्रभास पट्टन के नाम से जाना जाता था ?
(A) सोमनाथ (B) थानेश्वर
(C) उज्जैन (D) वाराणसी

3. निम्नलिखित में से कौनसा चोल शासक राष्ट्रकूट राजा कृष्ण-तृतीय द्वारा पराजित किया गया था ?
(A) परान्तक प्रथम (B) परान्तक द्वितीय
(C) राजराज प्रथम (D) राजेन्द्र प्रथम

4. एलोरा का विख्यात कैलाशनाथ मन्दिर किस राष्ट्रकूट राजा के अनुदेशों पर पत्थर में काटकर तैयार किया गया था ?
(A) कृष्ण प्रथम (B) ध्रुव प्रथम
(C) कृष्ण द्वितीय (D) इन्द्र तृतीय

5. किस राष्ट्रकूट शासक ने प्रतिहार शासक नागभट्ट I को हराया था–
(A) गोविन्द III (B) कृष्णा III
(C) भोज I (D) गोपाल I

6. बंगाल पालों की सत्ता का अन्त किया था–
(A) गोविन्द III ने (B) विजयसेन ने
(C) कृष्णा I ने (D) रामपाल ने

7. मुहम्मद गजनवी ने भारत पर अन्तिम आक्रमण किया था–
(A) 1025 ई. (B) 1020 ई.
(C) 1017 ई. (D) 1027 ई.

8. लिंगायत जिसकी पूजा करते थे–
(A) गणेश की (B) शिव की
(C) विष्णु की (D) सूर्य की

9. पानीपत का प्रथम युद्ध लड़ा गया था–
(A) 1396 ई. में (B) 1569 ई. में
(C) 1526 ई. में (D) 1536 ई. में

10. चौहानों के वास्तविक भयंकर शत्रु थे–
(A) तोमर

(B) चन्देल
(C) कन्नौज के गहड़वाल
(D) सोलंकी

11. नागभट्ट II किस वंश से सम्बन्धित था–
(A) गुर्जर प्रतिहार वंश से
(B) परमार वंश से
(C) कलचुरि वंश से
(D) पल्लव वंश से

12. उस गुर्जर-प्रतिहार शासक का क्या नाम था, जिसे पाल शासक देवपाल ने हराया था–
(A) मिहिर भोज (B) नागभट्ट II
(C) महीपाल (D) महेन्द्रपाल

13. बंगाल के पाल शासक अनुयायी थे–
(A) जैन के (B) वैष्णव के
(C) बुद्ध के (D) शैव के

14. राजराजेश्वर मन्दिर का निर्माण कराया था–
(A) परान्तक चोल ने (B) महेन्द्रवर्मन पल्लव ने
(C) राजराजा चोल ने (D) आदित्य चोल ने

15. चोलों के शासन काल में कुर्रम एक प्रशासनिक इकाई थी, जिसका सम्बन्ध था–
(A) एक गाँव से (B) एक नगर से
(C) एक जिले से (D) गाँवों के एक समूह से

16. गीत गोविन्द का लेखक कौन था?
(A) विद्यापति (B) जयदेव
(C) माघ (D) श्रीहर्ष

17. गीत गोविन्द जिसने लिखी थी–
(A) जयदेव ने (B) जयसिंह सूर ने
(C) रविवर्मन ने (D) विद्यानाथ ने

18. किस राजवंश के पास विशाल जलबेड़ा था–
(A) पाण्ड्य (B) चोल
(C) चालुक्य (D) पल्लव

19. बंगाल के पालों ने संरक्षण दिया–
(A) हिन्दूवाद को
(B) जैनवाद को
(C) हीनयान सम्प्रदाय को
(D) तान्त्रिक बुद्धवाद को

20. एलोरा का कैलाश मन्दिर किसके संरक्षण में बना था?
(A) चालुक्य शासक (B) राष्ट्रकूट शासक
(C) पल्लव शासक (D) चोल शासक

21. चोल शासकों की भाषा थी–
(A) तमिल (B) तेलुगू
(C) संस्कृत (D) कन्नड़

22. राजपूत काल में अन्तर्जातीय विवाह सम्भव थे–
(A) ब्राह्मण और क्षत्रियों में
(B) क्षत्रिय और वैश्यों में
(C) वैश्य और शूद्रों में
(D) कोई नहीं

23. किस पाल शासक ने विक्रमशिला महाविहार की स्थापना की?
(A) धर्मपाल (B) देवपाल
(C) नारायणपाल (D) महीपाल I

24. चोलों के काल में तमिल भाषा में कम्ब रामायण किसने लिखी थी?
(A) कादेवर (B) तोलमोक्ति
(C) जयगोदर (D) कम्बन

25. "हिन्दू विश्वास करते हैं कि उनके समान कोई देश नहीं है, उनके समान कोई राष्ट्र नहीं है, उनके राजा के समान कोई राजा नहीं है, उनके धर्म के समान कोई धर्म नहीं है और उनके विज्ञान के समान कोई विज्ञान नहीं हैं." ऐसा किसने कहा?
(A) अल्बेरूनी ने (B) फिरदौसी ने
(C) फरिश्ता ने (D) उत्बी ने

26. महमूद गजनवी ने सोमनाथ पर आक्रमण किया–
(A) 1024 ई. में (B) 1025 ई. में
(C) 1026 ई. में (D) 1027 ई. में

27. भारत पर पहला तुर्की आक्रमण किसने किया?
(A) महमूद गजनवी ने (B) सुबुक्तगीन ने
(C) अलप्तगीन ने (D) अब्दुल वाहिद ने

28. सोमनाथ मन्दिर का प्रसिद्ध आक्रमण महमूद गजनवी का भारत पर कौनसा आक्रमण था?
(A) सत्तरहवाँ (B) सोलहवाँ
(C) पन्द्रहवाँ (D) चौदहवाँ

29. महमूद गजनवी के भारत आक्रमण का विशेष उद्देश्य सम्बन्धित था–
(A) राजनीति से (B) समाज से
(C) आर्थिक व्यवस्था से (D) धर्म से

30. शक सम्वत् प्रारम्भ हुआ था–
(A) 78 ई. से (B) 120 ई. से
(C) 1000 ई. से (D) 953 ई. से

31. कायस्थ समुदाय की महत्ता बढ़ी, क्योंकि वे–
(A) नर्त्तक थे (B) लुटेरे थे
(C) लेखक थे (D) न्यायाधिपति थे

32. राजराजेश्वर मन्दिर बनवाया था–
(A) राजराजे ने (B) राजेन्द्र चोल ने
(C) देवपाल ने (D) करोपाल ने

33. एलोरा गुफा बनाई थी–
(A) चालुक्यों ने (B) प्रतिहारों ने
(C) राष्ट्रकूटों ने (D) पालों ने

34. शंकर एक सन्त था–
(A) अद्वैतवादी (B) बौद्धवादी
(C) जैनवादी (D) सूफीवादी

35. चोल प्रशासन में भू-राजस्व एकत्र किया जाता था–
(A) उर द्वारा (B) महासभा द्वारा
(C) उपारिका द्वारा (D) एक विशेष दल द्वारा

36. वल्लभाचार्य का काल था–
(A) 900 ई. (B) 1000 ई.
(C) 1100 ई. (D) 1200 ई.

37. चोल शासकों ने जिस भाषा को संरक्षण दिया था–
(A) संस्कृत (B) तमिल
(C) तेलुगू (D) कन्नड़

38. राजपूत काल में मुख्यतः जिन देवों की पूजा होती थी–
(A) राम एवं कृष्ण (B) विष्णु एवं शिव
(C) ब्रह्मा एवं सूर्य (D) ब्रह्मा एवं गणेश

39. पृथ्वीराज रासो निम्नलिखित में से किसने लिखा था?
(A) अमरसिंह ने (B) यादव ने
(C) चन्द्रबरदाई ने (D) जयसिंह सूर ने

40. पहला भारतीय शासक था जिसने मुहम्मद गौरी को पराजित किया–
(A) गुजरात के मूलराज II ने
(B) दिल्ली के पृथ्वीराज ने
(C) कन्नौज के जयचन्द्र ने
(D) बुन्देलखण्ड के परमलदेव ने

41. किसके समय से चोल प्रसिद्ध हुए?
(A) परान्तक (B) विजयालय
(C) राजराजा (D) राजेन्द्र

42. बृहदेश्वर मन्दिर का निर्माण कराया था–
(A) राजराजे चोल ने (B) राजेन्द्र चोल ने
(C) विजयालय ने

43. किस द्रविड़ भाषा को राष्ट्रकूटों ने संरक्षण दिया था?
(A) कन्नड़ को (B) तमिल को
(C) तेलुगू को

44. किसने मुहम्मद गजनवी के भारत आक्रमण को 'जिहाद' कहा था?
(A) हेनरी एलिअट ने (B) जाफर ने
(C) अल्बेरूनी ने (D) उत्बी ने

45. रामानुज का जन्म किसके पास के गाँव में हुआ था?
(A) कलकत्ता (B) मद्रास
(C) पटना (D) लखनऊ

46. महमूद गजनवी ने सोमनाथ पर आक्रमण किया–
(A) 1021 ई. में (B) 1024 ई. में
(C) 1025-26 ई. में (D) 1020 ई. में

47. पूर्वी भारत पर किस राष्ट्रकूट शासक ने सफलतापूर्वक विजय प्राप्त की?
(A) गोविन्द II ने (B) ध्रुव ने
(C) गोविन्द III ने (D) कृष्ण ने

48. निम्नलिखित में से कौनसे स्थान सूर्य मन्दिरों के लिए जाने जाते हैं?
(1) मन्दसौर (2) मूलस्थान
(3) कोणार्क (4) माधेरा
(A) 1 व 3 (B) 3 व 4
(C) 2, 3 व 4 (D) 1, 2, 3 व 4

49. कल्याण मण्डप किस वास्तुकला का उदाहरण था?
(A) पल्लव (B) चोल
(C) कदम्ब (D) विजयनगर

50. जैन धर्म के सुधार के लिए चालुक्य शासक कुमारपाल को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था–
(A) मल्लिनाथ का (B) स्थूलभद्र का
(C) न्यायचन्द्र का (D) हेमचन्द्र का

51. धर्मशास्त्र के अनुसार निम्नलिखित में से कौन आत्मज थे?
(A) यवन (B) सबारा
(C) शूद्र (D) चन्देल

52. प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर स्थित है–
(A) एलीफेन्टा में (B) एलौरा में
(C) बादामी में (D) महाबलिपुरम् में

53. क्षेमेन्द्र रहते थे–
(A) बंगाल में (B) कश्मीर में
(C) महाराष्ट्र में (D) गुजरात में

54. कोसलेन्नडू पर राजेन्द्र चोल ने आक्रमण किया था. यह किसके किनारे पर अवस्थित था?
    (A) गोदावरी (B) सरयू
    (C) महानदी (D) ताप्ती

55. चन्देल वंश की स्थापना की थी–
    (A) वाक्पति ने (B) नन्नुक ने
    (C) जयशक्ति ने (D) हर्ष ने

56. महाअक्षपट्टलिका विभाग का अध्यक्ष था–
    (A) पीत्त विभाग (B) जलसेना
    (C) लेखा विभाग (D) स्थानीय प्रशासन

57. चालुक्यों की राजधानी मान्यखेत से कल्याणी में परिवर्तित कर दिया–
    (A) सोमेश्वर I ने
    (B) विक्रमादित्य III ने
    (C) परम जगदकमल्ला II ने
    (D) तैलप III ने

58. निम्नलिखित में से कौनसा स्थान स्मारकीय मन्दिर स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है?
    (A) अरिक्मेडु (B) अमरावती
    (C) गंगैकोंडचोलपुरम् (D) उत्तरमेरूर

59. निम्नलिखित में से कौनसा एक चैत्य गोलाकार है?
    (A) भज (B) विदिशा
    (C) जुन्नर (D) कार्ले

60. सूची को सुमेलित कर कूट से सही उत्तर दीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) अजन्ता	1. चन्देलों के द्वारा निर्मित मन्दिर
(b) एलौरा	2. गुफा चित्रकला
(c) खजुराहो	3. कैलाश मन्दिर
(d) एलीफेन्टा	4. ब्राह्मण मूर्तिकला

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	1	4
(B)	2	4	1	3
(C)	1	3	4	2
(D)	3	2	1	4

61. निम्नलिखित में से किसने काल्पनिक वैज्ञानिक उपकरणों पर प्रवन्ध लिखा था?
    (A) भोज ने (B) गोविन्दराज ने
    (C) चन्द्रवर्मन ने (D) महिपाल ने

62. बंगाल के पाल शासकों के खिलाफ निम्नलिखित में से किस एक कृपक समुदाय ने विद्रोह किया था ?
    (A) जाट (B) गुर्जर
    (C) कैवर्त (D) डीम

63. 9वीं सदी से लेकर 12वीं सदी तक के गुजरात की राजनीतिक और सामाजिक संरचना को जानने के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है–
    (A) राजतरंगिणी (B) पंचतन्त्र
    (C) लेखा पद्धति (D) शुक्रनीति

64. गंगैकोण्डचोलपुरम राजधानी स्थापित की थी–
    (A) राजेन्द्र I ने (B) महान् राजराजा ने
    (C) कुलोतुंग I ने (D) परान्तक ने

65. एक विषय-क्षेत्र जो हिन्दुओं द्वारा अपेक्षाकृत उपेक्षित रहा, लेकिन जहाँ मुसलमान लेखकों ने अपनी निपुणता दिखलायी, थी–
    (A) तर्कशास्त्र (B) संगीतशास्त्र
    (C) ज्योतिषशास्त्र (D) इतिहास

66. निम्नलिखित में से कौनसा आलवार संत (Aluar saint) था?
    (A) अप्पार (B) कुलशेखर
    (C) सम्बन्दार (D) वेंकटनाथ

67. वृहदीश्वर मन्दिर बनवाया–
    (A) राजराजा ने (B) राजेन्द्र चोल ने
    (C) वीर राजेन्द्र ने (D) कुलोत्तुंग ने

68. निम्नलिखित में से कौनसा दक्षिण भारतीय राज्य अपनी नौसैनिक शक्ति (Naval Power) के लिए प्रसिद्ध था?
    (A) चालुक्य (B) होयसल
    (C) चोल (D) पाण्ड्य

69. निम्नलिखित में से कौन राजपूत काल का गणितज्ञ (Mathematician) था?
    (A) वागभट (B) वाचस्पति
    (C) हरदत्त (D) भास्कराचार्य

70. किस दिल्ली सुल्तान ने सबसे छोटे किसान से लेकर ग्रामीण विचौलिए वर्ग तक सव पर भूमि कर की एक समान दरें लागू कीं?
    (A) वलवन (B) अलाउद्दीन खिलजी
    (C) गयासुद्दीन तुगलक (D) मुहम्मद बिन तुगलक

71. भारत-अरव प्रज्ञात्मक सम्बन्धों का सबसे पहला प्रमाण ब्रह्मगुप्त द्वारा रचित ब्रह्म सिद्धान्त का अरवी भाषा में

अनुवाद है. यह अनुवाद निम्नलिखित में से किस नाम से जाना जाता है ?

(A) इल्मुलहिसाव (B) सिंध-हिंद

(C) कितावुल सिद्धान्त (D) ब्रह्म सिद्धान्त

72. निम्नलिखित में से कौनसा युग्म सही सुमेलित नहीं है ?

(A) महमूद गजनवी : अयाज

(B) बलबन : खानवालिग

(C) बावर : मिर्जा हैदर दुगलत

(D) दाराशिकोह : सरमद

73. जनता की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मदरसा-ए-नासिरी का निर्माण किसके शासनकाल में किया गया था ?

(A) कुतुवुद्दीन ऐवक के

(B) इल्तुतमिश के

(C) रुक्नुद्दीन फिरोजशाह के

(D) जलालुद्दीन खलजी के

74. **कथन** (A) : मृत राजाओं के सम्मान में मन्दिरों का निर्माण चोल काल का एक विशेष लक्षण था.

कारण (R) : राजेन्द्र प्रथम ने अपने पिता के सम्मान में गंगैकोंड-चोलपुरम में प्रसिद्ध शिव-मन्दिर का निर्माण किया था.

कूट :

(A) A और R दोनों सही हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है

(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है

(C) A सही है, परन्तु R गलत है

(D) A गलत है, परन्तु R सही है

75. भारत पर महमूद गजनी के आक्रमण के समय निम्नलिखित में से कौनसा समुदाय भारत के तत्कालीन राज्यों के शासकों को सूचित करता है ?

(A) जयपाल, फतेह दाऊद, महिपाल

(B) राजा भोज, मूलराज, शंकरवर्मन

(C) राज्यपाल, महिपाल, पृथ्वीराज

(D) चामुण्डराज, महिपाल, मिहिरभोज

76. तारीख-ए-यामिनी, जिसे किताव-ए-यामिनी भी कहते हैं, का लेखक है–

(A) अब्दुल फजल बैहाकी

(B) हसन निजामी

(C) अवू नस्र उत्वी

(D) अल कारदिजी

77. निम्नलिखित में से कौनसा एक चोल काल का राजस्व सम्बन्धी शब्द नहीं है ?

(A) कदमई (B) अदिमई

(C) कुदिमई (D) आलक्कापु

78. निम्नलिखित उद्धरण पर विचार कीजिए–

"कोई भी राजा इतना दयालु, सहानुभूति रखने वाला, विद्वानों तथा वृद्धों के प्रति श्रद्धालु राजा अपने प्रयासों से कभी साम्राज्य पर आसीन नहीं हुआ" मिन्हास-उस-सिराज का यह कथन किससे सम्बन्धित है ?

(A) इल्तुतमिश (B) कुतुवुद्दीन ऐवक

(C) मुहम्मद तुगलक (D) रजिया सुल्तान

79. राजेन्द्र I के विषय में निम्नलिखित वक्तव्यों पर विचार कीजिए–

1. उसने गंगा घाटी तक एक सैन्य अभियान का नेतृत्व किया.
2. उसने लंका के राजा महेन्द्र V को पराजित किया.
3. उसने 72 व्यापारियों का एक बड़ा दल अपने दूत के रूप में चीन भेजा.

इनमें से कौनसे सही हैं ?

(A) 1, 2 और 3 (B) 1 और 2

(C) 2 और 3 (D) 1 और 3

80. अल्बेरूनी ने अपनी पुस्तक *किताबुल हिन्द* में भारतीयों की विशेषकर प्रशंसा की है–

(A) अपनी ज्ञान सम्पदा के विनिमय तथा सम्प्रेषण में उच्च कोटि की प्रवीणता के लिए

(B) एक शक्तिशाली व्यापारी वर्ग के उदयीकरण में उच्च कोटि की प्रवीणता के लिए

(C) पवित्र स्थानों पर तालावों तथा जल संग्रहण कार्यों के निर्माण में उच्च कोटि की प्रवीणता के लिए

(D) लघुचित्रों की रचना में उच्च कोटि की प्रवीणता के लिए

81. बलबन अपने राज्य क्षेत्र में विस्तार करने में असफल रहा–

(A) वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण

(B) अमीर वर्ग द्वारा असहयोग के कारण

(C) मंगोल आक्रमणकारियों के भय के कारण

(D) अपने पुत्र द्वारा विद्रोह के कारण

82. इल्तुतमिश के शासनकाल में राजनयिक सिद्धान्त तथा राजकीय संघटन की कला पर तैयार किया गया प्रथम भारतीय-मुसलमान गौरवग्रंथ है–

(A) आदावुल मुलूक

(B) अहकाम-उस सुल्तानिया

(C) फतवाए जहाँदारी

(D) आदाब-उस सलातीन

83. सर्वप्रथम चोलकालीन स्वर्ण मुद्रा, जिसका हमें ज्ञान है, सम्बन्धित है–

(A) आदित्य चोल II के शासनकाल से

(B) उत्तम चोल के शासनकाल से

(C) राजराजा चोल के शासनकाल से

(D) राजेन्द्र चोल के शासनकाल से

84. निम्न में से कौनसा कल्याण के चालुक्यों तथा चोलों के मध्य सतत् युद्ध का कारण नहीं था?

(A) आर्थिक कारक

(B) कल्याण के चालुक्यों तथा वेंगि के चालुक्यों के मध्य प्रतिस्पर्धा

(C) भू-राजनैतिक कारक

(D) दक्षिण भारत का चीन तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया के साथ विदेशी व्यापार को अधिकार में लेने की प्रतिस्पर्धा

उत्तरमाला

1. (B) 5. (A)

3. (A) 949 ई. में तक्कोलम के युद्ध में राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय ने चोल शासक परान्तक प्रथम को परास्त कर दिया.

4. (A)	5. (A)	6. (B)	7. (D)	8. (B)
9. (C)	10. (C)	11. (A)	12. (A)	13. (C)
14. (C)	15. (D)	16. (B)	17. (A)	18. (D)
19. (D)	20. (B)	21. (A)	22. (A)	23. (A)
24. (D)	25. (A)	26. (B)	27. (A)	28. (B)
29. (D)	30. (A)	31. (C)	32. (A)	33. (C)
34. (A)	35. (D)	36. (C)	37. (B)	38. (B)
39. (C)	40. (B)	41. (B)	42. (A)	43. (A)
44. (C)	45. (B)	46. (C)	47. (B)	48. (D)
49. (B)	50. (D)	51. (D)	52. (B)	53. (B)
54. (C)	55. (B)	56. (C)	57. (A)	58. (C)
59. (A)	60. (A)	61. (A)	62. (C)	63. (C)
64. (A)	65. (D)	66. (B)	67. (A)	68. (C)
69. (D)	70. (B)	71. (B)	72. (A)	73. (B)
74. (C)	75. (A)	76. (C)	77. (D)	78. (A)
79. (A)	80. (C)	81. (C)	82. (D)	83. (B)
84. (D)				

2

तेरहवीं एवं चौदहवीं शताब्दी का भारत

(India of Thirteenth and Fourteenth Centuries)

(गौरी विजय; कारण एवं परिणाम. गुलाम शासकों के अन्तर्गत दिल्ली सल्तनत, अलाउद्दीन खिलजी, विजय अभियान, प्रशासनिक, कृषिक एवं आर्थिक उपाय, मुहम्मद तुगलक के अभिन्न परिवर्तन, फिरोज तुगलक और दिल्ली सल्तनत का ह्रास, वाणिज्य तथा नगरीकरण का विकास, साहित्य, स्थापत्य, प्रौद्योगिकी में परिवर्तन)

(Ghorian invasions causes and consequences, Delhi Sultanate under the 'Slave' Rulers, Alauddin Khalji : Conquests; administrative, agrarian and economic measures, Muhammad Tughluq's innovations, Firuz Tughluq and the decline of the Delhi Sultanate, Growth of commerce and urbanization, Literature, Architecture, Technological changes)

ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत पर तुर्कों ने आक्रमण किया. तुर्की आक्रमण के प्रथम नेतृत्वकर्त्ता महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी थे. तुर्की आक्रमण के पीछे राजनीतिक, आर्थिक या धार्मिक कोई भी कारण रहा हो, तथापि ये भारत में तुर्की राज्य या दिल्ली सल्तनत को स्थापित करने में कामयाब रहे. दिल्ली सल्तनत की स्थापना में प्रथम तुर्की आक्रमण की सफलता को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानना होगा. 1206 ई. से 1290 ई. तक विभिन्न सुल्तानों ने दिल्ली सल्तनत पर शासन किया. इन शासकों को 'ममुलक' (दासता से युक्त) कहा गया. आधुनिक इतिहासकार 1206 ई. से 1290 ई. तक शासन करने वाले शासकों को 'आदितुर्क' के नाम से भी सम्बोधित करते हैं. सल्तनत काल के सम्पूर्ण अध्ययन के लिए ऐतिहासिक स्रोतों–अभिलेख, यात्रा-विवरण, साहित्यिक स्रोत, सिक्के आदि का सहारा लेना ही तर्कसंगत होगा.

सल्तनतकालीन इतिहास के स्रोत

दिल्ली सल्तनत के बारे में जानने के लिए प्रमुख ऐतिहासिक ग्रन्थ निम्नलिखित हैं–

चचनामा–इस ग्रन्थ की रचना बद्रेचाच ने की थी. चचनामा अरबों की विजय एवं तत्कालीन इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्रोत है.

किताब-उल-हिन्द–इसे 'तहकीक-ए-हिन्द' के नाम से भी जाना जाता था. इसको एक अरबी यात्री अलबेरूनी ने लिखा था. अलबेरूनी को महमूद गजनवी युद्ध बन्धक के रूप में गजनी में लाया था. इसमें ग्यारहवीं शताब्दी एवं उसके बाद के भारत की सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक दशा का उत्कृष्टतम रूप में उल्लेख मिलता है. अलबेरूनी की दूसरी पुस्तक तारीख-ए-अलहिन्द भी दिल्ली सल्तनत के इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्रोत है.

जैनुल अखबार–मूलरूप से ईरानी इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्रोत जैनुल अखबार का लेखक अबी सईद था. इसमें महमूद गजनवी के आक्रमण एवं जीवन पर महत्त्वपूर्ण तथ्य मिलते हैं.

तारीख-ए-मुबारकशाही–शासक मुबारक शाह सैय्यद वंश का शासक था. तारीख-ए-मुबारकशाही सैय्यदकालीन विशेष रूप से मुबारकशाह पर लिखा गया ग्रन्थ है, तथापि सल्तनतकालीन इतिहास का यह महत्त्वपूर्ण स्रोत है. इसे याहिया बिन अहमद सरहिन्दी ने लिखा था.

तारीख-ए-मसूदी–तारीख-ए-मसूदी सल्तनतकालीन इतिहास के शासक महमूद गजनवी एवं मसूद के शासनकाल का उत्कृष्टतम ऐतिहासिक स्रोत है. इसे अबुल फजल मुहम्मद बिन हुसैन अल बहरी ने लिखा था.

खजायन-उल-फुतुह–इस ग्रन्थ को प्रसिद्ध लेखक एवं कवि अमीर खुसरो ने लिखा था. यह सल्तनतकालीन इतिहास को आँखों से देखने वाले लेखक थे. बलबन से लेकर गयासुद्दीन तुगलक तक सात सुल्तानों के शासनकाल का महत्त्वपूर्ण साक्ष्य अमीर खुसरो थे. खजायन-उल-फुतुह में मुख्य रूप से मंगोल आक्रमण एवं अलाउद्दीन के दक्खन अभियान का उल्लेख किया है.

देवलरानी खिज्र खाँ–इस ग्रन्थ के रचनाकार भी अमीर खुसरो थे. मूलतः इसमें अलाउद्दीन के पुत्र खिज्र खाँ तथा गुजरात के राणा करनदेव की पुत्री देवलरानी के मध्य प्रेम सम्बन्धों का वर्णन किया गया है. अलाउद्दीन के सैनिक अभियानों को भी इसमें समेटा गया है. अमीर खुसरो की अन्य रचनाएँ–मिफ्ताह-उल-फुतुह, किरान-उस-सादेन, एजाज-ए-खुसरवी है, जो सल्तनतकालीन इतिहास के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत है.

सियासतनामा–तुर्की शासन के दौरान प्रचलित दास-प्रथा, दासों के प्रशिक्षण की व्यवस्था एवं सल्तनतकालीन अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्यों के संकलन के रूप में यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है. निजाम-उल-मुल्क-तूसी इसके रचनाकार थे.

तारीख-ए-जहाँगुशाँ–इस ग्रन्थ के रचनाकार अलाउद्दीन अतामलिक जुवैनी थे. इस ग्रन्थ में मंगोल शासन के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं. तारीख-ए-जहाँगुशाँ में अलाउद्दीन अतामलिक जुवैनी ने सिन्धु क्षेत्र में चंगेज खाँ द्वारा जलालुद्दीन मंगवली का पीछा करने की घटना को बड़े अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया था.

खैर-उल-मजालिस–मंगोल आक्रमण के प्रभाव, अलाउद्दीन के बाजार नियन्त्रण और शेख नसीरूद्दीन चिराग देहलवी की वार्ता के संकलन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत है. इस ग्रन्थ के रचनाकार हमीद कलन्दर थे.

[1]**फवायद-उल-फुवाद (फुआद)**–इस ग्रन्थ के रचनाकार अमीर हसन सिज्जी थे. इसमें धार्मिक आन्दोलन सल्तनत-कालीन संस्कृति एवं चौदहवीं शताब्दी के साहित्य पर महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है. इसमें शेख निजामुद्दीन औलिया के वार्तालाप को संकलित किया गया है.

फुतुह-उस-सलातीन–यह ग्रन्थ सल्तनतकालीन इतिहास का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है. इसमें 999 ई. से 1350 ई. तक का इतिहास सुरक्षित है. इसमें मोहम्मद-बिन-तुगलक की आलोचना एवं बहमनशाह की उपलब्धियों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला गया है. इसके रचनाकार (ख्वाजा अब्दुल मलिक) इसामी थे.

तारीख-ए-फिरोजशाही–इस ग्रन्थ की रचना जियाउद्दीन बर्नी ने की थी. इसमें अलाउद्दीन खिलजी एवं तुगलक-काल के इतिहास का वर्णन मिलता है. जियाउद्दीन बर्नी की दूसरी पुस्तक 'फतवा-ए-जहाँदारी' थी. सल्तनतकालीन इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए दोनों ही पुस्तकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है. उल्लेखनीय है तारीख-ए-फिरोजशाही नाम का एक दूसरा ग्रन्थ भी है, जिसे शम्स-ए-शिराज अफीक ने लिखा है. इसमें फिरोजशाह तुगलक के शासन की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है.

फी ममालिक-उल-अमसार–यह अरबी भाषा में लिखा गया ग्रन्थ है, जिसे इबु फजलुल्लाह अल उमरी ने लिखा था. इसमें मुहम्मद तुगलक के काल की सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था का उल्लेख मिलता है.

ताजुल मासिर–यह दिल्ली सल्तनतकालीन सरकार द्वारा तैयार कराया गया संकलन था. इसमें 1191 ई. से 1229 ई. तक के सल्तनतकालीन इतिहास को संग्रहित किया गया है. यह सदाउद्दीन हसन निजामी द्वारा लिखा गया था. इसकी रचना 1237 में हुई थी. इसके लेखक को कुतुबुद्दीन ऐबक एवं इल्तुतमिश ने आश्रय दिया था.

तबकात-ए-नासिरी–इस ग्रन्थ में दिल्ली सल्तनतकालीन सैनिक अभियान, सुल्तान, अमीर, उलेमा, मलिक तथा अन्य प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था का उल्लेख किया गया है. इस ग्रन्थ के रचनाकार मिन्हाज-उस-सिराज थे.

जफरनामा–जफरनामा भी सल्तनतकालीन इतिहास की जानकारी के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है. जफरनामा को शरयुद्दीन अली यजकी ने लिखा था. इसमें तैमूर के आक्रमण को विशुद्धता से स्पष्ट किया गया है.

मिफताह-उल-फुजला–इस ग्रन्थ के रचनाकार मोहम्मद दाऊद शादिया वादी हैं. इसमें सल्तनतकालीन तकनीकी विकास के बारे में सम्पूर्ण विवरण दिया है.

उपरोक्त ऐतिहासिक स्रोतों के अतिरिक्त मार्को पोलो, निकोलो कोन्ती, डोमिंगो पायस, दुआर्ते बारबोसा, रेहजा, अथनासियस निकितन, एफ. नूनिज जैसे विदेशी यात्रियों के विवरण तथा क्षेमेन्द्र का लोकप्रकाश, कल्हण की राजतरंगिणी, विद्यापति की पुरुषपरीक्षा, शेख शुभादेश रासमाला इत्यादि रचनाएँ प्रमुख रूप से सल्तनत काल के इतिहास के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं. पुरातात्त्विक स्रोतों में कुबुत-उल-इस्लाम, कुतुबमीनार अलाई दरवाजा, फिरोजशाह कोटला एवं सल्तनतकालीन सिक्के भी दिल्ली सल्तनतकालीन इतिहास के लिए उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितने कि साहित्यिक स्रोत.

गुलाम वंश (1206-1290 ई.)

दिल्ली सल्तनत का शासन 1206 से 1528 ई. तक के दौरान विभिन्न वंशों के शासकों द्वारा संभाला गया. कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.) दिल्ली सल्तनत का पहला तथा इब्राहीम लोदी (1517-1528 ई.) अन्तिम शासक था.

भारत पर सबसे पहले 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम के द्वारा प्रथम मुस्लिम आक्रमण सिन्ध पर किया गया था. तत्कालीन सिन्ध के राजा दाहिर पर विजय प्राप्त करने के फलस्वरूप भी सिन्ध के आसपास के क्षेत्रों में राजपूत राजाओं का शासन होने के कारण मुहम्मद बिन कासिम सिन्ध से आगे

1 इसी से मिलते-जुलते नाम का एक मध्यकालीन ग्रन्थ फवायद-उलफवायद की रचना 1325 ई. में मीर हसन देहलवी ने की थी.

नहीं बढ़ सका. इसके पश्चात् ग्यारहवीं सदी में महमूद गजनवी और बारहवीं सदी में मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किये जिनमें उन्हें सफलता प्राप्त हुई. यहाँ पर दृष्टव्य है कि महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण का लक्ष्य राजनीतिक से अधिक लूटपाट एवं धर्मजन्य ईर्ष्या थी. अतः उसने भारत पर सत्ता स्थापित नहीं की. दूसरी तरफ मुहम्मद गौरी ने जिन प्रदेशों को जीता, उन पर अपनी सत्ता भी स्थापित की. पंजाब से आते समय 15 मार्च, 1206 ई. को मुहम्मद गौरी को मार दिया था. मुहम्मद गौरी के कोई सन्तान नहीं थी. अतः मुहम्मद गौरी के गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत के विजित प्रदेशों और दिल्ली सल्तनत का शासन सँभाला. 1206 से 1290 ई. तक के समस्त शासक या तो गुलाम थे या फिर गुलामों के पुत्र थे इसी कारण 1206 से 1290 ई. के शासकों के वंश को गुलाम वंश कहा जाता है. उल्लेखनीय है कि महमूद गजनवी के गजनी पर उत्तराधिकारी के रूप में यल्दूज ने शासन सँभाला था.

कुतुबुद्दीन ऐबक (Qutubuddin Aibak)

(1206-1210 ई.)

1.	नाम	कुतुबुद्दीन ऐबक
2.	निवासी	तुर्किस्तान
3.	जाति	तुर्क जनजाति
4.	प्रारम्भिक जीवन	1. दास के रूप में नैशापुर के बाजार में लाया गया. 2. काजी फखरूद्दीन अब्दुल अजीज कूफी ने बचपन में खरीद लिया था. 3. काजी ने ऐबक को घुड़सवारी और धनुर्विद्या सिखाई. 4. प्रारम्भ में कुरान पढ़ना सीख जाने के कारण 'कुरानख्वां' के नाम से प्रसिद्ध हुआ.
5.	शासनकाल	1206-1210 ई.
6.	उल्लेखनीय घटनाएँ	1. नैशापुर से गजनी बेच देने पर मुहम्मद गौरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को खरीद लिया था. 2. मुहम्मद गौरी ने उसकी योग्यता से खुश होकर उसे शाही घुड़साल का अधिकारी 'अमीर-ए-आखूर' बनाया. 3. अमीर-ए-आखूर की नौकरी करते हुए ऐबक ने गोर, बामियान, गजनी एवं तराईन के युद्ध में गौरी की सहायता-सेवा की जिसके फलस्वरूप उसे कुहराम और समाना का प्रशासक नियुक्त किया.
7.	शासन कार्य	1. गौरी के प्रतिनिधि के रूप में 1192-1206 ई. तक उत्तरी भारत के विजित प्रदेशों का प्रशासन सँभाला. 2. खोखरों (1205 ई.) के दमन के पश्चात्त मोहम्मद गौरी ने औपचारिक रूप से मलिक और भारतीय प्रान्तों का वली अहद (उत्तराधिकारी) नियुक्त किया.
8.	राज्यारोहण	1. मुइजुद्दीन मुहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद 25 जून, 1206 ई. को ऐबक का अनौपचारिक राज्यारोहण लाहौर में हुआ. उसने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया था. 2. प्रारम्भ में मलिक एवं सिपहसालार के रूप में शासन सँभाला था. 3. 1206 ई. में सिंहासन, छत्र, दूरवास, पताका एवं नक्कारा सुल्तान से प्राप्त कर सुल्तान की पदवी ग्रहण की. दिल्ली सल्तनत की स्वतन्त्र सत्ता 1208 ई. में ही स्थापित हुई.
9.	गुरू	ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी.
10.	सत्ता से पूर्व अधीन क्षेत्र	मुलतान, उच्छ, नहरवाला, सियालकोट, लाहौर, तबरहिन्द, तराईन, अजमेर, हाँसी, कुहराम, सरसुती, कोयल, मेरठ, दिल्ली, बदायूँ, भीरा, कन्नौज, बनारस, कालिंजर, अवध और मालवा उत्तर पश्चिमी सीमा से मध्य भारत तक उसके क्षेत्र थे. पूर्वी भारत में बिहार, बंगाल उसके क्षेत्र में थे.
11.	सत्ता प्राप्ति के लिए त्रिकोणीय संघर्ष	यल्दूज, कुबाचा और बंगाल, बिहार के खिलजियों से सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष हुआ.
12.	प्रमुख योगदान	1. दिल्ली सल्तनत की स्थापना की. 2. दानवीर एवं उदार होने के कारण 'लाखबख्श' के नाम से ख्याति प्राप्त था. 3. साहित्य और कला का संरक्षक था. 4. फर्रूखमुद्दीर एवं हसन निजामी उसके दरबार के प्रसिद्ध विद्वान थे.
13.	निर्माण कार्य	1. दो प्रसिद्ध मस्जिदें दिल्ली का कुवत-उल-इस्लाम तथा अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा बनवाया. 2. अपने गुरू ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में कुतुबमीनार की एक मंजिल का निर्माण कराया. इसे इल्तुतमिश ने पूरा किया था. (दोनों के गुरू एक ही थे)
14.	पुत्री दामाद	इल्तुतमिश
15.	पत्नी	एल्दीज (यल्दूज) की पुत्री
16.	बहनोई	नासीरूद्दीन कुबाचा
17.	पुत्र	आरामशाह
18.	मृत्यु	नवम्बर 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण मृत्यु हो गई.

आरामशाह (Aramshah)
(1210 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक की आकस्मिक मृत्यु के फलस्वरूप तुर्की सरदारों ने उसके पुत्र आरामशाह को 1210 ई. में लाहौर में सुल्तान बना दिया. कुबाचा और खिलजियों के आक्रमण को वह नियन्त्रित नहीं कर सका. बदायूँ के गवर्नर, विश्वासपात्र गुलाम इल्तुतमिश को, जो ऐबक का दामाद था तुर्की सरदारों ने सुल्तान बनाना चाहा, जिसका विरोध आरामशाह ने किया. इल्तुतमिश ने आरामशाह को मारकर सत्ता पर अधिकार कर लिया. कुछ विद्वान आरामशाह को कुतुबुद्दीन ऐबक का पुत्र नहीं मानते.

इल्तुतमिश (Iltutmish)
(1210-1236 ई.)

1. नाम	अलतमश
2. प्रसिद्ध नाम	इल्तुतमिश
3. जाति	इलबरी तुर्क
4. वंश	शम्सी वंश
5. पिता	ईलम खाँ (इलबरी जनजाति का सरदार)
6. प्रारम्भिक जीवन	1. पिता का चहेता एवं कुशाग्र बुद्धि का था. 2. ईर्ष्यावश भाईयों ने बुखारा ले जाकर दास के रूप में बेच दिया था. 3. बुखारा से गजनी एवं बगदाद ले जाया गया. 4. सुल्तान मुईज्जुद्दीन शाम मुहम्मद बिन गौरी के द्वारा उसकी बिक्री पर प्रतिबन्ध लगाने पर दिल्ली ले जाकर कुतुबुद्दीन ऐबक को बेचा गया.
7. शासनकाल	1210-1236 ई.
8. पुत्री	रजिया सुल्तान
9. गुरू	ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
10. जीवन की उल्लेखनीय घटनाएँ	1. कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा दास के रूप में खरीदा गया. ऐबक ने इल्तुतमिश को शाही अंगरक्षकों का सरदार सरजानदार एवं अमीर-ए-शिकार पद पर स्थापित किया. 2. 1200 ई. ग्वालियर का अमीर बनाया गया. 3. ग्वालियर, बरन, बदायूँ के 'इक्तादार' के रूप में कार्य किया. 4. खोखरों के विरुद्ध अभियान में इल्तुतमिश की वीरता को देखकर 1205 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने उसे दासता से मुक्त कर दिया. 5. बदायूँ का प्रशासक नियुक्त किया गया.
11. वैवाहिक सम्बन्ध	कुतुबुद्दीन ऐबक की पुत्री से विवाह किया था.
12. राज्यारोहण	ऐबक ने सेनापति अमीद अली इस्माइल की अनुमति से आरामशाह को मारकर 1210 ई. में दिल्ली में ऐबक वंश की जगह इलबरी वंश के शासन को प्रारम्भ किया.
13. योगदान	1. लाहौर के स्थान पर दिल्ली को राजधानी बनाकर उत्तरी भारत के शासन को सँभाला. 2. सल्तनत के 3 महत्त्वपूर्ण अंग अक्ता, सेना एवं मुद्रा प्रणाली का गठन किया. 3. नए सिक्के चाँदी का टंका तथा ताँबे के सिक्के 'जीतल' का प्रचलन इल्तुतमिश ने ही प्रारम्भ किये. टंका का वजन 175 ग्रेन था.
14. त्रिकोणीय सत्ता संघर्ष	गजनी में यल्दूज, सिन्ध में कुबाचा तथा बंगाल (लखनौती) में अलीमर्दान के साथ.
15. सम्पादित महत्त्वपूर्ण कार्य	1. अपने सशक्त प्रतिद्वन्द्वी यल्दूज को 1215-16 ई. में तराईन के युद्ध में मार कर संघर्ष का अन्त किया. 2. 1217 ई. में लाहौर पर आक्रमण कर कुबाचा को पराजित किया. 3. 1226 ई. में भटिण्डा, सुरसुती तथा लाहौर पर आक्रमण किया. पुनः कुबाचा को बाध्य किया, जिससे निराश होकर कुबाचा ने नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली. 4. चंगेज खाँ (1221 ई.) पर आक्रमण किया. 5. 1230-31 ई. में बंगाल को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाया. 6. 1232 ई. में ग्वालियर तथा 1234 ई. में मालवा को जीता. 7. 1233-1235 ई. के मध्य नागदा, मालवा, उज्जैन एवं भिलसा पर विजय प्राप्त की. 8. स्यालकोट, जालन्धर और नन्दन पर सेना भेजकर शांति-व्यवस्था स्थापित की.
16. उत्कृष्टतम सम्पादित कृत्य	1. अब्बासी खलीफा से 18 फरवरी, 1229 ई. को इल्तुतमिश ने सुल्तान के पद की वैधानिकता एवं स्वतन्त्रता प्राप्त की, जो इतिहास की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना थी. 2. खलीफा ने इल्तुतमिश को नासिर-अमीर-उलमोमिनीन (मुसलमानों का प्रधान तथा खलीफा का सहायक) की उपाधि प्रदान की. 3. विश्वासपात्र व्यक्तियों को सम्मिलित कर चालीस गुलामों का दल बनाया जिसे गुलाम-ए-चालीस या चरगान कहा गया. 4. वंशानुगत राजतन्त्र को स्थापित किया. 5. पूरे राज्य को छोटे-छोटे भागों में विभक्त कर 'इक्तादारी प्रथा' की स्थापना की.

	6. उचित कार्य के सम्पादन के लिए दिल्ली एवं अन्य नगरों में काजी एवं अमीरदार नामक पदाधिकारियों की नियुक्ति की.
17. विद्वानों का संरक्षण	तत्कालीन विद्वान मिनहाज उस सिराज एवं मलिक ताजूद्दीन को संरक्षण प्रदान किया.
18. इतिहासकारों का मूल्यांकन	1. प्रो. ईश्वरी प्रसाद के अनुसार इल्तुतमिश गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक था. 2. डॉ. आर. पी. त्रिपाठी के अनुसार भारत में मुस्लिम सत्ता का वास्तविक श्रीगणेश इल्तुतमिश ने ही किया था. राजधानी, स्वतन्त्र राज्य, राजतन्त्रीय शासन और शासक वर्ग का सर्वप्रथम उसी ने संगठन बनाया था. 3. प्रो. निजामी के अनुसार "ऐबक ने दिल्ली सल्तनत की रूपरेखा के बारे में सिर्फ दिमागी आकृति बनाई थी. इल्तुतमिश ने उसे एक व्यक्तित्व, एक पद, एक प्रेरणाशक्ति, एक दिशा, एक शासन व्यवस्था और एक शासक वर्ग प्रदान किया."
19. निर्माण कार्य	सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में 1231-32 ई. में कुतुबमीनार को पूरा बनवाया था.
20. मृत्यु	खोखरों के अभियान को दबाने के दौरान 1236 ई. में मृत्यु हो गई.

फिरोजशाह (Firozshah)

(1236 ई.)

फिरोजशाह का पूरा नाम रूकुनुद्दीन फिरोजशाह था. यह इल्तुतमिश का छोटा पुत्र था. इल्तुतमिश का बड़ा पुत्र लखनौती का शासक नासिरूद्दीन महमूद था, जो पूर्व में ही मारा जा चुका था. यद्यपि इल्तुतमिश की इच्छा अपनी पुत्री रजिया सुल्तान को शासक बनाने की थी, लेकिन तुर्क अमीर स्त्री को शासन सौंपना अपना अपमान समझते थे. अतः फिरोजशाह की माँ शाहतुर्कन, तुर्क अमीरों तथा अक्तादारों (इक्तादारों) ने इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद 1236 ई. में फिरोजशाह को शासन का भार सौंपा. फिरोजशाह दुर्बल, अक्षम, विलासी प्रवृत्ति का था. राज्य पर नियन्त्रण नहीं हो पाने के कारण सत्ता उसकी माँ शाहतुर्कन के पास चली गई, जो बेहद दुष्ट एवं क्रूर प्रकृति की महिला थी. फिरोजशाह के दिल्ली पहुँचने पर उसे कैद कर उसकी हत्या कर दी गई. इसी दौरान रजिया सुल्तान ने लाल वस्त्र (न्याय का प्रतीक) पहनकर नमाज के समय दिल्ली में शाहतुर्कन की ज्यादतियों से मुक्ति के लिए जनता से अपील की. जनता ने उसकी बात मानकर राजमहल से शाहतुर्कन को गिरफ्तार कर रजिया सुल्तान को दिल्ली सल्तनत की सुल्तान बना दिया.

रजिया सुल्तान (Razia Sultan)

(1236-1240 ई.)

1. नाम	रजिया सुल्तान
2. पिता	इल्तुतमिश
3. माता	शाहतुर्कन
4. भाई	1. नासिरूद्दीन महमूद 2. रूकुनुद्दीन फिरोजशाह 3. मुईजुद्दीन बहरामशाह 4. कुतुबुद्दीन
5. पति	अल्तूनिया
6. राज्यारोहण	जनता के समर्थन से नवम्बर 1236 ई. में.
7. उल्लेखनीय सम्बन्धित घटनाएँ	1. रजिया दिल्ली की प्रथम और अंतिम महिला सुल्तान थी. 2. रजिया पुरुषों के समान कूबा (कोट) और कुलाह (टोपी) पहनकर राजदरबार में शासन करती थी. 3. अबीसीनियाई के हब्शी अधिकारी जमालुद्दीन याकूत खाँ से वह प्रेम करती थी, जिसके कारण उसे रजिया ने अमीर आखूर (अश्वशाला) का प्रधान नियुक्त किया. 4. वह पुरुषों की तरह शिकार खेलती थी एवं घुड़सवारी करती थी.
8. सम्पादित श्रेष्ठ कार्य	1. विद्रोही सरदारों को नियन्त्रित करने के उद्देश्य से यमुना के किनारे सैनिक शिविर की स्थापना की. 2. लखनौती से देवल तक समस्त मलिकों और अमीरों पर आधिपत्य कर लिया. 3. रणथम्भौर के दुर्ग एवं ग्वालियर पर अधिकार किया.
9. प्रमुख नियुक्त प्रशासक	1. नायब वजीर मुहज्जबउद्दीन को वजीर बनाया. 2. जमालुद्दीन याकूत को अश्वशाला का प्रधान (अमीर आखूर) बनाया. 3. मलिक हसन गौरी को सेनापति नियुक्त किया. 4. कबीर खाँ अयाज को लाहौर का अक्तादार (इक्तादार) बनाया. विद्रोह करने पर कबीर खाँ को हटा दिया गया.
10. प्रमुख विरोधी	निजामुलमुल्क जुनैदी, मलिक अलाउद्दीन जानी, मलिक सैफूद्दीन कूची, मलिक ईजूद्दीन सलारी एवं कबीर खाँ अयाज.
11. विद्रोह	1. याकूत से अनैतिक सम्बन्ध, ग्वालियर के हाकिम जियाउद्दीन जुनैदी के गायब होने का आरोप रजिया पर लगाकर लाहौर के सूबेदार कबीर खाँ अयाज, बदायूँ और तबरहिन्द (भटिंडा) (इक्तादारों) के अक्तादारों, एतगीन और अल्तूनिया ने विद्रोह किया.

	2. एतगीन के इशारे पर अल्तूनिया ने 1240 ई. में विद्रोह किया. रजिया भटिण्डा विद्रोह का दमन करने के लिए गई हुई थी. इसी बीच उसके प्रेमी याकूत खाँ की हत्या एतगीन ने करवा दी.
	3. अल्तूनिया के सहयोग से रजिया को बन्दी बना लिया गया.
	4. रजिया के भाई बहरामशाह ने एतगीन की हत्या कर दी, जिससे शंकित होकर अल्तूनिया ने रजिया से विवाह कर लिया.
12. इतिहासकारों का मूल्यांकन	प्रसिद्ध इतिहासकार मिनहाज उस सिराज के अनुसार "सुल्तान रजिया एक महान शासक थीं–बुद्धिमान न्यायप्रिय, उदारचित्त, प्रजा की शुभचिन्तक, समदृष्टा-प्रजापालक एवं अपनी सेनाओं की नेत्री. उसमें सभी बादशाही गुण विद्यमान थे सिवाय नारीत्व के और इसी कारण मर्दों की दृष्टि में उसके सब गुण बेकार थे."
13. मृत्यु	13 अक्टूबर, 1240 ई. को कैथल के निकट उसके पति अल्तूनिया एवं स्वयं रजिया की हत्या बहराम ने कर दी.

मुईजुद्दीन बहरामशाह (Muijuddin Bahramshah)

(1240-1242 ई.)

1240 ई. में रजिया की हत्या कर उसके भाई मुईजुद्दीन बहरामशाह ने सल्तनत पर अधिकार कर शासन सँभाला था. तुर्की अमीरों ने नायब-ए-मुमलकत (संरक्षक) का पद बनाया था. वह नाममात्र का शासक था. चालीस गुलामों का दल (चरगान या गुलाम-ए-चालीसा) ही वास्तविक शासन संभालता था. उस दौरान नायब-ए-मुमलकत एतगीन को बनाया गया था, लेकिन बहरामशाह ने उसे मार डाला. इस पद पर बदरूद्दीन सुन्कर रूमी को उसके बाद बहाल किया गया, पर उसे भी बहराम ने मार दिया. तुर्की अमीरों ने क्रुद्ध होकर 13 मई, 1242 ई. को बहरामशाह की हत्या कर दी.

अलाउद्दीन मसूदशाह (Alauddin Masudshah)

(1242-1246 ई.)

अलाउद्दीन मसूद शाह रिश्ते में इल्तुतमिश का पौत्र था. बहरामशाह के बाद 1242 ई. में शासन की बागडोर उसने सँभाली थी. उस समय मलिक कुतुबुद्दीन हसन नायब एवं अबू बक्र 'वजीर' था, हाँसी के अक्तेदार (इक्तेदार) के रूप में बलबन को चुना गया था. मसूदशाह पूर्णतः दुर्बल एवं अयोग्य व्यक्ति था. गुलाम-ए-चालीसा ही शासन को सँभालती थी. 1245 ई. में मंगोलों ने उच्छ पर आक्रमण कर दिया, जिसे बलबन ने मुकाबला कर मार भगाया एवं उच्छ पर पुनः अधिकार कर लिया. बलबन ने षड्यन्त्र से मसूदशाह को कैद कर लिया और 10 जून, 1246 ई. को कैदखाने में उसकी मृत्यु हो गई.

नासिरूद्दीन महमूद (Nasiruddin Mahmood)

(1246-66 ई.)

1. नाम	नासिरूद्दीन महमूद
2. पिता	इल्तुतमिश का सबसे छोटा पुत्र
3. राज्याभिषेक	जून, 1246 ई. में (17 वर्ष की उम्र में)
4. वंश	शम्सी वंश
5. प्रकृति	धर्मप्रेमी, न्यायप्रिय, दयालु सुल्तान
6. उल्लेखनीय घटनाएँ	1. नासिरूद्दीन ने बलबन के सहयोग एवं षड्यन्त्र से सत्ता प्राप्त की थी.
	2. सत्ता चालीसा के सरगना एवं नायब बलबन संभालता था.
	3. नासिरूद्दीन महमूद कुरान शरीफ लिखकर बेचता था, प्राप्त आय से जीवन निर्वाह करता था.
	4. मिन्हाज-उस-सिराज ने तबकात-ए-नासिरी उसे समर्पित की थी.
7. ऐतिहासिक स्रोत	1. तारीख-ए-मुबारकशाही
	2. रेहाला
	3. फुतुहसलातीन
8. पत्नी	बलबन की पुत्री से विवाह किया था.
9. इतिहासकारों का मूल्यांकन	इतिहासकार इसामी के शब्दों में–"वह बिना तुर्की अधिकारियों की पूर्व आज्ञा के अपनी कोई राय व्यक्त नहीं करता था. वह बिना उनकी आज्ञा के हाथ-पैर तक नहीं हिलाता था."
10. मृत्यु	1266 ई. में (37 वर्ष की उम्र में).

गयासुद्दीन बलबन (Gayasuddin Balban)

(1266-1287 ई.)

1. वास्तविक नाम	बहाउद्दीन
2. प्रसिद्ध नाम	गयासुद्दीन बलबन तथा बलबन
3. वंश	अफरासियाब (स्वयं मानता था).
4. जाति	इलबरी तुर्क जनजाति
5. परिवार	सम्पन्न परिवार
6. पिता	इलबरी तुर्कों के बड़े कबीले के मुखिया.
7. उपाधि	जिल्ली-इलाही
8. प्रारम्भिक जीवन	1. युवावस्था में मंगोलों ने बन्दी बनाकर बसरा में दास के रूप में बेच दिया. उसे ख्वाजा जलालुद्दीन ने खरीदा था.
	2. ख्वाजा ने शिक्षित कर उसे सुसंस्कृत बनाया.

	3. 1223 ई. में ख्वाजा बलबन को लेकर दिल्ली गये, जहाँ इल्तुतमिश ने उसे खरीद कर दासों के दल में सम्मिलित कर लिया.
	4. इल्तुतमिश ने प्रारम्भ में बलबन को नौकर बनाया, लेकिन उसकी योग्यता को देखकर चालीसा में शामिल कर लिया.
9. उल्लेखनीय घटनाएँ	1. रुकनुद्दीन का विरोध करने एवं रजिया का पक्ष लेने के कारण कारागार में डाल दिया गया.
	2. रजिया ने सुल्तान बनने के बाद उसे 'अमीर-ए-शिकार' का पद प्रदान किया.
	3. सत्ता संघर्ष में बहरामशाह का पक्ष लेकर 'अमीर-ए-आखूर' का पद प्राप्त किया. रेवाड़ी एवं हाँसी की जागीरें प्राप्त कीं.
	4. सुल्तान अलाउद्दीन मसूदशाह के शासन-काल में 'अमीर-ए-हाजिब' का पद प्राप्त किया.
	5. मसूदशाह को अपदस्थ कर उसने सुल्तान नासिरूद्दीन महमूद को गद्दी पर बैठाया.
	6. सुल्तान नासिरूद्दीन महमूद के शासन में उसे 'नायब मुमलकत' बनाया गया एवं उलुग खाँ की उपाधि प्रदान की गई.
	7. अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह सुल्तान नासिरूद्दीन महमूद के साथ कर दिया तथा सुल्तान ने अपनी पुत्री का विवाह बलबन के पुत्र बुगरा खाँ के साथ कर दिया.
10. विरोधी पक्ष	कुतलुग खाँ, किचलू खाँ, इमामुद्दीन रिहान.
11. विद्रोह	1. विरोधियों ने सुल्तान पर दबाव बनाकर नायब के पद से बलबन को हटवा दिया. बलबन हाँसी और नागौर चला गया.
	2. प्रशासन की अव्यवस्था के कारण सन् 1254 ई. में पुनः नायब नियुक्त किया, जो सुल्तान की मृत्यु तक बना रहा.
12. सम्पादित कार्य	1. सुल्तान के पद की प्रतिष्ठा स्थापित की तथा चालीसा का प्रभाव समाप्त कर दिया.
	2. उसने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए इल्तुतमिश के परिवार के शेष लोगों को मरवा दिया.
	3. चचेरे भाई शेर खाँ को मार दिया गया तथा बदायूँ के गवर्नर मलिक बकबक, अवध के सूबेदार हैबात खाँ एवं राजा अमीर खाँ को अपमानित एवं दण्डित किया.
	4. दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्र मेवाती, गंगा-यमुना दोआब, कटेहर या बुन्देलखण्ड पर नियन्त्रण स्थापित किया.
	5. बंगाल के सूबेदार तुगरिल खाँ ने 1279 ई. में विद्रोह किया, जिससे क्रुद्ध होकर बलबन ने उसे मार दिया.
	6. मंगोलों के आक्रमण से साम्राज्य की सुरक्षा की.
13. बलबन का राजत्व सम्बन्धी सिद्धान्त	1. दिल्ली का ऐसा प्रथम सुल्तान बलबन था, जिसने राजत्व सम्बन्धी सिद्धान्तों की स्थापना की थी.
	2. बलबन का राजत्व-सिद्धान्त का स्वरूप फारस के राजत्व सम्बन्धी सिद्धान्तों से प्रभावित था.
	3. बलबन सुल्तान को पृथ्वी पर अल्लाह का प्रतिनिधि 'नियाबते-खुदाई' मानता था.
	4. बलबन के अनुसार पैगम्बर के बाद सुल्तान का स्थान ही आता है.
	5. उसके अनुसार सुल्तान जिल्ले अल्लाह है अर्थात् ईश्वर की परछाई है.
	6. उसकी मान्यता के अनुसार "राजा का हृदय ईश्वर कृपा का विशेष कोष है और समस्त मनुष्य जाति में उसके समान कोई नहीं हैं. राजत्व निरंकुशता का शारीरिक रूप है. इस प्रकार की निरंकुशता सुल्तान की हत्या का खतरा उत्पन्न करती है. अतः उसे अपनी सुरक्षा के प्रति सावधान रहना चाहिए और जनता में अपने प्रति भय की भावना जाग्रत करनी चाहिए."
14. बलबन के द्वारा प्रचलित एवं स्वीकृत नियम	1. सामान्य लोगों से सुल्तान नहीं मिल सकता था.
	2. बलबन ने खलीफा की राजनीतिक सत्ता स्वीकार की तथा सिक्कों पर नाम खुदवाया तथा खुतबा में खलीफा का नाम पढ़वाया था.
	3. महत्ता बढ़ाने के लिए बलबन ने अपना सम्बन्ध तूरानी शासक अफरासियान से जोड़ रखा था.
	4. उसने अपने पौत्रों का नाम ख्याति प्राप्त शासकों के नाम पर कैखुसरो, कैकुबाद इत्यादि रखा.
	5. उच्चवंशीय लोगों को पदाधिकारी बनाया जाता था.
	6. बलबन एकांत में रहता था. हर्ष या शोक से विचलित नहीं होता था. किसी के सामने निजी भावनाएँ प्रकट नहीं करता था. शराब पीना एवं मनोरंजनात्मक कार्य बन्द कर दिये गये थे.
	7. कुरान का कठोरता से पालन करना एवं न्याय कार्यों का सम्पादन विशेष रूप से करता था.

8. उसने फारसी रीति-रिवाज के अनुसार राजदरबार में सिजदा (घुटने पर सिर झुकाना) एवं पैबोस (सुल्तान के पैर चूमना) की प्रथा प्रारम्भ की.
9. सुल्तान के सामने खलीफा के दो वंशज बैठ सकते थे एवं वजीर के अलावा किसी को भी बात करने की अनुमति नहीं थी.
10. दरबारी विशेष वस्त्र पहनते थे. कोई भी होठों पर मुस्कराहट नहीं ला सकता था. दरबार में अंगरक्षक नंगी तलवार लेकर खड़े रहते थे.
11. उसने ईश्वर, शासक तथा प्रजा के मध्य त्रिपक्षीय सम्बन्ध स्थापित किये थे.
12. बलबन ने प्रतिवर्ष ईरानी त्यौहार नौरोज का प्रचलन प्रारम्भ किया था.

15. समकालीन कवि — 1. अमीर खुसरो (तुतिए-हिन्द) 2. अमीर हसन

16. इतिहासकारों का मूल्यांकन — प्रसिद्ध इतिहासकार निजामी के शब्दों में "इन निरन्तर उपदेशों के पीछे उसकी हीन भावना एवं अपराध भाव की जटिल प्रक्रिया का आभास किया जा सकता है. अपने मालिकों और अमीरों के जिनमें अधिकांश उसके सहचर थे, कानों में निरन्तर चिल्ला-चिल्लाकर यह कहने से कि राजत्व एक दैवी संस्था है, उसका यह उद्देश्य था कि राज्यहंता का जो कलंक उसके माथे पर लगा था, उसे धो डाले और उसके मन में यह विचार भली-भाँति बिठा दे कि वह दैवेच्छा से ही सिंहासनारूढ़ हुआ है, न कि किसी हत्यारे के विष भरे प्याले या कटार से."

17. मृत्यु — 1286 ई. में (मंगोलों के संघर्ष में अपने ज्येष्ठ पुत्र के मारे जाने के शोक से)

कैकुबाद (Kaiqubad)

(1286-1290 ई.)

बलबन अपना उत्तराधिकारी बड़े पुत्र मुहम्मद को बनाने के पक्ष में थे, लेकिन वह मंगोलों के संघर्ष में मारा गया. इस परिस्थिति में बलबन ने मुहम्मद के पुत्र और अपने पौत्र कैखुसरो को उत्तराधिकारी बनाया. सुल्तान के मरते ही अमीरों ने कैखुसरो को मुल्तान भेज दिया तथा दिल्ली के कोतवाल मलिक फखरूद्दीन के सहयोग से बुगरा खाँ के पुत्र कैकुबाद को छोटी उम्र में ही सुल्तान बना दिया, लेकिन वह पूरी तरह सुरा-सुन्दरियों में उलझा रहा. उसका आधा शरीर फालिज से बेकार हो गया तथा पक्षाघात से पीड़ित होने पर उसको मार दिया गया. तुर्की अमीरों ने उसके उत्तराधिकारी के रूप में पुत्र कैमूर्स को गद्दी पर बिठा दिया और जलालुद्दीन खिलजी उसका संरक्षक नियुक्त हो गया. तीन महीने बाद कैमूर्स को बन्दी बनाकर उसकी हत्या कर दी गई तथा 1290 ई. में जलालुद्दीन स्वयं सम्राट बन बैठा. इलबरी वंश का अन्त एवं खिलजी वंश का आरम्भ यहीं से हुआ था.

गुलाम वंश के पतन के कारण (The causes for the decline of Ghulam Dynasty)

दिल्ली सल्तनत के गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने की और बलबन ने उसे स्थायित्व प्रदान किया. कैकुबाद का पुत्र (नाबालिग) कैमूर्स गुलाम वंश का अन्तिम सुल्तान था. 1206 से 1290 ई. तक 84 वर्षों तक दिल्ली सल्तनत पर गुलाम वंश ने शासन किया और इसके बाद जलालुद्दीन खिलजी ने उस पर अधिकार कर गुलाम वंश का अन्त कर दिया. गुलाम वंश या ममुलक वंश के पतन के निम्नलिखित कारण थे–

(1) हर्षवर्द्धन के पश्चात् के राजपूतों ने किसी भी तरह तुर्की सुल्तानों को प्रश्रय नहीं दिया तथा दोआब, राजपूताना और मध्य भारत में तुर्की सुल्तानों के अस्तित्व पर प्रश्न-चिह्न लगा दिया.

(2) तुर्की शासकों को विदेशी आक्रमणकारी माना जाता था तथा उन्हें जनमत प्राप्त नहीं था. अतः हर समय प्रजा उनका पतन चाहती थी.

(3) गुलाम-वंश के पतन का एक प्रमुख कारण मंगोलों का आक्रमण तथा आंतरिक विद्रोह था.

(4) अयोग्य उत्तराधिकारी एक सर्वाधिक प्रबल कारण था. गुलाम शासन में उम्र, योग्यता, उत्तराधिकारिता के लिए आवश्यक नहीं थी. अधिकांश गुलाम शासक नाबालिग होते थे. इसी के फलस्वरूप गुलाम वंश पतन की ओर अग्रसर हुआ.

(5) तुर्की प्रशासन की स्वेच्छाचारिता एवं मनचाहा आचरण के फलस्वरूप प्रजा दुखद जीवन जी रही थी. अतः इस सत्ता का अन्त करना उनकी प्रखर आकांक्षा थी.

खिलजी साम्राज्यवाद (The Khilji Imperialism)

(1290-1320 ई.)

- इतिहासकारों में खिलजियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पर्याप्त विभेद हैं. कुछ उन्हें तुर्क और कुछ अफगान मानते हैं.
- फखरूद्दीन ने तारीख-ए-फखरूद्दीन मुबारकशाही में खिलजियों को तुर्क बतलाया है. उसके अनुसार तुर्कों की 64 शाखाओं में से खिलजी भी एक थे, जबकि जियाउद्दीन बरनी खिलजियों को तुर्क नहीं मानता.

जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (Jalaluddin Firoz Khilji) (1290-96 ई.)

1. नाम	जलालुद्दीन फिरोज खिलजी
2. संस्थापक	खिलजी वंश का संस्थापक
3. प्रारम्भिक जीवन	1. सैनिक के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ किया था. 2. योग्यता के बल पर उन्नति करता हुआ जलालुद्दीन सेनानायक एवं सूबेदार बन गया था. 3. कैकुबाद के सुल्तान बनने के बाद वह आरिजे-ममालिक बन गया एवं शाइस्ता खाँ की उपाधि धारण करने लगा था.
4. राज्यारोहण	तत्कालीन शासक कैकुबाद एवं कैमूर्स की हत्या कर 1290 ई. किलखूरी में स्वयं को सुल्तान घोषित किया.
5. राजधानी	किलखूरी (कैलूगढ़ी)
6. उल्लेखनीय घटनाएँ	1. दिल्ली के कोतवाल मलिक फखरुद्दीन, वजीर ख्वाजा खातिर, कड़ा तथा मानिकपुर के सूबेदार मलिक छज्जू को पूर्व सुल्तानों द्वारा निर्धारित पद पर बने रहने दिया. 2. अपने बड़े बेटे इख्तियारुद्दीन (खान-ए-खानान) को दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों का प्रशासक नियुक्त किया. मँझले पुत्र को मुलतान का सूबेदार बनाकर अर्कली खाँ की उपाधि दी गई. छोटे पुत्र को कद्र खाँ की उपाधि प्रदान की. सुल्तान ने अपने भाई यगरेश खाँ आरिजे ममालिक (सैन्य विभाग का अधिकारी), भतीजे उलुग खाँ को आखूरबक (शाही घोड़ों का संरक्षक अधिकारी) तथा अलाउद्दीन खिलजी को अमीर-ए-तुजुक एवं कड़ा का प्रान्तपति बनाया था. अहमद चप को राजदरबार का प्रबन्धकर्त्ता (बारबक) का पद दिया गया.
7. प्रमुख विद्रोही	मलिक छज्जू, ताजुद्दीन कूची, सीदी मौला.
8. सम्पादित महत्त्वपूर्ण कार्य	1. मलिक छज्जू (1290 ई.) के विद्रोह का अपने पुत्र अर्कली खाँ के साथ दमन किया. 2. ताजुद्दीन कूची ने जो विद्रोह किया उसे दबा दिया गया. 3. झैन के दुर्ग पर विजय प्राप्त की. 4. मन्दौर पर विजय प्राप्त की तथा मंगोल नेता हलाक के पौत्र अब्दुल्ला के साथ सन्धि की. 5. फिरोज की आज्ञा से अलाउद्दीन खिलजी ने 1292 ई. में मालवार (भिलसा) पर आक्रमण किया. 6. देवगिरि के राजा रामचन्द्र पर विजय प्राप्त की.
9. वैवाहिक सम्बन्ध	चंगेज के वंशज उलुग खाँ एवं अली गुरशास्प वधित के साथ उसने अपनी पुत्रियों का विवाह किया.
10. मृत्यु	20 जुलाई, 1296 ई. में उसके भतीजे एवं दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने गले मिलने के बहाने छल से सिर काट डाला.

अलाउद्दीन खिलजी (Alauddin Khilji) (1296-1316 ई.)

1. वास्तविक नाम	अली गुरशास्प वधित
2. प्रसिद्ध नाम	अलाउद्दीन खिलजी
3. पूर्व सुल्तान से सम्बन्ध	भतीजा एवं दामाद
4. पिता	शहाबुद्दीन मसूद खिलजी
5. राज्याभिषेक	1. उसने अपने चाचा को छल से मारकर 19 जुलाई, 1296 ई. में स्वयं को सुल्तान घोषित किया. 2. 12 अक्टूबर, 1296 ई. को विधिवत राज्याभिषेक हुआ.
6. प्रारम्भिक जीवन	1. अलाउद्दीन खिलजी का पिता शहाबुद्दीन मसूद खिलजी बलबन की सेवा में सैनिक पदाधिकारी था. उसकी मृत्यु के बाद उसके चाचा फिरोज खिलजी ने उसका लालन-पालन किया. 2. चाचा के संरक्षण में घुड़सवारी एवं तलवारबाजी में निपुणता प्राप्त की. 3. सैनिक प्रतिभा से खुश होकर उसके चाचा जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने अपनी पुत्री की शादी उससे कर दी.
7. उल्लेखनीय घटनाएँ	1. अलाउद्दीन ने केकुबाद और कैमूर्स को मारने एवं जलालुद्दीन फिरोज तुगलक के राज्यारोहण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई. 2. मलिक छज्जू के विद्रोह का दमन करने पर फिरोज खिलजी ने उसे कड़ा-मानिकपुर का प्रान्तपति नियुक्त किया एवं अमीर-ए-तुजुक का पद सौंपा. 3. 1293 ई. में मालवा प्रदेश के भिलसा पर आक्रमण कर उसने बहुमूल्य सम्पत्ति हासिल की. यह उसका प्रथम सैनिक अभियान था.

	4. प्रथम सैनिक अभियान से प्रसन्न होकर अलाउद्दीन को जलालुद्दीन ने आरिज-ए-ममालुक एवं अवध का सूबेदार बनाया.
	5. उसका दूसरा सैनिक अभियान 1295 ई. में देवगिरी (दौलताबाद) के राजा रामचन्द्र देव पर आक्रमण करना था. अलाउद्दीन खिलजी ने देवगिरी से 6000 मन सोना, 7 मन मोती, दो मन जवाहरात, लाल याकूत, हीरे, पन्ने, 1000 मन चाँदी, 4000 रेशमी कपड़ों के थान एवं अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ हर्जाने के रूप में तथा लूटकर प्राप्त कीं.
8. सम्पादित प्रमुख कृत्य	1. पूर्व सुल्तानकालिक अमीरों को मलिक बनाया तथा अपने विश्वासपात्रों को अमीर बनाया.
	2. 56,000 घुड़सवार एवं 60,000 पैदल सैनिकों की सेना तैयार की.
	3. प्रत्येक सैनिक को 300 टंका चाँदी के दिए गए.
	4. ख्वाजा खतीर को वजीर तथा काजी सद्रुदीन आरिफ को सद्रेजहाँ बनाया था.
	5. फखरूद्दीन कूची को दिल्ली का राजा दादबक तथा जफर खाँ को सुरक्षा मंत्री बनाया गया.
	6. जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के पुत्रों को अन्धा कर मरवा दिया.
	7. सिक्कों पर स्वयं के लिए 'द्वितीय सिकन्दर' का उल्लेख किया.
9. अलाउद्दीन खिलजी के राजत्व सम्बन्धी सिद्धान्त	1. प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो की मदद से राजत्व सम्बन्धी सिद्धान्त का निर्धारण किया.
	2. राजनीति से उलेमा वर्ग के आधिपत्य को समाप्त किया.
	3. अलाउद्दीन खिलजी स्वयं को मुसलमानों का सुल्तान मानता था तथा हिन्दुओं के प्रति कठोर एवं अनुदार था.
	4. हिन्दुओं पर उपज का 1/2 भाग राजस्व कर लगाया गया. पशुओं पर चराई कर, गृहकर एवं जजिया कर हिन्दुओं पर लगाये गये.
	5. हिन्दू राजस्व पदाधिकारियों चौधरी, खूत मुकदमों से विशेषाधिकार एवं सुविधाएँ छीन ली गईं.
	6. अलाउद्दीन सुल्तान को सर्वशक्तिशाली, सर्वगुणसम्पन्न तथा निरंकुश शासक मानता था. उसके अनुसार राज्य और सरकार एक थी. सुल्तान की इच्छा ही कानून था.
	7. राज्य के कर्मचारी सुल्तान के सेवक थे. राज्य में सेवक एवं प्रजा के अलावा सुल्तान से कोई सम्बन्ध नहीं था.
10. प्रमुख विद्रोह	1. 1299 ई. में दिल्ली के मंगोलों का आक्रमण हुआ, जिसे अलाउद्दीन ने दबा दिया.
	2. अलाउद्दीन के भतीजे आकत खाँ ने उस पर आक्रमण किया, जिसको सुल्तान ने मरवा दिया.
	3. बदायूँ एवं अवध के सूबेदारों, मलिक उमर एवं मंगू खाँ का विद्रोह हुआ, जिसे दबा दिया गया.
	4. नेता हाजी मौला ने 1301 ई. में विद्रोह किया, जिसे अलाउद्दीन खिलजी ने शान्त कर दिया.
11. अलाउद्दीन के चार अध्यादेश	1. प्रथम अध्यादेश के अनुसार अमीरों और धनी व्यक्तियों से जमीनें, उपहार छीन लिए गये. पेंशन बन्द कर दी गई तथा कर मुक्त भूमि पर कर लगाया गया और कठोरतापूर्वक कर वसूलने का राजस्व अधिकारियों को आदेश दिया.
	2. द्वितीय अध्यादेश के अनुसार एक सुसंगठित गुप्तचर विभाग की स्थापना की गई.
	3. तृतीय अध्यादेश के अनुसार मद्य, जुआ एवं भाँग पर प्रतिबन्ध लगाया गया.
	4. चतुर्थ अध्यादेश के अनुसार तुर्की अमीरों के मिलने-जुलने, समारोह एवं सामाजिक गोष्ठियों पर रोक लगाई गई.
12. प्रसिद्ध विद्वानों का संरक्षण	1. अमीर हसन देहलवी.
	2. अमीर खुसरो.
13. स्थापत्य निर्माण	1. 1303 ई. में अलाई दरवाजा का निर्माण कराया, जिसमें 7 द्वार थे.
	2. सीरी का किला, हौज खास, हजार खम्भा महल का निर्माण कराया.
14. इतिहासकारों का मूल्यांकन	1. अमीर खुसरो के अनुसार, "वह 'विश्व का सुल्तान', 'पृथ्वी के शासकों का सुल्तान', 'युग का विजेता' तथा 'जनता का चरवाहा' था."
	2. डॉ. श्रीवास्तव के अनुसार, "वह प्रथम तुर्की सम्राट था."
15. मृत्यु	1316 ई. में (जहर देकर मारा गया).

अलाउद्दीन के प्रशासनिक सुधार (The Administrative Reforms of Alauddin)

- अलाउद्दीन खिलजी शासन, कार्यकारिणी, न्याय राजस्व एवं सेना का सर्वोच्च पदाधिकारी था. अमीर और उलेमा का प्रभाव भी उसे अस्वीकार था.
- मंत्री सलाहकार न होकर सेवक होते थे. प्रान्तीय सूबेदारों पर उसका नियन्त्रण कठोर था.
- दीवान-ए-वजारत (वित्त विभाग का प्रधान) वजीर होता था, जो सुल्तान का सर्वाधिक निकटतम सहयोगी होता था. उसका कार्य राजस्व वसूली, मंत्रियों एवं विभागों के कार्यों को देखना होता था. अलाउद्दीन ने अपने विश्वासपात्र सैनिक ख्वाजा खातिर, नुसरत खाँ एवं मलिक काफूर को इस पद पर नियुक्त किया था.
- दीवान-ए-आरिज सैनिक कार्य, सेना की नियुक्ति, उनके वेतन का प्रवन्ध, सेना के निरीक्षक का कार्य करता था.
- आरिज-ए-ममालिक युद्धमंत्री होता है, जो नायब-आरिज के सहयोग से कार्य करता था.
- अलाउद्दीन सर्वोच्च न्यायाधीश था. उसके पश्चात सद्र-ए-जहाँ काजी उलकुजात, नायब काजी तथा मुफ्ती होते थे. मृत्युदण्ड, अंग-भंग, कारावास, कोड़े मारने की सजा, सम्पत्ति के जब्त करने की व्यवस्था दण्डस्वरूप की गई थी.
- फरिश्ता के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी की सेना में 475000 सुसज्जित और वर्दीधारी घुड़सवार थे.
- एक सैनिक का वेतन 234 टंका प्रतिवर्ष था. प्रति अतिरिक्त घोड़े के लिए 78 टंका भत्ता मिलता था.
- अलाउद्दीन ने किसानों से उपज का 1/2 भाग कर सेना प्रारम्भ कराया था.
- हिन्दुओं पर जजिया कर, सिंचाई कर, सीमा शुल्क, जकात (मुसलमानों से वसूला जाने वाला कर), खम्स (युद्ध में प्राप्त लूट का माल) राज्य की आमदनी का स्रोत होता था.

मंडी के सात अधिनियम

- अलाउद्दीन ने बाजारों में मण्डी स्थापित कराई थी नगर के प्रत्येक मुहल्ले में केन्द्रीय गल्ला मण्डी होती थी. गल्ला मण्डी से सम्बन्धित सात अधिनियम पारित किये, जो निम्नलिखित थे–

प्रथम अधिनियम–मण्डी के प्रथम अधिनियम के अनुसार अलाउद्दीन ने अनाजों के दाम निर्धारित किये थे. उसके द्वारा निर्धारित दाम निम्नलिखित थे–

(1) गेहूँ – 7·5 जीतल प्रति मण

(2) जौ – 4 जीतल प्रति मण

(3) चना – 5 जीतल प्रति मण

(4) चावल – 5 जीतल प्रति मण

(5) मोठ – 5 जीतल प्रति मण

इस अधिनियम के अनुसार अनाजों के मूल्य में किसी भी परिस्थिति में वृद्धि नहीं हो सकती थी.

द्वितीय अधिनियम–मण्डी के दूसरे अधिनियम के अनुसार मलिक कबूल उलूग खानी को गल्ला मण्डी का शहना नियुक्त किया गया था. उसको विस्तृत अधिकार एवं सैनिक सहायता प्रदान की गई थी.

तृतीय अधिनियम–मण्डी के तीसरे अधिनियम के अनुसार अलाउद्दीन ने सभी को आदेश दिया कि दोआब की सारी खालसा भूमि का लगान अनाज के रूप में इकट्ठा कर सरकारी गोदामों में रखा जाए एवं अन्य स्थानों से आधा लगान अनाज के रूप में एकत्रित कर गोदामों में भेजा जाए.

चतुर्थ अधिनियम–अलाउद्दीन खिलजी के चतुर्थ मण्डी अधिनियम के अनुसार घुमक्कड़ व्यापारियों के नेताओं पर कठोर निगरानी की व्यवस्था की गई थी. उनको शहना के नियन्त्रण में यमुना नदी के किनारे रहने का आदेश दिया गया था.

पंचम् अधिनियम–इस अधिनियम के अनुसार मुनाफाखोरी को मिटाया गया था. अपराधियों को कठोर सजा दी जाती थी.

षष्ठम् अधिनियम–अलाउद्दीन के छठे अधिनियम के अनुसार दोआब और दिल्ली के पास के सभी लगान अधिकारियों से व्यापारियों को गल्ला निश्चित मूल्य पर देने के लिए लिखवाया गया था. लगान वसूलने की कठोरता पर बल दिया गया तथा मुनाफाखोरी को रोकने का प्रयास किया गया.

सप्तम् अधिनियम–मण्डी के सातवें अधिनियम के अनुसार गल्ला मण्डी की स्थिति की रिपोर्ट शहना, बरीद मुनहियन और मुन्ही प्रतिदिन सुलतान के पास आवश्यक रूप से भेजते थे.

अलाउद्दीन का सरा-ए-अदल

- सरा-ए-अदल अलाउद्दीन के द्वारा स्थापित किया गया बाजार था. यहाँ पर बाहर का तैयार माल बिकता था. इसको सरकार आर्थिक सहायता देती थी. सरा-ए-अदल के लिए सुल्तान ने पाँच अधिनियम बनाये थे, जो निम्नलिखित थे–

प्रथम अधिनियम के अनुसार बदायूँ दरवाजे के पास बाजार बनाकर उसमें दुकानों का निर्माण कराया गया

था. नगर के वाहर से आने वाली समस्त वस्तुएँ–कपड़ा, शक्कर, मेवे, दीपक जलाने का तेल, जड़ी-बूटियाँ, सरकारी सहायता से खरीदी गई वस्तुओं/सामान को यहाँ लाना आवश्यक था. एक टंका से दस हजार टंका मूल्य का सामान यहाँ वेचा जाता था.

द्वितीय अधिनियम के अनुसार विभिन्न वस्त्रों एवं अन्य सामान का मूल्य निर्धारित किया गया था, जो निम्नवत् था–

रेशमी कपड़ा

खुज्जे दिल्ली – 16 टंका
खुज्जे कोनला – 6 टंका
मशरू शेरी – 3 टंका
शीरी वाफ्त उत्तम – 5 टंका
शीरी बाफ्त मध्यम – 3 टंका
शीरी मोटा – 2 टंका
सिलहटी मोटा – 2 टंका

सूती कपड़ा

लाल धारियों वाला बुर्द (उत्तम) – 6 जीतल
बुर्द (मोटा) – 36 जीतल
अस्तरे नागौरी – 24 जीतल
अस्तर (मोटा) – 12 जीतल
चादर – 10 जीतल
40 गज साधारण वस्त्र या 20 गज रूई का बना उत्तम वस्त्र – 1 टंका

अन्य सामान

मिश्री प्रति सेर – $2\frac{1}{2}$ जीतल
चीनी – $1\frac{1}{2}$ जीतल
5 सेर नमक – 1 जीतल
$1\frac{1}{2}$ सेर घी – 1 जीतल

- अलाउद्दीन के सरा-ए-अदल के तीसरे अधिनियम के अनुसार दिल्ली के सभी व्यापारियों को दीवान-ए-रियासत (वाणिज्य मंत्रालय) में पंजीकरण कराना अनिवार्य था. निश्चित मात्रा में प्रत्येक वर्ष नगर में माल लाना तथा सरा-ए-अदल में वेचना आवश्यक था.
- सरा-ए-अदल के चौथे अधिनियम के अनुसार मुल्तानी व्यापारियों को 20 लाख टंके की अग्रिम राशि देना अनिवार्य कर दिया गया था, जिससे वे बाजार में नियमित रूप से आ सकें. मुल्तानी व्यापारियों को शासकीय एजेन्ट बना दिया गया.
- सरा-ए-अदल के पाँचवें अधिनियम के अनुसार परवाना नवीस (परमिट देने वाला अधिकारी) की नियुक्ति की गई थी. सम्पन्न व्यक्तियों को आय के आधार पर वहुमूल्य वस्त्र खरीदने की अनुमति परवाना नवीस ही देता था.

अलाउद्दीन के प्रमुख सैनिक अभियान

- 1296-97 ई. में कादर खाँ, दाऊद खाँ, 1298-99 ई. में मंगोल नेता साल्दी तथा कुतलुग ख्वाजा एवं 1303-4 ई., 1305-6 ई. व 1307-1308 ई. में मंगोलों के कई आक्रमण हुए, जिन पर अलाउद्दीन ने विजय प्राप्त की.
- 1297 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने उलुग खाँ एवं नुसरत खाँ के नेतृत्व में गुजरात पर आक्रमण किया, जिसमें वहाँ का राजा कर्णसिंह भाग गया तथा गुजरात को सल्तनत का प्रान्त बना दिया गया.
- 1299 ई. में जैसलमेर पर आक्रमण किया तथा 1301 ई. में रणथम्भौर के लिए विजयी सेनानायक उलुग खाँ एवं नुसरत खाँ को वहाँ पर भेजा गया. वहाँ के शासक हम्मीरदेव ने उन दोनों को मार दिया. अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर आकर हम्मीरदेव के मंत्री रणमल को अपने पक्ष में कर रणथम्भौर पर विजय प्राप्त कर ली थी.
- 1303 ई. में अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर अपना अधिकार कर लिया तथा खिज्र खाँ को चित्तौड़ का शासक बना दिया गया. चित्तौड़ का नामकरण खिज्राबाद कर दिया, लेकिन अलाउद्दीन का स्थायी अधिकार न हो पाने के कारण यह पुनः चित्तौड़ हो गया. माना जाता है कि मेवाड़ के राणा रतनसिंह की पत्नी पद्मिनी अनुपम सुन्दरी थी और उसे पाने के लिए ही मेवाड़ पर अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था.
- 1310 ई. में अलाउद्दीन ने मालवा, मांडू, उज्जैन, चन्देरी पर विजय प्राप्त की. असम, कश्मीर, उत्तरी पश्चिमी पंजाव के क्षेत्र को छोड़कर अलाउद्दीन ने समस्त उत्तरी भारत पर अधिकार कर लिया था.
- दक्षिणी भारत पर आक्रमण कर उसने देवगिरि, तेलगांना होयसल, पाण्ड्य (मास) पर भी विजय प्राप्त की.

खिलजी साम्राज्य का पतन

- अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद मलिक काफूर की सहायता से शहाबुद्दीन उमर को छोटी उम्र में शासक बनाया एवं स्वयं उसका संरक्षक बना. अलाउद्दीन की मृत्यु के एक माह बाद ही मलिक काफूर की हत्या कर दी तथा मुबारक खाँ को उसका संरक्षक बनाया गया. लेकिन उस सुल्तान के संरक्षक ने शहाबुद्दीन उमर को ग्वालियर भेजकर अंधा कर दिया तथा मुबारक खाँ-

कुतुबुद्दीन मुबारक शाह के नाम से 1316 ई. में दिल्ली सल्तनत का शासक वन गया.

- कुतुबुद्दीन मुबारक शाह ने 1316-1320 ई. तक खिलजी साम्राज्य पर शासन किया. 1316 ई. गुजरात एवं 1317 ई. में देवगिरी पर विजय प्राप्त की. कुछ समय उसका शासन व्यवस्थित रहा. वह एक निरंकुश, विलासी एवं क्रूर शासक था. वह सदैव वैश्याओं, हिजड़ों एवं नर्तकियों के साथ रहता था. इतिहासकार वरनी के अनुसार वह कभी-कभी नंगा होकर दरवार में दौड़ा करता था. 4 अप्रैल, 1320 ई. को खुसरो ने मुवारकशाह के रक्षकों की हत्या कर उसका स्वयं का सिर कटवा दिया.
- 1320 ई. में खिलजी वंश का अन्त हो गया था. अप्रैल में उत्तराधिकारी के अभाव का दवाव वनाकर मुवारक हसन या खुसरो खाँ (नासिरूद्दीन खुसरो खाँ) सुल्तान वन वैठा. उसने सिक्के ढलवाए एवं खुतवा में नाम पढ़ाया. पैगम्वर का सेनापति उसकी उपाधि थी. मुवारक शाह की पत्नी से खुसरो ने विवाह किया था. गाजी गयासुद्दीन तुगलक या गाजी मलिक ने खुसरो को सितम्वर 1320 ई. में पराजित कर हत्या कर दी. इस तरह खिलजी वंश का अन्त तथा तुगलक वंश का उदय हुआ.
- अलाउद्दीन खिलजी की निरंकुश शासन प्रणाली, अक्षम, अयोग्य एवं दुर्वल शासक, जनसाधारण का राजा के प्रति विद्वेष, नियमहीन उत्तराधिकारिता तथा दरवारियों के षड्यन्त्र मूलरूप से खिलजी वंश के पतन के लिए उत्तरदायी कारक थे.

तुगलक वंश
(Tugluque Dynasty)
(1320-1414 ई.)

खिलजी साम्राज्य के पतन होने के पश्चात्त तुगलक वंश का उदय 1320 ई. में हुआ. इस वंश की स्थापना गाजी मलिक या गाजी गयासुद्दीन तुगलक ने सितम्वर 1320 ई. में खुसरो खाँ की हत्या कर स्वयं को दिल्ली सल्तनत का सुल्तान घोषित किया. तुगलक वंश ने दिल्ली सल्तनत पर 94 वर्षों तक (1320 से 1414 ई. तक) सर्वाधिक शासन किया.

गयासुद्दीन तुगलक (Gayasuddin Tugluque) (1320-1325)

1. वास्तविक नाम	गाजी गयासुद्दीन तुगलक
2. प्रसिद्ध नाम	गाजी मलिक, गयासुद्दीन तुगलक
3. उपाधि	तुगलक, शाह गाजी
4. वंश	करौना तुर्क
5. पूर्वज	तुर्किस्तान निवासी
6. पिता	मलिक तुगलक (वलवन का गुलाम)
7. राष्ट्रीयता	जन्म से भारतीय था
8. माता	एक जाट स्त्री
9. प्रारम्भिक जीवन	1. वह प्रारम्भ में सुल्तानों की सैनिक सेवा में कार्य करता था. 2. अलाउद्दीन ने गाजी मलिक को दीपालपुर का सूबेदार बनाया था. 3. मुबारक शाह ने उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त का प्रमुख गवर्नर नियुक्त किया.
10. राज्याधिकार	अपने पुत्र जूना खाँ के साथ युद्ध कर 8 सितम्वर, 1320 ई. में सल्तनत पर अधिकार कर लिया और गयासुद्दीन तुगलक शाह गाजी की उपाधि धारण की.
11. प्रमुख सम्पादित कृत्य	1. वहराम ऐवा (किशलू खाँ) को पश्चिमोत्तर प्रान्त का सूवेदार वनाया गया. जूना खाँ को उलुग खाँ की उपाधि देकर युवराज वनाया गया. 2. कुँवारी खिलजी कन्याओं का विवाह किया. गरीव लोगों के जीवनयापन की व्यवस्था की गई. 3. इस्लाम धर्म के कानूनों का संग्रह कराया एवं कर में ढील दी गई. 4. सेना में दाग एवं चेहरा प्रथा को अच्छे ढंग से लागू की गई सैनिकों की सुख-सुविधा का ध्यान रखा गया. उत्तम हथियारों की व्यवस्था की. 5. डाक व्यवस्था में डाक चौकियों एवं हरकारे, अश्वारोहियों की व्यवस्था की. 6. किसानों से 1/2 या 1/3 भाग लगान वसूला जाता था, लेकिन 1/10 या 1/11 से अधिक लगान वृद्धि का प्रतिवन्ध था. 7. जनता के चरित्र को उठाने के लिए 'मुहतसिव' वनाये. धर्म में किसी तरह की वाध्यता नहीं थी.
12. प्रमुख सैनिक अभियान	1. गयासुद्दीन तुगलक ने सर्वप्रथम 1321 ई. में अपने पुत्र जूना खाँ (उलुग खाँ) के नेतृत्व में सेना के साथ तेलगांना पर आक्रमण कर शासक रूद्रदेव को अधीन वनाने का प्रयास किया, लेकिन उसे पिता की मृत्यु की अफवाह के कारण लौटना पड़ा. पुनः 1323 ई. में तेलगांना को सल्तनत में मिला लिया और शासक रूद्रदेव की दिल्ली में मृत्यु हो गई.

2. जाजनगर (उड़ीसा) में दूसरा आक्रमण सन् 1324 ई. में किया, जिसमें उसे सफलता मिली. वहाँ का शासक भानुदेव था. उसे अधीनता स्वीकार कराई. राजमुंदरी के 1324 ई. के अभिलेख में यह वर्णन मिलता है.
3. दिल्ली को अपने पुत्र जूना खाँ को सौंपकर 1323 ई. में सुल्तान ने तिरहुत के रास्ते से लखनौती (बंगाल की राजधानी) पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की.
4. लखनौती से वापस आते समय 1324 ई. में तिरहुत के कर्णाटवंशीय शासक हरिसिंह पर आक्रमण किया. हरिसिंह नेपाल भाग गया तथा तिरहुत को सल्तनत में मिला लिया.
5. जूना खाँ दक्षिणी अभियान में व्यस्त था. उसी समय पश्चिमी सीमा पर मंगोलों ने उपद्रव किया, लेकिन उसे शान्त कर दिया गया.

13. ऐतिहासिक स्रोत — तुगलकनामा (अमीर खुसरो)

14. इतिहासकारों का मूल्यांकन —
1. अमीर खुसरो के अनुसार "उसने कभी कोई कार्य ऐसा नहीं किया, जो बुद्धिमानी और अनुभव से भरा न हो."
2. हबीब और निजामी के अनुसार "उसने अलाउद्दीन खिलजी के ढंगों तथा आदर्शों को नया अर्थ दिया और उनमें क्रूरता की तेज धार निकालकर उन्हें अधिक उपयोगी और ग्राह्य बनाया."

15. मृत्यु — 1325 ई. में लकड़ी के महल से गिरने से मृत्यु हुई.
(जियाउद्दीन बरनी के अनुसार बिजली गिरने से मृत्यु हुई.)

मुहम्मद तुगलक (Muhammad Tugluque)
(1325-1351 ई.)

1. वास्तविक नाम — जूना खाँ (जौना खाँ)
2. प्रसिद्ध नाम — मुहम्मद तुगलक
3. ऐतिहासिक स्रोत —
1. इब्नेबतूता की रेहाला
2. अरबी ग्रन्थ मसालिक उल अबसार फी ममालिक-उल-अमसार

4. पिता — गयासुद्दीन तुगलक
5. प्रारम्भिक जीवन —
1. जूना खाँ के लिए गयासुद्दीन तुगलक ने सैनिक एवं शिक्षा की व्यवस्था की.
2. खुसरो शाह ने जूना खाँ को घोड़ों का मुख्य पदाधिकारी नियुक्त किया.
3. अपने पिता के साथ दीपालपुर जाकर खुसरो शाह को परास्त किया तथा गयासुद्दीन तुगलक को सुल्तान बनाया.
4. गयासुद्दीन ने जूना खाँ को उलुग खाँ की उपाधि दी तथा युवराज बनाकर उत्तराधिकारी बनाया.

6. राज्यारोहण — मार्च 1325 ई. में
7. सम्पादित प्रमुख कृत्य —
1. दिल्ली के स्थान पर देवगिरी (दौलताबाद) को राजधानी बनाया. 1326 ई. में दिल्लीवासियों को दौलताबाद जाने का आदेश हुआ.
2. मुहम्मद तुगलक ने दोकानी नामक नये सिक्के का प्रचलन प्रारम्भ किया. छोटे-छोटे सिक्के एवं चाँदी का 140 ग्रेन का टंका या अदली चलाई गई. सोने के सिक्के में सोने की मात्रा 175 ग्रेन से बढ़ाकर 200 ग्रेन कर दी गई.
3. लगान में 1/10 से 1/20 तक की वृद्धि की गई. आबवाब दोआब में नया कर प्रारम्भ किया.
4. कृषि व्यवस्था को सुधारने की दिशा में नया विभाग दीवान-ए-कोही स्थापित किया. जिसका प्रधान अमीर-ए-कोही को बनाया गया.
5. राजकीय कृषि फार्म के विकास पर 1341-44 ई. में 700000 टंका खर्च किया गया.
6. उलेमा का वर्चस्व समाप्त कर धर्म निरपेक्ष राज्य की स्थापना की.
7. 1342 ई. में मिस्र के अब्बासी खलीफा से मानपत्र प्राप्त किया.
8. हिन्दुओं के प्रति उदार एवं सम्मानजनक नीति अपनाई. हिन्दुओं को प्रशासनिक पदों पर भी बहाल किया गया.
9. अपने चचेरे भाई मलिक फिरोज को नायब बारबक, शिक्षक कयामुद्दीन (कुतलुग खाँ) को वकील-ए-दर तथा इब्ने-बतूता को दिल्ली का काजी नियुक्त किया.
10. दिल्ली के पास जहाँपनाह नगर बनाया.

8. प्रमुख विद्रोही —
1. बहाउद्दीन गुरशास्प
2. बहराम आएबा
3. गयासुद्दीन बहादुर
4. मलिक फखरूद्दीन

9. सैनिक अभियान	1. मंगोल नेता तरमशीरी का आक्रमण सर्वप्रथम मुहम्मद बिन तुगलक को सामना करना पड़ा. मुहम्मद-बिन-तुगलक ने मंगोलों से मित्रता कर आक्रमण-कारियों को शान्त किया.
	2. मेवाड़ के राणा हम्मीर देव पर मुहम्मद तुगलक ने आक्रमण किया, लेकिन उसमें सुल्तान को भारी पराजय का सामना करना पड़ा.
	3. इराक के शासक मूसा, ख्वारिज्म की रानी तुराबक एवं चीनी सम्राट तोगन तैमूर तथा मिस्र के अब्बासी खलीफा से मित्रता स्थापित की.
	4. 3,70,000 सैनिकों के साथ खुरासान पर आक्रमण करने की योजना बनाई, लेकिन मिस्र और ईरान की सन्धि होने से योजना विफल हो गई.
	5. 1337 ई. में मलिक खुसरो के नेतृत्व में कराचिल पर आक्रमण किया, लेकिन उसमें भी सुल्तान को सफलता प्राप्त नहीं हुई.
10. प्रमुख विद्रोह	1. सुल्तान बनने के बाद 1326 ई. में मुहम्मद तुगलक के चचेरे भाई बहाउद्दीन गुरशास्प ने सबसे पहला विद्रोह किया. सुल्तान ने ख्वाजा जहाँ अहमद अयाज के द्वारा उसे भागने पर मजबूर कर दिया.
	2. मुलतान के सूबेदार बहराम आएबा किशलु खाँ का विद्रोह (1328 ई.) 1330 ई. में लखनौती के शासक गयासुद्दीन बहादुर बूरा का विद्रोह, 1337 ई. में मलिक फखरूद्दीन का बंगाल विद्रोह, सिन्ध के केन्द्र सेहवान का 1333 ई. का विद्रोह, प्रमुख विद्रोह हुए, जिन्हें सुल्तान ने दबा दिया.
	3. दक्षिण भारत के विद्रोहों में माबर के प्रान्तपति एहशानशाह (1335 ई.) का विद्रोह, काम्पिल, होयसल, मालवा एवं देवगिरी के प्रमुख विद्रोह हुए.
11. इतिहासकारों का मूल्यांकन	उसे इतिहासकारों ने 'असफलताओं का बादशाह', अन्तर्विरोधों का विस्मयकारी मिश्रण, पागल या विक्षिप्त, रक्त पिपासु, अधर्मी एवं अविश्वासी, आदर्शवादी और स्वप्निल, परोपकारी एवं उदार-शासक कहा है.
12. मृत्यु	20 मार्च, 1351 ई. में बीमारी से थट्टा में मृत्यु हो गई.

फीरोजशाह तुगलक (Firozshah Tugluque) (1351-1388 ई.)

1. वास्तविक नाम	फीरोजशाह तुगलक
2. जन्म	1309 ई. में (इतिहासकार अफीफ के विवरण के अनुसार)
3. पिता	मलिक रजब
4. शासन	1351 से 1388 ई. तक
5. प्रारम्भिक जीवन	1. गयासुद्दीन तुगलक ने रजब की मृत्यु के बाद फिरोजशाह की देखभाल की. गयासुद्दीन ने उसे राजनीति एवं प्रशासन की शिक्षा दिलाई थी.
	2. मुहम्मद तुगलक ने फिरोजशाह को अमीर-ए-हाजिब के पद पर नियुक्त किया.
	3. दिल्ली के संरक्षक परिषद के प्रधान के रूप में फिरोजशाह तुगलक को पद प्रदान किया गया.
6. राज्यारोहण	उलेमा के सहयोग से 22 मार्च, 1351 को थट्टा में राज्याभिषेक हुआ.
7. फिरोज द्वारा सम्पादित कृत्य	1. मलिक मकबूल (खान-ए-जहाँ) को वजीर, मलिक राजी को नायब आरिज तथा गाजी शहना को सार्वजनिक विभाग सौंपा गया एवं सरकारी पदों को वंशानुगत कर दिया.
	2. फिरोजशाह ने दिल्ली के पूर्व सुल्तानों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने की दृष्टि से नमाज में मुहम्मद गोरी, इल्तुतमिश, नासिरूद्दीन महमूद, बलबन, फिरोज, अलाउद्दीन खिलजी, गयासुद्दीन तुगलक तथा मुहम्मद तुगलक का नाम जोड़ा.
	3. उलेमा का पुनः वर्चस्व स्थापित किया तथा तुर्की अमीरों को जागीर पेंशन एवं विशेष सुविधाएँ धनसम्पदा की व्यवस्था की.
	4. 1374-75 ई. बहराईच के सालार मसूद गाजी की मजार पर प्रार्थना करने के बाद से फिरोजाबाद सम्प्रदायवादी एवं प्रतिक्रियावादी बन गया. वह अपने आपको कट्टर सुन्नी मुसलमानों का सुल्तान मानता था.
	5. मुस्लिम स्त्रियों के लिए पर्दा प्रथा लागू की. महदवी नेता रूकनुद्दीन की हत्या कर दी. ब्राह्मणों को जजिया कर देने के लिए बाध्य किया. हिन्दुओं के मन्दिर नष्ट कर दिये और मरम्मत पर रोक लगा दी.

6. शरीयत नियमों के अनुसार सैनिकों को लूट के 1/5 भाग के स्थान पर 4/5 भाग देने के आदेश दिये. खराज (भूमिकर), जकात (मुसलमानों का कर), जजिया कर एवं खुम्स कर लगाये गये.

8. प्रमुख निर्माण कार्य
1. निम्नलिखित पाँच नहरों का निर्माण कराया–
   (1) उलूगखनी नहर (यमुना नदी से हिसार तक 150 मील लम्बी)
   (2) रजबाह नहर (सतलज से घग्घर तक 96 मील लम्बी)
   (3) सिरमौर से हाँसी तक की नहर
   (4) घग्घर से फिरोजाबाद तक की नहर
   (5) यमुना से फिरोजाबाद तक की नहर
2. रकाबखाना, जामदारखाना, आलम-खाना, फर्राशखाना इत्यादि प्रसिद्ध कारखाने बनाये. 1200 बागों का निर्माण कराया.
3. बेरोजगार व्यक्तियों के लिए दिल्ली में एक रोजगार दफ्तर खुलवाया गया.
4. असहायों की सहायता के लिए दीवान-ए-खैरात की स्थापना की.
5. दार-उल-शफा या खैराती दरवाजा रोगियों की चिकित्सा सुविधा के लिए खोला.
6. इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार फिरोज ने तीस महल, चार मस्जिदें, दो सौ काफिला, पाँच अस्पताल, सौ कब्र, दस स्नानागार, दस समाधि, सौ पुलों का निर्माण करवाया.
7. दिल्ली की कुतुबमीनार, शम्सी तालाब, जहाँपनाह, जलालुद्दीन, अलाउद्दीन एवं इल्तुतमिश के मकबरे तथा शेख निजामुद्दीन औलिया के मकबरे की मरम्मत कराई.
8. फिरोजशाह तुगलक ने जामा मस्जिद और मदरसे फिरोजशाही का निर्माण कराया.
9. फिरोजशाह ने कोटला एवं जौनपुर नगरों का निर्माण करवाया.
10. तासघड़ीयाल एवं जलघड़ी का उसने आविष्कार किया.
11. अशोक की प्रस्तर लाटों को खोजकर दिल्ली में स्थापित किया.

9. साहित्यिक गतिविधियों का संरक्षण
1. जियाउद्दीन बरनी एवं शम्से सिराज अफीफ उसके संरक्षित विद्वान थे.
2. जियाउद्दीन बरनी ने फतवा-ए-जहाँदारी तथा तारीख-ए-फिरोजशाही की रचना फिरोजशाह के काल में ही की थी.
3. फिरोजशाह तुगलक ने फतुहात-ए-फिरोजशाह स्वयं की आत्मकथा लिखी थी.
4. दलायल-ए-फिरोजशाही संस्कृत से फारसी में अनुदित ग्रन्थ था.

10. प्रमुख विद्रोह
1. 1354 ई. में फिरोजशाह ने बंगाल पर आक्रमण किया. महिलाओं के रोने पर द्रवित होकर वापिस आ गया, लेकिन बंगाल के अमीर जफर खाँ की अपील पर 1359 ई. में पुनः आक्रमण किया तथा सिकन्दर को अपने अधीन बंगाल का शासक नियुक्त किया.
2. उलेमा से प्रशंसा पाने के उद्देश्य से जाजनगर पर आक्रमण किया तथा जगन्नाथ मंदिर की मूर्ति को समुद्र में फेंक दिया.
3. 1360 ई. में नगरकोट पर आक्रमण किया. वहाँ के ज्वालामुखी मंदिर को लूटा. नगरकोट से उसे 1300 संस्कृत के ग्रन्थ मिले, जिन्हें फारसी में अनुवाद कराया. दलायल-ए-फिरोजशाही इन्हीं ग्रन्थों में से एक था.
4. 1362 ई. में फिरोज का अन्तिम सैनिक अभियान थट्टा (सिंध) के विरुद्ध था. परिस्थितिवश वह वहाँ से चला गया और 1363 ई. में आक्रमण कर थट्टा के शासक बबिनिया को अपने अधीन कर लिया.
5. आंतरिक विद्रोहों में गुजरात, इटावा और कटेहर का विद्रोह (1380 ई.) में हुआ, जिसे कठोरता से दबाया गया. कटेहर का विद्रोह अत्यन्त दुखःद घटना थी, जिसमें हिन्दुओं को मारा गया तथा शेष जीवित हिन्दुओं को धर्मपरिवर्तन के लिए बाध्य किया गया.

11. इतिहासकारों का मूल्यांकन
डॉ. के. के. शर्मा के अनुसार "फिरोजशाह एक अमानवीय प्राणी जिसने समाज के विभिन्न वर्गों की भावना को आघात कर एकाकार करना चाहा. उसका एकमात्र उद्देश्य किसी भी तरह के हथकण्डों से सल्तनत पर शासन करना था, इसके लिए भले ही उलेमा की खुशियों के लिए जगन्नाथ की मूर्ति को समुद्र में फेंकना पड़ा हो या हिन्दुओं की जान लेनी पड़ी हो."

12. मृत्यु
20 सितम्बर 1388 ई. में हुई.

फिरोजशाह तुगलक के उत्तराधिकारी शासक एवं तुगलक वंश का पतन

- फिरोजशाह तुगलक की मृत्यु के पश्चात तुगलक वंश की सत्ता तुगलकशाह गयासुद्दीन तुगलक II ने 1388 ई.

में संभाली. वह एक अयोग्य, विलासी तथा दुर्बल शासक था. उसकी स्थिति को देखकर एक साल बाद फरवरी 1389 ई. में जफर खाँ के पुत्र अबू बक्र ने उसे मार दिया और स्वयं सुल्तान बन गया.

- तुगलक शाह की हत्या कर अबू बक्र ने 1389 ई. में सल्तनत पर शासन का आरम्भ किया. दिल्ली के कोतवाल, मुलतान, समाना, लाहौर, हिसार, हाँसी के अक्तादारों ने मुहम्मद खाँ (मुहम्मद शाह) को सहयोग देकर 1390 ई. में अबू बक्र को शासन से हटा दिया और नासिरूद्दीन मुहम्मद शाह स्वयं शासक बन गया.
- नासिरूद्दीन मुहम्मद शाह ने 1390 से 1394 ई. तक शासन किया. इसके बाद उसके पुत्र हुमायूँ ने लगभग तीन महीने तक शासन किया और उसकी मृत्यु हो गई.
- मार्च 1394 ई. में दिल्ली सल्तनत का शासक महमूद शाह बना. उसकी दुर्दशा को देखकर व्यंग्य से कहा जाता था–

  "विश्व के सम्राट तुगलकों का राज्य दिल्ली से पालम तक फैला हुआ था (पादशाही शाह-आलम-अज देहली-ता पालम)."
- 17 दिसम्बर, 1398 ई. को तैमूर का आक्रमण दिल्ली पर हो गया तथा सुल्तान स्वयं गुजरात भाग गया. पुनः वजीर मल्लू खाँ ने सुल्तान को दिल्ली बुलाकर गद्दी पर बिठाया. सन् 1412 ई. में महमूद शाह की मृत्यु हो गई, जिससे तुगलक वंश का अन्त हो गया.
- तुगलक शाह की मृत्यु के बाद दौलत खाँ शासक बना. उसका सम्बन्ध तुगलक वंश से नहीं था. लाहौर के सूबेदार खिज्र खाँ ने दिल्ली पर आक्रमण कर मई 1414 ई. में सैय्यद राजवंश का उदय किया.

सैय्यद वंश
(The Saiyyads Dynasty)
(1414-1451 ई.)

दिल्ली सल्तनत के शासन से तुगलक वंश का अन्त हुआ तथा खिज्र खाँ ने तुर्की अमीरों पर विजय प्राप्त कर नये राजवंश की नींव डाली, जिसे सैय्यद राजवंश कहा गया. माना जाता है कि खिज्र को बुखारा के सन्त सैय्यद जलाल ने सैय्यद कहकर पुकारा था तभी से वह अपने आपको सैय्यद कहलवाता था. सैय्यद इस्लाम धर्म के संस्थापक पैगम्बर मुहम्मद को स्वयं का वंशज समझते थे. सैय्यद वंश का दिल्ली सल्तनत पर 37 वर्षों तक 1414 से 1451 ई. तक शासन चला.

खिज्र खाँ (Khijra Khan)
(1414-1421 ई.)

1. नाम	खिज्र खाँ
2. पूर्वज	अरब से भारत आये थे.
3. पितामह	नासिरूलमुल्क मर्दान दौलत (फिरोजशाह का अमीर)
4. पिता	मलिक सुलेमान (मर्दान दौलत का दत्तक पुत्र था)
5. प्रारम्भिक जीवन	1. बचपन से वीर, साहसी, सैनिक गुण युक्त था. 2. पिता की मृत्यु के बाद खिज्र खाँ को मुलतान का सूबेदार बनाया. लाहौर और दीपालपुर के राज्यपाल सारंग खाँ से मतभेद और संघर्ष होने के कारण खिज्र खाँ को पद छोड़ना पड़ा. 3. तैमूर ने खिज्र खाँ को पुनः मुलतान और दीपालपुर का सूबेदार नियुक्त किया.
6. राज्याधिकार	1414 ई. में दौलत खाँ को परास्त कर.
7. महत्त्वपूर्ण घटनाएँ	1. मलिक-उस-शर्क को वजीर, सैय्यद सलीम को सुल्तान का प्रमुख सलाहकार एवं सहारनपुर का इक्ता नियुक्त किया गया. मलिक सरवर को शहनाए शहर तथा नायबे दीवान बनाया गया. 2. खिज्र खाँ ने सुल्तान बनने के बाद भी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की वह खुद को रैयत-ए-आला कहता था.
8. प्रमुख विद्रोह एवं सैनिक अभियान	1. 1414-1415 ई. में वजीर के नेतृत्व में कटेहर के विरुद्ध सेना भेजी. वहाँ के जमींदार राय हरसिंह आँवला को परास्त कर अधीनता स्वीकृत कराई. 2. 1416-1417 ई. में बयाना एवं ग्वालियर में सेना भेजकर उन पर अधिकार किया. 3. 1421 ई. में खिज्र ने मेवात के विरुद्ध अभियान किया. वहाँ के सुल्तान बहादुर खाँ नाहर ने खिज्र की अधीनता स्वीकार कर ली.
9. इतिहासकारों का मूल्यांकन	इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार "उसके शासन में जनता प्रसन्न और संतुष्ट थी और इस कारण युवा और वृद्ध दास और स्वतन्त्र नागरिक सभी ने उसकी मृत्यु पर काले वस्त्र पहनकर दुःख प्रकट किया."
10. मृत्यु	मई 1421 ई. में

मुबारक-शाह (Mubarakashah)
(1421-1434 ई.)

1. वास्तविक नाम	मुबारक खाँ मुबारक शाह
2. पिता का नाम	खिज्र खाँ (पूर्व सुल्तान)
3. विद्वान संरक्षण	विख्यात इतिहासकार याहिया-बिन-अहमद सरहिंदी को प्रश्रय दिया जिसने 'तारीख-ए-मुबारकशाही' पुस्तक लिखी.
4. निर्माण	1433 ई. में मुबारकाबाद नामक नगर की स्थापना की.
5. प्रारम्भिक जीवन	1. प्रारम्भ से ही प्रशासन में सहयोगी रहा था. 2. पिता खिज्र खाँ ने अपने सुल्तान बनने के समय मुबारक शाह को पश्चिमी क्षेत्र का प्रशासक नियुक्त किया था.
6. राज्याधिकार	अपने पिता सुल्तान की मृत्यु के बाद मई 1424 ई. में दिल्ली का शासन संभाला.
7. सम्पादित प्रमुख कृत्य	1. मलिक रजन नादिर को दीपालपुर का प्रशासक नियुक्त किया तथा हिसार फिरोज हाँसी के जिले मलिक-उस-शर्क को प्रदान किये गये. 2. उसने अपने आपको स्वतन्त्र सुल्तान घोषित किया तथा खुतबों से तैमूर के वंशजों का नाम हटाकर अपने नाम के खुतबे पढ़ाये एवं स्वयं के नाम के सिक्के जारी किये.
8. प्रमुख विद्रोह	1. 1422-23 ई. में कटेहर के विरुद्ध सैनिक अभियान किया. कटेहर एवं कम्पिल के विद्रोहों को शान्त किया गया. 2. 1426, 1429-30 ई. में ग्वालियर एवं बयाना के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही कर विद्रोहों का दमन किया. 3. 1428 ई. में मेवात के विरुद्ध कार्यवाही की.
9. मृत्यु	19 फरवरी, 1434 ई. में (अपने वजीर के षड्यन्त्र से मार दिया गया)

मुहम्मद शाह
(Muhammad Shah)
1434–1443 ई.

- मुबारक शाह के दत्तक पुत्र मुहम्मद शाह को वजीर सरवरूलमुल्क एवं अन्य अमीरों ने मिलकर 19 फरवरी 1434 को दिल्ली का सुल्तान बना दिया गया.
- मुहम्मद शाह नाममात्र का शासक था. शासन पर पूर्ण नियन्त्रण वजीर सरवरूलमुल्क का था. मुहम्मद शाह के शासक बनते ही वजीर ने शस्त्रागार, राजकोष एवं हाथियों पर आधिपत्य कर लिया.
- वजीर ने बयाना, अमरोहा, नारनोल, कुहराम का प्रशासन उन लोगों को सौंपा जिन्होंने मुबारक शाह की मृत्यु के षड्यन्त्र में सहयोग दिया था. पूरी तरह शासन का सर्वस्व वजीर सरवरूलमुल्क बन गया था.
- मुहम्मद शाह को मारने के लिए वजीर षड्यन्त्र कर रहा था. इसका ज्ञान वजीर को पहले से ही था. अतः अगस्त माह 1434 ई. जैसे ही शाही कक्ष का वजीर ने दरवाजा तोड़ा, उसे समर्थकों के साथ मार दिया गया.
- मुहम्मद शाह ने कमाललमुल्क को नया वजीर बनाया.
- 1440 ई. में महमूद खिलजी ने मुहम्मद शाह पर आक्रमण किया, लेकिन युद्ध के बाद दोनों में सन्धि हो गई.
- समाना का प्रशासन बहलोल लोदी सुल्तान का विश्वास पात्र था. मुहम्मद शाह ने उसे पुत्र की संज्ञा दी थी. उसी ने 1443 ई. में दिल्ली पर आक्रमण कर लिया. उसी दौरान 1443 में उसकी मृत्यु हो गई. कुछ विद्वान 1445 में उसकी मृत्यु मानते हैं.

अलाउद्दीन शाह (Alauddin Shah)
(1443-1476 ई.)

- अलाउद्दीन आलमशाह पूर्व सुल्तान मुहम्मद शाह का पुत्र था. अतः उत्तराधिकारी के रूप में 1443 ई. में दिल्ली सल्तनत के सैय्यदवंशीय अन्तिम शासक के रूप में उसका राज्याभिषेक हुआ. कुछ विद्वानों के अनुसार उसके शासक बनने की तिथि 1445 ई. है.
- प्रारम्भ में वह समाना के विद्रोह को दबाने गया था, लेकिन दिल्ली पर आक्रमण की बात सुनकर वह वापिस दिल्ली लौट आया. इस बात पर उसके वजीर हुसाम खाँ ने उसका विरोध किया. अलाउद्दीन शाह 1447 ई. में दिल्ली छोड़कर बदायूँ चला गया.
- दिल्ली का प्रशासन अपने साले जो पूर्व में शहनाए शहर और अमीर कोहथ को सौंपकर पूरी तरह 1448 ई. में बदायूँ में जाकर बस गया.
- सुल्तान के जाने के बाद उसके दोनों भाईयों को मार दिया गया. अलाउद्दीन ने बहलोल लोदी को दिल्ली का शासन सौंप दिया. 1451 ई. में बहलोल लोदी ने लोदी वंश को स्थापित किया.
- अलाउद्दीन खेराबाद से हिमालय के तराई क्षेत्र तक 1476 ई. तक शासन करता रहा. उसने बदायूँ को अपनी राजधानी बनाया था.

मुबारक-शाह (Mubarakashah)
(1421-1434 ई.)

1. वास्तविक नाम	मुबारक खाँ मुबारक शाह	
2. पिता का नाम	खिज्र खाँ (पूर्व सुल्तान)	
3. विद्वान संरक्षण	विख्यात इतिहासकार याहिया-बिन-अहमद सरहिंदी को प्रश्रय दिया जिसने 'तारीख-ए-मुबारकशाही' पुस्तक लिखी.	
4. निर्माण	1433 ई. में मुबारकाबाद नामक नगर की स्थापना की.	
5. प्रारम्भिक जीवन	1. प्रारम्भ से ही प्रशासन में सहयोगी रहा था. 2. पिता खिज्र खाँ ने अपने सुल्तान बनने के समय मुबारक शाह को पश्चिमी क्षेत्र का प्रशासक नियुक्त किया था.	
6. राज्याधिकार	अपने पिता सुल्तान की मृत्यु के बाद मई 1424 ई. में दिल्ली का शासन संभाला.	
7. सम्पादित प्रमुख कृत्य	1. मलिक रजन नादिर को दीपालपुर का प्रशासक नियुक्त किया तथा हिसार फिरोज हाँसी के जिले मलिक-उस-शर्क को प्रदान किये गये. 2. उसने अपने आपको स्वतन्त्र सुल्तान घोषित किया तथा खुतबों से तैमूर के वंशजों का नाम हटाकर अपने नाम के खुतबे पढ़ाये एवं स्वयं के नाम के सिक्के जारी किये.	
8. प्रमुख विद्रोह	1. 1422-23 ई. में कटेहर के विरुद्ध सैनिक अभियान किया. कटेहर एवं कम्पिल के विद्रोहों को शान्त किया गया. 2. 1426, 1429-30 ई. में ग्वालियर एवं बयाना के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही कर विद्रोहों का दमन किया. 3. 1428 ई. में मेवात के विरुद्ध कार्यवाही की.	
9. मृत्यु	19 फरवरी, 1434 ई. में (अपने वजीर के षड़यन्त्र से मार दिया गया)	

मुहम्मद शाह
(Muhammad Shah)
1434–1443 ई.

- मुबारक शाह के दत्तक पुत्र मुहम्मद शाह को वजीर सरवरूलमुल्क एवं अन्य अमीरों ने मिलकर 19 फरवरी 1434 को दिल्ली का सुल्तान बना दिया गया.
- मुहम्मद शाह नाममात्र का शासक था. शासन पर पूर्ण नियन्त्रण वजीर सरवरूलमुल्क का था. मुहम्मद शाह के शासक बनते ही वजीर ने शस्त्रागार, राजकोष एवं हाथियों पर आधिपत्य कर लिया.
- वजीर ने बयाना, अमरोहा, नारनोल, कुहराम का प्रशासन उन लोगों को सौंपा जिन्होंने मुबारक शाह की मृत्यु के षड्यन्त्र में सहयोग दिया था. पूरी तरह शासन का सर्वस्व वजीर सरवरूलमुल्क बन गया था.
- मुहम्मद शाह को मारने के लिए वजीर षड्यन्त्र कर रहा था. इसका ज्ञान वजीर को पहले से ही था. अतः अगस्त माह 1434 ई. जैसे ही शाही कक्ष का वजीर ने दरवाजा तोड़ा, उसे समर्थकों के साथ मार दिया गया.
- मुहम्मद शाह ने कमाललमुल्क को नया वजीर बनाया.
- 1440 ई. में महमूद खिलजी ने मुहम्मद शाह पर आक्रमण किया, लेकिन युद्ध के बाद दोनों में सन्धि हो गई.
- समाना का प्रशासन बहलोल लोदी सुल्तान का विश्वास पात्र था. मुहम्मद शाह ने उसे पुत्र की संज्ञा दी थी. उसी ने 1443 ई. में दिल्ली पर आक्रमण कर लिया. उसी दौरान 1443 में उसकी मृत्यु हो गई. कुछ विद्वान 1445 में उसकी मृत्यु मानते हैं.

अलाउद्दीन शाह (Alauddin Shah)
(1443-1476 ई.)

- अलाउद्दीन आलमशाह पूर्व सुल्तान मुहम्मद शाह का पुत्र था. अतः उत्तराधिकारी के रूप में 1443 ई. में दिल्ली सल्तनत के सैय्यदवंशीय अन्तिम शासक के रूप में उसका राज्याभिषेक हुआ. कुछ विद्वानों के अनुसार उसके शासक बनने की तिथि 1445 ई. है.
- प्रारम्भ में वह समाना के विद्रोह को दबाने गया था, लेकिन दिल्ली पर आक्रमण की बात सुनकर वह वापिस दिल्ली लौट आया. इस बात पर उसके वजीर हुसाम खाँ ने उसका विरोध किया. अलाउद्दीन शाह 1447 ई. में दिल्ली छोड़कर बदायूँ चला गया.
- दिल्ली का प्रशासन अपने साले जो पूर्व में शहनाए शहर और अमीर कोहथ को सौंपकर पूरी तरह 1448 ई. में बदायूँ में जाकर बस गया.
- सुल्तान के जाने के बाद उसके दोनों भाईयों को मार दिया गया. अलाउद्दीन ने बहलोल लोदी को दिल्ली का शासन सौंप दिया. 1451 ई. में बहलोल लोदी ने लोदी वंश को स्थापित किया.
- अलाउद्दीन खेराबाद से हिमालय के तराई क्षेत्र तक 1476 ई. तक शासन करता रहा. उसने बदायूँ को अपनी राजधानी बनाया था.

लोदी वंश
(The Lodi Dynasty)
(1451-1526 ई.)

- अलाउद्दीन आलमशाह ने स्वयं बहलोल लोदी को दिल्ली की सत्ता सौंपकर दिल्ली सल्तनत पर नये राजवंश लोदी वंश का 1451 ई. में प्रारम्भ किया. लोदी वंश पहला अफगान राज्य था जिसकी स्थापना बहलोल लोदी ने की थी.
- पूर्व शासक तुर्की थे, लेकिन लोदी अफगान थे. बहलोल लोदी गिलजई कबीले की शाखा लोदी के कुटुम्ब शाहूखेल से सम्बन्धित था.

बहलोल लोदी (Bahlol Lodi)
(1451-1489 ई.)

1. वास्तविक नाम	बहलोल लोदी
2. पिता	मलिक काला (दौराला का प्रशासक)
3. दादा	मलिक बहराम
4. चाचा	मलिक सुल्तान शाह (इलम खाँ)
5. प्रारम्भिक जीवन	1. बहलोल जब अपनी माँ के पेट में था, उसी दौरान पिता की मृत्यु हो गई. 2. चाचा मलिक सुल्तान शाह (इलाम खाँ) ने उसका पालन-पोषण किया. 3. उसके चाचा ने सैनिक, प्रशासन एवं अन्य सम्बन्धित शिक्षा दिलवाई. सुल्तान शाह ने उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था. 4. सुल्तान शाह की मृत्यु के बाद सरहिन्द से पानीपत तक के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया. 5. मुहम्मद शाह ने उसे सरहिन्द का राज्यपाल बनाया. महमूद खिलजी के दिल्ली आक्रमण को विफलकर वह मुहम्मद शाह का चहेता बन गया.
6. राज्याभिषेक	1451 ई. में अलाउद्दीन आलमशाह के बदायूँ चले जाने पर.
7. सम्पादित प्रमुख कृत्य	1. अफगान सरदारों को बराबर का दर्जा, उपाधि, पद तथा जागीरें दी गई. 2. ग्वालियर, धौलपुर, कालवी, मेवात, सम्भल, अलीगढ़, मैनपुरी, भोगाँव, इटावा, चन्दावर के विद्रोहों को शान्त कर अपने अधीन किया. 3. जौनपुर पर विजय प्राप्त की. 1478-79 ई. में बहलोल ने जौनपुर को दिल्ली में मिला लिया. 4. बहलोल लोदी ने अपने शासन के अन्तिम चरण में 1485 ई. में जौनपुर का राज्य बारबक खाँ को, कडा-मानिकपुर का राज्य मुबारक खाँ नुहानी को बहराईच का क्षेत्र कुर्बान फरमुली को तथा लखनऊ और कालपी आजम हुमायूँ को एवं निजाम खाँ को पंजाब व दोआब का क्षेत्र देकर राज्य को बाँट दिया.
8. सिक्के	बहलोली सिक्कों का प्रचलन शुरू किया.
9. मृत्यु	मिलावली में जुलाई 1489 ई. में.

सिकन्दर लोदी (Sikandar Lodi)
(1489-1517 ई.)

1. वास्तविक नाम	निजाम खाँ
2. प्रसिद्ध नाम	सिकन्दर लोदी
3. पिता	बहलोल लोदी
4. शासन के लिए त्रिकोणीय संघर्ष	1. बारबक शाह (जौनपुर का शासक) 2. निजाम खाँ एवं 3. आजम हुमायूँ के मध्य
5. राज्याभिषेक	बहलोल की मृत्यु के समय उपस्थित निजाम खाँ को अमीरों ने सिकन्दर लोदी के नाम से जुलाई 1489 ई. में दिल्ली का शासक बना दिया.
6. प्रमुख सम्पादित कृत्य	1. अफगान अमीरों को पद, पदवी, भत्ता देकर तथा गुप्तचरों के माध्यम से शान्त किया गया. 2. गजे-सिकन्दरी नामक माप का प्रचलन प्रारम्भ किया. उपज के अनुसार लगान की राशि तय की गई. गज-ए-सिकन्दरी 30 इंच का था. 3. आगरा को दिल्ली सल्तनत की राजधानी बनाया. 1506 ई. में आगरा की स्थापना सिकन्दर लोदी ने ही की थी. 4. बहराईच के जुलूसों, शीतला की पूजा एवं स्त्रियों के मकबरे पर जाने के लिए प्रतिबन्ध लगाया. 5. उलेमा को प्रसन्न करने के लिए नगरकोट के मन्दिर की मूर्तियों को तोड़कर कसाइयों को मांस तौलने के लिए दे दिया.
7. प्रमुख सैनिक अभियान	1501 ई. में धौलपुर, 1504 ई. में मन्द्रायल के दुर्ग, 1506-07 ई. में अंतगढ़ के दुर्ग पर सैनिक अभियान कर विजय प्राप्त की. रणथम्भौर के शासक ने भी सिकन्दर लोदी की अधीनता स्वीकार की थी.

8. साहित्यिक गतिविधियाँ	1. गुलरूसी के नाम से स्वयं कविताएँ लिखता था.
	2. गायन विद्या का ग्रन्थ लज्जत-ए-सिकन्दर शाही एवं आयुर्वेदिक ग्रन्थ फरहंगे सिकन्दरी इसी समय लिखा गया था.
9. मृत्यु	आगरा में नवम्बर 1507 ई. को.

इब्राहीम लोदी (Ibrahim Lodi)
(1517-1526 ई.)

- सिकन्दर लोदी के वाद 1517 ई. में इब्राहीम लोदी सुल्तान बना एवं जलाल खाँ को जौनपुर का राज्य सौंपा गया.
- जलाल खाँ सिकन्दर लोदी का पुत्र एवं इब्राहीम लोदी का भाई था. जलाल खाँ ने कालपी में स्वयं को स्वतन्त्र सुल्तान घोषित कर अवध एवं आगरा पर आक्रमण कर दिया. इब्राहीम लोदी ने जलाल को हराकर उसकी हत्या कर दी एवं अफगान अमीरों पर नियन्त्रण पाया.
- 21 अप्रैल, 1526 में बाबर और इब्राहीम लोदी में पानीपत का प्रथम युद्ध हुआ, जिसमें इब्राहीम लोदी को मार दिया गया.
- बाबर ने पानीपत के युद्ध में रूमी और तुलगमा पद्धति का सहारा लिया था. दो कुशल तोपची उस्ताद अली और मुस्तफा भी बाबर की सेना में थे. 19-20 अप्रैल को बाबर ने रात्रि में इब्राहीम लोदी के शिविर पर आक्रमण किया था.

दिल्ली सल्तनत का पतन

कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली सल्तनत का संस्थापक था. 1206 ई. में गुलाम वंश की स्थापना के साथ ही उसने दिल्ली सल्तनत की स्थापना भी की थी. 1206 से 1526 ई. तक विभिन्न वंशीय शासकों ने सल्तनत पर शासन किया. दिल्ली सल्तनत का अन्तिम शासक इब्राहीम लोदी था एवं अन्तिम वंश लोदी वंश था. सल्तनत के पतन के निम्नलिखित उत्तरदायी कारक थे–

(1) दिल्ली सल्तनत जनसाधारण से दूर तुर्की अमीरों, उलमा तथा सैनिक पदाधिकारियों तक ही सीमित थी. सल्तनत के शासक स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश थे.

(2) उत्तराधिकारिता का कोई निश्चित नियम नहीं था. जिनके पास अमीरों, सैनिकों या तलवार का बल होता था, वही सुल्तान बन बैठता था. सल्तनत के पतन का यह सर्वाधिक मूल कारण था.

(3) सल्तनतकालीन दासों, सैनिकों, शासकों का चारित्रिक पतन भी इसके लिए जिम्मेदार था. प्रशासनिक एवं सेना सम्बन्धी अव्यवस्था, आन्तरिक एवं सीमान्त विद्रोह, पानीपत का युद्ध, आर्थिक दुर्बलता एवं राजनीति पर धर्म का हावी होना मूलतः दिल्ली सल्तनत के अन्त में कारगार कारक रहे थे.

दिल्ली के सुल्तानों का प्रशासनिक संगठन
(Administrative Organization of the Sultans of Delhi)

सल्तनतकालीन राज्य का स्वरूप

- सल्तनतकालीन मुस्लिम राज्य धर्मसत्तात्मक था. कुरान के शरा या आदर्श राज्य के गठन के मूलाधार थे. 'उलेमा' कुरान एवं इस्लामी कानून के व्याख्याकार थे और इन्हीं के आधार पर शासन चलता था. युवराज एवं प्रशासनिक अधिकारियों को अधीनस्थ कर्मचारी माना जाता था. सुलतान खलीफा के सहायक रूप में कार्य करते थे.
- मुस्लिम सिद्धान्तों के अनुसार उत्तराधिकारिता के लिए धर्म में आस्थावान, पुरुष एवं व्यस्क होना आवश्यक था. मिल्लत को सुल्तान के चयन करने का अधिकार था. सिद्धान्तों के अतिरिक्त अनुभूतिजन्य तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि उस काल में जो प्रबल होता था वही उत्तराधिकारी बन जाता था.

तुर्की राजत्व का सिद्धान्त

- इल्बारी सुल्तान स्वयं को खलीफा का सहयोगी मानता था. खुतबा एवं सिक्कों पर सुल्तान के बजाय खलीफा का नाम खुदवाया था. एकमात्र बलबन ने खलीफा के अस्तित्व को नकार कर स्वतन्त्र सत्ता स्थापित की. बलबन सुल्तान को जिल्ले अल्लाह (अल्लाह का प्रतिबिम्ब) मानता था. पैगम्बर के पश्चात्त वह सुल्तान को सर्वस्व एवं सर्वशक्तिशाली मानता था. फिरोज तुगलक ने धर्म के आधार पर राजनीति, जबकि अन्य तुर्क शासक दोनों को अलग-अलग रखते थे. सुल्तान को देवत्व प्रदान करना तथा राजतन्त्र को वंशानुगत बनाने का प्रयास किया गया. अमीर, उलेमा, राजकीय पदाधिकारी, सैनिक शक्तिशाली के अधीनस्थ कर्मचारी होते थे, जबकि कमजोर शासकों पर हावी हो जाते थे.

अफगानों के राजत्व का सिद्धान्त

- अफगान सुल्तान को अपने में ही श्रेष्ठ मानते थे, ईश्वर का प्रतिनिधि नहीं. अफगान सरदार स्वयं को सुल्तान का अधीनस्थ नहीं मानता था, अपितु शासन में बराबर का भागीदार मानता था. किसी भी तरह अफगान सुल्तान को असीम सत्ता का मालिक नहीं मानते थे.

सुल्तान और खलीफा

- खलीफा को सल्तनतकालीन शासक सर्वोपरि सत्ता मानते थे एवं स्वयं को उसका सहयोगी मात्र समझते थे. खलीफा को इस्लामी राज्य का संवैधानिक प्रधान माना जाता था. इसीलिए सिक्कों एवं खुतवों पर उनका नाम पढ़ाया जाता था.
- तुर्की सुल्तान इल्तुतमिश ने सर्वप्रथम 1229 ई. में अब्बास खलीफा से नासिर-अमीर-उलमोमिनीन (खलीफा का सहायक) की उपाधि प्राप्त की थी.
- 1258 ई. में हलाकू ने अब्बासी खलीफा को मार दिया, लेकिन सल्तनत से खलीफा की अधिसत्ता को कभी भी अस्वीकृत नहीं किया गया.
- मुबारक शाह खिलजी ने सर्वप्रथम स्वयं को अमीर-उल-मोमिनीन (खलीफा) घोषित किया था.

सल्तनतकालीन प्रमुख पदाधिकारी

1. खलीफा	मुस्लिम राज्य एवं इस्लामी धर्म का प्रधान
2. उलेमा	इस्लाम के व्याख्याकार
3. मजलिस-ए-खलवत	मंत्रिपरिषद्
4. नायब-ए-मामलिकात	उप सुल्तान
5. वजीर	सुल्तान का प्रमुख सहयोगी
6. वकील-ए-सल्तनत	वजीर का सहयोगी
7. दीवान-ए-वजारत	राजस्व विभाग का प्रमुख
8. मुशरिफ-ए-मुमलिक	प्रमुख लेखाकार
9. मुस्तौफी-ए-मुमलिक	महालेखा-परीक्षक
10. मजमुआदार	आय-व्यय का व्यवस्थापक
11. खजीन	खजांची
12. दीवाने वकूफ	व्यय के कागजात तैयार कराने वाला विभाग
13. दीवान-ए-अमीरकोही	कृषि विकास एवं भू-राजस्व व्यवस्था का विभाग
14. आरिज-ए-ममालिक	सेना मंत्री
15. दबीर-ए-खास	आलेख विभाग का प्रधान
16. दीवान-ए-इंशा	आलेख विभाग
17. दबीर	लेखक
18. दीवान-ए-रसालत	विदेश मंत्री
19. सद्र-उस-सुदूर	धर्म मंत्री
20. काजी-उल-कुजात	न्याय विभाग का सर्वोच्च अधिकारी
21. वकील-ए-दर	सुल्तान और शाही महल का व्यक्तिगत सेवक
22. अमीर-ए-हाजिब	अनुशासन मंत्री
23. अमीर-ए-आखूर	अश्वशाला का प्रधान
24. शाहना-ए-पील	राजकीय हस्तिशाला का प्रधान
25. अमीर-ए-कोही	कृषि विभाग का प्रधान
26. मुतशर्रिफ	कारखाने का प्रधान
27. दीवान-ए-आरिज	सैन्य विभाग की देखभाल करने वाला
28. आरिज-ए-ममालिक	सैन्य विभाग का प्रधान
29. खान	सेना का सर्वोच्च अधिकारी
30. कोतवाल एवं मुफरिद	किलों के रक्षक
31. अमीर-ए-बहर	जल बेड़ा का प्रधान
32. यजकी	गुप्तचर
33. मुफ्ती	कानूनी व्याख्याकार
34. कोतवाल	शांति व्यवस्थापक
35. शिक्कदार	जिले का प्रधान
36. आमिल	कर इकट्ठा करने वाला कर्मचारी
37. मुहतसिब	नैतिक नियमों का पालक
38. आमिल-	परगना का शासक

सुल्तान की स्थिति

- सल्तनतकालीन शासन में सुल्तान राज्य का संवैधानिक एवं व्यावहारिक प्रधान होता था. उसे निरंकुश और सर्वशक्तिमान समझा जाता था. प्रशासनिक, सैनिकीय, धार्मिक, राजनीतिक एवं विधिजन्य सभी अधिकार उसे प्राप्त थे. खलीफा की अधिसत्ता स्वीकारते हुए भी पूर्णतः स्वतन्त्र थे. जनता, उलेमा एवं अमीरों का सुल्तान पर नियन्त्रण कुछ हद तक होता था.
- सुल्तान का प्रमुख कार्य–प्रशासनिक व्यवस्था बनाना, शांति व्यवस्था कायम करना, न्यायानुकूल कार्य करना, धर्म का पालन करना, प्रजा की सुरक्षा करना होते थे. सुल्तान के बाद प्रशासन का प्रमुख व्यक्ति नायब होता था. जिसे नायब-ए-मामलिकात कहा जाता था. सुल्तान की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद थी जिसे मजलिस-ए-खलवत कहा जाता था. इस परिषद में वजीर सेना विभाग का प्रधान, विदेश मंत्री शामिल होता था.

अन्य विवरण

- सुल्तान के प्रमुख सहयोगी को 'वजीर' कहा जाता था. सुल्तान के बाद वजीर प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी होता था.
- फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल में 40,000 गुलाम उसकी सेवा करते थे.
- सल्तनतकाल में सेना के दो वर्ग थे–केन्द्रीय सेना जिसे हश्म-ए-कल्ब कहा जाता था तथा प्रान्तीय सेना जिसे हश्म-ए-अतरफ कहा जाता था. सवार-ए-कल्ब शाही सेना की घुड़सवार टुकड़ी होती थी.

- सुल्तान के बाद खान सेना का सर्वोच्च अधिकारी होता था. प्रत्येक सुल्तान के अधीन दस खान होते थे. एक खान के अधीन दस मलिक, एक मलिक के अधीन दस अमीर, एक अमीर के अधीन दस सिपहसालार, एक सिपहसालार के अधीन दस सरखेल होते थे. एक सरखेल में दस अश्वारोही सिपाही होते थे.
- मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में 10,000 खान, मलिक 1000, अमीर 100 तथा सिपहसालार 10 घुड़सवारों का मालिक होता था.

  सल्तनतकालीन सुल्तान शरा में वर्णित निम्नलिखित 5 कर लेते थे–

  1. उश्र–मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर था. प्राकृतिक साधनों से सिंचित भूमि पर उपज का 5% तथा कृत्रिम साधनों से सिंचित भूमि से उपज का 10% कर लिया जाता था.
  2. खराज–गैर मुसलमानों से 1/3 से 1/2 भाग उपज का लिया जाता था.
  3. खम्स–लूटे हुए या छिपे हुए धन में से 1/5 भाग सुल्तान लेता था तथा 4/5 भाग सैनिक अधिकारी एवं धन प्राप्त करने वाले का होता था.
  4. जजिया कर–यह गैर मुसलमानों एवं हिन्दुओं से लिया जाता था. स्त्रियाँ, बच्चे, वृद्ध, भिखारी, साधु इससे मुक्त थे. धनी वर्ग को 48, मध्यम वर्ग को 24 तथा सामान्य वर्ग को 12 दिरहम कर स्वरूप देना पड़ता था.
  5. जकात–मुसलमानों से यह धार्मिक कर 2 से 2·5 प्रतिशत तक लिया जाता था, जो उन्हीं के हित में व्यय कर दिया जाता था.

  जजिया एवं जकात धार्मिक कर थे तथा उश्र, खराज, खम्स गैर धार्मिक या धर्म निरपेक्ष कर थे.

  इन करों के अतिरिक्त मुसलमानों से वस्तु के मूल्य का 2·5%, हिन्दुओं से 5% व्यापारिक कर लिया जाता था. घोड़ों पर 5% कर लगाया जाता था.

सल्तनतकालीन कृषि दशा
(Sultanate's Agrarian Condition)

- सल्तनतकाल में भूमि चार श्रेणियों में विभक्त थी–इक्ता भूमि, खालसा भूमि, अनुदान भूमि एवं हिन्दू नरेशों के आधिपत्य की भूमि.
- इक्ता भूमि वह भूमि होती थी, जो सैनिक एवं असैनिक अधिकारियों को वेतन के बदले प्रदान की जाती थी. इक्ता प्रणाली का प्रारम्भ सुदूर क्षेत्रों को केन्द्रों से जोड़ने के लिए तथा सामन्ती प्रथा को समाप्त करने के उद्देश्य से इल्तुतमिश ने किया था. इल्तुतमिश के काल में इक्ता की दो श्रेणियाँ थीं–

  1. प्रान्तीय स्तर की भूमि जो खालसा से बाहर होती थी, जो उच्चवर्गीय अमीरों को प्रदान की जाती थी, जो प्रशासकीय एवं राजस्व सम्बन्धी अधिकार रखते थे. इक्ता प्राप्त इस वर्ग के व्यक्ति मुक्ता कहलाते थे.
  2. ग्रामीण स्तरीय इक्ता जिसे सुल्तान सैनिकों को वेतन के बदले प्रदान करता था. वे इन लोगों को प्रशासकीय एवं राजस्व सम्बन्धी अधिकार नहीं होते थे. यह भूमि खालसा का अंग होती थी.

- खालसा भूमि केन्द्र के अधीन होती थी तथा आमिल के माध्यम से सुल्तान राजस्व की वसूली करता था. अलाउद्दीन एवं मुहम्मद तुगलक 50 प्रतिशत लगान इनसे वसूल करता था.
- अनुदान भूमि सुल्तान द्वारा विद्वानों एवं वक्फों को अनुदान स्वरूप प्रदान की जाती थी. इस भूमि पर कर नहीं लिया जाता था. सुल्तान का इस प्रकार की भूमि से कोई सम्बन्ध नहीं होता था. अलाउद्दीन ने इस तरह की भूमि को केन्द्र के अधीन कर राजस्व की वसूली आरम्भ कर दी थी.
- चौथे प्रकार की भूमि ऐसी भूमि थी जिस पर हिन्दू नरेशों का आधिपत्य होता था. इस भूमि के राजस्व का एक निश्चित भाग सुल्तान को देना पड़ता था.
- सल्तनतकाल में भू-राजस्व के निर्धारण के लिए निम्न-लिखित तीन तरीकों का प्रचलन था–

  1. बटाई प्रणाली–यह प्रणाली गल्ला बख्शी, किस्मत-ए-गल्ला के नाम से जानी जाती थी. इसके अनुसार वास्तविक पैदावार में से राज्य के हिस्से का निर्धारण किया जाता था.
  2. मसाहत प्रणाली–यह प्रणाली अलाउद्दीन खिलजी द्वारा प्रचलित की गई थी. भूमि की माप के आधार पर उपज का निर्धारण किया जाता था.
  3. मुक्ताई प्रणाली–हिस्सा बाँट प्रणाली पर आधारित प्रणाली थी. जिसमें लगान का निर्धारण किया जाता था.

- उश्र, खराज, जकात, जजिया एवं खम्स प्रमुख कर थे. जजिया एवं जकात धार्मिक एवं उश्र, खराज, खम्स अधार्मिक कर थे.
- इब्नबतूता के अनुसार सल्तनकालीन किसान साल में दो या तीन फसलें काटते थे. धान, ईख, गेहूँ, कपास एवं दक्षिण भारत में विस्तृत पैमाने पर मसालों की खेती की जाती थी.
- गयासुद्दीन तुगलक ने एक नियम बनाया था कि एक वर्ष में 1/10 या 1/11 से अधिक किसी भी इक्ता में राजस्व की वृद्धि न की जाए.
- फिरोज तुगलक ने तकावी ऋणों से मुक्ति प्रदान की थी.
- फिरोज तुगलक के शासनकाल में ख्वाजा हिसामुद्दीन नामक राजस्व पदाधिकारी ने 6 वर्षों के परिश्रम के फलस्वरूप भू-राजस्व का 6 करोड़ 85 लाख टंका निश्चित किया था.
- अनाज से भूसा अलग करने के बाद लगान का निर्धारण करना रास बँटाई, फसल कटने के बाद खलिहान में अनाज से भूसा निकालने के पूर्व राज्य एवं किसान में बँटवारा लंक बँटाई एवं खेत बोने के बाद खेत बाँटकर कर का निर्धारण करना खेत बँटाई कहलाता था.

निष्कर्ष–दिल्ली सल्तनत पर 320 वर्षों तक 1206 से 1526 ई. तक विभिन्न राजवंशों के सुल्तानों का शासन रहा. इसमें शासकों के दो वर्ग थे–तुर्क शासक एवं अफगान शासक. सल्तनत का सम्पूर्ण शासन काल विद्रोहों एवं आक्रमणों के मध्य गुजरा. लगभग सभी शासकों का शासन अशान्तिपूर्ण एवं सत्ता प्राप्ति के लिए किये जाने वाले तिकड़मों के दौर से गुजरा. धर्म और राजनीति को सभी शासकों ने एक साथ बनाये रखा और गैर मुस्लिम लोगों पर ज्यादती का कहर ढहाया जाता रहा. यद्यपि इस दौर में परोपकारजन्य कार्य भी सम्पन्न हुए तथापि उनका स्तर न्यूनतम रहा. स्थापत्य कला के क्षेत्र को अवश्य सन्तोषजनक कहा जा सकता है, लेकिन साहित्यिक गतिविधियों की न्यूनता इस काल से अधिक न्यूनतम कभी नहीं रही. सल्तनतकालीन सभी गतिविधियाँ अनिश्चित अवैधानिक थीं. कभी नियमों को मान लिया जाता था और कभी जिसने शासन प्राप्त करने में सहयोग दिया उसकी गुलामी करने में पूरा वक्त गुजर जाता था. कृषि एवं भूमि व्यवस्था की बात की जाए, तो सभी शासकों ने कृषि वृद्धि से अधिक कर प्राप्त करने के विभिन्न तरीके ईजाद करने में समय बिताया. सभी शासकों में अलाउद्दीन खिलजी की प्रकृति सर्वाधिक घटिया थी. उसे मानवीयता का दुश्मन कहा जाए, तो उचित विशेषण का प्रयोग सार्थक होगा.

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

1. सल्तनतकालीन प्रमुख विभाग

1. दीवान-ए-विजारत	वजीर का विभाग
2. दीवान-ए-आरिज	सैन्य विभाग
3. दीवान-ए-रसालत	विदेश विभाग
4. दीवान-ए-इंशा	पत्राचार विभाग
5. दीवान-ए-अशरफ	पत्राचार विभाग
6. दीवान-ए-कजायमालिक	न्याय विभाग
7. दीवान-ए-वकूफ	व्यय विभाग (जलालुद्दीन खिलजी ने स्थापित किया)
8. दीवान-ए-अमीरकोही	कृषि विभाग (मुहम्मद बिन तुगलक ने स्थापित किया)
9. दीवान-ए-खैरात	दान विभाग (फिरोजशाह तुगलक ने स्थापित किया)
10. दीवान-ए-मुस्तखराज	राजस्व विभाग (अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बनाया गया)
11. दीवान-ए-इस्तिहाक	पेंशन विभाग (फिरोज तुगलक ने स्थापित किया)
12. दीवान-ए-बन्दगान	दास विभाग

2. सल्तनतकालीन स्थापत्य कला

इमारत	स्थान	निर्माणकर्त्ता
1. अढ़ाई दिन का झोपड़ा	अजमेर	कुतुबुद्दीन ऐबक (1208 ई. में)
2. कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद	दिल्ली में किला रामपिथौरा के पास	कुतुबुद्दीनऐबक(1195-1199ई.में)
3. कुतुबमीनार	दिल्ली	1206 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने, 1232 में इल्तुतमिश ने
4. सुल्तानगढ़ी का मकबरा	दिल्ली	इल्तुतमिश ने 1223 ई. में
5. दरगाह मुइनुद्दीन चिश्ती	अजमेर	इल्तुतमिश ने 1230 ई. में
6. इल्तुतमिश का मकबरा	दिल्ली	रजिया सुल्तान (1235-1236)
7. लाल महल	दिल्ली	बलबन ने लगभग 1275 ई. में
8. सीरी का किला	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी ने 1308 ई. में
9. अलाई दरवाजा	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी ने 1310-11 में
10. जमात खाँ मस्जिद	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी ने 1312 ई. में
11. ऊखा मस्जिद	भरतपुर	कुतुबुद्दीन मुबारक ने 1317 ई. में

12. दरगाह शेख निजामुद्दीन	दिल्ली	खिज्र खाँ ने 1315 ई. में
13. तुगलकाबाद का किला	दिल्ली में	गयासुद्दीन तुगलक ने 1325 ई. में
14. गयासुद्दीन का मकबरा	दिल्ली	मुहम्मद तुगलक 1326-1327 ई. में
15. आदिलाबाद का किला	दिल्ली	मुहम्मद बिन तुगलक 1340 ई. लगभग
16. बारह खम्भा महल	दिल्ली	मुहम्मद तुगलक 1350 ई. लगभग
17. जहाँपनाह नगर	दिल्ली	मुहम्मद तुगलक 1350 ई. लगभग
18. अबीना मस्जिद	पाण्डुआ (बंगाल)	सिकन्दर शाह ने 1368 ई. में
19. खानेजहाँ तेलगानी का मकबरा	दिल्ली	जौनाशाह 1370-73 ई. में
20. बेगमपुरी मस्जिद	दिल्ली	फिरोज तुगलक 1374 ई. में
21. कोटला फीरोजशाह किला	दिल्ली	फिरोज तुगलक 1375 ई. में
22. खिड़की मस्जिद	दिल्ली	फिरोज तुगलक 1375 ई. में
23. अटाला मस्जिद	जौनपुर	इब्राहीम शाह शर्की (1377-1402ई.)
24. काली मस्जिद	दिल्ली	जौनाशाह 1380 ई. में
25. कबीरूद्दीन औलिया का मकबरा (लाल गुम्बद)	दिल्ली	नासिरूद्दीन महूद 1397 ई. में
26. जामी मस्जिद	अहमदाबाद	अहमदशाह प्रथम 1411 ई. में
27. फिरोजशाह बहमनी का मकबरा	गुलबर्गा	अहमदशाह बहमनी 1422 ई. में
28. जामी मस्जिद	माँडू	हुशंगशाह 1430-1438 ई.
29. हिण्डोला महल	माँडू	हुशंगशाह 1432 ई. में
30. कीर्ति स्तम्भ (विजय स्तम्भ)	चित्तौड़	राणा कुम्भा 1440 ई. लगभग
31. जहाज महल	माँडू	हुशंगशाह 1435-1436 ई. में
32. चाँद मीनार (चार मीनार)	दौलताबाद	अहमदशाह बहमनी 1435-36 ई.

3. सल्तनतकालीन प्रमुख आक्रमण

सल्तनतकालीन शासक	वर्ष	आक्रमणकारी
1. इल्तुतमिश	1221 ई. में	मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खाँ
2. अलाउद्दीन मसूद शाह	1245 ई. में	हसन कार्लुग एवं कबीर खाँ
3. बलबन	1285 ई. में	मंगोल आक्रमणकारी तिमूर खाँ
4. जलालुद्दीन खिलजी	1292 ई. में	मंगोल आक्रमणकारी अब्दुल्ला खाँ
5. अलाउद्दीन खिलजी	1297 ई. में	मंगोल आक्रमणकारी कादिर खाँ
6. अलाउद्दीन खिलजी	1298 ई. में	मंगोल आक्रमणकारी साल्दी खाँ
7. अलाउद्दीन खिलजी	1299 ई. में	मंगोल आक्रमणकारी कुतलुग ख्वाजा
8. अलाउद्दीन खिलजी	1303 ई. में	मंगोल आक्रमणकारी तार्गी खाँ
9. अलाउद्दीन खिलजी	1305 ई. में	मंगोल आक्रमणकारी अलीबेग एवं तरताक खाँ
10. अलाउद्दीन खिलजी	1306 ई. में	मंगोल आक्रमणकारी इकबालमंदा एवं कुबाक
11. मुहम्मद तुगलक	1327 ई. में	मंगोल आक्रमणकारी तरमा शीरी
12. महमूद तुगलक	1398 ई. में	अमीर तैमूर
13. यूसुफ आदिल शाह	1510 ई. में	पुर्तगाली सूबेदार आक्रमणकारी अल्बुकर्क
14. इब्राहीम लोदी	1526 ई. में	मुगल आक्रमणकारी बाबर

4. सल्तनतकालीन प्रमुख फारसी इतिहासकार

नाम इतिहासकार	आश्रयदाता शासक	नाम ग्रन्थ
1. मिन्हाज-उस-सिराज	इल्तुतमिश एवं नासिरूद्दीन (1193-1266 ई.)	तबकात-ए-नासिरी
2. हसन निजामी	कुतुबुद्दीन ऐबक एवं इल्तुतमिश (13वीं शदी)	ताजुल मसीर
3. अमीर खुसरो	मुहम्मद तुगलक 1253 से 1325 ई.	तुगलक नामा, किशन-उस-सारेन
4. जियाउद्दीन बरनी	फिरोज तुगलक 1285 से 1360 ई.	तारीख-ए-फिरोजशाही फतवा-ए-जहाँदारी
5. इब्नेबतूता	मुहम्मद तुगलक 1305 से 1378 ई.	रेहला
6. शम्से सिराज अफीफ	फिरोज तुगलक (1350-1400 ई.)	तारीख-ए-फिरोजशाही
7. अब्दुलमलिक इसामी	बहमनशाह (14वीं शदी)	फुतूह-उस-सलातीन
8. बद्रे चाच	मुहम्मद तुगलक (14वीं शदी)	चाच नामा
9. शियाबुद्दीन अहमद अब्बास	मुहम्मद तुगलक 14वीं शताब्दी	मसालिकुल आबसार

5. मुहम्मद गौरी के भारत पर हुए आक्रमण

आक्रमणकारी राज्य	वर्ष	राज्य का शासक	परिणाम
मुल्तान	1175 ई.	करमाथी शासक	विजय
उच्छ	1176 ई.	करमाथी शासक	विजय
अन्हिलवाड़ (गुजरात)	1178 ई.	युवराज भीम द्वितीय संरक्षिका रानी नाइकदेवी	पराजय
पेशावर	1179 ई.	मलिक खुसरो	विजय
लाहौर	1181 ई.	मलिक खुसरो	विजय
देवल, सिन्ध	1182 ई.	सुम्र शासक	विजय
स्यालकोट	1184 ई.	मलिक खुसरो	विजय
लाहौर	1186 ई.	मलिक खुसरो	विजय
भटिण्डा	1189 ई.	चौहान सूबेदार	विजय
तराईन	1191 ई.	पृथ्वीराज चौहान	पराजय
तराईन	1192 ई.	पृथ्वीराज चौहान	विजय
हाँसी, कुहराम, दिल्ली, सुरसुती	1193 ई.	—	विजय
कन्नौज (चन्दावर)	1194 ई.	जयचन्द्र	विजय
बयाना	1195-96	कुमारपाल	विजय
ग्वालियर	1196 ई.	सुलक्षणपाल	विजय

स्मरणीय तथ्य

- ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत पर तुर्कों ने आक्रमण किया था.
- तुर्की आक्रमण के प्रथम नेतृत्वकर्त्ता महमूद गजनवी एवं मुहम्मद गौरी थे.
- 1206 ई. से 1290 ई. तक दिल्ली सल्तनत पर विभिन्न शासकों ने शासन किया. यह शासक ममुलक, गुलाम कहलाये.
- अलबेरूनी तहकीक-ए-हिन्द के लेखक थे जिसको महमूद गजनवी युद्ध बन्धक के रूप में गजनी लाया था.
- खजायन-उल-फुतुह नामक ग्रन्थ के लेखक अमीर खुसरो सल्तनतकालीन इतिहास के साक्षी भी थे.
- देवल रानी खिज्र खाँ नामक ग्रन्थ में अलाउद्दीन के पुत्र खिज्र खाँ एवं गुजरात के राणा करणसिंह की पुत्री देवल रानी के मध्य के प्रेम सम्बन्धों का वर्णन है.
- दासों की प्रशिक्षण व्यवस्था, प्रचलित दास प्रथा एवं अन्य तथ्यों के बारे में सल्तनतकालीन जानकारी प्राप्त करने का सशक्त स्रोत सियासतनामा है.
- 'तारीख-ए-जहाँगुशाँ' में लेखक ने सिन्धु क्षेत्र में चंगेज खाँ द्वारा जलालुद्दीन मेगबर्नी का पीछा करने की घटना का प्रस्तुतिकरण बड़े अच्छे तरीके से किया है.
- खैर-उल-मजालिस का रचनाकार हमीद कलन्दर था, जिसमें मंगोल आक्रमण के प्रभाव, अलाउद्दीन के बाजार नियन्त्रण और शेख नसीरुद्दीन चिराग देहलवी की वार्ता का संकलन मिलता है.
- फुतुस-उस-सलातीन में 999 ई. से 1350 ई. तक का इतिहास संकलित है. इसे इसामी ने लिखा था.
- ताजुल मसिर नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ को दिल्ली सल्तनतकालीन सरकार द्वारा तैयार कराया गया था, जिसमें 1191 ई. से 1229 ई. तक के सल्तनतकालीन इतिहास को संग्रहित किया है.
- तैमूर के आक्रमण का विशद् वर्णन जफरनामा में प्राप्त होता है, जिसके रचनाकार शरफुद्दीन अली यजदी थे.
- कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210) दिल्ली सल्तनत का पहला तथा इब्राहीम लोदी (1517-1526) दिल्ली सल्तनत का अन्तिम शासक था.
- 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम ने पहला मुस्लिम आक्रमण सिन्ध पर किया था.
- महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण का लक्ष्य राजनीतिक से अधिक लूटपाट एवं धर्मजन्य ईर्ष्या थी.
- 15 मार्च, 1206 में पंजाब से वापस लौटते समय मुहम्मद गौरी को मार दिया गया था.
- महमूद गजनवी के गजनी पर उत्तराधिकारी के रूप में यल्दूज ने शासन संभाला था.
- 1206 से 1290 तक के समस्त शासक या तो गुलाम थे या फिर गुलामों के पुत्र थे, इसी कारण 1206 से 1290 तक के शासकों के वंश को गुलाम वंश कहा जाता है.
- 'कुरान ख्वाँ' कुतुबुद्दीन ऐबक का नाम था. प्रारम्भ में ही कुरान पढ़ना सीख जाने के कारण उसे यह नाम दिया गया था.
- कुतुबुद्दीन ऐबक काजी फखरुद्दीन अब्दुल अजीज कूफी के द्वारा बचपन में खरीदा गया दास था.
- मुहम्मद गौरी ने गजनी से कुतुबुद्दीन ऐबक को दास के रूप में खरीदा था.
- खोखरों के दमन के पश्चात् कुतुबुद्दीन ऐबक को मलिक एवं भारतीय प्रान्तों का वली अहद (उत्तराधिकारी) नियुक्त किया था.

- 25 जून, 1206 ई. को लाहौर में कुतुबुद्दीन ऐबक का अनौपचारिक राज्यारोहण हुआ था.
- ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी कुतुबुद्दीन ऐबक का गुरु था.
- उदारता एवं दानवीरता के कारण कुतुबुद्दीन ऐबक को लाख-बख्श कहा जाता था.
- हसन निजामी एवं फरुखमुद्दीर दो प्रसिद्ध विद्वान थे, जो कुतुबुद्दीन ऐबक के दरबार में रहते थे.
- कुतुबुद्दीन ऐबक के पश्चात्त 1210 में उसके पुत्र आरामशाह को दिल्ली सल्तनत का शासक नियुक्त किया, लेकिन कुछ महीनों में ही इल्तुतमिश ने उसे मारकर सत्ता पर अपना अधिकार कर लिया.
- इल्तुतमिश (1210-1236) शम्सी वंश से सम्बन्धित था, जो कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा दास के रूप में खरीदा गया था.
- कुतुबुद्दीन ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया था, लेकिन इल्तुतमिश ने उत्तरी भारत के शासन को संभालने के लिए दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया था.
- मिन्हाज उस सिराज एवं मलिक ताजूद्दीन नामक विद्वान इल्तुतमिश के दरबार में रहते थे.
- 1231-32 में इल्तुतमिश ने कुतुबमीनार को पूरा बनवाया था. इसका आधा भाग कुतुबुद्दीन ऐबक ने बनवाया था. कुतुबमीनार दोनों के गुरु बख्तियार काकी की स्मृति में बनाया गया था.
- प्रो. ईश्वरी प्रसाद के अनुसार इल्तुतमिश गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक था.
- 'गुलाम ए चालीस या चरगान'–चालीस विश्वासपात्र गुलामों का एक दल था जिसे इल्तुतमिश ने गठित किया था.
- इक्तादारी प्रथा एवं वंशानुगत राजतन्त्र की स्थापना इल्तुतमिश ने की थी.
- रुकनुद्दीन फिरोजशाह इल्तुतमिश का छोटा पुत्र था, जो 1236 ई. में इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद दिल्ली सल्तनत का शासक बना. जिसकी संरक्षक शासिका उसकी माँ शाहतुर्कन थी. उसकी प्रकृति बेहद दुष्टतापूर्ण थी. उसी ने फिरोजशाह की हत्या करवा दी थी.
- रजिया सुल्तान इल्तुतमिश की पुत्री थी. फिरोजशाह की मृत्यु के बाद आम सभा में लाल कपड़े पहनकर रजिया सुल्तान ने आम जनता से अपनी माँ की ज्यादतियों से मुक्ति के लिए अनुरोध किया, जिसके फलस्वरूप जनता ने शाहतुर्कन को गिरफ्तार कर रजिया सुल्तान को 1236 में दिल्ली सल्तनत की शासिका बना दिया.
- रजिया सुल्तान दिल्ली की प्रथम और अन्तिम महिला सुल्तान थी.
- रजिया पुरुषों के समान कुबा (कोट) एवं कुलाह (टोप) पहनकर राजदरबार में शासन करती थी.
- अबीसीनियाई का हब्शी अधिकारी जलालुद्दीन याकूत खाँ रजिया सुल्तान का प्रेमी था.
- 13 अक्टूबर, 1240 को कैथल के निकट रजिया सुल्तान एवं उसके पति अल्तूनिया को बहराम खाँ द्वारा मार दिया गया.
- नासिरुद्दीन महमूद इल्तुतमिश का सबसे छोटा पुत्र था, जो जून, 1246 में दिल्ली सल्तनत का शासक बना. वह कुरान शरीफ लिखकर बेचता था, उससे प्राप्त आय से अपना जीवन निर्वाह करता था.
- जिल्ली-इलाही गयासुद्दीन बलबन (1266-1287) की उपाधि थी.
- बलबन के अनुसार सुल्तान पृथ्वी पर अल्लाह का प्रतिनिधि या नियाबते-खुदाई था.
- गयासुद्दीन बलबन स्वयं को अफरासियाब वंश का मानता था.
- गयासुद्दीन बलबन के दरबार में खलीफा के दो वंशजों एवं वजीर के अलावा कोई भी सुल्तान के सामने बातें करने को स्वतन्त्र नहीं था.
- अमीर खुसरो को तूतिए-हिन्द कहा जाता था, जो बलबन का समकालीन कवि था.
- तारीख-ए-फखरूद्दीन मुबारकशाही के अनुसार खिलजी तुर्क थे. खिलजी वंश का संस्थापक जलालुद्दीन फिरोज खिलजी था, जिसने खिलजी साम्राज्य के अन्तर्गत 1290 में दिल्ली की सत्ता संभाली थी.
- किलखूरी या कैलूगढ़ी जलालुद्दीन फीरोज खिलजी की राजधानी थी.
- जलालुद्दीन ने चंगेज के वंशज उलुग खाँ के साथ अपनी पुत्री का विवाह किया था.
- 20 जुलाई, 1296 ई. में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी का उसके भतीजे एवं दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने गले मिलने के बहाने छल से सिर काट डाला.
- अली गुरशास्प वधित अलाउद्दीन खिलजी का वास्तविक नाम था.

- अपने चाचा को मारकर अलाउद्दीन खिलजी ने 17 जुलाई, 1296 ई. को स्वयं को सुल्तान घोषित किया था. 12 अक्टूबर, 1296 ई. को उसका विधिवत राज्याभिषेक हुआ था.
- अलाउद्दीन खिलजी ने 56,000 घुड़सवार एवं 60,000 पैदल सैनिकों की सेना तैयार की थी.
- अलाउद्दीन खिलजी ने अमीर खुसरो की सहायता से राजस्व सम्बन्धी सिद्धान्तों का निर्धारण किया था.
- वह विश्व का सुल्तान, पृथ्वी के शासकों का सुल्तान, युग का विजेता तथा जनता का चरवाहा था. उक्त शब्द अमीर खुसरो ने अलाउद्दीन खिलजी के लिए कहे थे.
- फरिश्ता नामक इतिहासविद् के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी की सेना में 4,75,000 सुसज्जित और वर्दीधारी घुड़सवार थे.
- अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में एक सैनिक का वेतन 234 टंका प्रतिवर्ष था. प्रति अतिरिक्त घोड़े के लिए 78 टंका भत्ता भी मिलता था.
- 'सरा-ए-अदल' अलाउद्दीन द्वारा स्थापित बाजार था जिसमें बाहर का तैयार माल मिलता था. इस बाजार को सरकार आर्थिक सहायता देती थी.
- तुगलक वंश की स्थापना 1320 ई. में गाजी गयासुद्दीन तुगलक द्वारा की गई. तुगलक वंश ने दिल्ली सल्तनत पर 1320-1414 ई. (94 वर्षों) तक शासन किया.
- तुगलक वंश का संस्थापक गाजी गयासुद्दीन तुगलक करौना तुर्क वंश से सम्बन्धित था.
- 'उसने कभी कोई कार्य ऐसा नहीं किया जो बुद्धिमानी और अनुभव से भरा न हो'–यह कथन अमीर खुसरो का गयासुद्दीन तुगलक के सन्दर्भ में था.
- जूना खाँ गयासुद्दीन तुगलक का पुत्र था जिसने मुहम्मद तुगलक के नाम से दिल्ली सल्तनत पर शासन किया था. उलुग खाँ उसको प्रदान की गई उपाधि थी.
- इतिहासकारों ने मुहम्मद तुगलक को असफलताओं का बादशाह, रक्त पिपासु, पागल या अर्द्धविक्षिप्त कहा है.
- जौनपुर का निर्माण फिरोजशाह तुगलक द्वारा कराया गया था.
- शम्से सिराज अफीफ एवं जियाउद्दीन बरनी फिरोजशाह तुगलक के संरक्षित विद्वान थे.
- फिरोजशाह तुगलक ने उलेमा से प्रशंसा पाने के उद्देश्य से जगन्नाथ मंदिर की मूर्तियों को समुद्र में फेंक दिया था.
- तुगलक वंश के पश्चात्त खिज्र खाँ के संस्थापन में 1414 ई. में नये राजवंश सैय्यद राजवंश का आविर्भाव हुआ.
- खिज्र खाँ ने सुल्तान बनने पर भी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की. वह स्वयं को रैयत-ए-आला कहता था.
- मुबारकाबाद नामक नगर की स्थापना 1433 ई. में मुबारक खाँ मुबारकशाह ने की थी, जो खिज्र खाँ के बाद दिल्ली में सैय्यद वंश का शासक था.
- दिल्ली सल्तनत पर पहले अफगान राज्य लोदी वंश की स्थापना 1451 ई में बहलोल लोदी ने की थी.
- सिकन्दर लोदी का वास्तविक नाम निजाम खाँ था, जो लोदी वंश के अन्तर्गत 1489 ई. में दिल्ली सल्तनत का शासक बना था. वह स्वयं गुलरुखी के नाम से कविताएँ लिखा करता था.
- गजे-सिकन्दरी नामक माप का प्रचलन सर्वप्रथम उसी ने प्रारम्भ किया था जिसकी माप 30 गज थी.
- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. में बाबर और इब्राहीम लोदी के मध्य हुआ था जिसमें इब्राहीम लोदी मारा गया था.
- सिकन्दर लोदी के बाद 1517 ई. में इब्राहीम लोदी सुल्तान बना एवं जलाल खाँ को जौनपुर का राज्य सौंपा गया.
- सल्तनतकालीन मुस्लिम राज्य धर्मसत्तात्मक था. कुरान के शरा या आदर्श राज्य के गठन के मूलाधार थे.
- 'उलेमा' कुरान एवं इस्लामी कानून के व्याख्याकार थे. सल्तनतकालीन शासन इनके आधार पर चलाया जाता था.
- अफगान सुल्तान को अपने में ही श्रेष्ठ मानते थे, ईश्वर का प्रतिनिधि नहीं.
- सल्तनतकालीन शासन में सुल्तान राज्य का संवैधानिक एवं व्यावहारिक प्रधान होता था.
- सल्तनतकाल में सुल्तान का प्रमुख सहयोगी 'वजीर' कहलाता था. वजीर प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी होता था, सुल्तान के पश्चात्त उसे सर्वोपरि माना जाता था.
- 'इक्ता' एक भूमि का प्रकार था, जो सैनिक एवं असैनिक अधिकारियों को वेतन के बदले प्रदान की जाती थी.
- सल्तनतकालीन विद्वान इतिहासकार इब्नेबतूता के अनुसार सल्तनतकालीन किसान साल में दो या तीन फसलें काटते थे.

- अदीना मस्जिद (पाण्डुआ) बंगाल में अवस्थित है जिसका निर्माण सिकन्दर शाह ने 1368 ई. में कराया था.
- 'रेहाला' इब्नेबतूता द्वारा लिखित ग्रन्थ का नाम है, जो मुहम्मद तुगलक के आश्रय में रहकर लिखा गया था.
- मुहम्मद गौरी ने पहला आक्रमण 1175 ई. में मुलतान पर किया था, जिसमें करमाथी शासक पराजित और मुहम्मद गौरी विजयी हुआ था.
- मुहम्मद गौरी ने अन्तिम आक्रमण ग्वालियर के राजा सुलक्षण पाल पर 1196 ई. में किया था, जिसमें मुहम्मद गौरी ने विजय प्राप्त की थी.
- शेख निजामुद्दीन की दरगाह को 1315 ई. में खिज्र खाँ द्वारा दिल्ली में बनाया गया था.
- काली मस्जिद दिल्ली में अवस्थित है जिसे जौनाशाह ने 1380 ई. में बनवाया था.
- चारमीनार जिसे चाँदमीनार भी कहा जाता है अहमदशाह बहमनी द्वारा 1435-36 में दौलताबाद में बनाई गई थी.
- खिड़की मस्जिद का निर्माण 1375 ई. में फिरोज तुगलक द्वारा दिल्ली में किया गया था.

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- सल्तनतकाल में हिन्दू धर्म को गैर इस्लामी वर्ग के नाम से जाना जाता था.
- मुसलमानों का शासक वर्ग अमीर था, जो मुसलमानों की मूल शाखा में से चुना जाता था.
- उलेमा मुस्लिम कानूनों, धर्म रीति-रिवाज का संरक्षक था.
- सल्तनतकालीन प्रमुख स्थलमार्ग तक्षशिला से सोनारगाँव तक जाता था.
- गैर मुसलमानों के पास सल्तनतकाल में जो भूमि हुआ करती थी, उस पर सुल्तान 'खिराज' वसूल करता था. मुसलमान भूमिकर के रूप में उश्र दिया करते थे.
- फीरोजशाह तुगलक की 40,000 गुलाम सेवा किया करते थे.
- सल्तनतकालीन शासन में सेनापति का पद स्थायी नहीं होता था.
- सन् 1258 ई. में हलाकु ने अब्बासी खलीफा की हत्या कर दी थी.
- बलबन सुल्तान को जिल्ले अल्लाह या अल्लाह की परछाई कहता था.
- दिल्ली सल्तनत की स्थापना 1206 ई. में गुलाम वंश के संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी एवं इब्राहीम लोदी के काल में 1526 ई. को सल्तनत का पतन हुआ था.
- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को बाबर एवं इब्राहीम के मध्य हुआ था.
- पानीपत के युद्ध में बाबर ने रूमी और तुलगमा पद्धति का सहारा लिया था. उस्ताद अली और मुस्तफा दो कुशल तोपची बाबर के साथ पानीपत के मैदान में थे.
- सिकन्दर लोदी ने उलेमा को खुश करने की दृष्टि से नगरकोट के मंदिर की मूर्तियों को तोड़कर उन्हें कसाइयों को माँस तौलने के लिए दे दिया था तथा थानेश्वर के तालाब में हिन्दुओं के स्नान करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था.
- सिकन्दर लोदी ने 1506 ई. में आगरा की स्थापना की थी, जिसे दिल्ली के स्थान पर राजधानी बनाया गया था.
- सिकन्दरकालीन बारबक का सेनापति शेख मुहम्मद कुर्बान काला पहाड़ के नाम से जाना जाता था.
- अपने शासन के अन्तिम चरण में बहलोल लोदी ने 1485 ई. में अपना राज्य अपने पुत्रों और अफगानों में बाँट दिया था.
- बहलोल लोदी के पिता का नाम मलिक बहराम था, जो दीराला का प्रशासक था.
- "उसके शासन में जनता प्रसन्न और संतुष्ट थी और इस कारण युवा और वृद्ध, दास और स्वतन्त्र नागरिक सभी ने उसकी मृत्यु पर काले वस्त्र पहनकर दुःख प्रकट किया था." ये इतिहासकार फरिश्ता के शब्द थे जो खिज्र खाँ की मृत्यु के सम्बन्ध में कहे थे.
- सैय्यद राज वंश की स्थापना खिज्र खाँ ने 1414 ई. में की थी. सैय्यद वंश का दिल्ली सल्तनत पर 37 वर्षों तक शासन रहा था.
- फीरोज तुगलक के समय कुल दासों की संख्या 1,80,000 थी जिनमें 40,000 सुल्तान की सेवा कार्य में थे.
- सिंचाई की सुविधा के लिए फीरोज तुगलक ने पाँच नहरों का निर्माण कराया था.
- मुहम्मद तुगलक को अंतर्विरोधों का विस्मयकारी मिश्रण, रक्त पिपासु, अधर्मी एवं अविश्वासी कहा जाता था.
- मुहम्मद बिन तुगलक के पास एक राजकीय कृषि फार्म था, जिसके विकास पर 1341-44 ई. के मध्य लगभग 7,00,000 टंका खर्च किया गया था.

- प्लेग फैल जाने के कारण 1337-1340 ई. के मध्य मुहम्मद बिन तुगलक स्वर्गद्वारी (कन्नौज) में जाकर रहने लगा था.
- अमीर खुसरो के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी विश्व का सुल्तान, पृथ्वी के शासकों का सुल्तान, युग का विजेता तथा जनता का चरवाहा था.
- इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी को देवगिरी पर आक्रमण करने से 6000 मन सोना, 7 मन मोती, 2 मन जवाहरात, 1000 मन चाँदी, 4000 रेशमी कपड़ों के थान एवं बहुमूल्य वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं.
- "मृत सुल्तान के सिर को भाले की नोंक पर रखा गया, सेना के मध्य घुमाया गया, जिससे अलाउद्दीन का आतंक सब पर छा गया." यह कथन इतिहासकार बरनी ने जलालुद्दीन फीरोज खिलजी की अलाउद्दीन खिलजी द्वारा की गई असामयिक दर्दनाक मौत के सन्दर्भ में कहा था.
- गुलाम-ए-चालीस, चालीसा या चरगान का गठन इल्तुतमिश ने किया था.
- 1210 ई. में इल्तुतमिश जब सुल्तान बना उस समय आरम जैसे विलासी निकम्मे शासक का अधिकार था.
- बलबन के राजत्व सिद्धान्तों को इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी ने 'वसय' में संकलित किया था.
- बहाउद्दीन बलबन का प्रारम्भिक नाम था. वह स्वयं को अफरासियाब वंश से सम्बन्धित मानता था.
- फुतुहउससलातीन नामक ग्रन्थ के अनुसार बलबन ने विष दिलवाकर नासिरूद्दीन महमूद की हत्या करवा दी थी एवं स्वयं शासक बन गया था.
- वह बिना तुर्की अधिकारियों की पूर्व आज्ञा के अपनी कोई राय व्यक्त नहीं करता था. वह बिना उनकी आज्ञा के हाथ-पैर तक नहीं हिलाता था. वह बिना उनकी जानकारी के न पानी पीता था और न सोता था. यह कथन इतिहासकार इसामी ने नासिरूद्दीन महमूद (1246-66) के लिए कहा था.
- रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.) दिल्ली की प्रथम और अन्तिम महिला सुल्तान थी.
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार की एक मंजिल का निर्माण कराया था. उसका शेष भाग इल्तुतमिश ने पूरा किया था.
- प्रो. ईश्वरी प्रसाद के अनुसार इल्तुतमिश गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक था.
- इल्तुतमिश ने सिक्कों के स्थान पर अरबी ढंग के टंक चलवाए जो सोने और चाँदी के बने होते थे तथा उनका वजन 175 ग्रेन था. टंकों पर टकसाल का नाम खुदवाने की प्रथा थी.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. तुर्की आक्रमण के प्रथम नेतृत्वकर्ता थे–
   (A) मुहम्मद गौरी एवं महमूद गजनवी
   (B) औरंगजेब एवं शाहजहाँ
   (C) अकबर एवं बाबर
   (D) बाबर एवं हुमायूँ

2. तहकीक-ए-हिन्द जिसने लिखा था–
   (A) अमीर खुसरो ने (B) अलबेरूनी ने
   (C) मेगस्थनीज ने (D) जियाउद्दीन बर्नी ने

3. निम्नलिखित में से ऐसा कौनसा लेखक था, जो सल्तनतकालीन इतिहास का साक्षी भी था ?
   (A) जियाउद्दीन बर्नी (B) अलबेरूनी
   (C) अमीर खुसरो (D) अबुल फजल

4. सल्तनतकालीन दासों के बारे में जानने का सबसे श्रेष्ठ स्रोत है–
   (A) सियासत नामा (B) तुजुक-ए-जहाँगीरी
   (C) आइने-अकबरी (D) तहकीक-ए-हिन्द

5. निम्नलिखित में से फुतुह-उस-सलातीन जिसमें 999 ई. से 1350 ई. तक का इतिहास संकलित था, के लेखक थे–
   (A) जहाँगीर (B) अमीर खुसरो
   (C) अलबेरूनी (D) इसामी

6. दिल्ली सल्तनत का अन्तिम शासक कौन था ?
   (A) मुहम्मद बिन तुगलक (B) फिरोज तुगलक
   (C) कैकुबाद (D) इब्राहीम लोदी

7. मुहम्मद बिन कासिम ने पहला मुस्लिम आक्रमण सिन्ध पर किस सन् में किया था?
   (A) 712 ई. में (B) 720 ई. में
   (C) 709 ई. में (D) 708 ई. में

8. मुहम्मद गौरी को पंजाब से लौटते समय मार दिया गया–
   (A) 15 अप्रैल, 1206 ई. में
   (B) 15 मार्च, 1206 ई. में

(C) 15 जून, 1206 ई. में
(D) 15 मार्च, 1209 ई. में

9. महमूद गजनवी के पश्चात्त गजनी का शासक था–
(A) बैरम खाँ (B) अब्रू खाँ
(C) यल्दूज (D) सिकन्दर लोदी

10. भारतीय इतिहास में दिल्ली सल्तनत पर 1206-1290 ई. तक शासन करने वाले शासकों के वंश को कहा जाता था–
(A) तुगलक वंश (B) गुलाम वंश
(C) खिलजी वंश (D) अफगान वंश

11. कुतुबुद्दीन ऐबक का नाम कुरानख्वाँ भी रखा गया था, क्योंकि–
(A) वह छोटी उम्र में ही कुरान पढ़ना सीख गया था
(B) वह एक अत्याचारी शासक था
(C) वह प्रजा के हितों का ध्यान रखता था
(D) वह कुरान का अनुवाद कराता था

12. कुतुबुद्दीन ऐबक का अनौपचारिक राज्यारोहण हुआ था–
(A) 25 जून, 1206 ई. में
(B) 25 मई, 1209 ई. में
(C) 25 मई, 1207 ई. में
(D) 25 जून, 1209 ई. में

13. आरामशाह 1210 ई. में सल्तनत का शासक बना, लेकिन थोड़े समय बाद उसे मार दिया गया. उसे मारने वाला था ?
(A) महमूद गजनवी (B) मुहम्मद गौरी
(C) इल्तुतमिश (D) रजिया सुल्तान

14. इल्तुतमिश का सम्बन्ध जिस वंश से था–
(A) अफगान वंश (B) कुजुक वंश
(C) मुमुलक वंश (D) शम्सी वंश

15. इल्तुतमिश ने उत्तरी भारत की राजधानी बनाई थी ?
(A) लाहौर (B) पंजाब
(C) वैशाली (D) दिल्ली

16. कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपनी राजधानी बनाई थी–
(A) आगरा (B) फतेहपुर सीकरी
(C) सिकन्दरा (D) लाहौर

17. इल्तुतमिश के दरबारी विद्वान थे–
(A) मिन्हाज-उस-सिराज एवं मलिक ताजूद्दीन
(B) जियाउद्दीन बर्नी व मलिक मोहम्मद जायसी
(C) अमीर खुसरो एवं अबुल फजल
(D) इसामी एवं शरफुद्दीन अली यजदी

18. कुतुबमीनार का पूरा निर्माण कार्य हुआ था–
(A) 1231-1232 ई. में
(B) 1239-1235 ई. में
(C) 1206-1210 ई. में
(D) 1210-1231 ई. में

19. कुतुबुद्दीन ऐबक का बख्तियार काकी से सम्बन्ध था–
(A) बाप-बेटा (B) भाई-भाई
(C) गुरु-शिष्य (D) चाचा-भतीजा

20. चरगान सल्तनतकाल में था–
(A) पशुओं के लिए बनाया हुआ चरागाह
(B) चालीस दासों का एक दल
(C) विद्वानों की एक सभा
(D) कृषकों का एक दल

21. रुकनुद्दीन फिरोजशाह की संरक्षक शासिका थी–
(A) रजिया सुल्तान (B) मेहरुन्निसा
(C) नूरजहाँ (D) शाहतुर्कन

22. दिल्ली की प्रथम और अन्तिम महिला सुल्तान थी–
(A) रजिया सुल्तान (B) नूरजहाँ
(C) गुलबदन बेगम (D) मेहरुन्निसा

23. जून, 1246 ई. में नियुक्त दिल्ली सल्तनत का शासक जो कुरान शरीफ बेचकर अपनी आजीविका कमाता था–
(A) रुकनुद्दीन फिरोजशाह
(B) इल्तुतमिश
(C) नासिरुद्दीन महमूद
(D) महमूदशाह

24. गयासुद्दीन बलबन की उपाधि थी–
(A) दीन-ए-इलाही (B) जिल्ली इलाही
(C) शेरे अफगान (D) शेरे दिल्ली

25. किस शासक का मानना था कि सुल्तान पृथ्वी पर अल्लाह का प्रतिनिधि होता है–
(A) गयासुद्दीन तुगलक का
(B) फिरोज तुगलक का
(C) गयासुद्दीन बलबन का
(D) कुतुबुद्दीन ऐबक

26. 'तूतिए-हिन्द' जिसे कहा जाता था–
    (A) अमीर खुसरो को
    (B) शम्से-सिराज अफीफ को
    (C) जायसी को
    (D) बीरबल को
27. जलालुद्दीन फिरोज खिलजी की राजधानी थी–
    (A) दिल्ली (B) अजमेर
    (C) लाहौर (D) किलखूरी (कैलूगढ़ी)
28. अलाउद्दीन खिलजी का वास्तविक नाम था–
    (A) अली गुरशास्प वधित
    (B) अली मुहम्मद शाह
    (C) अली मुहम्मद खान वधित
    (D) वधित खाँ
29. अलाउद्दीन खिलजी का विधिवत राज्याभिषेक हुआ था–
    (A) 12 अक्टूबर, 1297 ई. को
    (B) 12 अक्टूबर, 1296 ई. को
    (C) 12 अक्टूबर, 1295 ई. को
    (D) 12 अक्टूबर, 1294 ई. को
30. अलाउद्दीन खिलजी की सेना में 475000 सुसज्जित एवं वर्दीधारी घुड़सवार थे. यह किस इतिहासकार का मत है?
    (A) हेमचन्द्र राय चौधरी का
    (B) मिन्हाज-उस-सिराज का
    (C) फरिश्ता का
    (D) शम्से सिराज अफीफ का
31. अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में एक सैनिक का वेतन प्रतिवर्ष था ?
    (A) 234 टंका (B) 220 टंका
    (C) 219 टंका (D) 210 टंका
32. तुगलक वंश का संस्थापक था–
    (A) फिरोज तुगलक
    (B) मुहम्मद तुगलक
    (C) गाजी गयासुद्दीन तुगलक
    (D) उपर्युक्त सभी
33. तुगलक वंश के शासकों ने दिल्ली सल्तनत पर शासन किया–
    (A) 20 वर्षों तक (B) 24 वर्षों तक
    (C) 25 वर्षों तक (D) 94 वर्षों तक
34. गाजी गयासुद्दीन तुगलक का सम्बन्ध किस वंश से था–
    (A) करौना तुर्क वंश से (B) अफगान वंश से
    (C) शर्की वंश से (D) तुर्की वंश से
35. बलबन स्वयं को जिस वंश से सम्बद्ध मानता था?
    (A) अफगान वंश
    (B) अफरासियाब वंश
    (C) तुर्की वंश
    (D) करौना तुर्क वंश
36. कौनसा शासक स्वयं को रैयत-ए-आला कहता था?
    (A) मुहम्मद बिन तुगलक (B) खिज्र खाँ
    (C) अकबर (D) अलाउद्दीन खिलजी
37. कौनसा बादशाह रक्त पिपासु एवं अर्द्ध विक्षिप्त कहा गया था ?
    (A) फिरोज तुगलक (B) महमूद गजनवी
    (C) मुहम्मद गौरी (D) मुहम्मद तुगलक
38. लोदी राज्य था–
    (A) पहला अफगान राज्य
    (B) पहला तुर्की राज्य
    (C) पहला ममुलक राज्य
    (D) उपर्युक्त सभी
39. कौनसा शासक गुलरुखी के नाम से कविताएँ लिखता था ?
    (A) इब्राहीम लोदी (B) सिकन्दर लोदी
    (C) फिरोज तुगलक (D) जूना खाँ
40. पानीपत का प्रथम युद्ध किस तिथि को लड़ा गया था?
    (A) 21 मई (B) 21 जून
    (C) 21 अप्रैल (D) 19 मार्च

उत्तरमाला

1. (A)	2. (B)	3. (C)	4. (A)	5. (D)
6. (D)	7. (A)	8. (B)	9. (C)	10. (B)
11. (A)	12. (A)	13. (C)	14. (D)	15. (D)
16. (D)	17. (A)	18. (A)	19. (C)	20. (B)
21. (D)	22. (A)	23. (C)	24. (B)	25. (C)
26. (A)	27. (D)	28. (A)	29. (B)	30. (C)
31. (A)	32. (C)	33. (D)	34. (A)	35. (B)
36. (B)	37. (D)	38. (A)	39. (B)	40. (C)

विगत वर्षों में आई.ए.एस. (प्री.) में पूछे गये प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किस एक विभाग की स्थापना अलाउद्दीन खिलजी द्वारा राज्य की राजस्व कार्यप्रणाली को सुधारने के लिए की गई थी ?
   (A) दीवान-ए-मुस्तखराज (B) दीवान-ए कोही
   (C) दीवान-ए अ़र्ज (D) दीवान-ए इंशा
2. भारत में मध्यकाल में देहलीवाल का क्या अर्थ होता था ?
   (A) दिल्ली में व्यवसाय करने वाला एक जैन समुदाय
   (B) दिल्ली की उत्पत्ति वाला एक शाकाहारी व्यंजन (Vegetarian cuisine)
   (C) तुर्क विजय के समय दिल्ली में प्रचलित मुद्रा
   (D) दिल्ली नगर की रक्षा के लिए नियुक्त अ़फगान योद्धा
3. किसके शासनकाल में दिल्ली सल्तनत के अमीर वर्ग के लिए 'खान' की पदवी प्रारम्भ की गई ?
   (A) अलाउद्दीन खिलजी (B) बलबन
   (C) गियासुद्दीन तुगलक (D) इल्तुतमिश
4. दिल्ली सल्तनत के सन्दर्भ में निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए–
   1. ज़फर खान की गुजरात के गवर्नर के रूप में नियुक्ति
   2. तिमूर द्वारा दिल्ली की लूट
   3. हाजी मौला का विद्रोह
   4. अहमदाबाद की स्थापना

   उपर्युक्त घटनाओं का सही कालानुक्रम (Chronological order) क्या है ?

(A)	1	3	2	4
(B)	4	1	4	2
(C)	3	1	2	4
(D)	1	3	4	2
5. दिल्ली सल्तनत में शुहना नामक अधिकारी का कार्य क्या था ?
   (A) राज्य के खर्च की निगरानी
   (B) सेना के भुगतान अधिकारी का कार्य
   (C) सुल्तान के पारिवारिक रखरखाव की जिम्मेदारी
   (D) पुलिस विभाग का पर्यवेक्षण
6. निम्नलिखित में से कौनसे एक कथन को फीरो़ज तुगलक से सम्बद्ध नहीं किया जा सकता ?
   (A) उसने धार्मिक व्यक्तियों को दी जाने वाली करमुक्त भूमि (इनाम, इदरार) को पुनःस्थापित किया
   (B) उसने शरा द्वारा अस्वीकृत सभी करों को समाप्त कर दिया
   (C) उसने शिक्षकों को दिया जाने वाली अनुदान तथा विद्यार्थियों को दी जाने वाल छात्रवृत्ति बढ़ा दी
   (D) उसने खुतों, मुकद्दमों और चौधरियों को चराई कर तथा गृह कर देने के लिए बाध्य किया
7. इल्तुतमिश के शासनकाल में निम्नलिखित में से कौनसा एक चाँदी का सिक्का प्रयोग में था ?
   (A) रुपैया (B) जीतल
   (C) मोहर (D) टंका
8. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने जैन संत जम्बूजी को भू-अनुदान प्रदान किया था ?
   (A) मुहम्मद-बिन-तुगलक (B) फीरोज शाह तुगलक
   (C) सिकन्दर लोदी (D) इब्राहीम लोदी
9. निम्नलिखित में से किसने तुर्की अमीर एतगीन को नियुक्त करने के लिए **नायब** का पद बनाया ?
   (A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) इल्तुतमिश
   (C) ऱजिया (D) बहराम
10. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
    1. उत्तर-पश्चिमी भारत में जारी किए गए गजनवी सिक्कों पर अरबी व शारदा लिपि में लिखे गए द्विभाषीय लेख (Bilingual legends) हैं.
    2. साहित्यकार (Litterateurs) एवं वृत्तांतकार (Chroniclers) बरनी तथा इसामी समकालीन थे.
    3. महमूद ग़जनी के सोमनाथ आक्रमण के समय जयसिंह सिद्धराज इस क्षेत्र का चालुक्य शासक था.

    उपर्युक्त कथनों में से कौनसा/से सही है/हैं ?
    (A) केवल 1 (B) केवल 1 तथा 2
    (C) केवल 2 तथा 3 (D) 1, 2 तथा 3
11. दिल्ली सल्तनत में **इक्ता** पद्धति के सम्बन्ध में कौनसा एक कथन सही नहीं है ?
    (A) **इक्ता** क्षेत्रों का एक आवंटन था
    (B) नि़जाम-उल-मुल्क ने **मुक्तीयों** के कर वसूली तथा उसमें से भागीदारी लेने के अधिकार पर बल दिया
    (C) इल्तुतमिश तथा उत्तरवर्ती सभी सुल्तानों ने **मुक्तीयों** के एक **इक्ता** से दूसरे **इक्ता** में स्थानांतरण की प्रथा को लागू नहीं किया
    (D) बलबन ने आदेश दिया कि अधिशेष की राशि **इक्ता** से सुल्तान के कोषागार में भेजी जाये

12. मुहम्मद गौरी के स्वर्ण सिक्कों पर प्रायः निम्नांकित का अंकन है–
    (A) पुरोभाग पर देवी लक्ष्मी और पृष्ठभाग पर नागरी अक्षरों में उसका नाम
    (B) एक ओर कलिम और दूसरी ओर अरबी अक्षरों में उसका नाम
    (C) पुरोभाग पर उसका नाम और पृष्ठभाग पर टकसाल का नाम एवं टंकण वर्ष
    (D) पुरोभाग पर राशियों के चिह्न एवं पृष्ठभाग पर फारसी अक्षरों में उसका नाम

13. दिल्ली सुल्तानों के अन्तर्गत 'इक्ता' एक क्षेत्रीय आवंटन था और इसको धारण करने वाला मुक्ती कहलाता था, जो–
    (A) देय भूमि कर के अतिरिक्त किसान पर और कोई दावा नहीं रखता था
    (B) इक्ता भूमि का मालिक था
    (C) कृपक से बेगार लेने का अधिकारी था
    (D) किसानों के शरीर एवं सम्पत्ति पर दावा रखता था

14. भारत से दासों के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाया था–
    (A) मुहम्मद तुगलक ने (B) फिरोज तुगलक ने
    (C) अलाउद्दीन खिलजी ने (D) सिकन्दर लोदी ने

15. 13वीं और 14वीं शताब्दी में भारतीय किसान निम्नांकित की खेती नहीं करते थे–
    (A) गेहूँ (B) जौ
    (C) चना (D) मक्का

16. निम्नलिखित सुल्तानों में से किसने कृषि के विकास के लिए निर्धन किसानों को तकावी बाँटी, जिसे सोन्धर कहते थे ?
    (A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
    (C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

17. ग्रामीण बिचौलियों को गयासुद्दीन तुगलक द्वारा दी गई रियायत के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही है ?
    (A) उसने उन्हें किसानों पर कर लगाने की अनुमति प्रदान की थी.
    (B) उसने उन्हें भू-राजस्व आवंटन प्रदान किये थे.
    (C) उसने उन्हें दिल्ली सल्तनत की सेना में भर्ती किया था.
    (D) उसने उनकी भूमि को करमुक्त कर दिया था.

18. कहा जाता है कि कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुब मस्जिद एवं कुतुबमीनार के अतिरिक्त निम्नांकित का निर्माण किया–
    (A) अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा
    (B) जहाँपनाह में खिड़की मस्जिद
    (C) खाने जहाँ तिलंगानी का मकबरा
    (D) दिल्ली में किला-ए-कुहना मस्जिद

19. निम्नलिखित सुल्तानों में से किसने दिल्ली सल्तनत की शाही संरचना के तीन सबसे प्रमुख अंगों–इक्ता, सेना और मुद्रा प्रणाली को सुव्यवस्थित किया था?
    (A) कुतुबुद्दीन ऐबक ने (B) शमसुद्दीन इल्तुतमिश ने
    (C) गयासुद्दीन बलबन ने (D) अलाउद्दीन खिलजी ने

20. निम्नलिखित में से कौनसे सल्तनतकाल के दो मूल सिक्के थे ?
    (1) टंका (2) दाम
    (3) जीतल (4) रुपया
    नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए–
    (A) 1 एवं 3 (B) 1 एवं 4
    (C) 2 एवं 3 (D) 2 एवं 4

21. निम्नलिखित में से किनसे दिल्ली सल्तनत को राजस्व प्राप्त होता था ?
    (1) खराज (2) खम्स
    (3) जजिया (4) जकात
    (5) तरकात (6) उश्र
    नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए–
    (A) 1, 2, 3 एवं 4 (B) 2, 3, 4 एवं 6
    (C) 3, 4, 5 एवं 6 (D) उपर्युक्त सभी

22. भू-राजस्व की दर किसके राज्यकाल में सर्वाधिक थी ?
    (A) गयासुद्दीन बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
    (C) गयासुद्दीन तुगलक (D) मुहम्मद बिन तुगलक

23. निम्नलिखित युग्मों में से कौन एक सुमेलित नहीं है ?
    (A) जौनपुर : अटला मस्जिद
    (B) मालवा : जहाज महल
    (C) अजमेर : कुव्वत-अल-इस्लाम
    (D) गुलबर्गा : जामा मस्जिद

24. दिल्ली सल्तनत में एक चाँदी का टंका कितने के बराबर था ?
    (A) 52 जीतल (B) 48 जीतल
    (C) 45 जीतल (D) 38 जीतल

25. "मैं लोगों को ऐसे हुक्म देता हूँ, जो उनके और राज्य के लिए लाभकारी समझता हूँ. मैं नहीं जानता कि वे शरियत द्वारा अनुमत है अथवा नहीं." यह किसने कहा था ?
    (A) जलालुद्दीन खिलजी ने (B) अलाउद्दीन खिलजी ने
    (C) गयासुद्दीन तुगलक ने (D) मुहम्मद तुगलक ने

26. दिल्ली सल्तनत के समय पानी खींचने के अन्य साधनों से सक्रिया (रहट) की भिन्नता का प्रमुख लक्षण निम्नांकित का प्रयोग था–
    (A) लीवर का सिद्धान्त (B) घिरनियाँ
    (C) गियर यन्त्र (D) मशक

27. तेरहवीं शताब्दी में फवजिल शब्द का अभिप्राय था–
    (A) राज्य को प्रेषित अधिशेष राजस्व
    (B) एक परगना का मुखिया
    (C) एक सैनिक ओहदा
    (D) राज्य की भूमि
28. सुल्तान फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल में हुसमुद्दीन जुनैदी द्वारा आंकलित दिल्ली सल्तनत का कुल जमा क्या था?
    (A) चार करोड़ पचास लाख
    (B) पाँच करोड़ तीस लाख
    (C) छः करोड़ पचहत्तर लाख
    (D) सात करोड़ चालीस लाख
29. अपने राज्यारोहण के ठीक पूर्व मुक्ती के रूप में सुल्तान इल्तुतमिश के पास निम्नलिखित में से कौनसा इक्ता था ?
    (A) कालपी (B) लखनौती
    (C) कालिंजर (D) बदायूँ
30. अमीर खुसरो के खजायन-उल-फुतुह में किसके सैनिक अभियानों का विवरण है ?
    (A) दक्षिण भारत में मलिक काफूर
    (B) मेवात प्रदेश में सुल्तान बलबन
    (C) गुजरात में मुहम्मद तुगलक
    (D) उड़ीसा में फिरोज तुगलक
31. कहाँ के शासकों ने सुल्तान-उल-शर्क की उपाधि धारण की थी ?
    (A) असम (B) बंगाल
    (C) जौनपुर (D) उड़ीसा
32. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने हक्क-ए-शर्ब' नामक ग्रामीण कर चलाया था?
    (A) इल्तुतमिश ने (B) अलाउद्दीन खिलजी ने
    (C) गयासुद्दीन तुगलक ने (D) फिरोज तुगलक ने
33. सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद की सेवा में रहने वाला अमीर, जिसने बलबन की साजिशों से सर्वोच्च पद खो दिया, वह कौन था ?
    (A) अमीर याकूत (B) इयादुद्दीन रैहान
    (C) तुगरिल बेग (D) जफर खाँ
34. दिल्ली सल्तनत में सीधे राजकीय सेवा में रहने वाली सेना क्या कहलाती थी ?
    (A) लश्कर (B) हश्म-ए-क्लब
    (C) सिपाही (D) मुक्ती
35. इत्लाक, एक प्रकार की हुण्डी जिसकी सहायता से राजकीय सिपाही राज्य राजस्व अधिकारियों से अपना वेतन प्राप्त करने में समर्थ था, की प्रथा किसने चलाई थी ?
    (A) इल्तुतमिश ने (B) बलबन ने
    (C) अलाउद्दीन खिलजी ने (D) फिरोजशाह तुगलक
36. दिल्ली सल्तनत में किस्मत-ए-खोते क्या था ?
    (A) गाँव के मुखिया को राज्य की ओर से किया गया नकद भुगतान
    (B) खोत को आवंटित गाँव
    (C) गाँव के मुखिया द्वारा किसानों से एकत्रित किया गया एक छोटा उपकर
    (D) खोतों एवं मुकदमों द्वारा जोती गई भूमि पर निर्धारित राजस्व
37. "राजकीय मुकुट का प्रत्येक मोती गरीब किसान की अश्रुपूरित आँखों से गिरी हुई रक्त की घनीभूत बूँद है." दिल्ली सल्तनत काल में भारतीय किसानों की गरीबी पर यह टिप्पणी किसने की थी?
    (A) बरनी (B) इब्नेबतूता
    (C) मिनहाज-उस-सिराज (D) अमीर खुसरो
38. शशगनी सिक्का किसके राज्यकाल में प्रचलित हुआ था?
    (A) अलाउद्दीन खिलजी (B) बलबन
    (C) फिरोजशाह तुगलक (D) सिकन्दर लोदी
39. निम्नलिखित में से कौनसा एक सुल्तान अशोक स्तम्भ को दिल्ली लाया था ?
    (A) गयासुद्दीन तुगलक (B) फिरोज तुगलक
    (C) अलाउद्दीन खिलजी (D) मुहम्मद तुगलक
40. जिस दिल्ली सुल्तान ने एक कृषि विकास के मंत्रालय की स्थापना की थी, वह था–
    (A) बलबन (B) मुहम्मद तुगलक
    (C) अलाउद्दीन खिलजी (D) फिरोज तुगलक
41. बलबन द्वारा शासक पद की शक्ति और प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करने के लिए निम्नलिखित में से कौनसे उपाय किये गये थे?
    (1) उसने अपने पौराणिक नायक अफरासियाब का वंशज होने का दावा किया था.
    (2) उसने ईरानी दरबार के शिष्टाचार के तरीकों का अनुकरण अपने दरबार में किया था.
    (3) उसने हरम में अत्यन्त कठोर औपचारिकताएँ लागू कीं.
    (4) उसने अपने साम्राज्य के प्रान्तों की सीमाएँ निर्धारित की थीं.

    कूट :
    (A) 2 और 3 (B) 1 और 2
    (C) 3 और 4 (D) 2 और 4
42. दिल्ली सल्तनत में भू-राजस्व के लिए सर्वोच्च ग्रामीण सत्ता थी–
    (A) चौधरी (B) रावत
    (C) राणा (D) मालिक

43. भूमि की माप के आधार पर भू-राजस्व का निर्धारण और प्रति विस्वा उपज का आकलन सबसे पहले किया गया–
(A) अलाउद्दीन खिलजी के अधीन
(B) मुहम्मद तुगलक के अधीन
(C) फिरोजशाह तुगलक के अधीन
(D) सिकन्दर लोदी के अधीन

44. अमीर खुसरो ने नुहसिफिर की रचना की–
(A) अलाउद्दीन खिलजी की प्रशंसा में
(B) भारत की प्रशंसा में
(C) ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की प्रशंसा में
(D) इस्लाम के पैगम्बर की प्रशंसा में

45. "आगरा और फतेहपुर सीकरी दोनों ही लन्दन से बड़े हैं" यह विवरण है–
(A) बर्नियर का (B) राल्फ पिच का
(C) हॉकिन्स का (D) मनूची का

46. मनूची कहता है कि जजिया फिर से लादे जाने का सरदारों के एक समूह ने जबरदस्त विरोध किया था, जिसका नेतृत्व किया था–
(A) जसवंत सिंह ने (B) जहाँआरा ने
(C) राणा राजसिंह ने (D) शाइस्ता खाँ ने

47. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) मालवा की विजय	(1) 1562
(b) सूबों का निर्माण	(2) 1574-75
(c) कश्मीर का समामेलन	(3) 1580
(d) समाचार देने वाले विभाग की स्थापना	(4) 1586

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	1	2	4
(B)	1	3	2	4
(C)	1	3	2	4
(D)	1	3	4	2

48. "नगर इतनी पूरी तरह उजड़ गया कि नगर की इमारतों, महल और आसपास के इलाकों में एक बिल्ली या कुत्ता तक नहीं बचा."सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा राजधानी के स्थानान्तरण के बारे में उपर्युक्त वक्तव्य है–
(A) अमीर खुसरो का (B) इसामी का
(C) इब्नेबतूता का (D) जियाउद्दीन बरनी का

49. दिल्ली सल्तनत में क्षेत्रीय राजस्व समनुदेशक को कहते थे–
(A) तुमुल (B) मिल्क
(C) इक्ता (D) जागीर

50. सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने मालगुजारी का हक पेश किया था–
(A) उपज के एक-चौथाई भाग पर
(B) उपज के दो-तिहाई भाग पर
(C) उपज के आधे भाग पर
(D) उपज के दो-पाँचवें भाग पर

51. निम्नलिखित में से कौनसा एक, मुहम्मद तुगलक के खिलाफ दोआब में हुई बड़ी बगावत का कारण था ?
(A) दिल्ली से राजधानी का स्थानान्तरण
(B) प्रतीक मुद्रा का जारी किया जाना
(C) ग्रामीण इलाकों में कर वृद्धि
(D) ग्रामवासियों का गुलाम बनाया जाना

52. तारीख-ए-मुबारकशाही का लेखक याहिया सरहिन्दी निम्नलिखित में से किसके शासनकाल में था ?
(A) लोदी (B) सैयद
(C) तुगलक (D) खिलजी

53. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) चाँदी का टंका	(1) अलाउद्दीन खिलजी
(b) दीवान-ए-कोही	(2) फिरोज तुगलक
(c) दार-उल-शफा	(3) इल्तुतमिश
(d) शहान-ए-मण्डी	(4) मुहम्मद तुगलक

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	4	1	2
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	1	2

54. जब उसने राजसत्ता पाई तब वह शरीयत के नियमों एवं आदेशों से काफी स्वतंत्र था यह कहा गया था–
(A) इल्तुतमिश के बारे में
(B) अलाउद्दीन खिलजी के बारे में
(C) मुबारक खिलजी के बारे में
(D) मुहम्मद तुगलक के बारे में

55. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) मिन्हाज-उस-सिराज	(1) तारीख-ए-फिरोजशाही
(b) अमीर खुसरो	(2) ताजुल मासिर
(c) हसन निजामी	(3) खजायन-उल-फुतुह
(d) शम्स-ए-सिराज अफीफ	(4) तबकात-ए-नासिरी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	4	2	1
(B)	3	4	1	2
(C)	4	3	1	2
(D)	4	3	2	1

56. गयासुद्दीन तुगलक के मकबरे की विशेषता है–
(A) कंदाकार गुम्बद (B) ढलवाँ दीवारें
(C) संगमरमर का अभाव (D) ऊँची मीनारें

57. प्रारम्भिक देहली सल्तनत में सैन्य दस्तों के संगठन को देखने वाले मंत्री को कहते थे–
(A) क्षडुस सद्र (B) खात-ए-अर्ज
(C) नायब-ए-मामलिकात (D) अमीर-ए-कोही

58. निम्नलिखित में से कौनसा एक इतिहासकार अलाउद्दीन खिलजी के मूल्य नियन्त्रण उपायों के विषय में सूचना नहीं देता ?
(A) जियाउद्दीन बर्नी (B) इब्नेबतूता
(C) मिनहाज-उस-सिराज (D) अमीर खुसरो

59. वह मुसलमान विजेता जिसने हिन्दू देवी की आकृति वाले सिक्कों को चलाए रखा था–
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) बाबर
(C) मुहम्मद गौरी (D) महमूद गजनवी

60. अलाउद्दीन खिलजी ने भू-राजस्व की उगाई की–
(A) फसल की बँटाई के आधार पर
(B) मनमाने निर्धारण के आधार पर
(C) माप के आधार पर
(D) खिराज की निश्चित रकम के आधार पर

61. निम्नलिखित सूफियों में से किसने 'वहदत-उल-शहूद' मत का समर्थन किया?
(A) हजरत निजामुद्दीन औलिया
(B) शेख अहमद सरहिन्दी
(C) शेख सलीम चिश्ती
(D) मौलाना अब्दुल हई

62. स्थापत्यकला में गुम्बद (Dome) को आधार प्रदान करने के लिए सबसे पहले भित्ति महराब प्रणाली का प्रयोग किया गया–
(A) इल्तुतमिश के मकबरे में
(B) अलाई दरवाजा में
(C) गयासुद्दीन तुगलक के मकबरे में
(D) हुमायूँ के मकबरे में

63. सूची–I (लेखक) को सूची–II (साहित्यिक) से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करके सही उत्तर चुनिए–

सूची–I
(a) अब्बास खान सरवानी
(b) गुलबदन बेगम
(c) बदायूँनी (मुल्ला अब्दुल कादिर)
(d) ईश्वरदास नागर

सूची–II
1. 'फुतुहात-ए-आलमगिरि' 2. 'तारीख-ए-शेर शाही'
3. 'मुन्तखब-उत-तवारीख' 4. 'हुमायूँनामा'

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	4	1	3
(B)	2	4	3	1
(C)	4	2	3	1
(D)	4	2	1	3

64. निम्नलिखित में से यह किसका कथन है?
"हिन्दुओं का यह विश्वास है कि उनके देश जैसा कोई देश नहीं है, उनके राष्ट्र जैसा कोई राष्ट्र नहीं है, उनके राजाओं के समान कोई राजा नहीं है, उनके विज्ञान के समान कोई विज्ञान नहीं है."
(A) अमीर खुसरो (B) अल्बेरूनी
(C) जियाउद्दीन वर्नी (D) हसन निजामी

65. आगरा शहर की स्थापना की थी–
(A) सिकन्दर लोदी ने (B) खिज्र खान ने
(C) बहलोल लोदी ने (D) फिरोज तुगलक ने

66. निम्नलिखित में से कौनसा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(A) मार्को पोलो : पांड्यन राज्य
(B) निकितिन : बहमनी राज्य
(C) निकोलो कोंटी : राष्ट्रकूट राज्य
(D) बारबोसा : विजयनगर राज्य

67. निम्नलिखित में से किस दिल्ली सुल्तान ने सस्यावर्तन की पद्धति (Rotation of crops) का अनुमोदन किया?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज शाह तुगलक

68. **कथन** (A) : पेस के अनुसार विजयनगर समाज में देवदासियाँ सम्मानजनक स्थिति में थीं.
कारण (R) : दक्षिण भारत में विजयनगर शासकों के अन्तर्गत देवदासी व्यवस्था अस्तित्व में आई.
कूट :
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है

(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है
(C) A सही है, परन्तु R गलत है
(D) A गलत है, परन्तु R सही है

69. **कथन** (A) : मुहम्मद तुगलक ने कई विदेशियों, हिन्दुओं तथा मंगोलों को सम्मान तथा उच्च पद प्रदान किए.
कारण (R) : वह सामन्त वर्ग को दुर्बल बनाना चाहता था.
कूट :
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है
(C) A सही है, परन्तु R गलत है
(D) A गलत है, परन्तु R सही है

70. **कथन** (A) : मध्यकाल में वारंगल गलीचा उद्योग का केन्द्र था.
कारण (R) : फारसी बुनकर वारंगल में गलीचों की बुनाई में कार्यरत् थे.
कूट :
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है
(C) A सही है, परन्तु R गलत है
(D) A गलत है, परन्तु R सही है

71. सीरी नामक नगर की स्थापना की थी–
(A) कैकुबाद ने
(B) जलालुद्दीन खलजी ने
(C) अलाउद्दीन खलजी ने
(D) गियासुद्दीन तुगलक ने

72. निम्नलिखित में से कौनसा एक युग्म सही सुमेलित है ?
(A) चिश्ती : शेख हमीदुद्दीन नागौरी
(B) नक्शबंदी : शेख अब्दुल कादिर जीलानी
(C) सुहरावर्दी : कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
(D) कादिरी : ख्वाजा बाकी बिल्लाह

73. निम्नलिखित स्थानों पर विचार कीजिए–
1. मालवा　　2. चित्तौड़
3. रणथम्भौर　　4. गुजरात
अलाउद्दीन खलजी द्वारा इनकी विजय का सही कालानुक्रम है–
(A) 2, 3, 4, 1　　(B) 4, 1, 2, 3
(C) 2, 1, 4, 3　　(D) 4, 3, 2, 1

74. मंगोल आक्रमणकारी कुतलुग ख्वाजा ने भारत पर किसके शासनकाल में आक्रमण किया ?
(A) बलबन　　(B) जलालुद्दीन खिलजी
(C) अलाउद्दीन खिलजी　　(D) गियासुद्दीन तुगलक

75. निम्नलिखित में से कौनसा अधिकारी अलाउद्दीन खिलजी के बाजार नियंत्रण तंत्र का भाग नहीं था ?
(A) दीवान-ए-रियासत　　(B) शहना
(C) बारीद　　(D) दीवान-ए-मुस्तखराज

76. निम्नलिखित में से किस सुल्तान द्वारा जिलिल्लाह (धरती पर ईश्वर की प्रतिच्छाया) की उपाधि ग्रहण की गई थी ?
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक　　(B) इल्तुतमिश
(C) बलबन　　(D) फिरोजशाह तुगलक

77. सूफीवाद के दस अवस्थानों का वृत्तांत देने वाला दस मुकामी रेख्ता इन्होंने रचा था–
(A) मंसूर अल-हल्लाज　　(B) कबीर
(C) गुरुनानक　　(D) मियाँ मीर

78. सूची-I (भक्तिकालीन सन्त) को सूची-II (प्रतिपादित सिद्धान्त) से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची–I (भक्तिकालीन संत)	**सूची–II (प्रतिपादित सिद्धान्त)**
(a) शंकराचार्य	1. शुद्ध-अद्वैत
(b) रामानुजाचार्य	2. द्वैत-अद्वैत
(c) वल्लभाचार्य	3. अद्वैतवाद
(d) निम्बार्काचार्य	4. विशिष्ट अद्वैत

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	4	1	3
(B)	3	1	4	2
(C)	2	1	4	3
(D)	3	4	1	2

79. अलाउद्दीन खिलजी ने अपने शासनारम्भ के कुछ वर्षों उपरान्त सार्वजनिक असन्तोष तथा विद्रोह के कारणों पर विचार किया तथा इनके चार कारणों की पहचान की. निम्न में से कौनसे कारण पर उसका ध्यान नहीं गया?
(A) राजा का अपनी प्रजा की अवस्था के प्रति उपेक्षा तथा अनभिज्ञता का रवैया था
(B) अमीरों की मदिरापान की गोष्ठियाँ षड्यन्त्रों की प्रसव भूमि थीं
(C) अत्यधिक सम्पत्ति ने दुरःशक्ति तथा कुविचारों के लिए पर्याप्त समय, दोनों प्रदान किए
(D) नौकरशाही द्वारा आरोपित दमन ने प्रजा को राजा के विरुद्ध विद्रोह के लिए मजबूर किया

80. गयासुद्दीन तुगलक द्वारा निम्नलिखित में से कौनसा कृषि उपाय अपनाया नहीं गया था?
    (A) बँटाई के पक्ष में नाप-जोख की पद्धति का निष्कासन
    (B) गाँवों के प्रधानों तथा मुखियाओं को उनके अनुलाभों की वापसी
    (C) सरकार द्वारा माँग का आधार हुक्म-ए-हासिल (पैदावार के अनुरूप) होना जिसमें फसल के नुकसान को समाविष्ट करने के समुचित प्रावधान हों
    (D) अलाउद्दीन द्वारा निर्धारित की गई भू-राजस्व की दरों में भारी कटौती तथा इसको कुल पैदावार के छठवें भाग तक ले आना
81. निम्न में से सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी से सम्बन्धित कौनसा कथन सही नहीं है?
    (A) अलाउद्दीन ने प्रभुसत्ता के लिए अपने दावे सशक्त करने के लिए खलीफा के नाम की स्वीकृति को आवश्यक नहीं समझा
    (B) अलाउद्दीन द्वारा स्वयं को खलीफा का प्रतिनिधि घोषित करने के पीछे उद्देश्य वस्तुतः खलीफा को सम्मान देना नहीं था, अपितु सैद्धान्तिक रूप से खिलाफत की परम्परा को जीवित रखना था
    (C) अलाउद्दीन द्वारा यामीन-उल-खलीफा, नासिर-ए-अमीर-उल मोमिनीन की पदवी ग्रहण स्वयं को खलीफा से श्रेष्ठतर दर्शाने हेतु था
    (D) अलाउद्दीन दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जिसने चर्च को राज्य के अन्तर्गत लाने का साहस किया

निर्देश–आगामी प्रश्न में दो वक्तव्य हैं, एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) कहा गया है. इन दोनों वक्तव्यों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कर इन प्रश्नांशों का उत्तर नीचे दिए हुए कूट की सहायता से चुनिए–

कूट :
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है.
(C) A सही है, परन्तु R गलत है.
(D) A गलत है, परन्तु R सही है.

82. **कथन (A)** : अलाउद्दीन खिलजी ने भू-राजस्व की माँग को कुल उत्पाद के आधे भाग तक बढ़ा दिया.
    कारण (R) : बाजार मूल्यों को एक नीचे के स्तर तक सीमित रखने के लिए अनाज की बड़ी मात्रा में आवक आवश्यक थी.
83. विन्ध्याचल पर्वतमाला को पार करने वाला प्रथम तुर्क विजेता था–
    (A) इल्तुतमिश (B) बलबन
    (C) अलाउद्दीन खिलजी (D) फिरोजशाह तुगलक
84. सीमान्त क्षेत्र के वह उग्र निवासी जिन्होंने महमूद गजनवी तथा मुहम्मद गोरी दोनों के लिए समस्याएं पैदा कीं, कहलाते थे–
    (A) हाजरा (B) खोखर
    (C) युर्तावल (D) बलूची

उत्तरमाला

1. (A)	2. (C)	3. (B)	4. (A)	5. (D)
6. (D)	7. (D)	8. (A)	9. (D)	10. (B)
11. (C)	12. (A)	13. (A)	14. (B)	15. (D)
16. (C)	17. (B)	18. (A)	19. (B)	20. (A)
21. (D)	22. (B)	23. (C)	24. (B)	25. (B)
26. (B)	27. (A)	28. (C)	29. (D)	30. (A)
31. (C)	32. (D)	33. (B)	34. (B)	35. (D)
36. (C)	37. (D)	38. (C)	39. (B)	40. (B)
41. (B)	42. (A)	43. (A)	44. (B)	45. (B)
46. (C)	47. (D)	48. (D)	49. (C)	50. (C)
51. (C)	52. (B)	53. (C)	54. (D)	55. (D)
56. (B)	57. (B)	58. (C)	59. (C)	60. (C)
61. (A)	62. (A)	63. (B)	64. (B)	65. (A)
66. (C)	67. (C)	68. (C)	69. (A)	70. (A)
71. (C)	72. (A)	73. (D)	74. (C)	75. (D)
76. (C)	77. (C)	78. (D)	79. (D)	80. (A)
81. (C)	82. (B)	83. (C)	84. (B)	

संकेत

1. दीवान-ए-कोही–मुहम्मद तुगलक
   दीवान-ए-अर्ज–बलबन.
2. मुहम्मद गोरी तथा अन्य प्रारम्भिक सुल्तानों के सिक्के (जिनको देहलीवाला के नाम से जाना जाता था) के पृष्ठ पर नागरी में शासक का नाम और बैल तथा ऊर्ध्व भाग पर दिल्ली के चौहान प्रकार का अश्वारोही होता था. इस प्रकार के सिक्के मसूदशाह के शासनकाल तक अस्तित्व में है.
6. अलाउद्दीन खिलजी ने खुतों, मुकद्दमों और चौधरियों को चराई कर तथा गृह कर देने के लिए बाध्य किया.
7. जीतल ताँबे का सिक्का था.
10. सोमनाथ आक्रमण के समय वहाँ का शासक भीम प्रथम था.
80. गयासुद्दीन तुगलक ने भूराजस्व की दरों को घटाकर $\frac{1}{10}$ से $\frac{1}{11}$ भाग तक कम कर दिया था.
81. यामीन-उल-खलीफा नासिर-ए-अमीर उल मोमिनीन का अर्थ है 'खलीफा का नाइब'.

3

पन्द्रहवीं एवं प्रारम्भिक सोलहवीं शताब्दी का भारत

(India of the 15th and Early 16th Century)

(प्रमुख प्रान्तीय राजवंश, विजयनगर साम्राज्य, लोदी राज्य, मुगल साम्राज्य का प्रथम चरण, बाबर, हुमायूँ, सूर साम्राज्य एवं प्रशासन, पुर्तगाली. एकेश्वरवादी आन्दोलन : कबीर, गुरुनानक एवं सिख धर्म, भक्ति आन्दोलन, क्षेत्रीय साहित्यिक विधाओं में वृद्धि कला एवं संस्कृति)

(Major Provincial dynasties; Vijayanagara Empire, The Lodies, First phase of the Mughal Empire : Babur, Humayun, The Sur empire and administration, The Portuguese, Montheistic movements : Kabir; Guru Nanak and Sikhism; Bhakti, Growth of regional literatures, Art and Culture)

दिल्ली सल्तनत के विघटन की प्रक्रिया का आरम्भ 14वीं शताब्दी में हो गया. दिल्ली सल्तनत के विकृत हालात एवं परिस्थितियों को समझते हुए अनेक महत्त्वाकांक्षी सरदारों ने पन्द्रहवीं शताब्दी में स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना की. इसके अतिरिक्त जो राज्य केन्द्र के अधीन थे, उन्होंने भी केन्द्रीय सत्ता को मानने से इनकार कर दिया. इसके परिणामस्वरूप अनेक नये स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना उत्तरी एवं दक्षिणी भारत के क्षेत्र विशेष में हुई. भारत पर बाबर के आक्रमण से पूर्व इन स्वतन्त्र राज्यों की स्थिति एवं भूमिका उल्लेखनीय थी. उत्तरी भारत के स्वतन्त्र राज्यों में जौनपुर, मालवा, राजपूताना, कश्मीर, उड़ीसा, गुजरात, बंगाल एवं कामरूप मुख्य राज्य थे. दक्षिण भाग में बहमनी साम्राज्य एवं विजयनगर साम्राज्य प्रबल शक्ति के रूप में उभरे थे.

जौनपुर का शर्की राज्य

यह उत्तरी भारत का पहला राज्य था, जो दिल्ली सल्तनत से स्वतन्त्र हो गया था. 1360 ई. में फीरोजशाह तुगलक ने इस नगर की स्थापना की थी. इसको पूर्वी क्षेत्रीय राज्यों का केन्द्र बनाकर 1394 ई. में मुहम्मद तुगलक द्वितीय ने मलिक-उस-शर्क (पूर्व का स्वामी) के रूप में अमीर ख्वाजा जहाँ मलिक सरवर को नियुक्त किया था. ख्वाजा जहाँ ने स्थिति को पक्ष में जानकर अलीगढ़ से बिहार तक अपना प्रभाव स्थापित कर लिया और स्वयं यहाँ का स्वतन्त्र शासक बन गया. ख्वाजाजहाँ 1399 ई. में परलोकवासी हो गया और उत्तराधिकारी के रूप में उसके दत्तक पुत्र मुबारकशाह ने जौनपुर का शासन संभाला. उसी दौरान तैमूर के आक्रमण के कारण दिल्ली में अव्यवस्था छायी हुई थी. इसका लाभ उठाकर मुबारक शाह स्वतन्त्र जौनपुर शासक बन गया. इतना ही नहीं जौनपुर राज्य का नामकरण अपने पिता ख्वाजा जहाँ 'मलिक-उस-शर्क' के नाम पर शर्की राज्य कर दिया गया तथा सुल्तान की उपाधि धारण की, खुद के नाम खुतबा पढ़ाया गया एवं मुबारकशाह नाम के सिक्के भी ढलवाये गये.

शर्की राज्य के उत्तराधिकारी

इब्राहीमशाह शर्की

मुबारक शाह की मृत्यु के बाद इब्राहीमशाह शर्की 1400 ई. में जौनपुर का शासक बना. यह जौनपुर के शर्की राज्य का सर्वश्रेष्ठ शासक माना जाता था. उसने जौनपुर पर 40 वर्षों तक शासन किया था. इब्राहीमशाह एक श्रेष्ठ योद्धा, सेनापति, कुशल राजनीतिज्ञ एवं विद्वानों का संरक्षक था. उसने 40 वर्षों तक जौनपुर पर शासन किया था. कवि विद्यापति ठाकुर एवंकाजी शहाबुद्दीन इब्राहीमशाह के दरबारी कवि थे. 'कीर्तिलता' काव्य विद्यापति ठाकुर द्वारा उसी दौरान लिखा गया था. सैय्यद वंश के शासकों से उसका संघर्ष भी चला था. इब्राहीम शाह के समय जौनपुर 'भारत का शिराज' कहलाता था.

महमूदशाह शर्की

इब्राहीमशाह के पश्चात् उसका पुत्र महमूदशाह 1446 ई. में शर्की साम्राज्य के अन्तर्गत जौनपुर का सुल्तान बना. उसने जौनपुर पर शासन के दौरान चुनार पर विजय

प्राप्त की. वह दिल्ली पर अधिकार करना चाहता था, लेकिन बहलोल लोदी के विरोध के कारण वह इस कार्य में सफल नहीं हो पाया.

मुहम्मदशाह शर्की

मुहम्मदशाह एक अत्याचारी एवं निर्दयी शासक था. वह महमूदशाही शर्की का पुत्र था. उसने 1457 ई. में जौनपुर की सत्ता संभाली थी. एक साल बाद उसके कुकृत्यों से परेशान होकर 1458 ई. में मुहम्मदशाह शर्की के भाई हुसैनशाह ने उसे मारकर जौनपुर की सत्ता पर अधिकार कर लिया था.

हुसैनशाह शर्की एवं शर्की साम्राज्य का पतन

महमूदशाह का पुत्र एवं मुहम्मदशाह का भाई हुसैनशाह 1458 ई. में जौनपुर का शासक बना था. हुसैनशाह शर्की साम्राज्य का अन्तिम सुल्तान था. विभिन्न विद्रोहों पर नियन्त्रण करने के फलस्वरूप 1494 ई. में बहलोल लोदी ने जौनपुर पर आक्रमण कर लिया. हुसैनशाह ने बिहार से जौनपुर पर आक्रमण करने की प्रक्रिया प्रारम्भ की, लेकिन रास्ते में ही सिकन्दर द्वारा परास्त कर दिया गया. इस तरह शर्की साम्राज्य का पतन हो गया तथा जौनपुर को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया.

निष्कर्ष–अपने विकास के दौरान जौनपुर का शर्की साम्राज्य अत्यधिक विस्तृत था. पश्चिम में अलीगढ़ के पूर्व में बक्सर और दरभंगा तथा उत्तर में नेपाल की तराई से दक्षिण में बुन्देलखण्ड तक यहाँ का साम्राज्य फैला हुआ था. सांस्कृतिक दृष्टि से भी तत्कालीन भारत में जौनपुर की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी. यहाँ की मस्जिदों की ढलानी दीवारें विशाल दरवाजे एवं मेहराब भारत प्रसिद्ध रहे हैं. महान् कवि एवं पद्मावती के रचयिता मलिक मुहम्मद जायसी का सम्बन्ध जौनपुर दरबार से रहा था.

बंगाल

दिल्ली सल्तनत से स्वतन्त्र होने वाला बंगाल दूसरा प्रमुख राज्य था, जो पूर्वी भारत में अवस्थित था. यहाँ पर दिल्ली सल्तनत के साथ निरन्तर संघर्ष होता रहता था. मुहम्मद बख्तियार खिलजी के वंशज तुगरिल खाँ के विद्रोह का दमन कर बलबन ने अपने पुत्र बुगरा खाँ को बंगाल में शासक नियुक्त कर दिया था. लम्बे अन्तराल तक उसके वंशजों ने वहाँ पर शासन किया था. इसी दौरान गयासुद्दीन तुगलक ने बंगाल के बिगड़ते हालातों को देखकर नासिरुद्दीन को बंगाल में सुल्तान की उपाधि एवं सिक्के ढलाने का आदेश देकर अधीनस्थ शासक नियुक्त किया. 1340 ई. में शम्सुद्दीन खाँ या इलियास खाँ ने मुहम्मद-बिन-तुगलक के शासन के दौरान सम्पूर्ण बंगाल पर अधिकार कर लिया. मुहम्मद-बिन-तुगलक के शासनकाल से लेकर अकबर के शासनकाल तक बंगाल पूर्णतः स्वतन्त्र रहा. बंगाल में इस दौरान अनेक शासकों ने शासन किया. बुगरा खाँ, रुकनुद्दीन, कैकोस, शम्सुद्दीन, गयासुद्दीन, हम्जाशाह, अबुल मुजफ्फर, महमूदशाह इत्यादि शासकों ने क्रमशः बंगाल का शासन संभाला. इन सबके शासन के दौरान बंगाल अव्यवस्थित एवं अशांत बना रहा. बंगाल के शासकों में गयासुद्दीन आजमशाह जो इलियासशाही वंश से सम्बद्ध था, ने महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया. आजमशाह कुशल राजनीतिज्ञ, विद्वानों का आदर करने वाला एवं एक न्यायप्रिय शासक था. आजमशाह के दौरान भारत और चीन में व्यापारिक एवं राजनैतिक सम्बन्ध मजबूत हुए. 1493 ई. में बंगाल की विकृत व्यवस्था को परिष्कृत करने की दिशा में अलाउद्दीन हुसैनशाह ने 'हुसैनशाही वंश' को स्थापित करने का कदम उठाया. सन् 1528 ई. तक अलाउद्दीन हुसैनशाह ने बंगाल में शासन किया. सोना मस्जिद का निर्माण हुसैनशाह ने ही कराया था. हुसैनशाह अलाउद्दीन के उत्तराधिकारी के रूप में 1518 ई. में बंगाल के शासन को उसके पुत्र नुसरतशाह ने संभाला था. सन् 1553 ई. तक नुसरतशाह ने बंगाल का शासन संभाला. उसकी मृत्यु के पश्चात्त अलाउद्दीन फीरोजशाह एवं गयासुद्दीन महमूद ने बंगाल पर शासन किया. 1538 में हुसैनशाही वंश के स्थान पर अफगान वंश के शेरशाह का इस पर अधिमेल हो गया. 1576 ई. में अकबर ने बंगाल को दिल्ली में विलय पर मुगल साम्राज्य का अंग बना लिया.

निष्कर्ष–बंगाल के स्वतन्त्र राज्य के रूप में शासन के दौरान सांस्कृतिक रूप से उल्लेखनीय प्रगति हुई है. इलियास एवं हुसैनशाही वंश ने कला एवं साहित्य के लिए गम्भीर वातावरण स्थापित किया. गौड़ का हुसैनशाह का मकबरा, अदीना मस्जिद, छोटी एवं बड़ी सुनहरी मस्जिद इस काल के स्थापत्य के उदाहरण है. महाभारत का बंगला संस्करण, रामायण का कृतिवास द्वारा बंगला रूपान्तरण, मलधर वसु (गुनराज खाँ) की श्रीकृष्ण विजय जैसी साहित्यिक कृतियाँ इसी समय की देन थी. भक्ति आन्दोलन में चैतन्य महाप्रभु द्वारा कृष्ण भक्ति का प्रचार भी एक उत्कृष्ट एवं श्रेष्ठ कार्य था, जो बंगाल के इतिहास में महत्त्वपूर्ण अंग बन सका.

मालवा

मालवा गुजरात का प्रतिस्पर्द्धी एवं पड़ौसी क्षेत्र था. यह नर्मदा एवं ताप्ती नदियों के मध्य पठारी क्षेत्र में अवस्थित था. अतः इसका आर्थिक महत्त्व अत्यधिक था. प्रारम्भिक काल में परमारवंशीय राजपूत यहाँ पर शासन करते थे. 1310 ई. में अलाउद्दीन के सेनापति आइन-उल-मुल्क-मुलतानी ने मालवा के शासक हरनन्द पर विजय प्राप्त की थी. उस समय आइन-उल-मुल्क-मुलतानी को अलाउद्दीन ने मालवा का प्रान्तपति बना दिया था. 1310 से 1398 ई. तक

मालवा दिल्ली सल्तनत के शासकों के अधीन मालवा रहा. 1398 ई. में मालवा के सूबेदार दिलावर खाँ गोरी ने मालवा को स्वतन्त्र कर स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया.

प्रमुख शासक

गोरी वंश

हुसंगशाह

स्वतन्त्र मालवा पर दिलावर खाँ गोरी ने 1406 ई. तक शासन किया. इसके पश्चात्त उत्तराधिकारी के रूप में अलप खाँ ने हुसंगशाह के नाम से मालवा का शासन भार संभाला. हुसंगशाह ने मालवा को पूरी तरह स्वतन्त्र घोषित कर दिया एवं स्वयं सुल्तान की पदवी भी धारण की. हुसंगशाह के समय मालवा की राजधानी धार से मांडू में स्थानान्तरित कर दी गई थी.

मुहम्मदशाह

1435 ई. में हुसंगशाह की मृत्यु हो गई. इसके बाद उत्तराधिकारी के रूप में उसके पुत्र गाजी खाँ ने मुहम्मदशाह के नाम से मालवा का शासन संभाला. मुहम्मदशाह एक अत्यधिक दुर्बल शासक सिद्ध हुआ. सन् 1436 ई. में वजीर महमूद खिलजी ने मुहम्मद शाह की हत्या कर मालवा पर स्वयं ने अधिकार कर लिया.

खिलजी वंश

- 1436 ई. में मुहम्मद शाह को मारकर महमूद खिलजी ने मालवा में खिलजी वंश की स्थापना की.
- मालवा राज्य की सीमा विस्तृत करने के कारण महमूद खिलजी को मिस्र के खलीफा ने सुल्तान की मान्यता प्रदान की थी.
- महमूद खिलजी के पश्चात्त 1469 ई. में गयासुद्दीन मालवा का शासक बना था, जो अत्यन्त निर्बल, दुर्बल एवं अयोग्य था. 1501 ई. में गयासुद्दीन की हत्या कर नासिरूद्दीन ने मालवा का शासन संभाला था.
- खिलजी वंश का अन्तिम शासक सुल्तान महमूद द्वितीय था, जिसने 1512 ई. में शासन की बागडोर संभाली थी. चन्देरी का शासक मेदिनी राय उसका प्रमुख सलाहकार था. महमूद द्वितीय को 1531 ई. में मार दिया गया तथा मालवा को गुजरात में मिला लिया गया.
- अटाला मस्जिद, जहाज महल, हुसंगशाह का मकबरा मालवा के प्रमुख स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूने हैं.

गुजरात

- गुजरात को स्वतन्त्र राज्य गुजरात के सूबेदार जफर खाँ के पुत्र तातार खाँ ने 1401 ई. में घोषित किया था. तातार खाँ ने नासिरूद्दीन मुहम्मदशाह की उपाधि धारण की थी. सन् 1407 ई. में तातार खाँ की हत्या कर दी गई.
- 1407 ई. में जफर खाँ मुजफ्फर शाह के नाम से गुजरात का शासक बना. 1411 ई. में मुजफ्फरशाह को मार दिया गया.
- सन् 1412 ई. में मुजफ्फरशाह का पोता अजप खाँ अहमदशाह के नाम से गुजरात का शासक बना. अहमदशाह ने 1441 ई. तक गुजरात पर शासन किया. गुजरात की राजधानी अहमदाबाद अहमदशाह ने ही बनाई थी.
- अहमदशाह ने मालवा, राजपूताना, असीरगढ़ एवं जूनागढ़ पर विजय प्राप्त कर अपने अधिकार में कर लिया था.
- महमूद बेगड़ा सन् 1459 ई. में अहमदशाह के पश्चात्त गुजरात का शासक बना. उन्होंने 1511 ई. तक गुजरात में शासन किया था. इटेलियन यात्री बारथेमा उसका समकालीन विदेशी यात्री था.
- गुजरात का अन्तिम महान सुल्तान महमूद बेगड़ा था. 1511 ई. में उसकी मृत्यु हो गई थी. महमूद बेगड़ा की मृत्यु के बाद से 1526 ई. तक क्रमशः मुजफ्फरशाह II, सिकन्दर एवं महमूद द्वितीय ने गुजरात पर शासन किया था.
- 1526 ई. में गुजरात का शासन बहादुरशाह ने संभाला था. 1537 ई. में पुर्तगालियों ने बहादुरशाह को मार दिया एवं गुजरात के स्वतन्त्र राज्य का पतन हो गया. सन् 1572 ई. में अकबर ने गुजरात को मुगल साम्राज्य में मिला लिया.

कश्मीर

- कश्मीर में 1339 ई. में शाह मिर्जा ने मुस्लिम सत्ता को स्थापित किया था. उसने शासन संभालते ही शम्सुद्दीन की उपाधि धारण की थी. 1342 ई. से 1394 ई. तक जमशेद अलाउद्दीन एवं कुतुबुद्दीन कश्मीर के शासक रहे थे.
- तैमूर के आक्रमण के दौरान सिकन्दर कश्मीर का शासक था.
- 1417 ई. में जैनुल आबिदीन ने कश्मीर का शासन संभाला था. इस समय महाभारत, दशावतार एवं राजतरंगिणी का फारसी अनुवाद कराया गया था. इसी दौरान उत्तम सोम पण्डित ने काश्मीर का इतिहास कश्मीरी भाषा में लिखा था.
- 1467 ई. में जैनुल आबिदीन की मृत्यु के पश्चात्त अकबर ने कश्मीर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया.

राजपूताना

मेवाड़

- पन्द्रहवीं शताब्दी के दौरान मेवाड़ राजपूताना का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं महत्त्वपूर्ण राज्य था. इस समय सिसोदिया वंश का शासन था.
- 1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ पर अधिकार कर खिज्र खाँ को यहाँ का प्रशासक बनाया था.
- खिज्र खाँ के प्रशासक बनने के समय चित्तौड़ का नाम खिज्राबाद रखा गया था. राजपूतों के विरोध के कारण खिज्र खाँ ने चित्तौड़ छोड़ दिया.
- इस स्थिति में अलाउद्दीन ने मालदेव नामक राजपूत सरदार को चित्तौड़ का प्रतिनिधि शासक नियुक्त किया.
- अलाउद्दीन के पश्चात्त हम्मीरदेव ने मेवाड़ को स्वतन्त्र किया एवं तुर्की आधिपत्य को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया.
- 1433 ई. में मेवाड़ का शासन राणा कुम्भा ने संभाला था, जिसने मालवा एवं गुजरात शासकों से युद्ध कर विजय प्राप्त की थी. जहाँगीर के काल में अमरसिंह ने मुगलों की अधीनता को स्वीकार कर लिया था.

मारवाड़

- 1394 ई. में चुन्द द्वारा स्थापित मारवाड़ राजपूताना का दूसरा प्रमुख राज्य था, जहाँ पर राठौड़ राजपूतों का शासन था.
- मारवाड़ में जोधा के 17 पुत्रों ने कई स्वतन्त्र राज्यों की नींव डाली. मालदेव मारवाड़ का अन्तिम शासक था. अकबर के काल में मारवाड़ का मुगल साम्राज्य में विलय हो गया.

आमेर

- आमेर में कछवाहा-राजपूत राजाओं का शासन था. प्रारम्भ में यह मेवाड़ का अधीनस्थ राज्य था, लेकिन 14वीं शताब्दी में यह स्वतन्त्र राज्य बन गया था. भारमल नामक राजपूत शासक आमेर का महत्त्वपूर्ण शासक था. राजा भारमल ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी. इस तरह आमेर भी मुगल साम्राज्य में मिल गया था.

उड़ीसा

- अनन्तवर्मन चोल ने उड़ीसा को स्वतन्त्र राज्य के रूप में स्थापित किया था. कपिलेन्द्र ने उड़ीसा के राजनैतिक महत्व को बढ़ाया था, लेकिन उसके उत्तराधिकारी पुरूपोत्तम एवं प्रतापरुद्र के समय में उड़ीसा के अनेक भागों पर विजयनगर साम्राज्य का आधिपत्य हो गया था.
- सन् 1541 ई. में उड़ीसा में भोई राजवंश का शासन प्रारम्भ हुआ. इस दौरान उड़ीसा में मुसलमान एवं अफगानों का प्रभुत्व स्थापित हो गया था. सोलहवीं शताब्दी में उड़ीसा का शासक कुतलू खाँ था जिसे पराजित कर अकबर ने उड़ीसा को मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया था.

कामरूप

- असम का प्रारम्भिक नाम कामरूप था, जो 13वीं शताब्दी में ब्रह्मपुत्र की घाटी में स्थापित किया गया था.
- कामरूप पर 15वीं शताब्दी में रवैतों का आधिपत्य था. कामतपुर में रवैतों ने अपनी राजधानी स्थापित की थी.
- 16वीं शताब्दी में कामरूप में कूचवंश का राज्य था उस समय कामरूप कूच विहार एवं कूचहाजों में विभक्त हो गया था.
- कालान्तर में कामरूप के पश्चिम भाग पर मुसलमानों एवं पूर्वी भाग पर अहोमों का अधिकार हो गया था. अहोमों ने कामरूप पर पूरी तरह अधिकार कर लिया था.

दक्षिणी राज्य

- 14वीं एवं 15वीं शताब्दी में दक्षिणी स्वतन्त्र राज्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण राज्य बहमनी एवं विजयनगर के राज्य थे. बह्मनी पर मुसलमानों एवं विजयनगर पर हिन्दुओं का शासन था.
- बहमनी राज्य के अवशेषों पर कालान्तर में बीजापुर बरार, अहमदनगर, गोलकुण्डा एवं बीदर का आविर्भाव हुआ था.

बहमनी साम्राज्य

- सन् 1346 ई. में हसन गंगु या जफर खाँ ने अलाउद्दीन हसन बहमनशाह की उपाधि धारण की तथा बह्मनी साम्राज्य को स्वतन्त्र स्थापित किया.

प्रमुख शासक

अलाउद्दीन हसन बहमनशाह

- 1346 ई. में जनता और इस्माइल मख के आग्रह पर अलाउद्दीन हसन बहमनशाह ने बहमनीशाह साम्राज्य की स्थापना की थी. कंधार कोट्टगिरी, बीदर एवं कल्याण पर उसने अपना अधिकार कर लिया था.
- हसन बहमनशाह ने अपनी सैनिक शक्ति के बल पर बहमनी राज्य को सशक्त बनाया था. उसने हिन्दुओं पर से जजिया कर भी हटा दिया था.

मुहम्मदशाह प्रथम

- हसन बहमन शाह के पश्चात्त 1358 ई. में उसके पुत्र मुहम्मद शाह प्रथम ने बहमनी राज्य का शासन संभाला था.

- मुहम्मद शाह प्रथम ने दौलताबाद, गुलवर्गा, वीदर एवं वरार में अपने सम्पूर्ण शासन को सूबों में विभक्त कर रखा था. उसने विजयनगर के राजा बुक्का को भी पराजित किया था.

ताजुद्दीन फीरोज

- 1397 ई. में वहमनी राज्य का सुल्तान ताजुद्दीन फीरोज बना. इससे पूर्व वहमनी साम्राज्य में 4 शासकों ने शासन किया था, जो अत्यन्त निर्वल एवं अयोग्य शासक सिद्ध हुए थे.
- ताजुद्दीन फीरोज ने अफाकियों एवं घरीवों (दक्खिनियों) से परे हटकर हिन्दुओं को राजनीतिक प्रश्रय दिया था.

अहमदशाह प्रथम

- वहमनी साम्राज्य का शासन 1422 ई. में अहमदशाह प्रथम ने संभाला था. अहमदशाह प्रथम ने अपनी राजधानी गुलवर्गा से वीदर में स्थानान्तरित की थी. इस समय वीदर का नाम भी मुहम्मदावाद कर दिया गया था.
- अहमदशाह के समय अफाकियों का प्रभाव अधिक था. मालवा माहूर एवं विजयनगर के राजाओं के साथ उसे युद्ध भी करना पड़ा था.

अलाउद्दीन अहमदशाह द्वितीय

- अलाउद्दीन अहमदशाह द्वितीय ने 1436 ई. में वहमनीशाह का शासन संभाला था. उसे तेलगांना, विजयनगर, खानदेश, मालवा, उड़ीसा एवं गुजरात के साथ निर्णायक युद्ध करने पड़े थे. अलाउद्दीन अहमदशाह द्वितीय 1358 ई. में आकस्मिक मृत्यु का शिकार हो गया था.
- अलाउद्दीन अहमदशाह ने नलगोंडा के विद्रोह को महमूद गाँवा के सहयोग से दवाया था.

शम्सुद्दीन मुहम्मदशाह तृतीय

- निजामुद्दीन का छोटा भाई शम्सुद्दीन मुहम्मदशाह 1463 ई. में महमूद गाँवा के संरक्षण में वहमनी साम्राज्य का सुल्तान नियुक्त किया गया था.
- गाँवा के वजीर पद पर रहते हुए वहमनी साम्राज्य कोरोमण्डल तट से अरव महासागर तक फैल गया था.
- महमूद गाँवा को सन् 1481 ई. में मरवा दिया. जिसके एक साल बाद सन् 1482 ई. में शम्सुद्दीन मुहम्मदशाह तृतीय भी मारा गया.
- मुहम्मदशाह के वाद वहमनी साम्राज्य का शासन क्रमशः महमूदशाह एवं कल्लीमुल्लाह ने संभाला था.
- 1526 ई. में कल्लीमुल्लाह की मृत्यु हो गई और वहमनी साम्राज्य का अन्त हो गया. इस साम्राज्य के अवशेष पर दक्षिण में निम्नलिखित पाँच स्वतन्त्र राज्यों का आविर्भाव हुआ–

1. 1489 ई. में वीजापुर (आदिलशाही राज्य)
2. 1490 ई. में अहमदनगर (निजामशाही राज्य)
3. 1490 ई. में वरार (वररी इमादशाही राज्य)
4. 1512 ई. में गोलकुण्डा (कुतुवशाही राज्य)
5. 1527 ई. में वीदर (वरीदशाही राज्य)

विजय नगर साम्राज्य

- वहमनी साम्राज्य के वाद विजयनगर साम्राज्य दूसरा शक्तिशाली एवं प्रभावशाली राज्य था, जो मुहम्मद विन तुगलक के काल में स्थापित हुआ था. विद्वान एवं साहित्यकारों के अनुसार विजयनगर साम्राज्य 'हिन्दू पुनरुत्थान' का केन्द्र था.
- संगम के पुत्र एवं होयसलों के सामन्त दो भाई हरिहर एवं बुक्का ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी. मुहम्मद विन तुगलककालीन अव्यवस्था का फायदा उठाकर संत विद्यारण्य के प्रभाव के कारण हरिहर एवं बुक्का ने विजयनगर को स्वतन्त्र राज्य घोषित कर दिया.
- हरिहर एवं बुक्का के राजवंश का नामकरण संगम वंश उनके पिता के नाम पर हुआ था.
- विजयनगर में तीन राजवंशों ने शासन किया था–
  (अ) संगम वंश (1336-1485 ई.)
  (व) सालुंव वंश (1485-1505 ई.)
  (स) तुलुव वंश (1505-1565 ई.)

संगम वंश (1336-1485)

हरिहर

- संगम वंश एवं विजयनगर का शासन सर्वप्रथम हरिहर ने संभाला था, जिसने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना भी की थी. 1336 ई. से 1356 ई. के शासनकाल में सम्पूर्ण होयसल राज्य पर अधिकार कर लिया था एवं मदुरा पर आधिपत्य कर लिया था.

वुक्का

- हरिहर की मृत्यु सन् 1356 ई. में हो गई थी. उसकी मृत्यु के पश्चात्त उसका भाई वुक्का विजयनगर का शासक वन वैठा. उसने मदुरा एवं तमिलनाडु पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था. वह उदार, न्यायप्रिय एवं साहित्यप्रेमी शासक था.

हरिहर द्वितीय

- 1377 ई. में वुक्का के पश्चात्त हरिहर II विजयनगर साम्राज्य का शासक वना था. शासक वनते ही उसने

महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी. कांची, चिंगलपुर, मैसूर, कनारा एवं त्रिचनापल्ली पर उसने सफलतापूर्वक विजय प्राप्त की थी. 1404 ई. में हरिहर II की मृत्यु हो गई थी.

- 1404 ई. से 1430 ई. के मध्य विजयनगर साम्राज्य का शासन देवराय प्रथम, वीर विजय एवं रामचन्द्र ने संभाला था. इसी अवधि में निकोलो कोंटी नामक इटेलियन यात्री विजयनगर में भ्रमणार्थ आया था.

देवराय द्वितीय

- सन् 1430 ई. में देवराय द्वितीय ने विजयनगर साम्राज्य का शासन संभाला था. वह 1430 ई. से 1446 ई. तक विजयनगर का शासक रहा था. वह विजयनगर साम्राज्य का अन्तिम महान् शासक था. फारस का राजदूत अब्बदुर्रज्जाक देवराय द्वितीय के शासनकाल में विजयनगर आया था.
- सन् 1446 ई. में देवराय की मृत्यु हो गई. उसकी मृत्यु के पश्चात्त 1446-1485 ई. के दौरान सारे संगम वंशीय शासक अयोग्य एवं निर्वल सिद्ध हुए. उनके समय में उड़ीसा के गजपति शासकों एवं बहमनी के सुल्तानों ने विजयनगर पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया था.
- सालुंव नरसिंह नामक विरूपाक्ष के सामन्त ने आक्रमण-कारियों से रक्षा के बहाने विरूपाक्ष की हत्या कर विजयनगर में एक नये राजवंश का उदय किया था. यह सालुंव राजवंश था.

सालुंव राजवंश (1485–1505 ई.)

नरसिंह

- सालुम्व नरसिंह नामक शासक ने सालुम्व राजवंश को विजयनगर में स्थापित किया था. यह इस वंश का प्रथम शासक था. सालुम्व नरसिंह को उड़ीसा के शासक पुरूषोत्तम गजपति ने गिरफ्तार कर लिया था. सन् 1490 ई. तक नरसिंह इस वंश का शासक रहा था.

इम्माड़ि नरसिंह

- सालुम्व राजवंश का अन्तिम शासक के रूप में नाबालिग इम्माड़ि नरसिंह ने 1490 ई. में शासन का भार संभाला था. इम्माड़ि नरसिंह का संरक्षक नरसानायक था.
- इम्माड़ि नरसिंह के शासनकाल में नरसानायक ने चेर, चोल एवं पाण्डय शासकों को अपने अधीनस्थ कर लिया था एवं रायचूर दोआब के दुर्गों पर अधिकार कर लिया था.
- सन् 1505 ई. में नरसानायक के पुत्र वीर नरसिंह ने इम्माड़ि नरसिंह की हत्या कर सालुम्व राजवंश के स्थान पर तुलुव वंश की स्थापना की.

तुलुव वंश (1505–1565 ई.)

वीर नरसिंह

- तुलुव वंश की स्थापना सन् 1505 ई. में वीर नरसिंह ने इम्माड़ि नरसिंह को मार कर की. उसका सारा समय आक्रमणकारियों से लड़ने में व्यतीत हो गया. 4 वर्ष बाद 1509 ई. में वीर नरसिंह की मृत्यु हो गई.

कृष्ण देवराय

- सन् 1509 ई. में वीर नरसिंह की मृत्यु के पश्चात्त कृष्ण देवराय ने तुलुव वंश का शासन संभाला. वह एक श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ, महान् शासक एवं विद्वानों का संरक्षक था.
- कृष्ण देवराय ने उड़ीसा के शासक गजपति रूद्रदेव को 1513-18 ई. के मध्य चार बार परास्त किया था.
- कृष्ण देवराय का साम्राज्य पश्चिम में कोंकण, पूर्व में विजगापट्टम एवं कटक, दक्षिण में कन्याकुमारी तथा उत्तर में बीदर तक फैला हुआ था.
- कृष्ण देवराय के शासनकाल की सम्पूर्ण जानकारी 'आमुक्तमाल्यद' नामक ग्रन्थ में मिलती है. पुर्तगाली यात्री पेईज उसके साम्राज्य में भ्रमणार्थ आया था.
- कृष्ण देवराय का शासनकाल तेलगु साहित्य का 'शास्त्रीय युग' माना जाता था. कृष्ण देवराय की सन् 1529 ई. में मृत्यु हो गई थी.

अच्युतदेवराय

- तुलुव वंशीय शासक कृष्ण देवराय की मृत्यु के पश्चात 1529 ई. में अच्युत देवराय ने उत्तराधिकारी के रूप में शासन का भार संभाला था. अच्युत देवराय नाममात्र का शासक था.
- अच्युत देवराय की सारी शक्ति सलकराज तिरूमल ने अपने हाथों में ले ली थी. उसी दौरान तंजौर, मुदुरा एवं जिंजी राज्य स्वतन्त्रता की माँग करने लगे थे. सन् 1542 ई. में अच्युत देव राय की मृत्यु हो गई थी.

सदाशिव

- तुलुव वंश का अन्तिम शासक सदाशिव था. वह 1542 ई. में अच्युत देवराय के पश्चात्त तुलुव वंश का शासक बना था. सदाशिव केवल नाम का शासक था, जबकि वास्तविक शासन की बागडोर रामराय ने संभाल रखी थी.
- बीजापुर, गोलकुण्डा, बीदर एवं अहमदनगर के शासकों ने तुलुव वंश के शासक सदाशिव के शासनकाल में एक संघ बनाकर 23 जनवरी, 1565 ई. में तातलीकोट (राक्षसी-तंगड़ी) के युद्ध में विजयनगर को पराजित कर रामराय को मार दिया गया.

- तातली कोट के 1565 ई. के युद्ध के पश्चात्त सदाशिव ने पुनः अपना शासन पेनुगोंडा से संभाला.
- सन् 1570 ई. में पेनुगोंडा में तिरूमल ने सदाशिव को हटाकर नये राजवंश की नींव डाली, इस राजवंश को अंडविदु राजवंश कहा गया. सन् 1615 ई. तक यह राजवंश शासन में रहा. इसके पश्चात्त उस राज्य के अवशेषों पर वेदनुर, मदुरा, श्रीरंगपट्टम एवं तंजौर आदि स्वतन्त्र राज्यों का उदय हुआ. इस तरह विजयनगर का पतन हो गया.

विजयनगर के पतन के कारण

- विजयनगर प्रारम्भ से अन्त तक संघर्षशील रहा था. साथ ही दक्षिण के इस्लामी राज्यों एवं उड़ीसा के गजपति शासकों का प्रतिरोध अन्त तक विजयनगर पर हावी रहा.
- विजयनगर का सैनिक संगठन बिल्कुल बेकार था. सेना में इस्लामी राज्यों की अपेक्षा निम्नकोटि के उपकरण थे.
- आन्तरिक अव्यवस्था, अयोग्य उत्तराधिकारी एवं विकृत आर्थिक व्यवस्था भी विजयनगर साम्राज्य के पतन के मूल कारक के रूप में उभर कर आई.
- हिन्दू धर्म को आश्रय देना, दक्षिण राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के कारण भी विजयनगर साम्राज्य का पतन हुआ.

विजयनगर की प्रशासनिक व्यवस्था

केन्द्रीय प्रशासन

- विजयनगर प्रशासन में राजा प्रधान पदाधिकारी होता था. राजा को 'राय' कहा जाता था. न्याय, धर्म-निरपेक्षता शांति एवं सुरक्षा की व्यवस्था का उत्तरदायित्व राजा का होता था.
- युवराज की प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका होती थी. जीवनकाल में ही राजा अधिकांशतः उत्तराधिकारी नियुक्त कर देते थे.

मंत्री एवं प्रमुख अधिकारी

- राजा को सलाह देने के लिए एक सलाहकार समिति होती थी, जो 'राजपरिषद्' कहलाती थी. राजपरिषद् में प्रान्तीय शासक, सामन्त, व्यापारिक निगमों को भी शामिल किया गया था.
- प्रधानमंत्री या महाप्रधानी मंत्रिपरिषद का प्रमुख पदाधिकारी होता था. मंत्रिपरिषद में राज्य के मंत्री, उपमंत्री, विभागाध्यक्ष एवं राजा के निकटतम सम्बन्धित व्यक्ति शामिल होते थे. इसमें 20 सदस्य होते थे.
- मंत्रिपरिषद राजा को सलाह प्रदान करती थी, लेकिन उसे मानने की कोई बाध्यता नहीं थी.
- युवराज एवं राजा के बाद महाप्रधानी विजयनगर प्रशासन का सर्वोच्च पदाधिकारी होता था.
- केन्द्रीय प्रशासनिक स्तर पर एक सचिवालय होता था जिसका कार्य प्रशासन पर नियन्त्रण रखना होता था. मानेय प्रधान (गृहमन्त्री), रायसम् (सचिव), कर्णिकम (हिसाब-किताब रखने वाला) एवं मुद्राकर्ता (राजकीय मुद्रा रखने वाले) प्रमुख सचिवालयी कर्मी होते थे.

न्यायिक व्यवस्था

- विजयनगर प्रशासन में राजा न्याय का सर्वोच्च पदाधिकारी होता था. न्यायालय प्रान्तीय एवं स्थानीय स्तर पर होते थे.
- निचली अदालतों के फैसले के विरुद्ध ऊपरी न्यायालयों एवं राजा के पास अपीलें भेजने का प्रस्ताव था.
- न्यायिक व्यवस्था अत्यन्त कठोर एवं हिन्दू विधान पर आधारित थी. ब्राह्मणों को मृत्यु दण्ड नहीं दिया जाता था. गम्भीर अपराधों के लिए मृत्युदण्ड एवं अंग-भंग की सजा देने का प्रावधान था. जुमार्ना एवं सम्पत्ति भी जब्त की जा सकती थी.

सैन्य एवं पुलिस व्यवस्था

- विजयनगर की सैन्य व्यवस्था सामन्ती सिद्धान्तों पर कार्य करती थी. सेना में पैदल, घुड़सवार, हाथी तथा तोपखाने की टुकड़ियाँ होती थीं.
- विजयनगर में राजा की सेना कम होती थी. नायक, जागीरदार, प्रान्तपति की सेनाएँ राजा का सहयोग करती थी.
- 'दण्डनायक' सेना का प्रमुख अधिकारी होता था.
- राजकीय आय का एक बड़ा हिस्सा सेना एवं पुलिस पर व्यय किया जाता था.
- पुलिस विभाग का प्रधान कोतवाल की तरह कार्य करता था. पुलिस प्रधान राज्य में घटित होने वाली घटना पर निगरानी रखता था.

प्रान्तीय प्रशासन

- विजयनगर साम्राज्य विभिन्न प्रान्तों में विभक्त था, जिसे मण्डल कहा जाता था.
- प्रान्त, कोट्टम या वलनाडु में विभाजित थे. नाडू (परगना) कोट्टम से छोटी इकाई होती थी. नाडू पचास ग्रामों के समूह में वर्गीकृत था जिसे मेलाग्राम कहा जाता था.
- विजयनगर प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जिसे उर (Ur) कहा जाता था.

- प्रान्तपति प्रान्तों के शासन का प्रमुख पदाधिकारी होता था. प्रान्तपति का पद राजपरिवार से सम्बद्ध व्यक्ति एवं महत्वपूर्ण सैनिक पदाधिकारियों को ही प्रदान किया जाता था.
- प्रान्तपति को प्रान्तों के प्रशासन के सम्बन्ध में पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी. केन्द्र प्रान्तीय प्रशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं करता था.
- प्रान्तपति राजस्व वसूली एवं कानून व्यवस्था को बनाए रखने का कार्य करता था.

नायंकर व्यवस्था

- विजयनगर साम्राज्य में नायंकर व्यवस्था भी प्रचलन में थी. सेनानायकों को नायक कहा जाता था और ये सैनिक सामन्त होते थे.
- सेनानायकों को राजकीय सेवा के बदले या सेना रखने के परिणामस्वरूप भूमि या अमरम् दी जाती थी. इसके फलस्वरूप इन सेनानायकों को अमर नायक भी कहा जाता था.
- अमर नायक 'अमरम' से प्राप्त राजस्व को केन्द्र तक पहुँचाने एवं राजा के लिए निर्धारित सेना का गठन करने का उत्तरदायित्व वहन करते थे.
- नायक की सेना का सेनापति एवं प्रशासनिक एजेंट (स्थानपति) अमर नायक के दो केन्द्रीय पदाधिकारी होते थे. नायकों पर नियन्त्रण के लिए महामण्डलेश्वर की नियुक्ति की गई थी.

स्थानीय प्रशासन

- विजयनगर प्रशासन में प्रत्येक गाँव वार्डों में विभाजित था. गाँवों के प्रशासन को संभालने के लिए सभा होती थी. सार्वजनिक भूमि दान देने या बेचने, भूमि अभिलेख तैयार कराने, राजस्व की वसूली करने, प्राकृतिक आपदा के समय लगान माफ कराने का कार्य ग्राम सभा का ही होता था.
- नाडू ग्राम सभा से ऊपरी इकाई होती थी. इसके सदस्यों को नात्तवर कहा जाता था.
- विजयनगर शासन में प्रत्येक गाँव को स्वतन्त्र प्रशासनिक इकाई मानकर उसका गठन किया था जिसका प्रशासन बारह व्यक्तियों को सौंपा जाता था, जो 'आयगार' कहलाते थे. यह व्यवस्था विजयनगर प्रशासन में आयगार व्यवस्था के नाम से जानी जाती थी. इन व्यक्तियों को सेवा के बदले लगान मुक्त भूमि मिलती थी. गाँव में शांति व्यवस्था बनाए रखना इनका प्रमुख उत्तरदायित्व होता था.

राजस्व व्यवस्था

- राज्य की आय का प्रमुख स्रोत भूमिकर या लगान होता था. उपज का 1/6 भाग सामान्य रूप से लगान के रूप में वसूला जाता था.
- ब्राह्मणों वाली भूमि से 1/20 तथा मंदिरों की भूमि से 1/30 भाग राजस्व के रूप में लिया जाता था.
- राज्य को चरागाह, सम्पत्ति, उद्योग, मकान, व्यवसाय, सामाजिक एवं सामुदायिक करों से भी आय होती थी. विधवा विवाह के अतिरिक्त सभी तरह के विवाहों पर कर लगाया जाता था.
- राजस्व व्यवस्था ठेकेदारी प्रथा पर आधारित थी. अनाज एवं नगद राशि में कर वसूला जाता था.

विजयनगरीय समाज

- विजयनगरीय समाज में वर्ण व्यवस्था का प्रचलन था. समाज में ब्राह्मण वर्ण को सर्वोपरि माना जाता था. ब्राह्मणों को मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता था. सेना एवं प्रशासन में ब्राह्मणों को उच्च पद प्राप्त थे. क्षत्रिय वर्ण के सन्दर्भ में इस काल में जानकारी उपलब्ध नहीं होती.
- समाज का तीसरा वर्ण शेट्टी (चेट्टी) होता था, जिसमें बड़े-छोटे व्यापारी, लोहार, स्वर्णकार, दस्तकार, जुलाहे बढ़ई, रेड्डी एवं मूर्तिकार आते थे. बाजीगर, मछुआरे एवं जोगियों को समाज के निम्न स्तर का माना जाता था. स्त्री-पुरुष दासों का अस्तित्व था.
- विजयनगरीय समाज में स्त्रियों को उपभोग की वस्तु समझा जाता था. अभिजात्य वर्गीय महिलाएँ साहित्य, संगीत एवं नृत्य की शिक्षा लेती थीं. निम्न वर्ग की स्त्रियाँ व्यवसाय या दस्तकारी का कार्य करती थीं.
- राजपरिवार, सामन्त वर्ग कई पत्नियाँ रखते थे. सामान्यतः एकात्मक विवाह का ही वैधानिक प्रचलन था. राजपरिवार में रखैल एवं दासियाँ रखी जाती थीं.
- तत्कालीन समाज में गणिकाओं एवं देवदासियों का अस्तित्व था. देवदासियाँ सम्मानित मानी जाती थीं.
- सती प्रथा विद्यमान थी. पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था. विधवा विवाह होते थे. विधवाओं की स्थिति शोचनीय थी. सतियों के स्मारक बनाने की परम्परा थी.

विजयनगरीय रहन-सहन

- विजयनगरीय समाज में स्त्री-पुरुष शृंगार एवं प्रसाधनों का शौक रखते थे. माँस-मदिरा का प्रचलन भी था.
- तत्कालीन समाज में शतरंज, पासा, जुआ, संगीत, नृत्य, नाटक प्रमुख मनोरंजन के साधन थे.

- स्त्री एवं पुरुष सूती तथा रेशमी कपड़े पहनते थे. पुरुष कमीज, धोती, दुपट्टा एवं पगड़ी धारण करते थे. स्त्रियाँ साड़ी एवं चोली पहना करती थीं. धनी पुरुष जरीदार कपड़े पहनता था एवं राजपरिवार की स्त्रियाँ पेटीकोट (पावडी) एवं दुपट्टा पहना करती थीं.
- धनी वर्ग के व्यक्ति जूते पहना करते थे. आम व्यक्ति जूते नहीं पहनते थे. हार, पैर का कड़ा, कुण्डल, भुजबन्द प्रमुख आभूषण होते थे. वीर पुरुष, राज्य द्वारा सम्मानित व्यक्ति गण्डपेन्द्र नामक आभूषण पैर में धारण करता था.
- चन्दन, केसर, कस्तूरी एवं अन्य सुगन्धित द्रव्यों का प्रचलन था.
- यक्षगान, छाया-नाटक एवं नाटकों का प्रचलन था. स्त्री एवं पुरुष दोनों अभिनय में भाग लेते थे.
- बाल विवाह, दहेज प्रथा का बड़े स्तर पर फैलाव था. इन रीतियों को समाज में घृणित दृष्टि से देखा जाता था.

आर्थिक व्यवस्था

कृषि व्यवस्था

- विजयनगरीय साम्राज्य की आय का प्रमुख स्रोत कृषि था. इस समय में भू-स्वामित्व के निम्नलिखित रूप थे–
  1. ब्रह्मदेय, देवदेय, मठापुर भूमि (ब्राह्मणों, मठों-मन्दिरों को दान में दी गई भूमि)
  2. भण्डारवाद ग्राम (राज्य के सीधे नियन्त्रण वाली भूमि)
  3. अमरम् भूमि (सैनिक एवं असैनिक कार्यों के बदले दी जाने वाली भूमि)
  4. कुट्टगि (पट्टे पर दी जाने वाली भूमि)
  5. उबलि (ग्राम में विशिष्ट सेवा के बदले दी गई जमीन)
- चावल, जौ, दलहन, नील, तिलहन, कालीमिर्च, कपास, अदरक, इलायची, नारियल इत्यादि इस समय की प्रमुख फसलें थीं.

उद्योग, व्यवसाय एवं व्यापार

- इस समय धातुकर्म का व्यवसाय सर्वाधिक प्रगति पर था. वस्त्र एवं इत्र बनाने का उद्योग किया जाता था. इस्पात से बने सामान वस्त्र, शक्कर, एवं शीरा विदेशों को विजयनगर से भेजा जाता था. घोड़े सिल्क, जवाहरात आयात किया जाता था. पुर्तगाल, मध्य एशिया और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ व्यावसायिक सम्बन्ध थे. हीरे, कपूर, रेशम, सिन्दूर, कस्तूरी, मालाबार की काली मिर्च और चन्दन की खरीद-बिक्री अधिक होती थी.

धार्मिक व्यवस्था

- विजयनगर में हिन्दू धर्म की स्थिति श्रेष्ठतम थी. इसी के फलस्वरूप इस काल को हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान का काल कहा जाता है.
- विजयनगर साम्राज्य में शैव एवं वैष्णव धर्म प्रमुख रूप से माना जाता था. यज्ञ, आहुति एवं बलि का प्रचलन था. समाज में पुरोहित एवं ब्राह्मणों की स्थिति सम्माननीय थी.

साहित्यिक एवं शैक्षणिक व्यवस्था

- विजयनगर शासन काल में अग्रहार, मठ एवं मन्दिर शिक्षा के प्रचार का कार्य करते थे. विद्वानों को राजकीय संरक्षण प्राप्त था. विद्वानों को करमुक्त भूमि प्रदान की जाती थी.
- संस्कृत, तमिल, तेलगु एवं कन्नड़ भाषाएँ इस काल में सर्वाधिक प्रयोग में ली जाने वाली भाषाएँ थीं. कृष्ण देवराय द्वारा तेलगु भाषा में लिखित 'आयुक्तमाल्यद' प्रसिद्ध ग्रन्थ था.
- सायणाचार्य, माधवाचार्य, विद्यारण्य एवं अलसनी इस काल के प्रसिद्ध विद्वान थे.
- अलसनी का मनुचरितम्, नंदी तिम्बन का पारिजातापहरण दरबारी संगीतकार लक्ष्मी नारायण की संगीत सूर्योदय इत्यादि पुस्तकें इस काल के श्रेष्ठ साहित्य में गिनी जाती थीं.

विजयनगरीय कलात्मक विकास

- इस काल में साहित्य के साथ-साथ विभिन्न कलाओं का विकास भी हुआ. स्थापत्य के क्षेत्र में विजयनगर इतिहास भर में प्रसिद्ध रहा है.
- स्थापत्य कला में कृष्णदेवराय का हजार खम्भों वाला मंदिर एवं विट्ठल स्वामी का मन्दिर सर्वाधिक उत्कृष्टतम स्थापत्य के नमूने हैं. विजयनगर के मन्दिरों का निर्माण द्रविड़ शैली में हुआ था.

मुगल साम्राज्य का प्रथम चरण
(First Phase of Mughal Empire)

दिल्ली सल्तनत की सत्ता के समाप्त हो जाने पर भारत में मुगलवंश की सत्ता का प्रारम्भ हुआ. भारत में मुगल साम्राज्य को 1526 ई. में बाबर ने स्थापित किया. हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगजेब ने क्रमशः मुगल सत्ता को सँभाला. इस दौरान भारत में राजनीतिक, सामाजिक,

प्रशासनिक, शिक्षा, कला एवं संस्कृति का भरपूर विकास हुआ. सन् 1707 ई. में जैसे ही औरंगजेब की मृत्यु हुई वैसे ही मुगल सत्ता का पतन होना प्रारम्भ हो गया. कालान्तर में मुगलों की शक्ति एवं प्रतिष्ठा पूर्णतः नष्ट हो गई और उसके स्थान पर कम्पनी बहादुरों का जन्म हुआ. मुगलकालीन भारत की स्थिति को जानने के लिए उसके गौरवपूर्ण इतिहास पर दृष्टिपात करना अत्यावश्यक होगा.

मुगलकालीन इतिहास के स्रोत
(The Sources for the History of the Mughals)

मुगलकालीन भारत में इतिहास लेखन की परम्परा का पूर्णतः विकास हो चुका था. अतएव इस समय के भारतीय इतिहास के स्रोत प्रचुरता में उपलब्ध हैं. फारसी एवं अन्य भाषाओं के ग्रन्थ मुगलकालीन भारतीय इतिहास के उत्कृष्टतम स्रोत हैं. स्थूल रूप में मुगलकालीन इतिहास के स्रोतों को निम्नलिखित दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. साहित्यिक स्रोत
2. पुरातात्त्विक स्रोत

साहित्यिक स्रोत

(अ) देशी या फारसी साहित्य–मुगल शासकों की फारसी भाषा में लिखी गई आत्मकथा, प्रशासकीय दस्तावेज, पत्र एवं अन्य रचनाएँ मुगलकालीन इतिहास को पूर्णतः जानने के लिए श्रेष्ठतम स्रोत हैं. प्रमुख स्रोतों में बाबरनामा का नाम उल्लेखनीय है, जिसे बाबर ने स्वयं ही लिखा था. इसे वाकियात-ए-बाबरी (तुजुक-ए-बाबरी) अथवा बाबरनामा के नाम से भी जाना जाता है. मूल रूप से इसे तुर्की भाषा में लिखा गया था जिसे बाद में फारसी भाषा में रूपान्तरित किया गया था. प्रारम्भिक मुगल भारत के लिए सर्वोत्कृष्ट ऐतिहासिक स्रोत है.

इसी तरह अन्य आत्मकथाओं में 'हुमायूँनामा' जिसे बाबर की बेटी एवं हुमायूँ की बहिन गुलबदन बेगम ने लिखा था. हुमायूँनामा से हुमायूँ के शासन-कार्य, व्यवस्था, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं तत्कालीन भारत की अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है. जहाँगीर द्वारा लिखित 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' भी मुगलकालीन भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है. उल्लेखनीय है 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' को प्रारम्भ में जहाँगीर ने लिखा था, लेकिन पूरा मोतमिद खाँ ने किया था. तुजुक-ए-जहाँगीरी में जहाँगीर के शासनकाल की समस्त गतिविधियों की जानकारी मिलती है.

तबकात

मुगलकालीन भारतीय इतिहास के स्रोतों में 'तबकात' श्रेणी की रचनाएँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं. प्रमुख तबकात रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(i) तबकात-ए-अकबरी–निजामुद्दीन अहमद

(ii) मुन्तखाब-उत-तवारीख–बदायूँनी

(iii) गुलशन-ए-इब्राहीमी–फरिश्ता

(iv) मुन्तखाब-उल-लुबाब–खफी खाँ

तबकात श्रेणी की रचनाओं में 'मुन्तखाब-उत-तवारीख' मुगलकालीन इतिहास की जानकारी प्रदान करने वाली सर्वोत्कृष्ट रचना है. बदायूँनी द्वारा लिखित इस ऐतिहासिक रचना में महमूद गजनी के आक्रमण से लेकर अकबर के 40 वर्षों के शासनकाल का पूर्ण विवरण मिलता है. इसमें अकबर के शासन की सम्पूर्ण घटनाएँ, प्रशासन एवं धार्मिक नीति की आलोचना अत्यधिक वर्णित हैं. बदायूँनी द्वारा लिखित इस रचना में सबसे अधिक सद्र-उस-सद्र के कार्यों का वर्णन मिलता है. निजामुद्दीन अहमद की तबकात-ए-अकबरी में भी अकबर के सैनिक अभियान, महजर की घोषणा एवं बैरम खाँ के पतन के बारे में उल्लेख मिलता है.

दरबारी साहित्य

कुछ मुगल शासक मुगलकालीन भारत में कवि एवं लेखकों को आश्रय देकर साहित्य रचना करवाया करते थे, इस तरह के साहित्य को दरबारी साहित्य कहते हैं. इस परम्परा का आविर्भाव अकबर के समय से हुआ. मुगलकालीन शासक अकबर ने अपने समय के सामाजिक, प्रशासनिक, राजनीतिक एवं समस्त घटनाओं का विवरण अबुल फजल से तैयार करवाया था. अबुल फजल की इस कृति को अकबरनामा कहा जाता है. अबुल फजल ने अकबरनामा के तीन खण्ड तैयार किये थे. अकबरनामा के प्रथम खण्ड में आदम से लेकर अकबर के 17वें राज्यकाल तक का वर्णन किया गया है. अकबरनामा के दूसरे खण्ड में अकबर के शासनकाल के 46 वर्षों का इतिहास वर्णित है. अबुल फजल ने अकबरनामा के अतिरिक्त आइन-ए-अकबरी भी लिखा था जिसमें तत्कालीन इतिहास वर्णित है. दरबारी साहित्य के अन्तर्गत अन्य फारसी ग्रन्थ निम्नलिखित हैं–

1. हुमायूँनामा–गुलबदन बेगम
2. तारीख-ए-शेरशाही–अब्बास खाँ शेरवानी
3. इकबालनामा-ए-जहाँगीरी–मोतमिद खाँ
4. पादशाहनामा–अब्दुल हमीद लाहौरी
5. आलमगीरनामा–मिर्जा मुहम्मद काजिम

क्षेत्रीय साहित्य

मुगलकालीन क्षेत्रीय साहित्य में मुहम्मद अली खाँ की मिरत-ए-अहमदी एवं गुलाम हुसैन की रियाजुस-सलातीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं, जो तत्कालीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालती हैं. मिरत-ए-अहमदी एवं रियाजुस-सलातीन से गुजरात के प्रशासन पर अत्यधिक जानकारी मिलती है.

इंशा एवं दस्तुर-ए-अमल

मुगलकालीन भारतीय इतिहास के प्रशासन सम्बन्धी तथ्यों का विवरण प्रस्तुत करने वाला विशिष्ट साहित्य दस्तूर-ए-अमल एवं इंशा के अन्तर्गत आता है. इस श्रेणी की रचनाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना अबुल फजल की आइने-अकबरी है, जिसमें अकबर के प्रशासन के सम्पूर्ण तथ्यों की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है. आइन-ए-अकबरी में अकबर के राजकीय आवास, सेना के गठन, टकसाल, मनसबदारों की श्रेणियाँ, फौजदार, कोतवाल एवं विभिन्न पदों के लिए निर्धारित योग्यताएँ उनके कार्य एवं राजस्व सुधार से सम्बन्धित गतिविधियों को विस्तृत रूप में वर्णित किया है. इस श्रेणी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(अ) इंशा-ए-युसुफ

(ब) इंशा-ए-ब्राह्मण

(स) खुतुत-ए-शिवाजी

(द) इंशा-ए-अबुलफजल

(य) दस्तूर-ए-अमल-ए-टोड़रमल

(र) रूक्कत-ए-आलमगीरी

(ल) अखबारात

(व) जवाबित-ए-आलमगीरी

विदेशी साहित्य एवं यात्रियों का विवरण

इस तरह के साहित्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण यूरोपीय साहित्य है, जो या तो यूरोपीय व्यापारी व यात्रियों के द्वारा लिखा गया है या फिर यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों के दस्तावेज हैं, जो तत्कालीन भारतीय स्थिति की उत्कृष्टतम परिचायक हैं.

मुगलकालीन भारत में समय-समय पर कई विदेशी यात्री भारत आए, जिनमें निम्नलिखित हैं–

(i) राल्फ फिच (अंग्रेज यात्री)

(ii) विलियम हॉकिन्स (अंग्रेज यात्री)

(iii) एडवर्ड टेरी (अंग्रेज यात्री)

(iv) पीटर मुण्डी (अंग्रेज यात्री)

(v) टैवर्नियर (फ्रांसीसी यात्री)

(vi) बर्नियर (फ्रांसीसी यात्री)

(vii) मौंसरेट (डच यात्री)

(viii) पेलार्ट (डच यात्री)

(ix) डी कास्ट्रो (पुर्तगाली यात्री)

(x) मनूची (इटालियन यात्री)

(xi) अथनीसियस निकितन (रूसी यात्री)

इनके अतिरिक्त जेसुईट पादरियों के विवरण भी मुगलकालीन इतिहास के प्रमुख स्रोत हैं. इन यात्रियों के विवरण एवं कम्पनियों के दस्तावेज से मुगल भारत की वस्तुओं के मूल्य उनके उत्पादन, व्यापार, शिल्प, परिवहन के साधन, तत्कालीन भारत की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक तथा सांस्कृतिक भारत के सन्दर्भ में विशिष्ट जानकारी मिलती है.

पुरातात्त्विक स्रोत

मुगलकालीन साहित्य के अतिरिक्त मुगलकालीन स्थापत्य, इमारतें एवं भवनों, किलों के आधार पर भी मुगलकालीन भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है. मुगलकालीन स्थापत्य में प्रमुख रूप से दिल्ली का लाल किला, आगरा का ताजमहल, फतेहपुर सीकरी एवं जामा मस्जिद उल्लेखनीय हैं. इनके आधार पर तत्कालीन भारतीय कला, संस्कृति एवं स्थापत्य की विशिष्ट जानकारी प्राप्त होती है.

बाबर (Babar)
(1526–1530 ई.)

1. वास्तविक नाम	जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर
2. प्रसिद्ध नाम	बाबर
3. जन्म	14 फरवरी, 1483 ई.
4. जन्म स्थल	फरगना राज्य की राजधानी (अन्दिजान) में
5. पिता	उमरशेख मिर्जा
6. माता	कुतलुगनिगार खानम (यूनुस की पुत्री)
7. राज्याभिषेक	8 जून, 1494 ई. (11 वर्ष, 4 माह की उम्र में)
8. स्वलिखित ग्रंथ	1. बाबरनामा या तुजुक-ए-बाबरी 2. रिसाल-ए-उसज 3. मुबइयान
9. वंश	1. पितृपक्ष से तैमूर का पाँचवाँ वंशज 2. मातृपक्ष से चंगेज खाँ का चौदहवाँ वंशज
10. स्थापित राजवंश	चगताई वंश

11. प्रचलित सिक्के
1. शाहरूख (काबुल में प्रचलित चाँदी का सिक्का)
2. बाबरी (कन्धार में प्रचलित सिक्के)
3. बाबर के चाँदी के सिक्कों में एक ओर कलमा एवं चारों खलीफाओं का नाम तथा दूसरी ओर बाबर का नाम एवं उपाधि अंकित की जाती थी.

12. गुरु — ख्वाजा उबैदुल्ला अहरार

13. स्थापत्य निर्माण
1. काबुली बाग मस्जिद, पानीपत (1529 ई. में)
2. जामी मस्जिद, (रुहेलखण्ड)
3. आगरे की मस्जिद (लोदी किले के अन्दर)
4. नूर-अफगान (आगरा में ज्यामितीय विधि पर आधारित एक उद्यान)
5. बाबरी मस्जिद (सेनापति मीर बकी द्वारा निर्मित)

14. प्रसिद्ध समकालीन चित्रकार — बिहजाद

15. पुत्री — गुलबदन बेगम

16. सेना के कुशल तोपची
1. उस्ताद अली
2. मुस्तफा

17. युद्ध पद्धति — रूमी एवं तुलगुमा पद्धति

18. उपाधि — गाजी (खानवा के युद्ध में विजय के बाद)

19. प्रमुख विजयी युद्ध	1. पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई. में इब्राहीम लोदी एवं बाबर के मध्य)
	2. चन्देरी का युद्ध (1528 ई. में बाबर व मेदिनी राय के मध्य)
	3. खानवा का युद्ध (1527 ई. में बाबर एवं राणा सांगा के मध्य)
	4. घाघरा का युद्ध (1529 ई. में बाबर एवं महमूद लोदी के मध्य)
20. बाबर के भारत पर आक्रमण	1. बाजौर एवं भीरा आक्रमण (1528–29 ई.)
	2. पेशावर आक्रमण (1519 ई.)
	3. स्यालकोट, भीरा एवं बाजौर आक्रमण (1520 ई.)
	4. सुल्तानपुर, लाहौर, दीपालपुर आक्रमण (1524 ई.)
21. पुत्र	1. हुमायूँ
	2. कामरान
	3. अस्करी
	4. हिन्दाल
22. प्रमुख मंत्री	निजामुद्दीन अली खलीफा
23. ऐतिहासिक आकलन	फरिश्ता के अनुसार "भाग्य की गेंद अथवा शतरंज के बादशाह की भाँति वह (बाबर) इधर-उधर मारा-मारा फिरा जैसे समुद्र के किनारे कंकड़ धक्के खाते फिरते हैं."
24. मृत्यु	26 दिसम्बर, 1530 को आगरा में

हुमायूँ (Humayun)
(1530-1556 ई.)

1. वास्तविक नाम	नासिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ
2. प्रसिद्ध नाम	हुमायूँ
3. जन्म	6 मार्च, 1508 ई.
4. जन्म-स्थल	काबुल
5. पिता	बाबर
6. माता	माहिम बेगम
7. बहिन	गुलबदन बेगम
8. राज्याभिषेक	30 दिसम्बर, 1530 ई.
9. शिक्षा	अरबी, फारसी, तुर्की भाषा तथा सैनिक शिक्षा तीरंदाजी एवं घुड़सवारी का प्रशिक्षण लिया
10. भाई	1. कामरान
	2. अस्करी
	3. हिन्दाल
11. प्रमुख विजित युद्ध	1. मच्छीवाड़ा का युद्ध (1555 ई., अफगान एवं मुगलों के मध्य)
	2. सरहिन्द का युद्ध (1555 ई., हुमायूँ व सिकन्दर शाह सूरी के मध्य)
12. प्रमुख पराजित युद्ध	1. चौसा का युद्ध (1539 ई., शेरशाह सूरी की विजय)
	2. कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध (1540 ई. में, शेरशाह सूरी की विजय)
13. स्थापत्य	दीने-पनाह (1535 ई.)
14. समकालीन इतिहासकार	1. मिर्जा हैदर दगलात (1500-1551 ई.)
	2. गुलबदन बेगम (1523-1560 ई.)
15. समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थ	1. कानून-ए-हुमायूँनी (खोंद मीर)
	2. हुमायूँनामा (गुलबदन बेगम)
	3. तारीख-ए-रशीदी (मिर्जा हैदर दगलात)
16. उल्लेखनीय बातें	1. हुमायूँ ज्योतिष, जादू-टोना में अत्यधिक विश्वास करता था.
	2. अफीम का नियमित सेवन करता था.
	3. सप्ताह के सात दिन सात रंग के कपड़े पहनता था.
17. ऐतिहासिक आकलन	इतिहासकार लेनपूल के अनुसार "हुमायूँ जीवनभर ठोकरें खाता रहा और ठोकर खाकर ही उसके जीवन का अन्त हुआ."
18. मृत्यु	26 जनवरी, 1556 (दीन-ए-पनाह पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर.

सूर साम्राज्य
(The Sur Empire)

बाबर ने भारत पर आक्रमण कर अफगानों को कुछ समय के लिए दुर्बल बना दिया. उनकी स्थिति अत्यधिक कमजोर हो गई थी, लेकिन पुनः हुमायूँ की कमजोरी का लाभ उठाकर अफगानों ने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया. हुमायूँ के पश्चात्त अफगानों के नेता शेरशाह सूरी (1486-1540) ने सूर साम्राज्य के अन्तर्गत भारत में अपनी सत्ता स्थापित की. शेरशाह सूरी ने इस दौरान अपनी सैनिक शक्ति एवं राजनीतिक दूरदर्शिता के फलस्वरूप मुगलों की सत्ता का अन्त कर अफगानों के अन्तर्गत सूर साम्राज्य को प्रबल बनाया, लेकिन दुर्भाग्यवश शेरशाह सूरी के उत्तराधिकारी अत्यन्त कमजोर सिद्ध हुए और शेरशाह की मृत्यु के बाद मुगलों ने अफगानों की शक्ति को नष्ट कर मुगल सत्ता पुनः स्थापित कर ली. पानीपत के द्वितीय युद्ध के पश्चात्त अफगान पूरी तरह समाप्त हो गये एवं उनकी शासन की आंकाक्षाएँ पूर्णतः विलुप्त हो गई. शेरशाह को कुशल शासक एवं राज्य निर्माता माना जाता था.

शेरशाह सूरी (Shershah Suri)

(1540–1545 ई.)

1. वास्तविक नाम	फरीद
2. प्रसिद्ध नाम	शेरशाह सूरी
3. जन्म	(i) 1486 ई. (डॉ. कानूनगो के अनुसार) (ii) 1472 ई. (अन्य इतिहासकारों के अनुसार)
4. प्रारम्भिक नाम	फरीद
5. दादा	इब्राहीम खाँ सूर
6. पिता का नाम	हसन खाँ (जौनपुर का जागीरदार)
7. मूल निवास	रोहड़ी (शेरगढ़ी, अफगानिस्तान में)
8. उपाधि	(i) शेर खाँ (दक्षिण विहार के सूबेदार बहार खाँ लोहानी द्वारा प्रदत्त) (ii) हजरते आला (1529 ई. में नुसरत शाह को पराजित करने के दौरान)
9. पत्नी	(1) लाड मलिका (ताज खाँ की विधवा) (2) दूदू बेगम (बहार खाँ लोहानी की विधवा)
10. जन्म-स्थल	होशियारपुर[1]
11. साम्राज्य स्थापन	सूरवंश या द्वितीय अफगान साम्राज्य (1540 ई. में) स्थापित किया.
12. राज्य वर्गीकरण	सम्पूर्ण साम्राज्य 47 सरकारों में वर्गीकृत था.
13. लगान प्रणालियाँ	1. बटाई 2. मुक्ताई 3. जब्ती (जगई)
14. सिक्का प्रचलन	1. चाँदी का रुपया (180 ग्रेन) 2. ताँबे का दाम (340 ग्रेन) 3. 28 टकसालें कार्यरत थीं.
15. प्रमुख युद्ध	1. चौसा का युद्ध (हुमायूँ एवं शेरशाह सूरी 1539 ई.) 2. कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध (हुमायूँ एवं शेरशाह सूरी, 1540 ई. में)
16. निर्मित इमारतें	1. हसन खाँ का मकबरा (1540 ई. में सहसराम में) 2. किला-ए-कुहना मस्जिद (1542 ई. में दिल्ली) 3. शेरशाह सूरी का मकबरा (1545 ई. में सहसराम)
17. सराय निर्माण	1700 सरायों का निर्माण
18. मृत्यु	22 मई, 1545 ई. में

1 शेरशाह सूरी का जन्म-स्थल कुछ विद्वान नारनौल एवं हिसार भी मानते हैं.

शेरशाह सूरी का प्रशासन

वास्तविक अर्थों में शेरशाह सूरी एक सक्षम प्रशासक, कुशल सेनानायक एवं महान् विजेता था, इसी के दम पर वह मुगल शासकों से विजयी होकर सूर साम्राज्य या द्वितीय अफगान राज्य की स्थापना कर सका. प्रशासन के सन्दर्भ में शेरशाह सूरी के लिए इतिहासकारों में मतैक्यता नहीं हैं. कुछ इतिहासकार उसे प्रशासनिक सुधारक तथा कुछ प्रशासनिक प्रवर्त्तक मानते हैं. शेरशाह सूरी की प्रशासकीय नीतियाँ निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित थीं–

1. शेरशाह सूरी ने अपने शासक होने की अवधि में हिन्दू एवं मुसलमानों दोनों को समान अधिकार एवं दर्जा प्रदान किया. वह अपने उत्कृष्ट शासन के मूल में समन्वयवादी नीति को सर्वोपरि मानता था.

2. शेरशाह सूरी ने अपने साम्राज्य की सारी शक्ति को केन्द्रित कर नियन्त्रित किया, जिससे उसे शक्तिशाली होने में सहायता मिली और विघटनकारी शक्तियाँ नुकसान पहुँचाने में अक्षम रहीं.

3. शेरशाह सूरी के प्रशासन में जनकल्याणकारी राज्य की अवधारणा को पूरा करने वाले समस्त तत्व विद्यमान थे.

शेरशाह सूरी का प्रशासन निम्नलिखित तीन भागों में वर्गीकृत था–

1. केन्द्रीय संगठन
2. प्रान्तीय व्यवस्था
3. स्थानीय शासन

केन्द्रीय संगठन
(Central Organisation)

अफगान साम्राज्य में शेरशाह सूरी के काल में सम्पूर्ण शासन का केन्द्र शासक या सुल्तान होता था. उसने राजधानी आगरा बनाई थी और वहीं से शासन का कार्यभार सँभालता था. वह शासन का सर्वोच्च पदाधिकारी होता था एवं न्यायपालिका, कार्यपालिका एवं सैनिक मामलों का प्रमुख था. स्वयं शेरशाह सभी कर्मचारियों की नियुक्तियाँ करता था. उसके ऊपर कोई नियन्त्रण नहीं था, सीधे शब्दों में वह एक उदार तानाशाह था. शेरशाह के प्रमुख प्रशासकीय विभाग निम्नलिखित थे–

(i) दीवान-ए-वजारत–आय-व्यय की देखभाल करने वाला

(ii) दीवान-ए-आरिज–सैनिक विभाग का प्रधान

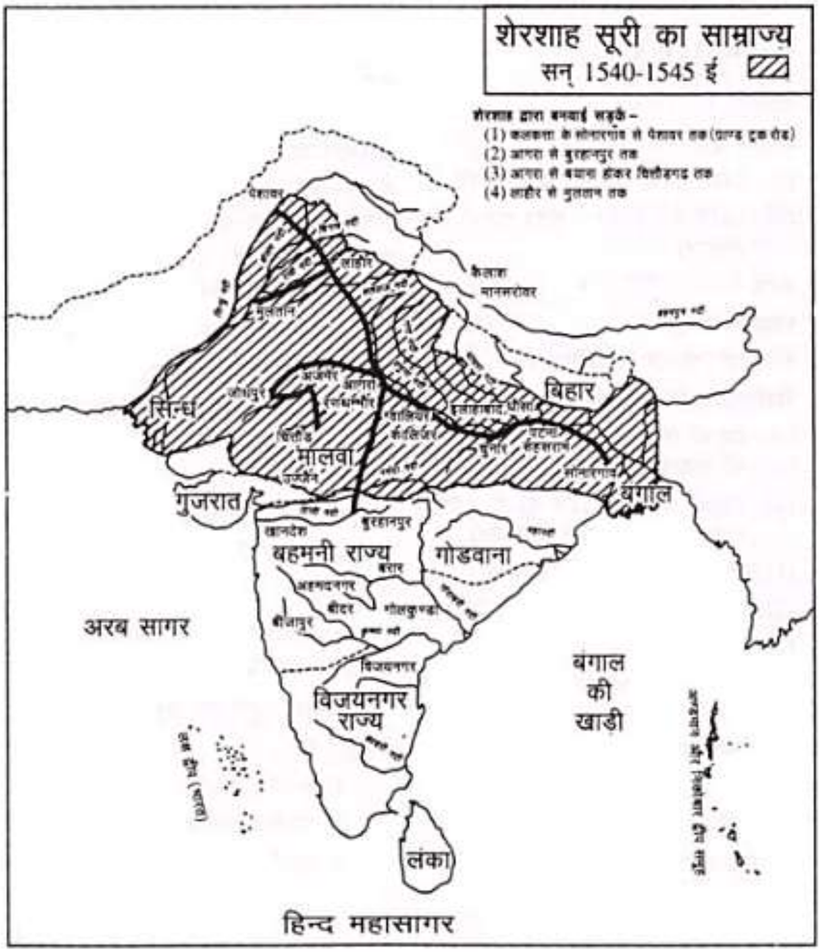

(iii) दीवान-ए-रसालत (दीवान-ए-मोहतसिब)–विदेश मंत्री

(iv) दीवान-ए-इन्शा–सरकारी अभिलेखाकार

(v) दीवान-ए-काजा–मुख्य न्यायाधीश

(vi) दीवान-ए-वरीद–गुप्तचर विभाग का संगठक

प्रान्तीय व्यवस्था (Provincial Setup)

- डॉ. परमात्मा शरण के अनुसार शेरशाह सूरी का साम्राज्य विभिन्न प्रान्तों में वर्गीकृत था. सैनिक पदाधिकारी प्रान्तपति के रूप में प्रान्तों का शासन सँभालते थे. प्रान्तीय इकाई सरकारों में वर्गीकृत थी.
- डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव के अनुसार शेरशाह सूरी के समय सारा अफगान साम्राज्य प्रान्त या सूबों में नहीं, अपितु इक्ता (Ikta) में विभक्त था, जिन पर सैनिक अधिकारी शासन करते थे. सुल्तान का इक्ताओं पर कठोर नियन्त्रण होता था.
- प्रान्तीय अधिकारियों को हाकिम, अमीन एवं फौजदार जैसे पदनामों से सम्बोधित किया जाता था.
- शेरशाह सूरी के समय हैवात खाँ पंजाब का गवर्नर था, जिसे मसनद-ए-आली की उपाधि से विभूषित किया गया था तथा उसे 30,000 सैनिक रखने की अनुमति प्राप्त थी.

स्थानीय शासन (Local Administration)

प्रान्तीय प्रशासन की अपेक्षा शेरशाह सूरी का सर्वाधिक ध्यान स्थानीय प्रशासन पर था. शेरशाह का स्थानीय शासन तीन भागों में वर्गीकृत था–

1. सरकार, 2. परगना, 3. ग्राम

सरकार

- जिलों को सरकार कहा जाता था. प्रान्त या सूबे सरकारों में वर्गीकृत थे. शेरशाह के शासनकाल में लगभग 47 सरकारें थीं.

- शेरशाह के काल में स्थानीय प्रशासन को मुख्यतः निम्न दो अधिकारी सँभालते थे–

  1. शिकदार-ए-शिकदारान
  2. मुंसिफ-ए-मुंसिफान

- शिकदार-ए-शिकदारान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पदाधिकारी होता था. वह अपने अधीनस्थ शिकदारों के कार्यों को देखता था. सरकारी कानून के पालन से लेकर सभी कार्य उसी के द्वारा सम्पादित किये जाते थे. यह एक सैनिक अधिकारी का पद होता था एवं उसे 2000 से 5000 सैनिकों को रखने का अधिकार प्राप्त था.
- दूसरा प्रमुख स्थानीय पदाधिकारी मुंसिफ-ए-मुंसिफान होता था, जो शिकदार-ए-शिकदारान का अधीनस्थ पदाधिकारी होता था. उसे प्रमुख न्यायाधीश के कुछ सीमित अधिकार प्राप्त थे. मुंसिफ-ए-मुंसिफान परगने के अमीनों की देखभाल करता था एवं उनके निर्णयों के खिलाफ अपीलें सुनता था.
- डॉ. परमात्मा शरण के अनुसार सरकार में शिकदार-ए-शिकदारान की सहायता के लिए फौजदार या सैनिक पदाधिकारी रहता था. कुछ लिपिक एवं अन्य पदाधिकारी भी होते थे.

परगना

परगना स्थानीय शासन में सरकार से छोटी प्रशासनिक इकाई होती थी. परगने में निम्नलिखित पदाधिकारी होते थे–

(i) शिकदार
(ii) फोतदार
(iii) कारकुन
(iv) अमीन

- शिकदार परगना का सर्वोच्च अधिकारी होता था एवं शिकदार-ए-शिकदारान का अधीनस्थ कर्मचारी होता था. परगना में शांति एवं व्यवस्था रखना उसका प्रमुख कार्य होता था.
- अमीन या मुंसिफ परगने की सारी भूमि व्यवस्था का नियन्त्रक होता था. लगान सम्बन्धी कार्य एवं मुकदमों की देखभाल करना उसका प्रमुख कार्य होता था.
- शिकदार एवं अमीन का अधीनस्थ कर्मचारी फोतदार होता था. वह कोषाध्यक्ष होता था. परगने की सारी आमदनी उसके पास जमा होती थी.
- कारकुन जिसे क्लर्क कहा जाता था. हिन्दी एवं फारसी भाषा के कारकुन होते थे जो लगान, भूमि व्यवस्था एवं आय-व्यय से सम्बन्धित लेखा-जोखा तैयार करते थे.

ग्राम्य व्यवस्था

- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी. एक परगना में अनेक गाँव होते थे. ग्राम प्रशासन का प्रमुख मुखिया होता था. मुखिया गैर सरकारी पदाधिकारी होता था.
- पटवारी, मुकद्दम एवं चौकीदार मुखिया के सहायक कर्मचारी होते थे, जो शांति व्यवस्था, अपराध रोकने एवं लगान वसूलने का कार्य करते थे.

भारत में पुर्तगाली
(The Portugese in India)

- भारत में यूरोपीय जातियों में सबसे पहले आने वाले पुर्तगाली थे, लेकिन उन्हें पूरी तरह सफलता प्राप्त नहीं हुई.
- 17 मई, 1498 एक साहसी पुर्तगाली नाविक वास्को-डि-गामा ने कालीकट के तट पर आकर भारत में पुर्तगालियों के आने का शुभारम्भ किया. वास्कोडिगामा को वहाँ के तत्कालीन शासक जमोरिन ने वहाँ पर बसने एवं व्यापार करने की अनुमति प्रदान की. उस दौरान भारत में अरबियों को व्यापार करने का एकाधिकार प्राप्त था. अतएव यूरोपियन पुर्तगालियों एवं अरबियों के मध्य प्रतिस्पर्द्धा बढ़ गई.
- पुर्तगालियों ने सबसे पहले 1505 ई. तक सशस्त्र व्यापार की नीति का अनुसरण किया. इस नीति के अनुसार प्रतिवर्ष एक शस्त्रों से युक्त पुर्तगाली व्यापारिक बेड़ा भारत आकर यहाँ से माल लेकर पुर्तगाल चला जाता था. अरबियों के विरोध के फलस्वरूप कालीकट, कोचीन एवं कन्नानोर में व्यापारिक केन्द्र स्थापित कर पुर्तगाली व्यापार करने लगे. इसी तरह जमोरिन को असफलता प्राप्त हुई, जिससे पुर्तगालियों का हौसला बुलन्द हो गया.
- कालान्तर में डी-अल्मेडा नामक पुर्तगाली भारत में पुर्तगाली अधिकृत क्षेत्रों का अधिकृत गवर्नर नियुक्त होकर भारत आया. डी-अल्मेडा ने पुर्तगाली शक्ति का विस्तार करने के उद्देश्य से नीले पानी की नीति का अनुसरण किया. इसके अन्तर्गत उसका उद्देश्य हिन्द महासागर में पुर्तगालियों का अस्तित्व स्थापित करना था, लेकिन वह असफल रहा और 1509 ई. में वह वापस पुर्तगाल लौट गया.
- डी-अल्मेडा के बाद 1509 ई. में भारत में पुर्तगाली गवर्नर बनकर अलफांसो-डी-अल्बुकर्क भारत आया. उसने साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण किया. अल्बुकर्क भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक था. उसने कोचीन में पुर्तगाली दुर्ग का निर्माण कराया था.

मुगलकाल में क्षेत्रीय साहित्यिक विधाओं में वृद्धि

मुगलकाल में साहित्यिक दिशा में अत्यधिक प्रगति हुई. फारसी, उर्दू, हिन्दी एवं संस्कृत के अतिरिक्त इस काल में बंगला, मराठी, पंजाबी, गुजराती, राजस्थानी एवं उड़िया जैसी भाषाओं में साहित्यिक रचनाएँ हुईं. फारसी, अरबी एवं संस्कृत के श्रेष्ठ ग्रन्थों के अनुवाद की प्रक्रिया का भी प्रारम्भ हुआ. इस काल में राजाओं एवं राजपरिवारों द्वारा साहित्यिक विकास के लिए विशेष संरक्षण दिया.

मुगलकालीन भारत में फारसी भाषा राजभाषा थी. अतः इस दौरान सर्वाधिक साहित्य फारसी भाषा में लिखा गया.

सर्वप्रथम तुर्की भाषा में मुगल सम्राट् बाबर ने अपनी आत्मकथा–बाबर नामा या तुजुक-ए-बाबरी लिखी एवं बाबर लिपि का प्रसार किया. बाबर के समय मिर्जा हैदर ने तारीख-ए-रशीदी तथा सैयद मुकब्बर अली ने तवारीख नामक ग्रन्थों की रचना की.

- हुमायूँ के शासनकाल में हुमायूँ की बहिन गुलबदन बेगम ने हुमायूँ की जीवनी हुमायूँनामा की रचना की, जिसमें उसके समय के सम्पूर्ण क्रियाकलापों की जानकारी मिलती है. हुमायूँ के काल में निम्नलिखित रचनाएँ लिखी गईं–
  (i) तारीख-ए-हुमायूँ–शेख वजायिद
  (ii) तजकीरात-उल-वाकयात–जौहर
  (iii) कानून-ए-हुमायूँनी–खवन्द मीर
- हुमायूँ के पश्चात्त अकबर का काल साहित्यिक दिशा में सर्वाधिक श्रेष्ठतम रहा. साहित्यिक दृष्टिकोण से अकबर के शासनकाल को मुगलकालीन भारत के इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है. अकबर के राजदरबार में निम्नलिखित लेखक एवं कवि थे–
  (i) अबुल फजल
  (ii) बदायूँनी
  (iii) अब्दुर्रहीम खानखाना
  (iv) फैजी
  (v) गिजाली
  (vi) महेश ठाकुर

  अकबर के काल में लिखी गई रचनाओं में पद्यीय रचना, अनूदित ग्रन्थ एवं ऐतिहासिक ग्रन्थ थे. अकबर के समय लिखी गई कुछ रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

रचनाएँ	लेखक
(i) अकबर नामा	अबुल फजल
(ii) आइन-ए-अकबरी	अबुल फजल
(iii) मुन्तखाब-उत-तवारीख	बदायूँनी
(iv) तबकात-ए-अकबरी	निजामुद्दीन अहमद
(v) अकबरनामा	फैज सरहिन्दी
(vi) तारीख-ए-सलातीन	अहमद यादगार
(vii) मासीर-ए-रहीमी	अब्दुर्रहीम खानखाना

- बदायूँनी एवं अबुल फजल अकबर के समय के सर्वाधिक ख्याति प्राप्त इतिहासकार थे.
- अकबर के समय महाभारत, रामायण, लीलावती, अथर्ववेद, राजतरंगिणी, नल-दमयन्ती, कालिय दमन, पंचतन्त्र एवं हरिवंश जैसी संस्कृत रचनाओं का फारसी भाषा में अनुवाद किया गया. बाइबिल एवं अकबर की जीवनी का फारसी भाषा में अनुवाद किया गया.
- जहाँगीर के काल में साहित्यिक दिशा में अकबर की तरह ही प्रगति हुई. जहाँगीर स्वयं विद्वान् व्यक्ति था, उसने कवियों एवं लेखकों को राज्याश्रय प्रदान किया. तुजुक-ए-जहाँगीर जहाँगीर की आत्मकथा थी, जिसे स्वयं ने लिखा था, इसे पूरा मोतमिद खाँ ने किया था. जहाँगीर के समय की प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ निम्नलिखित हैं–
  1. इकबालनामा-ए-जहाँगीरी–मोतमिद खाँ
  2. मासिर-ए-जहाँगीरी–ख्वाजा कामगार
  3. तारीख-ए-फरिश्ता–फरिश्ता
- शाहजहाँ का काल भी साहित्यिक दिशा में श्रेष्ठ रहा. उसका बड़ा पुत्र स्वयं एक प्रसिद्ध विद्वान् एवं कवि था. शाहजहाँ के काल में इनायत खाँ एवं अब्दुल हमीद लाहौरी जैसे इतिहासकार हुए. शाहजहाँ के काल में भगवद्गीता, उपनिषद्, योगवशिष्ठ, रामायण एवं प्रबोध चन्द्रोदय जैसे ग्रन्थों का अनुवाद एवं रूबाइयाँ, दीवान, कसीदा एवं गजल की लम्बे पैमाने पर रचनाएँ हुईं. शाहजहाँ के समय की रचनाएँ निम्नलिखित हैं–
  (i) पादशाहनामा–अब्दुल हमीद लाहौरी
  (ii) शाहजहाँनामा–अब्दुल हमीद लाहौरी
  (iii) बादशाहनामा–कजविनी
  (iv) अमल-ए-सालिह–मुहम्मद सालिह
- औरंगजेब का काल साहित्यिक विकास की दिशा में सर्वाधिक धीमा रहा. औरंगजेब को इतिहास लेखन पसन्द नहीं था. उसके समय में निम्नलिखित कृतियों की रचनाएँ हुईं–

रचनाएँ	लेखक
(i) मुन्तखाब-उल-लुबाब	खाफी खाँ
(ii) आलमगीरनामा	मिर्जा मुहम्मद काजिम शीराजी
(iii) फतुहात-ए-आलमगीरी	ईश्वरदास नागर
(iv) खुलासत-उत्-तवारीख	सुजानराय
(v) सियरूलमुताखरीन (सिजारूल मुतखरीन)	गुलाम हुसैन

उर्दू भाषा

मुगलकाल में फारसी का प्रचलन औरंगजेब के बाद कम हो गया और उसके स्थान पर उर्दू भाषा का उदय हुआ. मुगल बादशाह मुहम्मदशाह के समय उर्दू भाषा सर्वाधिक लोकप्रिय हुई. मुगलकालीन भारत में उर्दू साहित्य के प्रणेता कवि एवं लेखकों में निम्नलिखित हैं–

(i) हातिम

(ii) अफजली इलाहाबादी

(iii) नुसरती बीजापुरी

(iv) वली औरंगाबादी

हिन्दी साहित्य

मुगलकाल में हिन्दी साहित्य को सर्वाधिक तत्कालीन भक्ति आन्दोलन से विकास की दिशा मिली. इस काल में प्रेममार्गी सूफी शाखा के विख्यात कवि मलिक मुहम्मद जायसी हुए, जिन्होंने पदमावत, अखरावट एवं आखिरी कलाम जैसे ग्रन्थों की रचना की. अन्य कवियों एवं लेखकों में निर्गुणपंथी कवि संत दादू दयाल, कबीरदास, नरहरि एवं मलूक दास प्रमुख थे. इस काल की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(i) रामचरितमानस–तुलसीदास

(ii) गीतावली, विनयपत्रिका, दोहावली, कवितावली–तुलसीदास

(iii) सूरसागर–सूरदास

(iv) कविप्रिया, रसिकमंजरी, अलंकार मंजरी–केशवदास

(v) शिवराज भूषण–कवि भूषण

संस्कृत साहित्य

- अकबर के अतिरिक्त किसी भी मुगल शासक ने संस्कृत साहित्य में रुचि नहीं थी. अकबर ने अपने काल में फारसी-संस्कृत शब्दावली एवं भाषा कोष 'फारसी प्रकाश' लिखाया. महेश ठाकुर ने संस्कृत में अकबर के समय का इतिहास लिखा. जैन आचार्य पद्मसुन्दर की शृंगारदर्पण एवं सिद्धचन्द्र की भानुचन्द्रचरितम् इसी दौरान लिखी गई थी.

क्षेत्रीय भाषा साहित्य

इस काल में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में ग्रन्थ लिखे गये, तथापि यह कहना होगा कि वैष्णव धर्म के प्रसार के फलस्वरूप सर्वाधिक विकास बांग्ला भाषा का हुआ. इस काल के बांग्ला कवि निम्नलिखित थे–

(i) कृष्णदास कविराज

(ii) वृन्दावनदास

(iii) जयनन्द

(iv) नरहरि चक्रवर्ती

(v) मुकुन्दराम चक्रवर्ती

बांग्ला भाषा की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(i) चैतन्य चरितामृत

(ii) चैतन्य भागवत

(iii) चैतन्य मंगल

(iv) भक्ति रत्नाकर

(v) कृतिवास की रामायण

(vi) कवि किंकणचण्डी

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

मुगलकालीन शब्दावली

1. उश्र	मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर
2. जजिया	हिन्दुओं से लिया जाने वाला कर
3. जकात	मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर
4. अक्ता	सैनिक पदाधिकारियों को जीवन-निर्वाह एवं सैन्य संचालन के लिए दी जाने वाली राशि.
5. हश्मे-कल्ब	केन्द्र सरकार की सेना
6. इदरार	धार्मिक एवं विद्वान् व्यक्तियों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता.
7. किसास	गम्भीर अपराध के प्रति दिया जाने वाला दण्ड
8. काजी-उल-कजात	प्रमुख न्यायाधीश
9. नायब	सुल्तान की अनुपस्थिति में शासन का भार सँभालने वाला.
10. नदीम	सुल्तान का सहचर
11. मीर-बख्शी	सैन्य विभाग का प्रमुख
12. सद्र-उस-सद्र	धार्मिक मामलों में बादशाह का सलाहकार
13. मुहतसिब	प्रजा के नैतिक चरित्र का संरक्षक
14. मीर-ए-आतिश	तोपखाना विभाग का प्रधान
15. इनामघर	भोजन तथा आराम का कक्ष
16. दाग महाली	अकबर के समय में एक विभाग जिसका कार्य हाथी घोड़ों पर दाग लगाना था.
17. अहदी	बादशाह द्वारा नियुक्त अंगरक्षक
18. दाखिली	राज्य द्वारा नियुक्त मनसबदारों का अधीनस्थ
19. अमीरे आजम	2500 से अधिक मनसबदार
20. अमीर	500 से 2500 तक के मनसबदार को
21. मनसबदार	500 से नीचे मनसब प्राप्त करने वाला
22. सम्पत्ति जाब्ती प्रथा	मनसबदार की मृत्यु पर राज्य द्वारा सम्पत्ति जब्त करना.
23. पोलज	सर्वश्रेष्ठ भूमि जिस पर प्रतिवर्ष खेती होती हो.
24. गाजी	जिहाद में विश्वास रखने वाला वीर सिपाही या योद्धा.
25. मिरास	वंशानुगत अधिकार
26. जामी	प्रधान मस्जिद

- मुगल सम्राट् हुमायूँ ने अफगानी सेना को 15 मई, 1555 ई. में मच्छीवाड़ा के युद्ध में परास्त कर सम्पूर्ण पंजाब पर अधिकार कर लिया. इस सेना का नेतृत्व तातार खाँ एवं हैवात खाँ कर रहे थे.
- हल्दीघाटी का युद्ध (राजस्थान में उदयपुर के समीप) मुगल सेना एवं महाराणा प्रताप के मध्य 1576 ई. में लड़ा गया.
- अकबर ने सभी धर्मों के सार का संग्रह कर 1582 ई. में दीन-ए-इलाही (तौहीद-ए-इलाही) नामक धर्म का प्रवर्त्तन किया था. दीन-ए-इलाही या तौहीद-ए-इलाही का शाब्दिक अर्थ दैवी एकेश्वरवाद होता है.
- अकबर ने अपनी नयी नीति के तहत 1562 ई. में दास प्रथा, 1563 ई. में तीर्थयात्रा कर एवं 1564 ई. में जजिया कर समाप्त किया था.
- प्रजा में शारियत के नियमों के अनुपालन की जागृति हेतु मुहतसिवों की नियुक्ति सभी प्रान्तों में औरंगजेब ने की थी.
- औरंगजेब को कट्टरता के कारण उसके जीवनकाल में 'जिन्दा पीर' एवं मृत्यु के बाद 'अर्श आशियानी' (स्वर्ग में रहने वाला) कहा जाता था.
- अठबाब स्थानीय करों को कहा जाता था.
- अकबर ने 1560 ई. में 'ख्वाजा अब्दुल मजीद' को आसफ खाँ की उपाधि प्रदान कर अपना वजीर बनाया था एवं 1567 ई. में मुजफ्फर खाँ को दीवान बनाया था.
- मदद-ए-माश सम्राट् द्वारा विद्वानों, विधवाओं वृद्धों एवं असमर्थों को कर मुक्त भूमि प्रदान करना मदद-ए-माश कहलाता था.
- लाल पत्थर से बनाया गया आगरा का किला अकबर ने बनवाया था, जिसका प्रधान कारीगर कासिम खाँ था.
- फतेहपुर सीकरी में निर्मित जोधाबाई के महल गुजराती शैली में बने हुए हैं.
- जामी मस्जिद एवं बुलन्द दरवाजा अकबर ने गुजरात विजय के अवसर पर बनवाया था जिसमें जामी मस्जिद का वर्णन विदेशी यात्री रूमानी ने 'पत्थर में रुमानी कथा के रूप' में किया था.
- पीट्राडुरा की पच्चीकारी जो इटेलियन पद्धति है, शाहजहाँ के काल में पुरानी पत्थर की पच्चीकारी के स्थान पर प्रचलित हुई थी.
- ताजमहल के मुख्य स्थापत्यकार उस्ताद अहमद लाहौरी एवं ईसा खाँ थे, जिन्हें शाहजहाँ ने 'नादिर-उल-अस्त्र' की उपाधि प्रदान की थी.
- मीर सैय्यद अली (तब्रेजवासी) एवं ख्वाजा अब्दुस्समद (शीराजवासी) दो चित्रकार थे, जिन्हें हुमायूँ फारस से लाया था. अब्दुस्समद को अकबर ने 'शीरी कलम' की उपाधि प्रदान की थी.
- चहारबुर्जी बाग औरंगजेब की पुत्री जेब्बुनिस्सा ने लाहौर में लगवाया था.
- फैजी, उत्बी एवं गिजाली फारसी साहित्य के प्रख्यात कवि थे जो अकबरकालीन थे.
- कोहिनूर हीरा गोलकुण्डा की खान में प्राप्त हुआ था.

फारसी में अनुदित प्रमुख ग्रन्थ एवं अनुवादकार

ग्रन्थ	अनुवादकार
1. महाभारत	फैजी, अबुल फजल, बदायूँनी, नकीब खाँ
2. रामायण	बदायूँनी
3. लीलावती	फैजी
4. कालियदमन	अबुल फजल
5. नल-दमयन्ती	फैजी
6. राजतरंगिणी	शाह मुहम्मद शाहाबादी

विद्यार्थियों की उपाधि

उपाधि	विद्यार्थी
1. फाजिल	तर्कदर्शन के विद्यार्थी
2. आलिम	धार्मिक शिक्षा के विद्यार्थी
3. काबिल	साहित्य का विद्यार्थी

स्मरणीय तथ्य

- सन् 1526 ई. में बाबर ने भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की. मुगलसत्ता को क्रमशः हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब ने सँभाला.
- मुगलसत्ता का पतन 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद से ही प्रारम्भ होने लगा.
- स्थूल रूप में मुगलकालीन इतिहास के स्रोतों को निम्नलिखित दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

  1. साहित्यिक स्रोत
  2. पुरातात्त्विक स्रोत

- मुगलकालीन इतिहास के स्रोतों में प्रमुख स्रोत बाबर द्वारा लिखित बाबरनामा का नाम उल्लेखनीय है. अन्य स्रोत हुमायूँनामा, तुजुक-ए-जहाँगीरी से भी मुगलकालीन इतिहास पर प्रकाश पड़ता है.

- मुगलकालीन भारतीय इतिहास के स्रोतों में 'तबकात' श्रेणी की रचनाएँ निम्नलिखित हैं–
  (i) तबकात-ए-अकबरी–निजामुद्दीन अहमद
  (ii) मुन्तखाब-उत-तवारीख–बदायूँनी
  (iii) गुलशन-ए-इब्राहीमी–फरिश्ता
  (iv) मुन्तखाब-उल-लुबाब–खफी खाँ
- दरबारी साहित्य के अन्तर्गत फारसी ग्रन्थ निम्नलिखित हैं–
  1. हुमायूँनामा–गुलबदन बेगम
  2. तारीख-ए-शेरशाही–अब्बास खाँ शेरवानी
  3. इकबालनामा-ए-जहाँगीरी–मोतमिद खाँ
  4. बादशाहनामा–अब्दुल हमीद लाहौरी
  5. आलमगीरनामा–मिर्जा मुहम्मद काजिम
- मुगलकालीन क्षेत्रीय साहित्य में मुहम्मद अली खाँ की मिरत-ए-अहमदी एवं गुलाम हुसैन की रियाजुस सलातीन महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं.
- मुगलकालीन स्थापत्य में दिल्ली का लाल किला, आगरा का ताजमहल, फतेहपुर सीकरी एवं जामा मस्जिद प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं जिनके आधार पर मुगलकालीन भारतीय कला, संस्कृति एवं स्थापत्य की जानकारी मिलती है.
- हुमायूँ के पश्चात्त अफगानों के नेता शेरशाह सूरी (1486-1540 ई.) ने सूर साम्राज्य के अन्तर्गत भारत में अपनी सत्ता स्थापित की.
- शेरशाह सूरी का प्रशासन निम्नलिखित तीन भागों में वर्गीकृत था–
  1. केन्द्रीय संगठन 2. प्रान्तीय व्यवस्था
  3. स्थानीय शासन
- शेरशाह सूरी के काल में सम्पूर्ण शासन का केन्द्र शासक या सुल्तान होता था.
- शेरशाह के प्रमुख प्रशासकीय विभाग निम्नलिखित थे–
  1. दीवान-ए-वजारत–आय-व्यय की देखभाल करने वाला
  2. दीवान-ए-आरिज–सैनिक विभाग का प्रधान
  3. दीवान-ए-रसालत (दीवान-ए-मोहतसिब)–विदेशमंत्री
  4. दीवान-ए-इन्शा–सरकारी अभिलेखाकार
  5. दीवान-ए-काजा–मुख्य न्यायाधीश
  6. दीवान-ए-वरीद–गुप्तचर विभाग का संगठन
- शेरशाह सूरी के काल में प्रान्तीय अधिकारियों को हाकिम, अमीन एवं फौजदार जैसे पदनामों से सम्बोधित किया जाता था.
- शेरशाह सूरी के समय हैवात खाँ पंजाब का गवर्नर था, जिसे मसनद-ए-आली की उपाधि से विभूषित किया गया.
- शेरशाह का स्थानीय शासन तीन भागों में वर्गीकृत था–
  1. सरकार 2. परगना
  3. ग्राम
- शेरशाह के काल में स्थानीय प्रशासन को मुख्यतः दो अधिकारी सँभालते थे–
  1. शिकदार-ए-शिकदारान
  2. मुंसिफ-ए-मुंसिफान
- परगना स्थानीय शासन में निम्नलिखित पदाधिकारी होते थे–
  1. शिकदार 2. फोतदार
  3. कारकुन 4. अमीन
- शिकदार परगना का सर्वोच्च अधिकारी था. परगना में शान्ति एवं व्यवस्था बनाये रखना उसका प्रमुख कार्य होता था.
- अमीन या मुंसिफ परगने की भूमि व्यवस्था का नियन्त्रण करता था.
- फोतदार परगना का कोषाध्यक्ष होता था. परगने की सारी आमदनी उसके पास ही जमा होती थी.
- कारकुन जिसे क्लर्क कहा जाता था. हिन्दी एवं फारसी भाषा के कारकुन होते थे जो लगान, भूमि व्यवस्था एवं आय-व्यय से सम्बन्धित लेखा-जोखा तैयार करते थे.
- 17 मई, 1498 ई. को एक साहसी पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा ने कालीकट के तट पर आकर भारत में पुर्तगालियों के आने का शुभारम्भ किया.
- मुगलकाल में सर्वाधिक ग्रन्थों की रचना फारसी में हुई, इनमें से कुछ प्रमुख ग्रन्थ निम्नलिखित हैं–

  तुजुक-ए-बाबरी अथवा बाबरनामा, तारीख-ए-रशीदी, तवारीख, हुमायूँ की जीवनी 'हुमायूँनामा', कानून-ए-हुमायूँनी, तारीख-ए-हुमायूँ आदि.
- अकबर के शासनकाल को साहित्यिक विकास की दृष्टि से मुगलकालीन भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है. अकबर के दरबार के प्रमुख कवि अबुल फजल, अब्दुर्रहीम खानखाना, बदायूँनी, गिजाली, फैजी, महेश ठाकुर इत्यादि थे.
- अकबर के समय के सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक ग्रन्थ निम्न-लिखित थे–आइन-ए-अकबरी एवं अकबरनामा (अबुल फजल), मुन्तखाब-उत-तवारीख (बदायूँनी), तबकात-ए-

अकबरी (निजाममुद्दीन अहमद), अकबरनामा (फैज सरहिन्दी), तारीख-ए-सलातीन (अहमद यादगार), मासीर-ए-रहीमी (अब्दुर्ररहीम खानखाना).

- अकबर के समय संस्कृत की रचित रचनाओं–महाभारत (रज्मनामा), लीलावती, अथर्ववेद, राजतरंगिणी, नल-दमयंती, रामायण, नल-दामन, कालिया दमन (आयार दानिश), पंचतन्त्र (अनवार सुहैली) तथा हरिवंश पुराण आदि का फारसी भाषा में अनुवाद किया गया.
- जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में भी पर्याप्त साहित्यिक प्रगति हुई. इस काल की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं–आत्मकथा–तुजुक-ए-जहाँगीरी (जहाँगीर), इकबालनामा-ए-जहाँगीरी (मोतमिद खाँ), मासीर-ए-जहाँगीरी (ख्वाजा कामगार), तारीख-ए-फरिश्ता (फरिश्ता), पादशाहनामा और शाहजहाँनामा (लाहौरी), बादशाहनामा (कजविनी), अमल-ए-सालिह (मुहम्मद सालिह), मज्जमउल बहरीन (दारा) आदि.
- बाबर के समय सुहरत-ए-आम विभाग का कार्य स्कूलों एवं कॉलेजों की स्थापना कराना था.
- मुगलों के समय फारसी भाषा राजभाषा बन गई थी. फारसी भाषा में अनेक ग्रन्थों का अनुवाद किया गया.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना कब हुई ?
(A) 1527 ई. (B) 1526 ई.
(C) 1622 ई. (D) 1525 ई.

2. औरंगजेब की मृत्यु कब हुई थी ?
(A) 1707 ई. (B) 1807 ई.
(C) 1726 ई. (D) 1725 ई.

3. मुगलकालीन इतिहास के साहित्यिक स्रोत निम्न में कौनसा नहीं है ?
(A) तुजुक-ए-बाबरी (B) वाकियात-ए-बाबरी
(C) दस बोध (D) तुजुक-ए-जहाँगीरी

4. 'हुमायूँनामा' किसने लिखा था ?
(A) बाबर ने (B) हुमायूँ ने
(C) जहाँआरा ने (D) गुलबदन बेगम ने

5. 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' किसके द्वारा लिखित है ?
(A) बाबर (B) जहाँगीर
(C) अकबर (D) गुलबदन

6. बाबरनामा या तुजुक-ए-बाबरी किसके द्वारा लिखित है ?
(A) बाबर (B) जहाँगीर
(C) अबुल फजल (D) हुमायूँ

7. 'बाबरनामा' किस भाषा में लिखित है ?
(A) फारसी में (B) तुर्की में
(C) अरबी में (D) उर्दू में

8. 'मुन्तखाब-उत-तवारीख' किसने लिखी है ?
(A) अकबर
(B) बाबर
(C) अब्दुर्रहीम खानखाना
(D) बदायूँनी

9. निम्नलिखित में से कौन अकबर के समय के दरबारी कवि नहीं थे ?
(A) अब्दुर्रहीम खानखाना
(B) सूरदास
(C) महेश ठाकुर
(D) इनमें से कोई नहीं

10. निम्नलिखित में से कौनसी तबकात रचना नहीं है ?
(A) तुजुक-ए-जहाँगीरी
(B) तबकात-ए-अकबरी
(C) मुन्तखाब-उत-तवारीख
(D) इनमें से कोई नहीं

11. किस ऐतिहासिक रचना में महमूद गजनी के आक्रमण से लेकर अकबर के 40 वर्षों तक के शासनकाल का विवरण मिलता है ?
(A) तुजुक-ए-जहाँगीरी
(B) तबकात-ए-अकबरी
(C) मुन्तखाब-उत-तवारीख
(D) बाबरनामा

12. मुन्तखाब-उत-तवारीख किसके द्वारा रचित है ?
(A) अकबर (B) जहाँगीर
(C) फैजल (D) बदायूँनी

13. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–

(a) हुमायूँनामा	(1) अब्दुल हमीर लाहौरी
(b) बादशाहनामा	(2) मिर्जा मुहम्मद काजिम
(c) इकबालनामा-ए-जहाँगीरी	(3) गुलबदन बेगम
	(4) मोतमिद खाँ
(d) आलमगीरनामा	

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	1	4	2
(B)	4	3	2	1
(C)	2	3	4	1
(D)	3	4	1	2

14. 'रियाजुस सलातीन' किसकी कृति है ?
(A) अकबर (B) बाबर
(C) गुलाम हुसैन (D) इनमें से कोई नहीं

15. 'आइन-ए-अकबरी' किसके द्वारा लिखित है ?
(A) अकबर (B) अबुल फजल
(C) हुमायूँ (D) मोतमिद खाँ

16. मुगलकालीन भारत में आये विदेशी पेलार्ट कौन थे ?
(A) फ्रांसीसी कवि (B) डच यात्री
(C) अंग्रेज यात्री (D) इटालियन यात्री

17. निम्नलिखित में से कौनसा मुगलकालीन पुरातात्त्विक स्रोत नहीं है ?
(A) ताजमहल (B) लाल किला
(C) हवामहल (D) इनमें से कोई नहीं

18. मुगलकालीन बादशाह बाबर का वास्तविक नाम क्या है ?
(A) जहाँगीर
(B) जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर
(C) उमर शेख मिर्जा
(D) इनमें से कोई नहीं

19. बाबर का जन्म कब हुआ ?
(A) 14 फरवरी, 1483 ई.
(B) 15 जून, 1482 ई.
(C) 14 फरवरी, 1480 ई.
(D) 13 फरवरी, 1450 ई.

20. गुलबदन बेगम किसकी पुत्री थी ?
(A) हुमायूँ (B) अकबर
(C) बाबर (D) इनमें से कोई नहीं

21. पानीपत का प्रथम युद्ध कब हुआ था ?
(A) 1528 ई. में (B) 1530 ई. में
(C) 1532 ई. में (D) 1526 ई. में

22. बाबर की मृत्यु कब हुई थी ?
(A) 27 फरवरी, 1528 ई.
(B) 28 फरवरी, 1530 ई.
(C) 26 दिसम्बर, 1530 ई.
(D) इनमें से कोई नहीं

23. निम्नलिखित में से कौनसा बाबर का पुत्र नहीं है ?
(A) हुमायूँ (B) अस्करी
(C) जहाँगीर (D) हिन्दाल

24. हुमायूँ का जन्म-स्थल कौनसा था ?
(A) वाराणसी (B) काबुल
(C) काठियावाड़ (D) इनमें से कोई नहीं

25. हुमायूँ के पिता का नाम था–
(A) अकबर (B) जहाँगीर
(C) बाबर (D) शेरशाह सूरी

26. मच्छीवाड़ा का युद्ध किसके बीच हुआ था ?
(A) बाबर व मेदिनी राय के मध्य
(B) हुमायूँ व सिकन्दर शाहसूरी के मध्य
(C) तातार खाँ व हुमायूँ के मध्य
(D) बाबर व राणा सांगा के मध्य

27. चौसा का युद्ध कब हुआ था ?
(A) 1539 ई. (B) 1540 ई.
(C) 1545 ई. (D) इनमें से कोई नहीं

28. हुमायूँ की मृत्यु कब हुई थी ?
(A) 26 जनवरी, 1557 ई.
(B) 27 जनवरी, 1558 ई.
(C) 28 जनवरी, 1558 ई.
(D) 26 जनवरी, 1556 ई.

29. 'तारीख-ए-रशीदी' किसके द्वारा लिखित है ?
(A) मिर्जा हैदर दगलात
(B) खोंद मीर
(C) गुलबदन बेगम
(D) उस्ताद अली

30. 'शेरशाह सूरी' का वास्तविक नाम क्या था ?
(A) फरीद (B) कामरान
(C) नासिरउद्दीन मुहम्मद (D) इनमें से कोई नहीं

31. शेरशाह सूरी के पिता का नाम था–
(A) इब्राहिम (B) हसन
(C) फरीद (D) शेर खाँ

32. किस बादशाह को शेरखाँ की उपाधि दी गई ?
(A) शेरशाह सूरी (B) बाबर
(C) अकबर (D) इनमें से कोई नहीं

33. 'हजरते आला' की उपाधि किस बादशाह को दी गई थी ?
    (A) शेरशाह सूरी (B) अकबर
    (C) हुमायूँ (D) जहाँगीर

34. शेरशाह सूरी कहाँ के मूल निवासी थे ?
    (A) होशियारपुर (B) रोहिडी
    (C) काबुल (D) इनमें से कोई नहीं

35. शेरशाह सूरी की मृत्यु कब हुई थी ?
    (A) 1545 ई. में
    (B) 1540 ई. में
    (C) 1548 ई. में
    (D) 1605 ई. में

36. किस बादशाह के समय हैदर खाँ पंजाब का गवर्नर था ?
    (A) अकबर (B) शेरशाह सूरी
    (C) हुमायूँ (D) जहाँगीर

37. शेरशाह के शासनकाल में लगभग कितनी सरकारें थीं ?
    (A) 50 (B) 55
    (C) 47 (D) 40

38. परगने का कोषाध्यक्ष कौन होता था ?
    (A) शिकदार (B) फोतदार
    (C) अमीन (D) कारकुन

39. पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा भारत कब आया?
    (A) 17 मई, 1490 ई.
    (B) 17 मई, 1498 ई.
    (C) 17 मई, 1480 ई.
    (D) 17 मई, 1484 ई.

40. कबीर का जन्म-स्थल था–
    (A) काशी (B) काबुल
    (C) प्रयाग (D) इनमें से कोई नहीं

41. गुरुनानक का जन्म कब हुआ था ?
    (A) 1469 ई. (B) 1459 ई.
    (C) 1470 ई. (D) 1450 ई.

42. गुरुनानक की मृत्यु कब हुई ?
    (A) 1538 ई. (B) 1330 ई.
    (C) 1540 ई. (D) 1548 ई.

43. अमल-ए-सालिह किसकी रचना थी ?
    (A) ख्वाजा कामगार
    (B) मुहम्मद सालिह
    (C) कजविनी
    (D) इनमें से कोई नहीं

44. अकबरनामा किसके द्वारा लिखित रचना है ?
    (A) अबुल फजल (B) बदायूँनी
    (C) अहमद यादगार (D) फैज सरहिन्दी

45. हरिसौभाग्यम् नामक पुस्तक किसके शासनकाल में लिखी गई थी ?
    (A) अकबर (B) हुमायूँ
    (C) बाबर (D) इनमें से कोई नहीं

46. किस बादशाह के शासनकाल में निजामुद्दीन अली खलीफा प्रमुख मंत्री पद पर थे ?
    (A) अकबर (B) हुमायूँ
    (C) बाबर (D) शेरशाह सूरी

47. कन्नौज का युद्ध किसके बीच हुआ ?
    (A) शेरशाह सूरी और हुमायूँ के मध्य
    (B) बाबर और राणा सांगा के मध्य
    (C) बाबर और मोहम्मद लोदी के मध्य
    (D) इनमें से कोई नहीं

48. 'गाजी' की उपाधि किस बादशाह को दी गई ?
    (A) अकबर (B) हुमायूँ
    (C) जहाँगीर (D) बाबर

49. 'घाघरा का युद्ध' कब और किसके मध्य हुआ ?
    (A) 1529 में बाबर एवं महमूद लोदी के मध्य
    (B) बाबर एवं राणा सांगा के मध्य (1529 ई. में)
    (C) 1530 में शेरशाह और हुमायूँ के मध्य
    (D) इनमें से कोई नहीं

50. नूरजहाँ के पिता का नाम है–
    (A) अकबर (B) एतमादुद्दौला
    (C) हुमायूँ (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (B)	2. (A)	3. (C)	4. (D)	5. (B)
6. (A)	7. (B)	8. (D)	9. (B)	10. (A)
11. (C)	12. (D)	13. (A)	14. (C)	15. (B)
16. (B)	17. (C)	18. (B)	19. (A)	20. (C)
21. (D)	22. (C)	23. (C)	24. (B)	25. (C)
26. (C)	27. (A)	28. (D)	29. (A)	30. (A)
31. (B)	32. (A)	33. (A)	34. (B)	35. (A)
36. (B)	37. (C)	38. (B)	39. (B)	40. (A)
41. (A)	42. (A)	43. (B)	44. (A)	45. (A)
46. (A)	47. (A)	48. (D)	49. (A)	50. (B)

विगत वर्षों में आई.ए.एस. (प्री.) इतिहास में पूछे गए प्रश्न

1. मन्दिरों से सम्बन्धित निम्नलिखित लक्षणों पर विचार कीजिए–
   1. गोपुरम
   2. कल्याणमंडप
   3. अलंकृत स्तम्भ (Pillars) व छतें
   4. स्तम्भों के नीचे करंडसज्जा

   उपर्युक्त में से कौनसे लक्षण विजयनगर मन्दिरों में पाए जाते हैं ?
   (A) केवल 1, 2 तथा 3 (B) केवल 3 तथा 4
   (C) केवल 1, 2 तथा 4 (D) 1, 2, 3 तथा 4

2. सूची-I (मुद्राएं) को सूची-II (चलन का प्रमुख क्षेत्र) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (मुद्राएं)	**सूची-II (चलन का प्रमुख क्षेत्र)**
(a) पगड़ा	1. गुजरात
(b) महमूदी	2. विजयनगर
(c) मुजफ्फरी	3. उत्तर भारत
(d) सिकन्दरी	4. मालवा

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	2	1	4	3
(C)	4	1	2	3
(D)	2	3	4	1

3. निम्नलिखित में से किस एक राज्य ने कामता के राज्य को, जो पन्द्रहवीं शताब्दी में पतनोन्मुख था, प्रतिस्थापित किया ?
   (A) खासी (B) गारो
   (C) अहोम्स (D) कूच विहार

4. निम्नलिखित में से कौन नामदेव का समकालीन (Contemporary) था ?
   (A) माधव (B) निम्बार्क
   (C) सेना (D) रामदास

5. निम्नलिखित में से भारत में सुहरावर्दी सिलसिला के संस्थापक शेख बहाउद्दीन जकारिया से सम्बन्धित कौनसा कथन सही नहीं है ?
   (A) वह आत्मसन्ताप (Self-mortification) में विश्वास करते थे
   (B) वह दरिद्रता को आध्यात्मिक जीवन के लिए एक आवश्यक शर्त नहीं मानते थे
   (C) वह अपनी सम्पत्ति को यह कहकर न्यायसंगत ठहराते थे कि उन्हें इससे दरिद्रों की बेहतर सेवा करने में मदद मिलती थी
   (D) वह समा के सिद्धान्त को अस्वीकृत नहीं करते थे

6. मध्यकालीन राजनीतिक विचारकों द्वारा प्रतिपादित अदूल का सिद्धान्त क्या व्यक्त करता था ?
   (A) नैतिकता (Morality)
   (B) न्याय (Justice)
   (C) अभिजात वर्ग (Aristocracy)
   (D) धार्मिक दायित्व (Religious obligations)

7. निम्नलिखित यन्त्रों/पद्धति पर विचार कीजिए–
   1. बहुतकली चक्र
   2. तोड़ेदार बंदूकें
   3. पनचक्की (Watermills) एवं पवनचक्की (Windmills)
   4. कोयले का ईंधन के रूप में प्रयोग

   उपर्युक्त में से कौनसे मुगलों को मालूम नहीं थे ?
   (A) 1 तथा 2 (B) केवल 2 तथा 3
   (C) 2, 3 तथा 4 (D) 1 तथा 4

8. शिवतत्व चिंतामणि, जो लिंगायतों के सिद्धान्तों एवं अनुष्ठानों से सम्बन्धित एक प्रबन्ध है, निम्नलिखित में से किस एक के शासनकाल में लिखी गई थी ?
   (A) बुक्का प्रथम (B) देवराय द्वितीय
   (C) हरिहर द्वितीय (D) देवराय प्रथम

9. मध्यकालीन भारत का वह कौन संत कवि था जिसने षड्दर्शन के मूल्यों को अस्वीकार किया तथा **निपख** के मार्ग का अनुमोदन किया ?
   (A) कबीर (B) मलूकदास
   (C) दादू दयाल (D) रैदास

10. निम्नलिखित में से कौनसा एक क्षेत्र तारीख-ए-रशीदी के लेखक मिर्जा हैदर दुगलत द्वारा एक मध्यकालीन (Medieval period) सुल्तान के रूप में शासित क्षेत्र था ?
    (A) बंगाल (B) जौनपुर
    (C) कश्मीर (D) बीजापुर

11. **कथन (A) :** अबुल फजल ने, जोकि एक महान् विद्वान् तथा शैलीकार था तथा अपने काल का अग्रणी इतिहासकार था, गद्य लेखन की एक ऐसी शैली स्थापित की जिसका बहुत वर्षों तक अनुकरण होता रहा.

कथन (R) : अबुल फजल ने यह सब अपने भाई फैजी की सहायतार्थ किया जिससे वह अपने काल का प्रमुख कवि बन सके.

12. सूची-I (मध्यकाल से सम्बन्धित अधिकारी) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (मध्यकाल से सम्बन्धित अधिकारी)

(a) खुत

(b) अमीर-ए-हाजिब

(c) मुहतसिब

(d) नवीसन्दा

सूची-II (विवरण)

1. राजसभा का प्रभारी अधिकारी
2. नगरपालिका के नियमों का व्यवस्थापक अधिकारी
3. लिपिक (क्लर्क)
4. ग्राम अधिकारी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	2	3
(B)	3	2	1	4
(C)	4	2	1	3
(D)	3	1	2	4

13. सूची–I (कृतिकार) को सूची–II (कृति) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (कृतिकार)

(a) बदायूँनी (b) इसामी

(c) मुल्ला दाऊद (d) कुतबन

सूची-II (कृति)

1. चंदायन
2. फुतूह-उस सलातीन
3. मृगावती
4. मुन्तखाब-उल तवारीख

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	4	3
(B)	4	3	1	2
(C)	1	3	4	2
(D)	4	2	1	3

14. "पाहन पूजै हरि मिले, तो मैं पूजौं पहार ।" यह कथन निम्नांकित का है–

(A) रामानन्द का (B) नामदेव का

(C) गुरुनानक का (D) कबीर का

15. सुलह-ए-कुल का सिद्धान्त प्रवर्तित किया था–

(A) निजामुद्दीन औलिया ने

(B) अकबर ने

(C) जैनुल आबिदीन ने

(D) शेख नासिरुद्दीन चिराग ने

16. भारत में प्रथम अवशिष्ट वास्तविक गुम्बद निम्नांकित में प्राप्त है–

(A) अलाई दरवाजा

(B) सुल्तान फीरोज का मदरसा

(C) बलबन का मकबरा

(D) अढ़ाई दिन का झोपड़ा

17. अकबर के राज्यकाल के प्रथम चार वर्षों में 'वकील-उस-सल्तनत' पद पर था–

(A) तर्दी बेग (B) बैरम खाँ

(C) मुनीम खाँ (D) शम्शुद्दीन अल्का

18. मुगलशासन में 'खालिसा' शब्द का तात्पर्य था–

(A) वह भूमि जिसका स्वामी सम्राट् स्वयं था

(B) समस्त शाही व्यवस्था

(C) वह भूमि जहाँ से शाही कोष के लिए लगान एकत्रित किया जाता था

(D) धार्मिक भूदान

19. मुगल भारत में भू-राजस्व था–

(A) भूमि पर कर (B) उपज में हिस्सा

(C) कृषक पर कर (D) भूमि स्वामी पर कर

20. जहाँगीर के दरबार में पक्षियों का सबसे बड़ा चित्रकार था–

(A) ख्वाजा अब्दुस्समद (B) सैयद अली तजीजी

(C) बसावन (D) मंसूर

21. मुगलकाल में शाही व्यवस्था से जुड़े चित्रकारों के विषय में निम्नलिखित में से कौनसी बात सही नहीं है?

(A) वे सामान्य जन और उसके जीवन का अंकन नहीं करते थे

(B) उन्होंने अपने चित्रों में शिल्प-विज्ञानियों यन्त्रों को कभी प्रदर्शित नहीं किया

(C) उन्होंने संयुक्त कृति के रप में कभी चित्र नहीं बनाये

(D) उन्होंने अपनी शबीहें कभी नहीं बनायीं

22. फतेहपुर सीकरी में अकबर की इमारतें निम्नांकित के लिए प्रसिद्ध हैं–

(A) धरणिक और चापाकर शैलियों का समन्वय

(B) भारत में प्रथम कन्दाकार गुम्बद का निर्माण

(C) व्यापक मात्रा में संगमरमर

(D) पच्चीकारी का प्रचुर प्रयोग

23. पूर्णतः संगमरमर मण्डित मुगल इमारत थी–
   (A) हुमायूँ का मकबरा
   (B) एत्मादुद्दौला का मकबरा
   (C) ताजमहल
   (D) लालकिला, दिल्ली में मोती मस्जिद

24. मज्म-अल-बहरीन के कृतित्व का श्रेय निम्नलिखित में से किसे दिया जाता है ?
   (A) अकबर (B) दाराशिकोह
   (C) जहाँगीर (D) हुमायूँ

25. मुगलकाल में जमींदारी नहीं थी–
   (A) एक विक्रय अधिकार
   (B) पुश्तैनी
   (C) भूमि का स्वामित्व
   (D) बन्धक रखने योग्य

26. इब्राहीम खाँ गार्दी निम्नांकित का एक महत्वपूर्ण सैनिक अधिकारी था–
   (A) हैदर अली
   (B) अहमदशाह दुर्रानी
   (C) पेशवा बालाजी बाजीराव
   (D) राजा सूरजमल

27. निम्नलखित युग्मों में से कौन एक सामान्यतया राजा बनाने वाले सैयद भाइयों के रूप में ख्यात था?
   (A) रफी उद्दरजत एवं रफीउद्दौला
   (B) जहाँदारशाह एवं अहमदशाह
   (C) हुसैन अली एवं अब्दुल्ला हुसैन
   (D) जुल्फिकार खाँ एवं जकारिया खाँ

28. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूटों के उपयोग से सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	**सूची-II**
(a) चण्डीदास	1. राधावल्लभ सम्प्रदाय
(b) चैतन्य	2. सहजिया
(c) हुसैनशाह	3. अद्वैत दर्शन
(d) सूरदास	4. सत्यपीर पूजा
	5. भेदाभेद दर्शन

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	4	5
(B)	2	5	4	1
(C)	1	5	3	4
(D)	3	4	2	1

29. 15वीं एवं 16वीं शताब्दियों के भक्ति सन्तों द्वारा निम्नलिखित में से किन-किन पर जोर दिया गया ?
   (1) निज देवता का विचार
   (2) जाति व्यवस्था की शुद्धि
   (3) धार्मिक कर्मकाण्डों की निरर्थकता
   (4) निर्गुण ब्रह्म की अवधारणा
   नीचे दिए गए कूटों के उपयोग से सही उत्तर का चयन कीजिए–
   (A) 1 एवं 2 (B) 1 एवं 3
   (C) 3 एवं 4 (D) केवल 4

30. नाथपंथी आन्दोलन के विषय में निम्नलिखित कथनों में से कौन सही हैं ?
   (1) वस्तुतः यह पश्चिमी भारत में सीमित था.
   (2) इसने ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को चुनौती दी.
   (3) इसने हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतिपादन किया.
   नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–
   (A) 1 एवं 2 (B) 1 एवं 3
   (C) 2 एवं 3 (D) केवल 2

31. निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में अकबर ने पहले शेरशाह द्वारा चलाई गई नीतियों को आगे बढ़ाया ?
   (A) भू-राजस्व कूतने के उद्देश्य से भूमि को मापना
   (B) समाज के विभिन्न वर्गों से अमीर वर्ग का नियोजन
   (C) उसकी अधीनता स्वीकार करने वाले राजाओं की उच्च पदों पर नियुक्ति
   (D) मुस्लिम इतर लोगों के विरुद्ध भेदमूलक कानूनों का प्रत्याहार

32. मुगलों और मराठों के मध्य संघर्ष किसके राज्यकाल में आरम्भ हुआ ?
   (A) अकबर (B) जहाँगीर
   (C) शाहजहाँ (D) औरंगजेब

33. मुगलों के अन्तर्गत सेना विभाग को निम्नलिखित में से कौन देखता था ?
   (A) मीर-ए-सामान (B) सद्र-उस-सद्र
   (C) मीर-ए-बख्शी (D) दीवान-ए-आला

34. निम्नलिखित में से किसके शासनकाल में प्रभामण्डल मुगलरूप चित्रकारी का विशेष लक्षण बना ?
   (A) अकबर (B) जहाँगीर
   (C) शाहजहाँ (D) औरंगजेब

35. दास्तान-ए-अमीर हम्जा की हस्तलिपि पर किसने चित्रांकन किया ?
   (A) शीराज का अब्दुस्समद
   (B) फारूक कलमाक
   (C) तब्रेज का मीर सैयद अली
   (D) मिस्कीन

36. मुगलकाल में भू-राजस्व के भुगतान की विधि के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन एक सही है ?
 (A) किसान धातु के सिक्कों से राजस्व अदा करते थे
 (B) किसान कौड़ियों में राजस्व चुकाते थे
 (C) किसान फसल के रूप में राजस्व देते थे
 (D) सारे मुगल साम्राज्य में राजस्व चुकाने की कोई एकसमान विधि नहीं थी

37. अकबर के राज्यकाल में भूमि, जिसे प्रतिवर्ष जोतते थे और कभी परती नहीं छोड़ते थे, क्या कहलाती थी ?
 (A) पोलज (B) परौती
 (C) चाचर (D) बंजर

38. निम्नलिखित में से किस एक को दाराशिकोह ने लिखा था ?
 (A) पादशाहनामा (B) मज्म-उल-बहरीन
 (C) शाहनामा (D) मुन्तखाब-उल-लुबाब

39. निम्नलिखित में से कौन एक 17वीं शताब्दी में भारत में प्रदर्शित एक नई नकदी फसल थी ?
 (A) नील (B) लाल मिर्च
 (C) मूँगफली (D) तम्बाकू

40. अकबर के दरबार में आने के पूर्व मियाँ तानसेन किसकी सेवा में थे ?
 (A) जोधपुर के राजा
 (B) जयपुर के राजा
 (C) भाथा के राजा रामचन्द्र बघेल
 (D) गोंडवाना की रानी

41. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूटों के उपयोग से सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I (मुगल सूबेदार)	सूची-II (क्षेत्र)
(a) अलीवर्दी	1. पंजाब
(b) सआदत एवं सफदरजंग	2. हैदराबाद
(c) जकीरी खाँ	3. बंगाल
(d) निजाम-उल-मुल्क	4. अवध
	5. कर्नाटक

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	2	1	3
(B)	1	4	3	2
(C)	3	2	4	5
(D)	3	4	1	2

42. मजहबी सिख मूलतः थे–
 (A) बड़े भूस्वामी (B) किसान
 (C) शिल्पी (D) परिचारक

43. शाही उपाधि कैसर किससे उद्‌भूत थी ?
 (A) फारसी (B) सीथियन
 (C) चीनी (D) रोमन

44. मुल्तान के शेख बहाउद्दीन जकारिया का निम्नलिखित में से किस सूफी सम्प्रदाय से सम्बन्ध था ?
 (A) चिश्ती (B) सुहरावर्दी
 (C) कादिरी (D) नक्शबन्दी

45. अकबर के दरबार में आने वाले प्रथम ईसाई दल (जेशुयट मिशन) में निम्नलिखित में से कौन था ?
 (1) फांसीस जेवियर (2) रुडोल्फ एक्काविवा
 (3) एंटोमी मांसरेट (4) सेंट आगस्टाइन
 नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–
 (A) 1 एवं 2 (B) 2 एवं 3
 (C) 1 एवं 4 (D) केवल 2

46. रोशनाई सम्प्रदाय के संस्थापक थे–
 (A) अब्दुल्ला जौनपुरी (B) बाकी बिल्ला
 (C) बयाजिद (D) शेख नुरूसहक

47. जुझार सिंह (जिसने शाहजहाँ के राज्यकाल में मुगलों के विरुद्ध विद्रोह किया) किस राजपूत कुल के थे ?
 (A) राठौड़ (B) सिसोदिया
 (C) चौहान (D) बुन्देला

48. शहजादा शाहजहाँ के 1622 के विद्रोह का सम्बन्ध शहंशाह जहाँगीर के निम्नांकित हुक्म से था–
 (A) सूबेदार के रूप में बंगाल जाओ
 (B) शहजादा खुसरो को सुपुर्द करो
 (C) मलिक अम्बर पर हमला करो
 (D) कन्दहार के ऊपर चढ़ाई का नेतृत्व करो

49. मुगल प्रशासन में मुहतसिब था–
 (A) एक सैनिक अधिकारी
 (B) एक धर्म सम्बन्धी अधिकारी
 (C) लोक आचार शास्त्र का प्रभारी अधिकारी
 (D) पत्राचार विभाग का प्रधान

50. निम्नलिखित में से किस मुगल शासक ने मनसबदारी प्रथा में दो-अस्पा, सी-अस्पा श्रेणी का प्रवर्तन किया ?
 (A) अकबर (B) जहाँगीर
 (C) शाहजहाँ (D) औरंगजेब

51. डब्ल्यू. एफ. मोरलैण्ड के आकलन के अनुसार 1600 ई. में भारत की आबादी थी–
 (A) 8 करोड़ (B) 10 करोड़
 (C) 12 करोड़ (D) 12 करोड़ 50 लाख

52. भू-राजस्व आकलन की तीन पद्धतियों–वटाई, खेत वटाई एवं लाँग वटाई का सम्बन्ध था–
    (A) गल्लाबक्शो से (B) नसक से
    (C) कनकूत से (D) जब्त से

53. अबुल फजल के अनुसार अकबर के राज्यकाल में जमींदारों का प्रतिधारण शुल्क था–
    (A) लगभग 44 लाख (B) लगभग 48 लाख
    (C) लगभग 52 लाख (D) लगभग 55 लाख

54. जहाँगीर ने किस दरबारी चित्रकार को अपने दूत के साथ फारस के शाह के पास भेजा था ?
    (A) विशनदास (B) अबुल हसन
    (C) मंसूर (D) गोवर्धन

55. निम्नलिखित में से वह कौन चित्रकार था, जिसे जहाँगीर द्वारा नादिर-उज-जमां का खिताब दिया था ?
    (A) अबुल हसन (B) मंसूर
    (C) विचित्र (D) विशनदास

56. सूची-I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूटों के उपयोग से सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I (राजवंश के व्यक्ति)	सूची-II (मकबरों के स्थल)
(a) बावर	1. लाहौर
(b) शाहजादा खुसरो	2. काबुल
(c) नूरजहाँ	3. इलाहाबाद
(d) राबिया उद्दौरान	4. औरंगाबाद

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	1	4
(B)	2	1	4	3
(C)	4	2	3	1
(D)	1	4	2	3

57. पीटा डूरा शब्द किसकी ओर निर्देश करता है ?
    (A) भित्ति चित्र
    (B) पच्चीकारी
    (C) इटालियन शैली की मूर्तियाँ
    (D) विशेष प्रकार के कंगूरे

58. रज्मनामा किसका फारसी अनुवाद है ?
    (A) पंचतन्त्र का (B) रामायण का
    (C) महाभारत का (D) कथासरितसागर का

59. निम्नलिखित में से कौन सही सुमेलित है ?
    (1) पुर्तगाल – एस्तादो द इण्डिया
    (2) फ्रांस – वेरीनिग्दे ओस्ट-इण्डिशे कम्पञ्जिक
    (3) हालैण्ड – कम्पञ्जिक दे इन्दे ओरियन्ताले
    नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए–
    (A) केवल 1 (B) 1 एवं 2
    (C) 1 एवं 3 (D) 2 एवं 3

60. नादिरशाह द्वारा बन्दी बनाया गया मुगल बादशाह था–
    (A) बहादुरशाह (B) जहाँदार शाह
    (C) फर्रुखशियर (D) मुहम्मद शाह

61. निम्नलिखित में से कौन मुर्शीद कुली खाँ के विरुद्ध बड़ी बगावत करने वालों में हैं ?
    (1) सीताराम रे (2) उदय नारायण रे
    (3) गुलाम मुहम्मद (4) सआदत खाँ
    नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–
    (A) 1 एवं 2 (B) 2 एवं 4
    (C) 1, 2 एवं 3 (D) 1 एवं 4

62. निम्नलिखित में से कौन सही सुमेलित है ?

संत	आध्यात्मिक पंथ
(1) शेख चिराग नसीरुद्दीन देहली	सुहरावर्दी
(2) शेख बहाउद्दीन जकरिया	चिश्ती
(3) शेख शर्फउद्दीन याह्या मनेरी	फिरदौसी
(4) शेख नुरुद्दीन	रिशि
(5) शेख बाकी बिल्ला	नक्शबन्दी

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–
    (A) 1, 2 एवं 3 (B) 2, 3 एवं 4
    (C) 2, 3 एवं 5 (D) 3, 4 एवं 5

63. औरंगजेब ने दक्कन में निम्नलिखित में से किन दो राज्यों को जीता था ?
    (A) बीदर एवं बीजापुर
    (B) बीजापुर एवं गोलकुण्डा
    (C) गोलकुण्डा एवं अहमदनगर
    (D) अहमदनगर एवं बीजापुर

64. शेरशाह सूरी कहाँ उपज का केवल चतुर्थांश भूमिकर के रूप में लेता था ?
    (A) सासाराम (B) आगरा
    (C) मुल्तान (D) लाहौर

65. अबुल फजल ने आइन-ए-अकबरी में कुछ मुगल कलाकारों के नाम दिए हैं, जो मुगल शिल्पशाला में कार्यरत थे. उसके द्वारा दी गई सही संख्या निर्दिष्ट कीजिए–
    (A) 17 (B) 22
    (C) 28 (D) 34

66. मुगल चित्रकारों ने योरोपीय शैलियों के प्रभाव में बाइबिल ईसाई धर्म सम्बन्धी किन निम्नलिखित विषयों को चुना ?
    (1) पिता रूप में ईश्वर

(2) आदम और हौवा
(3) स्वर्ग से निष्कासन
(4) पिलेट के दरबार में जीसस का मुकदमा
(5) क्रूसारोपण

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–

(A) 1, 2 एवं 3 (B) 1, 2 एवं 4
(C) 1 एवं 5 (D) 4 एवं 5

67. निम्नलिखित में से कौन सही सुमेलित है ?

मुगल सम्राट्	मकबरों के स्थल
(1) बाबर	काबुल
(2) अकबर	फतेहपुर सीकरी
(3) जहाँगीर	लाहौर
(4) बहादुर शाह जफर	दिल्ली

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–

(A) 1 एवं 2 (B) 2 एवं 3
(C) 3 एवं 4 (D) 1 एवं 3

68. सासाराम में शेरशाह का मकबरा–
(A) एक तालाब से घिरा है
(B) पूर्णतः संगमरमर का बना है
(C) चार गुम्बदों से युक्त है
(D) पच्चीकारी से अलंकृत है

69. अबुल फजल ने अपनी रचनाओं में निम्नलिखित में से किसका उल्लेख किया है ?
(A) आसवन विधियाँ
(B) दूरदर्शक यन्त्र की क्रिया शैली
(C) गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त
(D) धातु-ढलाई की प्रविधि

70. निम्नलिखित योरोपीय व्यापारिक वर्गों में से किसने सर्वप्रथम सूरत में अपनी फैक्ट्री स्थापित की ?
(A) पुर्तगाली (B) डच
(C) अंग्रेज (D) फ्रांसीसी

71. निम्नलिखित में से कौन एक सत्रहवीं शताब्दी में नील के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था ?
(A) बालासोर (B) काल्पी
(C) लाहौर (D) सरखेज

72. "मलक्का कैम्बे के बिना नहीं रह सकता और न कैम्बे मलक्का के बिना, अगर उन्हें बहुत धनी और बहुत समृद्ध बनाना हो." एशियाई व्यापार के विषय में यह टिप्पणी किसने की थी ?
(A) टोमपिरेस (B) लिन्सशॉटेन
(C) बारथेमा (D) बारबोसा

73. पुर्तगालियों ने क्रमशः कब गोआ जीता एवं होरमुज को खो दिया ?
(A) ईसवी सन् 1505 एवं 1598
(B) ईसवी सन् 1510 एवं 1605
(C) ईसवी सन् 1510 एवं 1662
(D) ईसवी सन् 1515 एवं 1618

74. निम्नलिखित में से कौनसा हिन्दू स्थापत्य का एक निदर्शन है, जिस पर इस्लामी प्रभाव परिलक्षित होता है ?
(A) कमल महल, विजयनगर
(B) सहस्त्र स्तम्भ, मण्डप, मदुरै
(C) राजा का सभा भवन, विजयनगर
(D) स्तम्भयुक्त दीर्घा, रामेश्वरम्

75. पानीपत का तृतीय युद्ध किसके शासनकाल में हुआ ?
(A) मुहम्मद शाह (B) आलमगीर-II
(C) शाह आलम-II (D) जहाँदारशाह

76. राजकुमार दाराशिकोह ने निम्नलिखित में से किसकी रचना की थी ?
(A) फुवैद-उल-फवाद (B) चहार-गुलशन
(C) चहार चमन (D) मज्म-उल-बहरीन

77. निम्नलिखित में से कौन सही सुमेलित है ?
(1) अकबर – शहाबुद्दीन खाँ अत्का
(2) जहाँगीर – जुझार सिंह बुन्देला
(3) शाहजहाँ – जगत गोसाई
(4) औरंगजेब – काजी अब्दुल बहाब

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–

(A) 1 एवं 4 (B) 1 एवं 3
(C) 2 एवं 3 (D) 2 एवं 4

78. 'चाँदी का सिक्का' सर्वप्रथम किसने चलाया था ?
(A) सिकन्दर लोदी ने (B) हुमायूँ ने
(C) शेरशाह सूरी ने (D) अकबर ने

79. दिल्ली सल्तनत के फीरोज तुगलक के बाद नहरों से पानी की आपूर्ति पर ध्यान देने वाला मुगल शासक कौन था ?
(A) हुमायूँ (B) अकबर
(C) जहाँगीर (D) शाहजहाँ

80. शेख बहाउद्दीन जकारिया निम्नांकित में से किस सूफी सिलसिले के थे ?
(A) कादरिया (B) नक्शबन्दी
(C) सुहरावर्दी (D) चिश्ती

81. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूटों के उपयोग से सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) सियसलाम	1. निजाम-उल-मुल्कतुसी
(b) खजेन-उल-फुतूह	2. हमीद कलन्दर
(c) खैर-उल-मजलिस	3. अमीर खुसरो
(d) तारीख-ए-मुबारक शाही	4. याहिया सरहिन्दी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	3	2	4
(B)	2	3	1	4
(C)	1	4	3	2
(D)	4	1	2	3

82. सन् 1605 में कुल मुगल सूबे कितने थे ?
(A) 12 (B) 15
(C) 17 (D) 19

83. निम्नांकित मुगल अधिकारियों में से किसका सम्बन्ध धार्मिक मामलों से नहीं था ?
(A) सद्र (B) मुफ्ती
(C) मुहतसिब (D) मुस्तौफी

84. निम्नलिखित में से किसने बादशाह या सम्प्रभुता को जिल-अल-अल्लाह की अवधारणा के विपरीत फर्र-ए-इज्दी रूप में परिभाषित किया ?
(A) बदायूँनी (B) शेख अहमद सरहिन्दी
(C) अबुल फजल (D) शेख अब्दुल हक मुहद्दिस

85. मुगल राजस्व प्रशासन की शब्दावली में जमी पायमुदाह शब्द का क्या तात्पर्य है ?
(A) बंजर भूमि
(B) गल्ला बख्शी के लिए पैमाइश के लिए छोड़ी हुई भूमि
(C) हर दो सालों में जोती जाने वाली भूमि
(D) पैमाइश की हुई भूमि

86. निम्नलिखित में से कौनसा अंचल सत्रहवीं शताब्दी में शोरा, नील एवं अफीम के एक साथ उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था ?
(A) बुरहानपुर एवं सिन्ध (B) गुजरात
(C) बंगाल एवं उड़ीसा (D) बिहार

87. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूटों के उपयोग से सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I (घटना)	सूची-II (तिथि)
(a) हल्दीघाटी का युद्ध	1. 1611
(b) नूरजहाँ के साथ जहाँगीर का विवाह	2. 1576
(c) सफवीयो द्वारा कन्दहार पर अधिकार	3. 1680
(d) शिवाजी की मृत्यु	4. 1622

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	1	4	3
(B)	1	3	2	4
(C)	2	1	3	4
(D)	4	1	3	2

88. निम्नलिखित में से किसके शासकों को मुगल बादशाह तरफदार कहते थे ?
(A) बीजापुर एवं गोलकुण्डा
(B) गोलकुण्डा
(C) गुजरात
(D) अहमदनगर

89. मुगल एलबम के लिए शाह अब्बास की शबीहं तैयार करने के लिए निम्नांकित में से किसे जहाँगीर ने फारस भेजा था ?
(A) मंसूर को (B) विचित्र को
(C) विशनदास को (D) बसावन को

90. एक विशाल मुगल स्मारक के किस भाग में प्रायः चाप स्कन्ध प्राप्त होता है ?
(A) गुम्बज (B) प्रवेश द्वार
(C) मीनार (D) परकोटा

91. राबिआ-उल-दौरान का मकबरा कहाँ बनाया गया था ?
(A) लाहौर में (B) दिल्ली में
(C) औरंगाबाद में (D) गुलबर्ग में

92. निम्नलिखित सूफी सिलसिले भारत में विभिन्न कालों में प्रचलित हुए उनका कालानुक्रम है–
(1) नक्शबन्दी (2) चिश्ती
(3) कादरी (4) सुहरावर्दी
(A) 4, 2, 3, 1 (B) 2, 4, 1, 3
(C) 2, 4, 3, 1 (D) 4, 2, 1, 3

93. निम्नलिखित में से किस एक मध्ययुगीन भक्ति संत को बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन ने अपने दरबार के 'पाँच रत्नों' में से एक के रूप में संरक्षण प्रदान किया ?
(A) वल्लभाचार्य (B) जयदेव
(C) चैतन्य (D) नरसी मेहता

94. मोरलैण्ड के अनुसार जमा का तात्पर्य था–
(A) पूर्ण राजस्व निर्धारण
(B) पूर्ण भू-राजस्व निर्धारण
(C) वसूला गया भू-राजस्व
(D) शासक वर्ग की शुद्ध आय

95. मुगल साम्राज्य में भू-राजस्व मुख्यतः किसमें व्यक्त किया जाता था ?
(A) ताँबे के दाम में (B) चाँदी के रुपयों में
(C) स्वर्ण मुद्रा में (D) मन में

96. नीचे दिए गए उद्धरण पर विचार कीजिए–
"लोगों के धार्मिक विश्वासों में किसी को भी हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि कोई भी जानबूझकर गलत धर्म का चयन नहीं करता." यह दृष्टिकोण अभिव्यक्त किया गया–
(A) बुगरा खाँ को सलाह में
(B) हुमायूँ को सलाह में
(C) शाह अब्बास को पत्र में
(D) खुसरो को संदेश में

97. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूटों के उपयोग से सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I (काल)	**सूची-II** (घटना)
(a) 1645 ई.	1. औरंगजेब दक्खन का वायसराय नियुक्त किया गया
(b) 1637 ई.	2. गुजरात में अकाल
(c) 1630 ई.	3. राजधानी का शाहजहाँनाबाद में स्थानान्तरण
(d) 1666 ई.	4. शाहजहाँ की मृत्यु
	5. काँगड़ा के किले पर अधिकार

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	1	5	4
(B)	3	1	2	4
(C)	4	3	1	2
(D)	1	3	2	5

98. निम्नलिखित अधिकारी समुच्चयों में से कौनसा एक मुगलों की प्रान्तीय शासन व्यवस्था में नहीं पाया जाता ?
(A) सूबेदार, फौजदारी, करोड़ी
(B) फौजदारी, दीवान, बख्शी
(C) मुहतसिब, वजीर, आमिल
(D) वजीर, बख्शी, मीरसमाँ

99. निम्नलिखित में से कौनसा एक युग्म सुमेलित नहीं है ?
(A) 1560 – बैरम खाँ का पतन
(B) 1564 – गोंडवाना विजय
(C) 1570 – रणथम्भीर पतन
(D) 1576 – हल्दी घाटी का युद्ध

100. सूरत में उतरने वाला सबसे पहला अंग्रेज कप्तान जो आगरा में सम्राट् जहाँगीर के दरबार में भी गया था, वह था ?
(A) थॉमस स्टीफेन्स (B) हॉकिन्स
(C) रॉल्फ फिच (D) जॉन मिल्डेन्हाल

101. निम्नलिखित में से कौनसा एक वक्तव्य सही नहीं है ?
(A) सम्मान और ओहदे की दृष्टि से वकील एक प्रतिष्ठित पद था.
(B) अकबर ने वकील के पद से राजस्व और वित्त सम्बन्धी अधिकार पृथक् कर दिए.
(C) औरंगजेब के शासन के परवर्ती काल में वकील का पद महत्त्वपूर्ण हो गया था.
(D) जहाँगीर ने लम्बे समय तक वकील के बिना शासन किया था.

102. निम्नलिखित में से कौनसा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है ?
(A) आरिफ कन्धारी – तारीख-ए-अकबरी
(B) निजामुद्दीन अहमद – तबकात-ए-अकबरी
(C) अब्दुल कादिर बदायूँनी – मुन्तखब-उत-तवारीख
(D) मोतमिद खाँ – खुलासतुत तवारीख

103. जहाँगीर के दरबार का चित्रकार ख्वाजा मंसूर प्रख्यात चित्रकार था–
(A) चिड़ियों और पशुओं के रूपचित्रों का
(B) मुगलकुलीनों के रूपचित्रों का
(C) भूदृश्यों का
(D) भित्तिचित्रों का

104. ख्वाजा अब्दुस्समद किसके दरबार का चित्रकार था ?
(A) बाबर (B) अकबर
(C) जहाँगीर (D) शाहजहाँ

105. 1663 में औरंगजेब के आदेश पर शेख निजाम की अध्यक्षता में छः व्यक्तियों द्वारा संकलित 'फतवा-ए-आलमगीरी' थी–
(A) प्रशासनिक नियमों की पुस्तक
(B) सैनिक विनिमय-समुच्चय
(C) धार्मिक विनिमय-समुच्चय
(D) औरंगजेब की उक्तियों का संग्रह

106. शेख अहमद सरहिन्दी को बन्दी बनाया था–
(A) हुमायूँ ने (B) अकबर ने
(C) जहाँगीर ने (D) शाहजहाँ ने

107. आगरा और फतेहपुर सीकरी दोनों ही लन्दन से बड़े हैं. यह विवरण है–
(A) बर्नियर का (B) राल्फ फिच का
(C) हॉकिन्स का (D) मनूची का

108. औरंगजेब के निम्नांकित पुत्रों में से किसने अपने पिता के विरुद्ध मराठों से सहायता माँगी थी ?
(A) अकबर-II (B) मुअज्जम
(C) आजम (D) कामवख्श

109. "अपने बड़े सामन्तों के बीच वह (सम्राट्) इतना प्रभावशाली था कि कोई अपना सिर बहुत ऊँचा उठाने की हिम्मत नहीं करता था, लेकिन साधारण वर्ग के लोगों के साथ वह उदार और मिलनसार था और स्वेच्छा से उन्हें अपने पास आने देता था और उनकी अर्जियाँ सुनता था. वह उनके उपहार खुशी से कवूल करता था, उन्हें अपने हाथों में लेकर अपनी छाती से लगाता था."
उपर्युक्त उद्धरण पर विचार कीजिए एवं बताइए कि यह किसका वक्तव्य है एवं किसके सन्दर्भ में है ?
(A) मांसरेट – अकवर
(B) टैवर्नियर – जहाँगीर
(C) राल्फ फिच – शाहजहाँ
(D) हॉकिंस – औरंगजेब

110. निम्नलिखित में से कौनसा शासक नृत्य और संगीत में निपुण था ?
(A) आदिलशाह सूर (B) बाबर
(C) अकबर (D) जहाँगीर

111. मुगल साम्राज्य में अमीरों का वेतन नियत किया जाता था–
(A) प्रत्येक मामलों में सम्राट् की इच्छानुसार
(B) उनकी मनसव की संख्या के अनुसार
(C) उनके सैन्यदल के आकार के आधार पर
(D) उनके वंश और दक्षता के आधार पर

112. साम्राज्यिक मुगल मालगुजारी की निम्नलिखित में से कौन-कौनसी प्रमुख विशेषताएँ थीं ?
1. यह उगाई गई फसल के अनुसार अलग-अलग होती थी.
2. यह अलग-अलग क्षेत्र में भिन्न प्रकार की होती थी.
3. यह खेती के लिए लगाई गई बोलियों के अनुसार अलग-अलग होती थी.
4. यह ग्राम प्रमुखों के साथ हुए अलग-अलग ठेकों के अनुसार भिन्न-भिन्न होती थी.
नीचे दिए गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–
कूट :
(A) 2, 3 एवं 4 (B) 1 एवं 4
(C) 1 एवं 2 (D) 1 एवं 3

113. अबुल फजल अकबर द्वारा राजस्व वसूल करने का औचित्य ठहराता है, क्योंकि यह–
(A) सार्वभौमत्व के लिए मुआवजा था
(B) सम्राट् का दैवी अधिकार था
(C) सीमाओं की सुरक्षा के लिए सेना के रखरखाव का खर्च था
(D) सम्राट् का वंशानुगत अधिकार था

114. औरंगजेब के काल में जिन सतनामियों ने बगावत कर नरनौल शहर को बेदखल कर दिया था, वे–
(A) कबीर के अनुयायी थे
(B) दादू के अनुयायी थे
(C) गुरुनानक के अनुयायी थे
(D) रविदास के अनुयायी थे

115. आदि ग्रन्थ साहिब के विषय में निम्नलिखित कथनों में से कौनसा एक कथन सही नहीं है ?
(A) इसका संकलन सत्रहवीं शताब्दी के प्रथम दशक में हुआ था.
(B) इसमें कबीर के पद्य हैं.
(C) इसमें प्रायः सगुण भक्ति के सन्तों के पद्य हैं.
(D) इसमें बाबा फरीद की उक्तियाँ हैं.

116. मथुरा के निकट वर्तमान वृन्दावन की इस रूप में पहचान की थी ?
(A) चैतन्य ने (B) मीराबाई ने
(C) वल्लभाचार्य ने (D) जीव गोस्वामी ने

117. मुगल प्रशासन में बख्शी होता था–
(A) टकसाल नियन्त्रक
(B) वेतन भुगतानकर्त्ता एवं गुप्तचर विभाग का प्रभारी
(C) कोषाध्यक्ष
(D) राजस्व मंत्रालय का प्रभारी

118. मुगलों की मनसबदारी व्यवस्था के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. अकबर ने मनसबदारी प्रथा प्रारम्भ की थी.
2. मनसबदारों को श्रेणीकरण उनकी जीतों और सवारों के आधार पर होता था.
3. मनसबदार केवल सैन्य अधिकारी थे.
उपर्युक्त कथनों में से कौन-कौनसे सही हैं ?
(A) 1, 2 एवं 3 (B) 1 एवं 2
(C) 2 एवं 3 (D) 1 एवं 3

119. बाबर ने भारत में मुगल शासन की स्थापना की, 1526 में–
(A) राणा सांगा पर विजय प्राप्त कर
(B) सिकदर लोदी की विजय प्राप्त कर
(C) दौलत खाँ लोदी की विजय प्राप्त कर
(D) इब्राहीम लोदी पर विजय प्राप्त कर

120. मुगल साम्राज्य में भू-राजस्व निर्धारण की इकाई थी–
(A) प्रति एक किसान (B) ग्राम
(C) परगना (D) जमींदार

121. विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय की कृति 'अमुक्तमाल्यद'–
(A) तेलुगू में थी (B) संस्कृत में थी
(C) तमिल में थी (D) कन्नड़ में थी

122. निम्नलिखित में से किस एक समुदाय ने अलिय रामराय की प्रतिशासन व्यवस्था के दौरान विशेष सुविधाएं प्राप्त कीं ?
(A) ब्राह्मण (B) नाई
(C) बुनकर (D) शिल्पी

123. मध्यकालीन दक्षिण भारत में बोले जाने वाले 'मणिग्रामम' से तात्पर्य है–
(A) ग्रामीण श्रमिक स्थल
(B) ग्रामीण अधिपतियों का भवन
(C) व्यापारियों का संघ
(D) ज्येष्ठों की स्थानीय सभा

124. प्रशासनिक प्रयोजन (Purpose) के लिए चोल राज्य का विभाजन निम्नलिखित हिस्सों में किया गया था–
1. कोट्टम 2. मण्डलम्
3. नाडु 4. उर
उनके आकार का अवरोही क्रम (descending order) में अनुक्रम है–
(A) 1, 2, 4, 3 (B) 2, 3, 1, 4
(C) 1, 3, 2, 4 (D) 2, 4, 1, 3

125. निम्नलिखित संतों पर विचार कीजिए–
1. श्री चैतन्य 2. लल्ल देव
3. नाम्वि आंडार 4. तुलसीदास
5. रामानुज
इनमें से कौन-कौन वैष्णव संत थे?
(A) 1, 2 और 3 (B) 2, 3 और 4
(C) 1, 4 और 5 (D) 3, 4 और 5

126. निम्नलिखित युग्मों में से कौनसा एक सही सुमेलित है?
(A) कबीर : सूरदास
(B) गुरुनानक : रामानन्द
(C) चैतन्य : हरिदास
(D) रामानुज : नामदेव

127. आदिग्रन्थ का संकलन (Compiled) किया गया–
(A) गुरुनानक देव के काल में
(B) गुरु अमरदास के काल में
(C) गुरु अर्जुन देव के काल में
(D) गुरु हरगोविन्द के काल में

128. निम्नलिखित शासकों में से कौन नृत्य और संगीत में बहुत प्रवीण (Proficient) था?
(A) बाबर (B) अकबर
(C) आदलशाह सूर (D) जहाँगीर

129. **कथन (A) :** कृष्णदेव राय का शासन काल (Reign) विजयनगर का महानतम् सफलता का काल था जब इसकी सेना सदैव विजयी होती थी.
कारण (R) : कृष्णदेव राय की सेना और नौसेना उनके द्वारा नियुक्त पुर्तगाली सेनापतियों द्वारा प्रशिक्षित की गई.
कूट :
(A) A और R दोनों सही हैं, और R, A का सही स्पष्टीकरण है
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है
(C) A सही है, परन्तु R गलत है
(D) A गलत है, परन्तु R सही है

130. विजयनगर राज्य में सामाजिक एवं धार्मिक विषयों पर निर्णय देते थे–
(A) समयाचार्य अथवा देशरि
(B) कवलकार अथवा अरसुकवलकार
(C) धर्मोपंच अथवा धर्मदेश
(D) पर्पोकाण अथवा ध्रुवराज

131. विजयनगर की नयनकार पद्धति के अन्तर्गत इनको भू-आवंटन किया जाता था–
(A) मंदिरों के रखरखाव के लिए मठों को
(B) वार्षिक शुल्क तथा सैन्य सेवा के बदले व्यक्तियों को
(C) धर्मार्थ-निधियों के लिए ब्राह्मणों को
(D) उपार्जन-स्रोत रहित महिलाओं को

132. निम्नलिखित में से कौनसा युग्म सही सुमेलित नहीं है ?
(A) गुलवदन बेगम : हुमायूँनामा
(B) ख्वान्द मीर : कानून-ए-हुमायूँनी
(C) जियाउद्दीन बरनी : तारीख-ए-फिरोजशाही
(D) ख्वाजा कलाँ : तज्किर-ए हुमायूँ व अकबर

133. श्री गुरु ग्रंथ साहब में भजन नहीं हैं–
(A) धन्ना के (B) पीपा के
(C) रैदास के (D) सैन के

134. मध्य एशियाई यात्री अब्दुर रज्जाक समरकंदी ने जिन्होंने विजयनगर राज्य का भ्रमण किया था, विशेषकर अपने साथ अपने देश ले जाने के लिए जो भारतीय सामान क्रय किया था, वह था–
(A) दवाइयाँ (B) हाथीदाँत की वस्तुएं
(C) चित्रकलाएं (D) सूती-वस्त्र

135. वहमनी राज्य में सद्र-ए-जहाँ किस विभाग का मुखिया होता था?
(A) भू-राजस्व
(B) विदेशी मामले
(C) धार्मिक तथा न्यायिक मामले
(D) सैन्य मामले

136. मनसवदारों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई?
(A) अकवर के शासनकाल में
(B) जहाँगीर के शासनकाल में
(C) शाहजहाँ के शासनकाल में
(D) औरंगजेब के शासनकाल में

137. "प्रत्येक अवस्था में मृत्यु उसका वरण (बालिका का) करने को प्रस्तुत है; उषाकाल में पोस्त के माध्यम से पकी हुई आयु में अग्नि ज्वाला के माध्यम से."
निम्न में से किस इतिहासकार द्वारा राजपूत महिलाओं के प्रति यह कथन दिया गया?
(A) क्रुक (B) उत्वी
(C) अल्वेरूनी (D) टॉड

138. इस्लाम शाह के काल में महदी आन्दोलन का नेतृत्व किया था–
(A) शेख हसन ने
(B) शेख अलाई ने
(C) मख्दूम-उल-मुल्क ने
(D) मीर सैयद मुहम्मद ने

139. निम्न में से कौनसा एक युग्म सही सुमेलित किया गया है?
(A) मलिक काफूर – राजेन्द्र प्रथम
(B) सिंगाय नायक – प्रतापरुद्र
(C) रविवर्मन कुलशेखर – उलुग खाँ
(D) कम्पिल देव – मुहम्मद तुगलक

140. निम्न में से किसके शासनकाल में विजयनगर राज्य अस्तित्व में आया?
(A) ग्यासुद्दीन तुगलक (B) मुहम्मद तुगलक
(C) फिरोजशाह तुगलक (D) खिज्र खाँ

141. कपड़े पर किए गए चित्रण निम्न में से किस हस्तलिखित ग्रन्थ से सम्बन्धित हैं?
(A) हरिवंश (B) हम्जानामा
(C) जामी-उत-तवारीख (D) अकवरनामा

उत्तरमाला

1. (D)	2. (B)	3. (C)	4. (C)	5. (A)
6. (B)	7. (B)	8. (D)	9. (C)	10. (C)
11. (C)	12. (A)	13. (D)	14. (D)	15. (B)
16. (A)	17. (B)	18. (C)	19. (B)	20. (D)
21. (C)	22. (A)	23. (D)	24. (B)	25. (C)
26. (C)	27. (C)	28. (B)	29. (B)	30. (C)
31. (A)	32. (B)	33. (C)	34. (C)	35. (A)
36. (D)	37. (A)	38. (B)	39. (D)	40. (C)
41. (D)	42. (B)	43. (D)	44. (B)	45. (B)
46. (C)	47. (D)	48. (D)	49. (C)	50. (B)
51. (B)	52. (A)	53. (A)	54. (A)	55. (A)
56. (A)	57. (B)	58. (C)	59. (A)	60. (D)
61. (C)	62. (D)	63. (B)	64. (C)	65. (A)
66. (C)	67. (D)	68. (A)	69. (D)	70. (A)
71. (D)	72. (D)	73. (C)	74. (A)	75. (C)
76. (D)	77. (A)	78. (C)	79. (D)	80. (C)
81. (A)	82. (B)	83. (D)	84. (C)	85. (D)
86. (B)	87. (A)	88. (D)	89. (C)	90. (B)
91. (C)	92. (C)	93. (B)	94. (C)	95. (A)
96. (B)	97. (B)	98. (C)	99. (C)	100. (B)
101. (C)	102. (D)	103. (A)	104. (B)	105. (A)
106. (C)	107. (B)	108. (A)	109. (A)	110. (A)
111. (B)	112. (C)	113. (A)	114. (A)	115. (C)
116. (A)	117. (B)	118. (B)	119. (D)	120. (D)
121. (A)	122. (B)	123. (C)	124. (B)	125. (C)
126. (C)	127. (C)	128. (C)	129. (C)	130. (A)
131. (B)	132. (D)	133. (B)	134. (C)	135. (C)
136. (C)	137. (D)	138. (D)	139. (D)	140. (B)
141. (B)				

संकेत

4. सेना एवं नामदेव रामानुज के शिष्य थे.
5. इस पंथ के संत वहुत आराम की जिंदगी व्यतीत करते थे.
9. दादू ने एक असाम्प्रदायिक मार्ग (निपख सम्प्रदाय) का उपदेश दिया.
135. मोहम्मद शाह द्वितीय ने फजुल्लाह अंजू को सद्र-ए-जहाँ या धार्मिक मामलों का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया.
136. जहाँगीर के समय के 2069 मनसवदार 1637 में शाहजहाँ के काल में 8000 हो गए थे.
141. यह हुमायूँ के दिमाग की उपज थी.

4

1556 ई. से 1707 ई. तक का भारत

(India of 1556 to 1707)

मुगल साम्राज्य (1556–1707 ई.)

मुगल सम्राट् अकबर

हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात्त जनवरी 1556 ई. में मुगल साम्राज्य की सत्ता अल्पव्यस्क अकबर के हाथों में आई. अकबर का शासनकाल मुगल वंश के इतिहास का गौरवमयी काल कहा जा सकता है. अकबर ने भारत में लगभग पचास वर्षों तक 1556-1605 ई. तक शासन किया. इस अवधि में उसने अपनी उत्कृष्ट शासन-प्रणाली, कूटनीति, वीरता एवं उदारता के फलस्वरूप भारत के एक बहुत बड़े हिस्से में अपने साम्राज्य का विस्तार किया.

अकबर : जीवन परिचय

1. प्रारम्भिक नाम	बदरुद्दीन मुहम्मद अकबर
2. वास्तविक नाम	जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर
3. प्रसिद्ध नाम	अकबर महान्
4. जन्म	15 अक्टूबर, 1542 ई. (रविवार)
5. जन्मस्थल	अमरकोट में (राजा वीरसाल के घर)
6. पिता का नाम	हुमायूँ
7. माता का नाम	हमीदा बानो बेगम (शेख अली अकबर जामी की पुत्री)
8. राज्याभिषेक	27 जनवरी, 1556 ई. में (13 वर्ष, 4 महीने की उम्र में)
9. पुत्र	1. सलीम 2. दानियाल 3. मुराद
10. धाय माँ	माहम अनगा
11. सुधार कार्य	1562 ई. में दास प्रथा, 1563 ई. में तीर्थयात्रा कर एवं 1564 ई. में जजिया कर समाप्त किया.
12. पद स्थापन	दीवान-ए-वजारत-ए-कुल नामक पद की स्थापना की.
13. प्रशासन वर्गीकरण	15 सूबों में साम्राज्य विभक्त था.
14. सिक्कों का प्रचलन	1. 1577 ई. में दिल्ली में एक शाही टकसाल का निर्माण कराया. 2. सोने का सिक्का मुहर (2 मुहर = 9 रुपये) 3. शंसब (सोने का 10 तोले का सिक्का) 4. इलाही (गोलाकार सोने का 10 रु. के बराबर) 5. जलाली (चाँदी का सिक्का) 6. दाम (रुपये का 40वाँ भाग, ताँबे का सिक्का) 7. अकबर ने अपने कुछ सिक्कों पर राम और सीता की मूर्ति अंकित कराई एवं देवनागरी में राम-सिया लिखवाया. 8. एक सोने के सिक्के पर एक तरफ बाज तथा दूसरी ओर टकसाल का नाम एवं ढालने की तिथि लिखवाई गई.
15. प्रमुख निर्मित इमारतें	1. आगरा का किला (1565-1580 ई. आगरा) 2. लाहौर का किला (1565-75 ई. लाहौर) 3. अजमेर का किला (1570 ई. अजमेर) 4. फतेहपुर सीकरी (1571-1580 ई. सीकरी) 5. शेख सलीम चिश्ती की दरगाह (1571-72 ई. में सीकरी में) 6. इबादतखाना (1572 ई. फतेहपुर सीकरी)[1] 7. अटक का किला (1581-82 ई. अटक) 8. इलाहाबाद का किला (1583 ई.) 9. बुलन्द दरवाजा (1602 ई. फतेहपुर सीकरी)

1. 1572 ई. में इबादतखाने को बनाने की अनुमति दी गई थी, जिसका निर्माण 1575 ई. में हुआ था.

16. प्रमुख दरबारी इतिहासकार
1. अबुल फजल
2. हिन्दू बेग
3. निजामुद्दीन अहमद
4. बदायूँनी
5. अब्बास खाँ शेरवानी
6. अहमद यादगार
7. जौहर आफताबची
8. मीर मुहम्मद मासूम
9. रिजकुल्लाह मुश्ताकी
10. बायजिद बयात
11. आरिफ कंधारी
12. मीर अलाउद्दौला कजवीनी

17. दरबार के नवरत्न[1]
1. बीरबल
2. टोडरमल
3. अबुल फजल
4. भगवानदास
5. मानसिंह
6. अब्दुर्रहीम खानखाना
7. मुल्ला दो प्याजा
8. तानसेन
9. फैजी

18. समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थ
अकबरनामा, आइने अकबरी (अबुल फजल), तारीखे फरिश्ता (हिन्दू बेग), तबकाते-अकबरी (निजामुद्दीन अहमद), मुन्तखाब-उत-तवारीख (बदायूँनी), तारीख-ए-शेरशाही (अब्बास खाँ शेरवानी), तारीखे सलातीने अफगना (अहमद यादगार), तज किरातुल वाकयात (जौहर अफताबची), तारीखे सिन्ध (मीर मुहम्मद मासूम), वाकयाते मुश्ताकी (रिजकुल्लाह मुश्ताकी), तज किराएँ हुमायूँ अकबर (बायजिद बयात), नफाइस-उल-मासिर (मीर अला-उद्दौला कजवीनी), तारीख-ए-अकबरी (आरिफ कन्धारी)

19. प्रमुख विजयी युद्ध
1. पानीपत का द्वितीय युद्ध (अकबर एवं हेमू के मध्य 1556 ई. में)
2. अहमदनगर का युद्ध (चाँदबीबी एवं अकबर 1600 ई.)
3. असीरगढ़ का युद्ध (मियाँ बहादुर शाह व अकबर के मध्य, 1601 ई. में)

20. सम्पादित कृत्य
1. 1578 ई. तौहीद-ए-इलाही (दैवी एकेश्वरवाद) की स्थापना की जो दीन-ए-इलाही (ईश्वर के धर्म) के नाम से विख्यात हुआ.
2. 1579 ई. में इबादतखाने को बन्द कर 'महजर' की घोषणा की.
3. 1584 ई. में हिज्री सन् के स्थान पर सौर वर्ष चलाया.
4. 1580 ई. में जाब्ती व्यवस्था लागू की.
5. 1563 ई. में तीर्थयात्रा कर एवं जजिया कर समाप्त किया.
6. तुलादान, झरोखा दर्शन एवं तिलक लगाने की प्रथा का प्रारम्भ किया.

21. प्रमुख संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद
1. सिंहासन बत्तीसी (फैजी द्वारा 1574-75 ई. में)
2. अथर्ववेद (हाजी इब्राहीम सरहिन्दी द्वारा 1575-76 ई. में)
3. महाभारत (शेख सुल्तान बदायूँनी, नकीब खाँ, रज्मनामा द्वारा 1582-83 ई. में)
4. रामायण (बदायूँनी द्वारा 1583-84 ई. में)
5. हरिवंश पुराण (मौलाना शैरी द्वारा 1585 ई. में)
6. कालियादमन (अबुल फजल, द्वारा 1589-90 ई. में)
7. राजतरंगिणी (मुल्ला मुहम्मद, द्वारा 1590 ई. में)
8. लीलावती (फैजी द्वारा, 1593 ई. में)
9. नल दमयन्ती (फैजी द्वारा, 1594 ई.)
10. पंचतन्त्र (अबुल फजल द्वारा, 1596 ई. में)

22. प्रमुख दरबारी कवि
1. अबुल फजल
2. फैजी
3. नजीरी
4. उत्वी
5. रहीम
6. गिजाली

23. तत्कालीन संगीतज्ञ
(i) तानसेन
(ii) बाज बहादुर
(iii) बैज बख्श
(iv) गोपाल
(v) हरिदास
(vi) रामदास
(vii) सुजान खाँ
(viii) मियाँ चाँद

24. मृत्यु
16 अक्टूबर, 1605 ई.

दीन-ए-इलाही (Din-I-Illahi)

दीन-ए-इलाही की स्थापना धार्मिक क्षेत्र में अकबर का सबसे महत्वपूर्ण कार्य था. इबादतखाना के बन्द करवाने एवं महजर की घोषणा के पश्चात्त धार्मिक मामलों में उसकी रुचि

1 दरबार के नवरत्नों में से एक नाम कई स्थानों पर तानसेन का तथा कई स्थानों पर हकीम हुमाम का नाम मिलता है, लेकिन दोनों को लेने पर नवरत्न नहीं रह जाते.

पूर्ववत बनी रही. सन् 1582 ई. में अकबर ने गणमान्य एवं सम्माननीय व्यक्तियों, धार्मिक नेताओं एवं सरदारों की सभा आहूत कर उनसे अनुरोध किया कि आप सभी लोग एक ऐसा मार्ग तलाश करें जो साम्प्रदायिकता से मुक्त होकर सार्वभौमिक एवं शाश्वत हो. सभा ने अकबर से ही ऐसा धर्म खोजने का निवेदन किया इसके परिणामस्वरूप 1582 ई. में अकबर ने तौहीद-ए-इलाही (दैवी एकेश्वरवाद) की घोषणा करना आवश्यक था. दीन-ए-इलाही के अनुयायियों को मानना पड़ता था कि ईश्वर एक है एवं उसका प्रतिनिधि अकबर है. अकबर को गुरु एवं दीन-ए-इलाही के मानने वालों को शिष्य समझा जाता था. हर रविवार को अकबर इस धर्म में प्रविष्ट होने के लिए दीक्षा देता था. इसके पश्चात् धर्म की दीक्षा लेने वालों को अकबर के समक्ष सिज्दा करना पड़ता था. अकबर उसको सम्मानित करता था एवं उसके

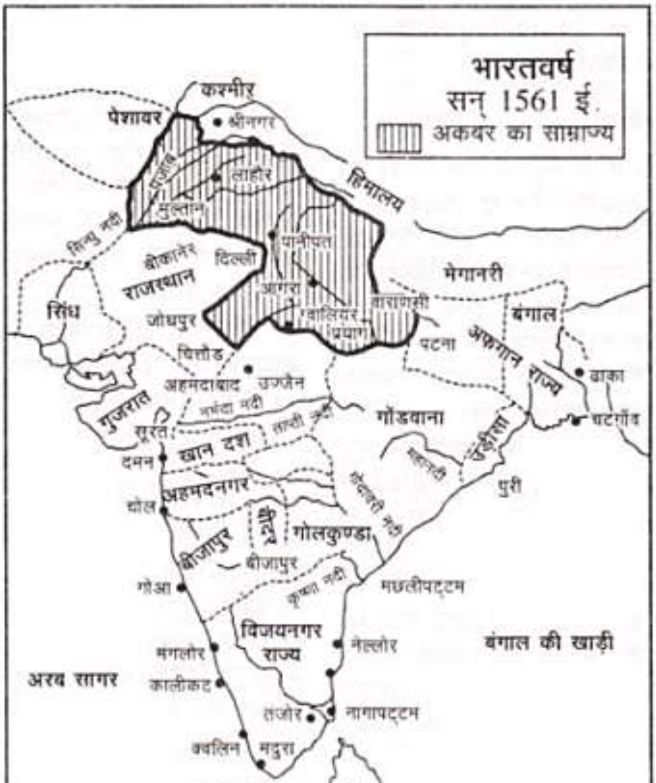

की, जो कालान्तर में दीन-ए-इलाही के नाम से ख्यात हुआ. इस धर्म के लिए उसने कोई प्रचार कार्य, धर्मग्रन्थ, पूजा स्थल या मन्दिर-मस्जिद को निश्चित तय नहीं किया, अपितु उसे सैद्धान्तिक रूप में स्वीकार किया. सुलह-ए-कुल की नीति को ध्यान में रखते हुए दीन-ए-इलाही में उसने सभी धर्मों की अच्छी बातों को समाविष्ट किया.

दीन-ए-इलाही का स्वरूप

दीन-ए-इलाही में गुरु को सबसे ऊपर माना गया था. इस धर्म के पालन के लिए कई निश्चित नियमों का पालन सिर पर एक पगड़ी रखते हुए एक शष्ठ देता था जिस पर 'अल्ला हो अकबर' (ईश्वर ही (अकबर) सबसे महान् है) खुदा रहता था. इस धर्म के अनुयायी अभिवादन एवं प्रत्याभिवादन के लिए 'अल्ला हो अकबर' एवं 'जल्ला जलाल हू' का नारा लगाते थे. दबिस्तान मजहाबी में दीन-ए-इलाही के सम्बन्ध में सम्पूर्ण उल्लेख मिलता है. इसके लेखक मोहसिन फानी थे. इस धर्म को स्वीकार करने वालों को मूल धर्म को छोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी, लेकिन प्रसिद्ध साहित्यकार बदायूँनी का मानना है कि दीन-ए-इलाही ग्रहण करने वालों को इस्लाम धर्म का परित्याग करना पड़ता था.

दीन-ए-इलाही को ग्रहण करने वालों के लिए निरामिष होना अत्यावश्यक था साथ ही सम्राट् के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति के साथ अग्नि एवं सूर्य की उपासना करना आवश्यक था. जन्म-दिवस पर दावत देनी पड़ती थी. हिंसा युक्त जीविका वाले लोगों के साथ खाने-पीने एवं उठने-बैठने पर प्रतिबन्ध था. दीन-ए-इलाही धर्म के सदस्यों को जीते-जी मृत्यु भोज देना पड़ता था तथा नाबालिग, वृद्धाओं, गर्भवती एवं रजस्वला स्त्रियों के साथ संभोग करने पर प्रतिबन्ध था. ब्लॉकमेन के अनुसार अकबर के काल में मात्र 18 महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने इस धर्म को ग्रहण किया था. एकमात्र हिन्दू बीरबल था, जिसने इस धर्म को स्वीकार किया था.

प्रशासन (Administration)

अकबर के शासन की सबसे श्रेष्ठतम बात उसका धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त पर आधारित होना था. अकबर, राज्य में रहने वाले सभी धर्मों एवं जाति के लोगों के साथ प्रशासनिक एकरूपता का व्यवहार करता था. अकबर को सम्राट् के दैवीय सिद्धान्त पर विश्वास था इसके फलस्वरूप सम्राट् को उसने अधिक गौरवमयी सिद्ध कर प्रजा के मध्य एक सम्मानित स्थिति का प्रादुर्भाव किया. अकबर ने खलीफा की प्रभुसत्ता को अस्वीकार कर स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित किया. खलीफा की तरह खुतबा पढ़ने एवं जमीं वोस तथा सिज्दा की प्रथा का उसने आरम्भ किया. 1579 ई. में महजर की घोषणा की उसी दौरान से वह धार्मिक मामलों का प्रमुख बन गया. राज्य की सम्पूर्ण शक्ति अकबर के हाथों में केन्द्रित थी तथा उसके मंत्री एवं पदाधिकारी उसके पूर्ण नियन्त्रण में थे. सम्राट् केन्द्रीय प्रशासन का प्रमुख होता था. प्रशासनिक, सैनिक, न्यायिक, आर्थिक एवं धार्मिक व्यवस्था का प्रधान राजा स्वयं था. अकबर के शासनकाल के प्रशासन के सम्बन्ध में निम्नलिखित पाँच पदाधिकारियों का उल्लेख मिलता है–

1. वकील
2. वजीर (दीवान)
3. सद्र-उस-सद्र
4. मीर बख्शी
5. खानसामाँ (मीर सामाँ)

प्रारम्भ में वकील का पद प्रतिष्ठापूर्ण था, लेकिन बाद में उसके अधिकारों में कमी कर उसे राजा का प्रमुख सलाहकार मात्र बना दिया गया था. वजीर प्रशासनिक मामलों का प्रमुख पदाधिकारी बन गया था, उसे वित्त विभाग का कार्य भी मिला हुआ था. वजीर का पद प्रधानमंत्री के सदृश था. राजा की अनुपस्थिति में उसे प्रशासन चलाने की जिम्मेदारी थी. दीवान-ए-आला या दीवान वजीर को वित्त मंत्री के रूप में कहा जाता था. दीवान की सहायता के लिए निम्नलिखित अधिकारी नियुक्त थे–

1. दीवान-ए-खालसा–राज्य की भूमि की देखभाल करने वाला.

2. दीवान-ए-तन–सरकारी कर्मचारियों के वेतन और जागीर की देखभाल करने वाला.

3. मुस्तौफी–आय-व्यय का लेखा-जोखा रखने वाला.

4. वाकया-ए-नवीस–राजकीय आदेशों एवं दस्तावेजों को सुरक्षित रखने वाला.

5. मुशरिफ–दफ्तर की देखभाल करने वाला.

धार्मिक विभाग के प्रमुख के रूप में सद्र-उस-सद्र कार्य संभालता था एवं धार्मिक मामलों में वह सम्राट् अकबर का प्रमुख सलाहकार होता था. सैनिक विभाग का प्रमुख मीर बख्शी होता था, जो मनसबदारों एवं राजकीय सेना पर नियन्त्रण रखने से लेकर सरकारी कर्मचारियों के वेतन की व्यवस्था करता था. यह सम्राट् का अत्यन्त विश्वासपात्र व्यक्ति माना जाता था.

मीर सामाँ या खानसामा सम्राट् एवं शाही परिवार की आवश्यकताओं का ख्याल रखता था. सरकारी कारखानों, राजमहल, राजदरबार से सम्बन्धित भण्डार, कोष एवं कर्मचारियों पर नियन्त्रण रखना उसका प्रमुख कार्य था. काजी उल कजात प्रधान न्यायाधीश होता था, जो मुफ्ती की सहायता से न्याय करता था. नैतिक नियमों के पालन के लिए प्रजा में जागृति पैदा करने का कार्य मुहतसिब का था. इस तरह अकबर का प्रशासन आदर्श प्रशासन था. शाही तोपखाना का प्रमुख–दारोगा-ए-तोपखाना, सूचना एवं गुप्तचर विभाग का प्रधान–दारोगा-ए-डाकचौकी एवं मीर मुंशी (बादशाह की आज्ञा एवं आदेशों को लिखना एवं प्रसार करना) आदि अन्य कर्मचारी होते थे जो अपने दायित्वों का निर्वहन करते थे.

मनसबदारी व्यवस्था

अकबर का सैन्य संगठन मनसबदारी व्यवस्था के आधार पर था. इस व्यवस्था के तहत प्रत्येक सैनिक पदाधिकारी एवं सरदार का मनसब या पद निश्चित किया गया था.

अबुल फजल ने मनसबदारों की 66 श्रेणियाँ बताई हैं. ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार सबसे छोटा मनसब 10 का एवं सबसे बड़ा मनसब 7000 का होता था. प्रारम्भ में सिर्फ राजवंशीय लोगों को ही 5000 से अधिक मनसब प्रदान किया जाता था, लेकिन कालान्तर में महत्वपूर्ण सैनिकों को इतना ही मनसब प्रदान किया जाने लगा था. मनसबदार अपने अनुरूप श्रेणी एवं पद को ध्यान में रखते हुए सैनिकों को लेते थे. सेना के खर्च के लिए जागीर या नकद वेतन देने की व्यवस्था थी. कालान्तर में अकबर ने मनसबदारों की दो श्रेणियाँ बनाई थीं–

1. जात 2. सवार.

जात के अनुसार प्रत्येक मनसवदार का पद एवं वेतन निश्चित किया था. सवार को जात से दो रुपया अधिक वेतन मिलता था. मनसवदार घोड़ा के अलावा गाड़ियाँ, ऊँट एवं खच्चर भी रखते थे. कुछ समय में ही अकबर ने पाँच हजार एवं उससे कम के मनसवदारों की तीन उपश्रेणियाँ बना दी थीं–

1. प्रथम उपश्रेणी
2. मध्य उपश्रेणी
3. तृतीय उपश्रेणी

मनसवदारों के अतिरिक्त अहदी एवं दाखिली सैनिकों की टुकड़ी भी अकबर के समय में होती थी.

जहाँगीर

(1569-1627 ई.)

1. वास्तविक नाम	सलीम
2. प्रसिद्ध नाम	जहाँगीर
3. जन्म	30 अगस्त, 1569 ई.
4. पिता का नाम	अकबर
5. बाल्यकालीन नाम	शेखू बाबा
6. माता का नाम	मरियम उज्जमानी या हरका बाई (आमेर के राजा भारमल्ल की पुत्री)
7. पत्नियाँ	1. मानबाई (आमेर के राजा भगवानदास की पुत्री से विवाह 1586 ई. में) 2. जोधाबाई या जगत गोसाई (मोटा राजा उदयसिंह की कन्या के साथ 1586 ई. में) 3. मेहरुन्निसा (1611 ई. में विवाह किया)
8. आने वाले समकालीन विदेश यात्री	1. कैप्टिन हॉकिन्स (अंग्रेज व्यापारी, 1608-1613 ई.) 2. विलियम फिच (अंग्रेज यात्री, 1608-1612 ई.) 3. जॉन जुरदाँ (पुर्तगाली यात्री, 1608-1617 ई.) 4. निकोलस डाउंटन (अंग्रेज नौ-सेनाधिकारी, 1608-1611 ई.) 5. निकोलस विथिंगटन (अंग्रेज यात्री, 1612-1616 ई.) 6. टामस कोर्येट (अंग्रेज यात्री, 1612-1617 ई.) 7. सर टामस रो (अंग्रेज राजदूत, 1615-1619 ई.) 8. पाल केनिंग (अंग्रेज यात्री, 1615-1625 ई.) 9. एडवर्ड टेरी (अंग्रेज पादरी, 1616-1619 ई.) 10. फ्रांसिस्को पेलसर्ट (डच यात्री, 1620-1627 ई.) 11. पित्रा देला वेली (इटेलियन यात्री, 1622-1660 ई.)
9. स्थापत्य निर्माण	अकबर का मकबरा (सिकन्दरा में, 1613 ई. में)
10. तत्कालीन प्रमुख इतिहासकार	1. नुरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर 2. नियामतुल्ला 3. अब्दुल्ला 4. मोतमिद खाँ 5. गैरत खाँ
11. तत्कालीन ऐतिहासिक पुस्तकें	1. मासिरे जहाँगीरी (गैरत खाँ) 2. इकबालनामा-ए-जहाँगीरी (मोतमिद खाँ) 3. तारीखे दाऊदी (अब्दुल्ला) 4. मखजने अफगना (नियामतुल्ला) 5. तुजुक-ए-जहाँगीर (मुहम्मद जहाँगीर)
12. प्रेमिका	नूरजहाँ (मेहरून्निसा)
13. राज्याभिषेक	3 नवम्बर, 1605 ई. में
14. उपाधि	नुरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी
15. गुरु	अब्दुर्रहीम खानखाना
16. प्रमुख विद्रोह	1. खुर्रम का विद्रोह (1621 ई. में) 2. महावत खाँ का विद्रोह (1626 ई. में)
17. पराजय	कांधार आक्रमण (1622 ई. में ईरान के बादशाह शाह अब्बास प्रथम ने जहाँगीर को परास्त किया.
18. सम्पादित कार्य	1. तमगा एवं मीर बहरी जैसे करों पर रोक लगाई. 2. सड़कों के किनारे सराय, मस्जिद, कुँओं का निर्माण कराया गया. 3. शराब के उत्पादन एवं बिक्री पर प्रतिबन्ध लगाया. 4. अपराधियों को अंग-भंग की सजा देने पर रोक लगाई. 5. अपने जन्म-दिन, राज्यारोहण के दिन एवं अकबर के जन्म-दिन पर पर पशु वध प्रतिबन्धित कर दिया गया. 6. जेल में बन्द कैदियों को मुक्ति प्रदान की.
19. भाई	(i) दानिपाल, (ii) मुराद
20. राज्य वर्गीकरण	साम्राज्य 15 सूबों में वर्गीकृत था.

21. प्रचलित सिक्के	1. निसार (रुपये के चौथाई मूल्य का) 2. कुछ सिक्कों पर नूरजहाँ एवं जहाँगीर का चित्र अंकित था तथा कुछ सिक्कों में दोनों शराब के प्याले लिए हुए चित्र था.
22. मृत्यु	28 अक्टूबर, 1627 ई. में लाहौर में.

शाहजहाँ का जीवन परिचय
(1592–1666 ई.)

1. प्रारम्भिक नाम	खुर्रम
2. प्रसिद्ध नाम	शाहजहाँ (जहाँगीर द्वारा प्रदत्त)
3. पिता का नाम	जहाँगीर
4. माता का नाम	जगत गोसाई या जोधाबाई
5. जन्म	5 जनवरी, 1592 ई.
6. जन्म-स्थल	लाहौर
7. पत्नी	मुमताज महल (आसफ खाँ की पुत्री एवं अर्जुमन्द बानू बेगम नूरजहाँ की भतीजी)
8. उपाधि	1. अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब किरन-ए-सानी 2. शाहजहाँ
9. राज्याभिषेक	4 फरवरी, 1628 ई.
10. स्थापत्य स्मारक	1. दिल्ली का लाल किला 2. जामा मस्जिद 3. आगरा किले का मोती मस्जिद (1654 ई.) 4. दीवान-ए-आम (1628 ई. में दिल्ली में) 5. दीवान-ए-खास (1637 ई. में दिल्ली में) 6. ताजमहल (1632-43 आगरा में) 7. तख्त-ए-ताउस या मयूर सिंहासन 8. शाहजहाँनाबाद 1638 ई. दिल्ली में 9. शालीमार बाग 1637 ई. लाहौर में
11. तत्कालीन दरबारी इतिहासकार	1. मुहम्मद सादिक खाँ 2. मुहम्मद अमीन कजवीनी 3. अब्दुल हमीद लाहौरी 4. मुहम्मद सालिह 5. मुहम्मद वारिस
12. समकालीन ऐतिहासिक पुस्तकें	1. शाहजहाँनामा (मुहम्मद सादिक खाँ) 2. पादशाहनामा (मुहम्मद अमीन कजवीनी) 3. अमले सालिह (मुहम्मद सालिह) 4. पादशाहनामा (मुहम्मद वारिस)
13. अनुदित साहित्य	1. योग वाशिष्ठ (1650 ई. में दाराशिकोह द्वारा) 2. श्रीमद्‌भगवद्‌गीता गीता (1632 ई. में दाराशिकोह द्वारा)
14. राज्य वर्गीकरण	सम्पूर्ण साम्राज्य 21 सूबों में विभक्त था.
15. सन्तानें	1. जहाँआरा 2. दाराशिकोह 3. रोशनआरा 4. औरंगजेब 5. मुरादबख्श 6. गौहर आरा 7. शाह शुजा
16. प्रचलित संवत्	हिज्री संवत् (इलाही संवत् के स्थान पर)
17. तत्कालीन विदेश यात्री	1. जॉन लॉयट (डच यात्री, 1626-1633 ई.) 2. जॉन फ्रियर (अंग्रेज यात्री, 1627-1631 ई.) 3. पीटर मण्डी (इटेलियन यात्री, 1630-1634 ई.) 4. टैवर्नियर (फ्रैंच जौहरी, 1641-1687 ई.)
18. प्रमुख प्रारम्भिक विद्रोह	1. बुन्देलखण्ड का विद्रोह (1628-1635 ई.) 2. खानजहाँ लोदी का विद्रोह (1629-1631 ई.)
19. राजकवि	जगन्नाथ पण्डित
20. मृत्यु	22 जनवरी, 1666 ई. में

औरंगजेब का जीवन परिचय
(1618-1707 ई.)

1. वास्तविक नाम	औरंगजेब आलमगीर
2. प्रसिद्ध नाम	औरंगजेब
3. जन्म	3 नवम्बर, 1618 ई.
4. जन्म-स्थल	दोहद (उज्जैन)
5. पिता का नाम	शाहजहाँ
6. उपाधि	अब्दुल मुजफ्फर मुइनुद्दीन मुहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर पादशाह गाजी
7. राज्याभिषेक	(i) 21 जुलाई, 1658 ई. में मुगल सत्ता सँभाली. (ii) 5 जून 1659 ई. में राज्याभिषेक का उत्सव किया.
8. माता	मुमताजमहल
9. भाषा ज्ञान	अरबी, फारसी एवं तुर्की भाषा का ज्ञाता.
10. शासनकाल में प्रजा पर प्रतिबन्ध	1. सिक्कों पर कलमा लिखे जाने पर रोक. 2. औरतों के मजार जाने पर रोक. 3. संगीत एवं ज्योतिष विद्या के अभ्यास पर रोक. 4. नौरोज के उत्सव पर रोक. 5. सती प्रथा, दास बिक्री, जुआ, वैश्या-वृत्ति एवं नशा करने पर रोक लगा दी गई थी.

11. पत्नी	रविया दुर्रानी
12. पुत्री	जेबुन्निसा
13. पुत्र	1. सुल्तान मुहम्मद 2. शाहजादा मुअज्जम 3. आजम 4. शाहजादा अकबर 5. कामबख्श
14. हिन्दू विरोधी कार्य	1. काशी का विश्वनाथ मन्दिर, मथुरा का केशवराय मन्दिर तथा पाटन के सोमनाथ मन्दिर को ध्वस्त करा दिया गया. 2. सरकारी कार्यालयों से हिन्दू कर्मचारियों को निष्कासित कराया गया. 3. 1679 ई. में हिन्दुओं पर जजिया (जिज्यह) कर लागू किया.
15. प्रारम्भिक जीवन	1. 1636 ई. में पहली बार दक्षिण का सूबेदार बनाया गया. 2. 1644 ई. में गुजरात का, 1648 ई. में मुल्तान और सिन्ध का तथा 1652 ई. में दक्षिण का सूबेदार बनाया गया.
16. स्थापत्य निर्माण	1. लाहौर की बादशाही मस्जिद (1674 ई. में) 2. बीबी का मकबरा, औरंगाबाद (1678 ई. में) (पत्नी रबिया-उद्-दुर्रानी की स्मृति में) 3. मोती मस्जिद (दिल्ली के लाल किले में)
17. समकालीन संगीतज्ञ	1. सुखी सेन 2. कलावन्त 3. किरपा 4. हयात सरसनैन 5. रसवैन खाँ
18. तत्कालीन	1. मुन्तखाब उल लुबाव (खफी खाँ) 2. आलमगीरनामा (मिर्जा मुहम्मद काजिम) 3. मआसिरे आलमगीरी (मुहम्मद साकी) 4. खुलासत-उत-तवारीख (सुजान राय) 5. फ़ुतुहाते-आलमगीरी (ईश्वरदास) 6. नुस्खा-ए-दिलकुशाँ (भीमसेन बुरहानपुरी)
19. राज्य का वर्गीकरण	21 सूबों में विभक्त था (14 सूबे उत्तर भारत, 6 दक्षिण भारत एवं 1 अफगानिस्तान में)
20. प्रमुख विद्रोह	1. अफगान विद्रोह (उत्तर-पश्चिमी, सीमांत क्षेत्र 1667-1672 ई. में) 2. जाट विद्रोह (मथुरा के जाटों द्वारा 1669, 1685-88 ई.) 3. सतनामी विद्रोह (मथुरा के पास नारनौल में 1672 ई. में) 4. बुन्देला विद्रोह (1661 ई.) 5. शहजादा अकबर का विद्रोह (1681 ई. में) 6. अंग्रेजों का विद्रोह (1686 ई. में) 7. राजपूत विद्रोह (1679 ई. में) 8. सिख विद्रोह (1675 ई. से मृत्यु-पर्यन्त)
21. सैन्य प्रबन्ध	60,000 घोड़े, 1,00,000 पैदल सैनिक, 50,000 ऊँट, 3,000 हाथी
22. प्रमुख विदेशी यात्री	1. बर्नियर (फ्रेंच चिकित्सक, 1658–1668 ई.) 2. जीन थिन नाट (फ्रेंच यात्री, 1666–1668 ई.) 3. टैवर्नियर (फ्रेंच जौहरी, 1641–1687 ई.)
23. मृत्यु	3 मार्च, 1707 ई. को अहमदनगर के पास

शाहजहाँ की दक्षिण नीति

दक्षिण राज्यों में मुगल प्रभुत्व स्थापित करने की दिशा में पहला कदम अकबर ने उठाया था, जिसमें जहाँगीर एवं शाहजहाँ ने भी अपने समय में अत्यधिक संघर्ष किया था. शाहजहाँ का प्रयास दक्षिण भारत में स्थापित होने का कुछ हद तक सफल रहा, लेकिन पूर्णतः मुगल दक्षिण में स्थापित न हो सके. 1626 ई. में मलिक अम्बर की मृत्यु के बाद से अहमदनगर, बीजापुर एवं गोलकुण्डा की स्थिति कमजोर हो गई, तथापि दक्षिण रियासतों ने अन्त तक मुगलों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा. शासन सँभालने के बाद शाहजहाँ ने खान-ए-जहाँ लोदी को दक्षिण का सूबेदार बनाकर अहमदनगर के क्षेत्रों को अपने कब्जे में लेने की रणनीति बनाई. 1629 ई. में अहमदनगर पर आक्रमण कर मुगल सेना ने बालाघाट एवं तेलंगाना पर आक्रमण कर आधिपत्य कर लिया.

धार्मिक नीतियाँ

अकबर की धर्म नीति शाहजहाँ के काल में पूर्णतः विनष्ट हो गई थी. शाहजहाँ के समय कट्टरता एवं धार्मिक अनुदारता का वर्चस्व स्थापित हो गया था. उसके काल में तीर्थयात्रा कर लगाये एवं हिन्दू मन्दिरों को तुड़वाया गया. शाहजहाँ की नीति अतुष्टनीय थी तथा मुसलमानों में भी वह सुन्नी समर्थक था.

शाहजहाँ की तरह ही औरंगजेब भी एक धर्मान्ध शासक था. कुछ इतिहासकार उसे धार्मिक सहिष्णुमयी नीति का पोषक भी स्वीकारते हैं.

- कुछ इतिहासकारों के अनुसार औरंगजेब एक रूढ़िवादी सुन्नी मुसलमान था, जिसने कुरान को अपने शासन का मूलाधार बनाया था.

- औरंगजेब ने नैतिक एवं धार्मिक मामलों की देखरेख के लिए मुहतसिब की नियुक्ति कराई थी.
- औरंगजेब ने 1679 ई. में हिन्दुओं पर पुनः जजिया कर लगाया था, जो उसकी कट्टरवादिता का स्पष्ट प्रमाण था.
- 1669 ई. में औरंगजेब ने सभी सूबदारों एवं मुहतसिबों को हिन्दू मन्दिरों एवं पाठशालाओं को तोड़ने की अनुमति प्रदान की थी.
- औरंगजेब अपने सिक्कों पर कुरान की आयतें (कलमा) खुदवाना निषिध किया.
- औरंगजेब ने गुरुवार की रात को पीरों की मजार एवं कब्रों पर दिये जलाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था.
- शाहजहाँ ने हिन्दुओं से मुसलमान बनाने के लिए एक अलग विभाग बना रखा था.
- शाहजहाँ ने 1636-37 ई. में सिज्दा के स्थान पर चहार तस्लीम का प्रारम्भ किया था.

शिवाजी का जीवन परिचय

(1630-1680 ई.)

1. वास्तविक नाम	शिवाजी
2. प्रसिद्ध नाम	छत्रपति शिवाजी
3. जन्म	19 फरवरी, 1630 ई. (कुछ इतिहासकार उनका जन्म 20 अप्रैल, 1627 ई. मानते हैं)
4. जन्म स्थल	पूना (महाराष्ट्र) के पास शिवनेरी दुर्ग में
5. माता	जीजाबाई
6. पिता	शाहजी भोंसले
7. दादाजी	मालोजी
8. प्रारम्भिक जीवन	(i) पिता, माँ एवं बालक शिवाजी को छोड़कर अलग रहने लगे थे. (ii) दादाजी कोणदेव, माँ जीजाबाई एवं गुरु रामदास ने पालन-पोषण किया था.
9. गुरु	समर्थ गुरु रामदास
10. उल्लेखनीय तथ्य	1. 1646 ई. में बीजापुर के तोरण किले पर अधिकार किया. 2. तोरण के दक्षिण-पूर्व में राजगढ़ नामक किला बनवाया. 3. बीजापुर सुल्तान के कोण्डाना किले पर अधिकार कर लिया. 4. कोण्डाना के किले का नाम सिंहगढ़ रखा गया. 5. पिता की प्राणरक्षा के लिए बंगलीर कोण्डाना एवं कन्दपी का किलों का समर्पण कर अपने पिता को मुक्त कराया.
11. निर्माण कार्य	भवानी मन्दिर (जावली के समीप)
12. पराजित	अफजल खाँ (बीजापुर का सेनापति)
13. ध्वज स्थापना	गेहुँआ रंग (गुरु रामदास के प्रतिनिधि होने का प्रतीक)
14. प्रसिद्ध लड़ाई	सिंहगढ़ की लड़ाई
15. राज्याभिषेक	7 जून, 1674 ई. को
16. उपाधि	छत्रपति
17. साम्राज्य वर्गीकरण	1. उत्तरी प्रान्त 2. दक्षिणी प्रान्त 3. दक्षिणी-पूर्वी प्रान्त 4. नव-विजित प्रदेश
18. राज्य में दुर्गों की संख्या	240 दुर्ग
19. मृत्यु	3 अप्रैल, 1680 ई.

अबुल फजल का जीवन परिचय

1. वास्तविक नाम	शेख अबुल फजल
2. उपनाम	अल्लामी (कविता में प्रयुक्त)
3. जन्म	14 जनवरी, 1551 ई. में
4. जन्म-स्थल	आगरा के पास रामबाग
5. पिता	शेख मुबारक
6. भाई	शेख फैजी (मुगलकालीन प्रसिद्ध कवि)
7. प्रारम्भिक जीवन	1. अल्पायु से साहित्यिक गतिविधियों से लगाव 2. 1565 ई. में अकबर के अधीन एक हजार अश्वारोही सैन्य के मनसब एवं 1566 ई में दिल्ली के दीवान नियुक्त हुए.
8. अनुदित रचनाएँ	1. कालीयदमन का फारसी भाषा में 2. महाभारत का फारसी भाषा में 3. अयार-ए-दानिश
9. पुत्र	अब्दुर्रहमान
10. विरोधी	जहाँगीर (सलीम)
11. उल्लेखनीय तथ्य	1. अबुल फजल प्रसिद्ध कवि, लेखक विद्वान् एवं अकबर के नौरत्नों में से एक थे. 2. अबुल फजल रोजाना 22 किग्रा भोजन करते थे.
12. पौत्र	बिशोतान
13. प्रमुख रचनाएँ	1. अकबरनामा 2. आइन-ए-अकबरी 3. मकतूबात-अल्लामी
14. मृत्यु/हत्या	1602 ई. में (बुन्देला राजा वीरसिंह ने सलीम की आज्ञा से हत्या कर दी थी)

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

1. औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीतियाँ एवं हिन्दू विरोधी कृत्य सर्वाधिक उत्तरदायी कारक के रूप में मुगल साम्राज्य के पतन के लिए जिम्मेदार थे.

2. औरंगजेब के अधिकतर उत्तराधिकारी प्रशासनिक एवं शासकीय दृष्टि से अक्षम थे. उनका अधिकांश समय भोग-विलास में व्यतीत होता था, जिसके परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य का पतन हुआ.

3. कालान्तर में प्रान्तीय सूबेदारों की महत्वाकांक्षा बढ़ती चली गई जिससे केन्द्र शक्ति कमजोर पड़ने लगी तथा अपने-अपने सूबों में सूबेदारों ने सत्ता स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया जिसके परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य का पतन हुआ.

4. मुगलों की सैनिक शक्ति की दुर्बलता, आर्थिक संसाधनों की कमी विदेशी आततायियों द्वारा आक्रमण तथा धार्मिक नीति की प्रतिकूलता मुगल साम्राज्य के पतन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त कारण थे.

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

1. मध्यकाल में प्रचलित प्रमुख धार्मिक आन्दोलन–

क्र.सं.	नाम सम्प्रदाय/धार्मिक आन्दोलन	संस्थापक/प्रवर्तक	कालक्रम
1.	चिश्ती सम्प्रदाय (सूफी)	मुइनुद्दीन चिश्ती	1190 ई.
2.	सुहरावर्दी सिलसिला (सूफी)	बहाउद्दीन जकारिया	1250 ई.
3.	फिरदौसिया सम्प्रदाय (सूफी)	सरफुद्दीन याहिया	14वीं शताब्दी
4.	धर्मदासी सम्प्रदाय	संत कबीरदास	15वीं सदी
5.	महादेवी आन्दोलन	सैयद मुहम्मद महदी	15वीं सदी
6.	शत्तारी सम्प्रदाय (सूफी)	अब्दुल्ला सत्तारी	15वीं सदी
7.	कादिरी सिलसिला (सूफी)	शेख अब्दुल कादिर	1500 ई.
8.	निपख आन्दोलन	संत दादूदयाल	16वीं शताब्दी
9.	सिख सम्प्रदाय	गुरुनानक	16वीं शताब्दी
10.	हरिकीर्तन 'मण्डली'	चैतन्य महाप्रभु	16वीं शताब्दी
11.	रोशनिया आन्दोलन	मियाँ बाजिद अंसारी	16वीं शताब्दी
12.	पुष्टि मार्ग	वल्लभाचार्य	16वीं शताब्दी
13.	बारकरी सम्प्रदाय	एकनाथ	16वीं शताब्दी
14.	नक्शबन्दी सिलसिला (सूफी)	ख्वाजा बाकी बिल्लाह	17वीं शताब्दी
15.	धारकरी सम्प्रदाय	रामदास	17वीं शताब्दी

2. मध्यकाल में प्रमुख युद्ध–

क्र.सं.	नाम युद्ध	पक्ष-प्रतिपक्ष	विजय पक्ष	वर्ष
1.	अलाउद्दीन का रणथम्भौर सैनिक अभियान	अलाउद्दीन एवं हम्मीरदेव	अलाउद्दीन	1301 ई.
2.	रायचूर का युद्ध	फिरोजशाह बहमनी एवं बुक्का-II	फिरोजशाह	1398 ई.
3.	पांगुल का युद्ध	फिरोजशाह बहमनी एवं देव राय-I	देवराय-I	1420 ई.
4.	कांजीवरम का युद्ध	मुहम्मद-II बहमनी एवं विरूपाक्ष (विजयनगर)	मुहम्मद-II	1481 ई.
5.	चौल का युद्ध	महमूद बेगड़ा एवं पुर्तगाली	महमूद बेगड़ा	1508 ई.
6.	शिवसमुद्रम का युद्ध	कृष्ण देवराय एवं उम्मतूर का नायक	कृष्ण देव राय	1511-12 ई.
7.	उदयगिरि का युद्ध	कृष्ण देवराय एवं प्रताप रुद्र	कृष्ण देव राय	1514 ई.
8.	खातौली का युद्ध	राणा सांगा व इब्राहीम लोदी	राणा सांगा	1518 ई.
9.	पानीपत का प्रथम युद्ध	बाबर एवं इब्राहीम लोदी	बाबर	1526 ई.
10.	खानवा का युद्ध	बाबर एवं राणा सांगा	बाबर	1527 ई.
11.	चंदेरी का युद्ध	बाबर एवं मेदिनी राय	बाबर	1528 ई.
12.	घाघरा का युद्ध	बाबर एवं महमूद लोदी	बाबर	1529 ई.
13.	चौसा का युद्ध	हुमायूँ एवं शेरशाह सूरी	शेरशाह	1529 ई.
14.	कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध	हुमायूँ एवं शेरशाह सूरी	शेरशाह	1540 ई.
15.	मच्छीवाड़ा का युद्ध	हुमायूँ एवं अफगान तातार खाँ	हुमायूँ	1555 ई.
16.	सरहिन्द का युद्ध	हुमायूँ एवं सिकन्दर शाह सूरी	हुमायूँ	1555 ई.
17.	पानीपत का द्वितीय युद्ध	अकबर एवं हेमू	अकबर	1556 ई.

18.	गढ़कटंगा का युद्ध	गोंडरानी दुर्गावती एवं मुगल सेनापति आसफ खाँ	आसफ खाँ	1564 ई.
19.	तालीकोट का युद्ध	निजामशाह एवं रामराजा	निजामशाह	1565 ई.
20.	हल्दीघाटी का युद्ध	राणा प्रताप एवं अकबर (सेनापति मानसिंह)	अकबर	1576 ई.
21.	अहमदनगर का युद्ध	चाँदबीबी एवं अकबर	अकबर	1600 ई.
22.	असीरगढ़ का युद्ध	मियाँ बहादुरशाह एवं अकबर	अकबर	1601 ई.
23.	धरमत का युद्ध	औरंगजेब एवं दारा शिकोह	औरंगजेब	1658 ई.
24.	सामूगढ़ का युद्ध	औरंगजेब एवं दाराशिकोह	औरंगजेब	1658 ई.
25.	देवराई का युद्ध	औरंगजेब एवं दाराशिकोह	औरंगजेब	1659 ई.

3. मध्यकालीन प्रान्तीय भाषा, विद्वान् एवं उनकी रचनाएँ–

क्र.सं.	नाम रचना	रचनाकार	भाषा	काल
1.	ज्ञानेश्वरी	संत ज्ञानेश्वर	मराठी	1250 ई.
2.	विराटपर्व	तिक्कन्न	तेलुगु	1220-1300 ई.
3.	लक्ष्मी नरसिंह पुराण	ऐर्रन्न	तेलुगु	1280-1350 ई.
4.	राघव पाण्डवीयम	भीमकवि	तेलुगु	14वीं शताब्दी
5.	मनसा मंगल	विप्रदास	बंगला	1495 ई.
6.	नैषधम्	श्रीनाथ	तेलुगु	1441 ई.
7.	कन्नड़ भारत	कुमार व्यास	कन्नड़	1325-1400 ई.
8.	चण्डीपुराण, विलंकरामायण	सरलादास	उड़िया	1330-1400 ई.
9.	हरावती	रामचन्द्र पट्टनायक	उड़िया	15वीं शताब्दी
10.	प्रेम पंचामत	भूपति पण्डित	उड़िया	15वीं शताब्दी
11.	रसकल्लोल	दीनकृष्ण	उड़िया	15वीं शताब्दी
12.	श्रीकृष्ण विजय	मालाधार बसु	बंगला	15वीं शताब्दी
13.	वाणासुर वध	महावतार	कश्मीरी	15वीं शताब्दी
14.	आन्ध्र भागवत	पेतराजु	तेलुगु	15वीं शताब्दी
15.	भारतेश वैभव	रत्नाकवर्णी	कन्नड़	15वीं शताब्दी
16.	शृंगारमाला, धनलीला	नरसी मेहता	गुजराती	1480 ई.
17.	सप्तसती, नलाख्यान	मालवण कवि	गुजराती	1500 ई.
18.	कीर्तन घोषा, बरगीत	शंकरदेव	असमी	1519 ई.
19.	आदि ग्रन्थ	गुरुनानक	पंजाबी	1539 ई.
20.	घोषा	माधवदेव	असमी	16वीं शताब्दी
21.	कानखोजा	श्रीधरकंदलि	असमी	16वीं शताब्दी
22.	वेदारण्य पुराणम्	परंजोति मुनिवर	तमिल	16वीं शताब्दी
23.	मनु चरित्र	पेछना	तेलुगु	16वीं शताब्दी
24.	सारंगधर चरित्रमु	वेंकटकवि	तेलुगु	16वीं शताब्दी
25.	मलयाली रामायण	तुंचतु रामानुज	मलयालम	16वीं शताब्दी
26.	रुक्मनी स्वयम्वर	एकनाथ	मराठी	16वीं शताब्दी
27.	मरागल महाभारत	कवि रवीन्द्र	बंगला	16वीं शताब्दी
28.	चण्डी मंगल	माधवाचार्य	उड़िया	16वीं शताब्दी
29.	चैतन्य भागवत	वृन्दावनदास	बंगला	16वीं शताब्दी
30.	केवल्य गीत	संतअरवा	गुजराती	16वीं शताब्दी
31.	चैतन्य चरितामृत	कृष्णदास कविराज	बंगाली	16वीं शताब्दी
32.	प्रभावती रास	नयसुन्दर	गुजराती	1620 ई.
33.	हरमाला, हुण्डी	प्रेमानन्द	गुजराती	1734 ई.

4. मध्यकालीन प्रमुख प्रान्तीय राजवंश–

क्र.सं.	नाम वंश	संस्थापक	राज्य	शासनकाल
1.	संगम वंश	हरिहर, बुक्का	विजय नगर	1336-1486 ई.
2.	मिर्जा (मुस्लिम) वंश	शम्सुद्दीन शाह मिर्जा	कश्मीर	1339-1540 ई.
3.	इलियास शाही वंश	शम्सुद्दीन इलियास शाह	बंगाल	1345-1412 ई.

4.	बहमनी वंश	अलाउद्दीन बहमनशाह	दक्कन	1347-1527 ई.
5.	फारुकी वंश	मलिक राजा फारुकी	खानदेश	1390-1601 ई.
6.	शर्की वंश	मलिक सरवर	जौनपुर	1394-1500 ई.
7.	मुजफ्फर शाही वंश	जफर खाँ मुजफ्फरशाह	गुजरात	1401-1537 ई.
8.	हुशंग शाही वंश	अल्प खाँ हुशंगशाह	मालवा	1406-1436 ई.
9.	भादुड़ी (कंस) वंश	राजा गणेश	बंगाल	1415-1442 ई.
10.	सूर्य वंश	कपिलेन्द्र	उड़ीसा	1434-1542 ई.
11.	खिलजी वंश	महमूद शाह	मालवा	1436-1531 ई.
12.	इमादशाही वंश	फतह-उल्ला इमादशाह	बरार	1484-1574 ई.
13.	सलुव वंश	नरसिंह सलुव	विजयनगर	1486-1505 ई.
14.	आदिलशाही वंश	युसुफ आदिलशाह	बीजापुर	1489-1686 ई.
15.	अहमदशाही वंश	मलिक अहमद	अहमदनगर	1490-1633 ई.
16.	हुसैनशाही वंश	अलाउद्दीन हुसैनशाह	बंगाल	1493-1538 ई.
17.	तुलुव वंश	वीर नरसिंह	विजयनगर	1505-1567 ई.
18.	कुतुबशाही वंश	कुलीशाह	गोलकुण्डा	1512-1687 ई.
19.	बरीद शाही वंश	अली बरीद	बीदर	1527-1619 ई.
20.	अरविद वंश	तिरुमल	विजयनगर	1567-1620 ई.
21.	आडयार वंश	राजा आडयार	मैसूर	1612-1762 ई.

5. मध्यकालीन महिला शासिकाएँ, उनका कालक्रम, वंश एवं राज्य–

क्र.सं.	महिला शासक	शासनकाल	वंश	राज्य
1.	रजिया सुल्तान	1236-1240 ई.	गुलाम	दिल्ली
2.	रानी रुद्रम्मा	1260-1291 ई.	काकतीय	द्वार समुद्र
3.	मखदूम जहाँ	1461-1469 ई.	बहमनी	दक्षिण (बहमनी)
4.	रानी दुर्गावती	1560-1564 ई.	गोंड	गढ़कटंगा
5.	चाँदबीबी सुल्ताना	1595-1596 ई.	अहमदशाही	अहमदनगर
6.	बेगम बड़ी साहिबा	1656-1663 ई.	आदिलशाही	बीजापुर
7.	ताराबाई	1700-1707 ई.	भोंसले	मराठा राज्य

6. प्रमुख सिख धर्म गुरु एवं उनका काल–

क्र.सं.	सिख धर्मगुरु	कालक्रम	उल्लेखनीय तथ्य
1.	गुरुनानक देव	1469-1538 ई.	सिख धर्म की स्थापना
2.	गुरु अंगद	1538-1552 ई.	गुरुमुखी लिपि के प्रणेता
3.	गुरु अमरदास	1552-1574 ई.	22 गद्दियों के संस्थापक
4.	गुरु रामदास	1574-1581 ई.	अमृतसर के संस्थापक
5.	गुरु अर्जुनदेव	1581-1606 ई.	गुरुग्रन्थ साहिब के संकलक
6.	गुरु हरगोविन्द सिंह	1606-1645 ई.	अकाल तख्त के संस्थापक
7.	गुरु हरराय	1645-1661 ई.	उत्तराधिकार युद्ध में शामिल
8.	गुरु हरकिशन	1661-1664 ई.	उम्र के प्रारभ में ही मृत्यु
9.	गुरु तेगबहादुर	1664-1675 ई.	औरंगजेब द्वारा इस्लाम स्वीकार न करने पर फाँसी
10.	गुरु गोविन्दसिंह	1675-1708 ई.	खालसा सेना के संस्थापक एवं अन्तिम सिख धर्मगुरु

7. मुगलकालीन दरबारी कवि, उनकी रचनाएँ एवं आश्रयदाता शासक–

क्र. सं.	दरबारी कवि	रचना	आश्रयदाता शासक	काल
1.	अबुल फजल	अकबरनामा आइन-ए-अकबरी	अकबर	1551-1602 ई.
2.	बदायूँनी	मुन्तखाब-उत-तवारीख	अकबर	16वीं शताब्दी
3.	मुहम्मद अमीन कजवीनी	शाहजहाँनामा	शाहजहाँ	17वीं शताब्दी
4.	मिन्हाज-उस-सिराज	तबकात-ए-नासिरी	इल्तुतमिश एवं नासिरुद्दीन	1193 ई.
5.	हसन निजामी	ताज-उल-मासिर	कुतुबुद्दीन ऐबक एवं इल्तुतमिश	13वीं सदी
6.	मीर मुहम्मद मासूम	तारीख-ए-सिन्ध	अकबर	16वीं शताब्दी
7.	हिन्दू बेग	तारीख-ए-फरिश्ता	अकबर	16वीं शताब्दी

8.	अब्बास खाँ सेरवानी	तारीख-ए-शेरशाही	अकबर	16वीं शताब्दी
9.	नियमतुल्ला	मखजन-ए-अफगान	जहाँगीर	17वीं शताब्दी
10.	अब्दुल्ला	तारीख-ए-दाऊदी	जहाँगीर	17वीं शताब्दी
11.	आरिफ कंधारी	तारीख-ए-अकबरी	अकबर	16वीं शताब्दी
12.	बायजिद बयात	तजकिरा-ए-हुमायूँ-अकबर	अकबर	16वीं शताब्दी
13.	गुलबदन बेगम	हुमायूँनामा	हुमायूँ, अकबर	1523-1560 ई.
14.	मीर अलाउद्दौला कजवीनी	नफाइस-उल-मासिर	अकबर	16वीं शताब्दी
15.	मुहम्मद सादिक खाँ	शाहजहाँनामा	शाहजहाँ	17वीं शताब्दी
16.	गैरत खाँ	मासिर-ए-जहाँगीरी	जहाँगीर	17वीं शताब्दी
17.	गुलाम नकवी	इमादुस्सादात	औरंगजेब	17वीं शताब्दी
18.	मुहम्मद वारिस	पादशाहनामा	शाहजहाँ	17वीं शताब्दी
19.	खाफी खाँ	मुन्तखाब-उल-लुबाब	औरंगजेब	17वीं शताब्दी
20	बद्र-ए-चाच	चचनामा	मुहम्मद तुगलक	13वीं शताब्दी

8. अकबर के दरबार के नवरत्न–

क्र.सं.	नाम रत्न	उल्लेखनीय तथ्य
1.	बीरबल	कविराज, कविप्रिय की उपाधि अकबर ने प्रदान की. 1583 ई. में न्याय विभाग का सर्वोच्च अधिकारी बन गया.
2.	अबुल फजल	अकबर का मुख्य सलाहकार एवं सचिव. दीन-ए-इलाही धर्म का मुख्य पुरोहित. आईन-ए-अकबरी, अकबरनामा का लेखक.
3.	टोडरमल	जाब्ती प्रथा का जन्मदाता. 1572 ई. में गुजरात का दीवान बनाया गया.
4.	भगवानदास	आमेर के राजा भारमल का पुत्र. 'अमीर-उल-उमरा' की उपाधि प्राप्त. 5 हजारी मनसब प्राप्त करता था.
5.	तानसेन	संगीत सम्राट्, ध्रुपद शैली के विकासक, मियाँ का मल्हार, मियाँ की टोडी, मियाँ की सारंग, दरबारी कान्हड़ा राग के जन्मदाता.
6.	मानसिंह	आमेर के राजा भारमल्ल के पौत्र. अकबर से करीबी सम्बन्ध.
7.	अब्दुर्रहीम खानखाना	प्रसिद्ध विद्वान् एवं कवि. बाबरनामा का फारसी भाषा में अनुवाद किया.
8.	मुल्ला दो प्याजा	भोजन में प्याज अधिक पसन्द करने के कारण अकबर ने उसे यह नाम दिया.
9.	फैजी	अबुल फजल का अग्रज. अकबर द्वारा राजकवि के पद पर नियुक्त.

9. मुगलकाल में दिल्ली पर शासन करने वाले राजवंश–

क्र.सं.	वंश	संस्थापक	शासनकाल
1.	गुलाम वंश	कुतुबुद्दीन ऐबक	1206-1290 ई.
2.	खिलजी वंश	जलालुद्दीन खिलजी	1290-1320 ई.
3.	तुगलक वंश	गयासुद्दीन तुगलक	1320-1414 ई.
4.	सैय्यद वंश	खिज्र खाँ	1414-1451 ई.
5.	लोदी वंश	बहलोल लोदी	1451-1526 ई.
6.	मुगल वंश	जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर	1526-1857 ई.
7.	अफगान वंश	शेरशाह सूरी	1540-1555 ई.
8.	हिन्दू वंश	हेमू विक्रमादित्य	1556 ई.

10. अकबरकालीन प्रमुख वित्त मंत्री एवं उनका नियुक्ति वर्ष–

क्र.सं.	नाम वित्त मंत्री	नियुक्ति वर्ष
1.	अब्दुल मजीद आसफ खाँ	1560 ई.
2.	एतमाद खाँ (बहलोल मलिक)	1563 ई.
3.	मुजफ्फर खाँ (प्रथम दीवान)	1564 ई.
4.	शिहाबुद्दीन अहमद खाँ	1568 ई.
5.	मुजफ्फर खाँ	1570 ई.
6.	टोडरमल	1580 ई.

11. प्रमुख मुगल शासक एवं शासनकाल–

क्र.सं.	नाम शासक	शासनकाल
1.	जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर	1526-1530 ई.
2.	नासिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ	1530-1556 ई.
3.	जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर	1556-1605 ई.
4.	नुरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर	1605-1627 ई.
5.	शाहजहाँ	1627-1658 ई.
6.	औरंगजेब	1658-1707 ई.

12. अकबर के सम्पूर्ण साम्राज्य के सूबे (प्रान्त)–

1. आगरा	2. दिल्ली
3. इलाहाबाद	4. अवध
5. अजमेर	6. बंगाल
7. बिहार	8. अहमदाबाद
9. मुल्तान	10. लाहौर

11. मालवा
12. काबुल
13. खानदेश
14. अहमदनगर
15. बरार

13. मुगलकाल में लिखा गया हिन्दी साहित्य–

क्र.सं.	ग्रन्थ/रचना	ग्रन्थकार/रचनाकार
1.	रामचरितमानस	तुलसीदास
2.	विनयपत्रिका	तुलसीदास
3.	रामचन्द्रिका	केशवदास
4.	पद्मावती	मलिक मोहम्मद जायसी
5.	सूरसागर, साहित्य लहरी	सूरदास
6.	रसिकप्रिया, कविप्रिया	केशवदास
7.	प्रेमवर्तिका	रसखान
8.	सूर सागर	सूरदास
9.	कविन्द्र कल्पतरु	कविन्द्र आचार्य
10.	चौरासी वैष्णवों की वार्ता	विट्ठलनाथ
11.	सुन्दर शृंगार	सुन्दर कविराय
12.	रास पंचाध्यायी	नन्ददास
13.	कविता रत्नाकर	सेनापति
14.	अलंकार मंजरी	केशवदास

14. मुगलकालीन संस्कृत साहित्य–

क्र.सं.	रचना	रचनाकार
1.	अकबरकालीन इतिहास	महेश ठाकुर
2.	रस गंगाधर	पण्डित जगन्नाथ
3.	अकबरशाही शृंगार दर्पण	पद्म सुन्दर
4.	हरि सौभाग्यम्	देव विमल
5.	भानुचन्द्र चरित्र	सिन्धचन्द्र जैन आर्चाय

15. मुगलकालीन प्रमुख अनुदित पुस्तकें/ग्रन्थ–

क्र.सं.	मूल रचना	अनुदित नाम	भाषा	अनुवादकार
1.	नल-दमयन्ती	मसनवी नलौदमन	फारसी	फैजी
2.	महाभारत	रज्मनामा	फारसी	बदायूँनी, नकीब खाँ, अब्दुल कादिर
3.	कालिया दमन	अयार दानिश	फारसी	अबुल फजल
4.	श्रीमद्भगवद्गीता, योग वशिष्ठ एवं पचास उपनिषद्	सिर्र-ए-अकबर	फारसी	दाराशिकोह
5.	बाबरनामा (तुर्की)	–	फारसी	अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया
6.	पंचतंत्र	अनवर-ए-सादात	फारसी	अबुल फजल
7.	पंचतंत्र	अयार-ए-दानिश	फारसी	मौलाना हुसैन फैजी
8.	तजक (ज्योतिष ग्रन्थ)	जहान-ए-जफर	फारसी	मुहम्मद खाँ

16. मुगलकालीन अष्टभुजाकार मकबरे–

क्र.सं.	मकबरा	निर्माता	स्थल	स्थापना वर्ष
1.	खानेजहाँन तेलंगानी का मकबरा	जौनाशाह	दिल्ली	1368-69 ई.
2.	मुबारक सैय्यद का मकबरा	मुहम्मदशाह सैयद	दिल्ली	1434 ई.
3.	मुहम्मद सैयद का मकबरा	अलाउद्दीन आलमशाह	दिल्ली	1444 ई.
4.	सिकन्दर लोदी का मकबरा	इब्राहीम लोदी	दिल्ली	1517 ई.
5.	हसन खाँ सूरी का मकबरा	शेरशाह सूरी	सहसराम	1540 ई.
6.	शेरशाह सूरी का मकबरा	शेरशाह सूरी	सहसराम	1545 ई.
7.	इस्लाम शाह का मकबरा	आदिलशाह सूरी	सहसराम	1553 ई.

17. मुगलकालीन भारत में यूरोपीय व्यापारियों का आगमन–

क्र.सं.	विदेशी व्यापारी	कालावधि	प्रथम स्थापित कारखाना
1.	पुर्तगाली	1498 ई.	कोचीन 1503 में
2.	डच	1602 ई.	मसुलीपट्टम् 1605 में
3.	अंग्रेज	1600 ई.	सूरत 1608 में
4.	डेन	1616 ई.	ट्रंकूबार 1620 में
5.	फ्रांसीसी	1664 ई.	सूरत 1688 में

स्मरणीय तथ्य

- शरीयत के नियमों के पालनार्थ सभी प्रान्तों में औरंगजेब ने 'मुहतसिबों' की नियुक्ति की थी.
- बाबर ने खानवा के युद्ध से पूर्व गाजी की उपाधि धारण की थी.
- शाहजहाँ स्वयं को ईश्वर की प्रतिच्छाया मानता था तथा औरंगजेब स्वयं को पृथ्वी पर खुदा का प्रतिनिधि कहता था.

- मीर वख्शी सैन्य विभाग एवं गुप्तचर विभाग का प्रधान पदाधिकारी होता था.
- धार्मिक मामलों में वादशाह का सलाहकार सद्र-उस-सद्र होता था.
- मुगलकाल में गुप्त मन्त्रणा जहाँ पर की जाती थी उस कक्ष को गुसलखाना कहा जाता था.
- अहदी वादशाहों के द्वारा नियुक्त होते थे जो राजा के अंगरक्षक के रूप में कार्य करते थे.
- सम्पत्ति जाब्ती प्रथा ऐसी प्रथा थी जिसके अन्तर्गत मनसवदार की मृत्यु पर राज्य उनकी सम्पत्ति को जब्त कर लेता था.
- किसी पद को ग्रहण करने के आधार पर दी जाने वाली जागीर को मशरूत कहा जाता था.
- जहाँगीर ने अपने प्रिय चित्रकार विशनदास को अपने दूत के साथ फारस के शाह के पास भेजा था.
- 'लाल फूलों की वहार' एक चित्र का नाम था जो मुगलकालीन चित्रकार मंसूर द्वारा वनाया गया सर्वश्रेष्ठ चित्र माना जाता था.
- चहारवुर्जी वाग लाहौर में औरंगजेव की पुत्री जेवुन्निसा ने लगवाया था.
- फादर एन्थनी मांसरेट विदेश यात्री थे जो अकवर के काल में भारत आए थे, उन्हें शहजादा मुराद का शिक्षक नियुक्त किया गया था.
- कोहिनूर गोलकुण्डा की खान पाया गया था.
- घरणिक और चापाकार शैलियों के समन्वय के कारण फतेहपुर सीकरी की अकवरकालीन इमारतें प्रसिद्धतम इमारतें रही हैं.
- मौरलेण्ड के अनुसार जमा का तात्पर्य पूर्ण राजस्व का निर्धारण था.
- अवुल फजल ने अपनी रचनाओं में धातु ढलाई की प्रविधि का उल्लेख किया है.
- जहाँगीर की पत्नी एवं प्रियतमा नूरजहाँ ने इत्र का आविष्कार किया था.
- धरातलीय सजावट में पीट्रा दुरा का सवसे पहला प्रस्तुतिकरण एत्मादुद्दौला के मकवरे में प्राप्त होता है.
- ईरान के शासक तहमाप ने 1544 ई. में हुमायूँ को आश्रय प्रदान किया था.
- ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत से सूती वस्त्र, नील एवं कच्चा रेशम निर्यात करती थी.
- शिवाजी का राज्याभिषेक काशी के विश्वेश्वर जी गंगा भट्ट द्वारा किया गया था.
- 'हुजूर दफ्तर' मराठों के केन्द्रीय सचिवालयों को कहा जाता था.
- शिवाजी छापामार पद्धति से युद्ध करते थे. सेना वर्षा ऋतु के अलावा 8 माह सक्रिय रहती थी.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अकवर के समय आय-व्यय के लेखा-जोखा रखने वाला पदाधिकारी होता था–
   (A) मुस्तौफी (B) मुशरिफ
   (C) दीवान-ए-तन (D) दीवान-ए-खालसा

2. अकवर ने 5000 एवं उससे कम मनसव के लिए उपश्रेणियाँ वनाई थीं–
   (A) पाँच (B) तीन
   (C) चार (D) दो

3. औरंगजेव की पत्नी निम्न में से थी–
   (A) जेवुन्निसा (B) मेहरुन्निसा
   (C) रजिया सुल्तान (D) रविया दुर्रानी

4. औरंगजेव का जन्म हुआ था–
   (A) कावुल में (B) पाकिस्तान में
   (C) दोहद (उज्जैन में) (D) अफगानिस्तान में

5. इलाही संवत् के स्थान पर हिजरी संवत् किसने चलाया था ?
   (A) अकवर ने (B) हुमायूँ ने
   (C) जहाँगीर ने (D) शाहजहाँ ने

6. जहाँगीर का वचपन का नाम था–
   (A) फरीद (B) सलीम
   (C) शेखो वावा (D) उपर्युक्त सभी

7. मुन्तखाव-उल-तवारीख किसकी रचना थी ?
   (A) अवुल फजल
   (B) खफी खाँ
   (C) जहाँगीर
   (D) फैजी

8. शिवाजी की राज्य में दुर्गों की कुल संख्या थी–
   (A) 100 (B) 115
   (C) 10 (D) 240

9. वारकरी सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे–
   (A) वल्लभाचार्य (B) विल्लाह
   (C) एकलिंग (D) रामदास
10. निम्नलिखित में से कौनसा आन्दोलन संत दादूदयाल द्वारा चलाया गया था ?
    (A) हरिकीर्तन मण्डली (B) पुष्टिमार्ग
    (C) निपख आन्दोलन (D) रोशनिया आन्दोलन
11. रायचूर के युद्ध के सम्बन्ध में कौनसा एक कथन असत्य है ?
    (A) फिरोजशाह बहमनी एवं बुक्का द्वितीय के मध्य लड़ा गया था
    (B) रायचूर युद्ध में फिरोजशाह को विजय मिली थी
    (C) रायचूर का युद्ध 1398 ई. में लड़ा गया था
    (D) रायचूर के युद्ध के तुरन्त बाद दोनों पक्षों में समझौता हो गया था
12. ज्ञानेश्वरी के लेखक थे–
    (A) विप्रदास (B) सूरदास
    (C) कबीर (D) संत ज्ञानेश्वर
13. आड्यार वंश की स्थापना हुई थी–
    (A) 1612 ई. में (B) 1510 ई. में
    (C) 1635 ई. में (D) 1761 ई. में
14. ऐसे कौनसे सिख गुरु थे, जिन्हें इस्लाम न स्वीकार करने पर औरंगजेब ने फाँसी की सजा सुना दी थी ?
    (A) गुरु हरकिशन (B) गुरु तेगबहादुर
    (C) गुरु अंगद (D) गुरु अमरदास
15. खाफी (खफी) खाँ को किसके शासनकाल में राजदरबार से आश्रय प्राप्त हुआ था ?
    (A) अकबर (B) जहाँगीर
    (C) शाहजहाँ (D) औरंगजेब
16. निम्नलिखित में से कौनसा मुगल साहित्यकार एवं कवि अबुल फजल का अग्रज था ?
    (A) भगवानदास (B) खफी खाँ
    (C) बद्रे चाच (D) फैजी
17. रास पंचाध्यायी का लेखक कौन था ?
    (A) केशवदास (B) सेनापति
    (C) नन्ददास (D) सुन्दर कविराय
18. पंचतन्त्र का फारसी भाषा में नाम था ?
    (A) अनवर-ए-सादात (B) अयार दानिश
    (C) जहान-ए-जफर (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
19. सिकन्दर लोदी का मकबरा स्थित है–
    (A) दिल्ली में (B) आगरा में
    (C) सरसाराम में (D) बीजापुर में
20. पुर्तगालियों ने भारत में किस जगह पहला कारखाना स्थापित किया था ?
    (A) कोचीन में (1503 में)
    (B) सूरत में (1608 में)
    (C) मसूलीपट्टनम में (1605 में)
    (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
21. अबुल फजल के पिता का नाम क्या था ?
    (A) शेखो बाबा (B) शेख हसन
    (C) शेख मुबारक (D) शेख कमाल
22. अबुल फजल का विरोधी शासक कौन था, जिसकी आज्ञा से बुन्देला राजा वीरसिंह ने उसकी हत्या कर दी थी ?
    (A) अकबर (B) बाबर
    (C) औरंगजेब (D) सलीम (जहाँगीर)
23. शिवाजी का जन्म किस दुर्ग में हुआ था ?
    (A) शिवनेरी दुर्ग में (B) भरनेरी दुर्ग में
    (C) सिंहगढ़ में (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
24. योगवाशिष्ठ का फारसी भाषा में अनुवाद राजकुमार दाराशिकोह ने किस सन् में किया था ?
    (A) 1640 ई. में (B) 1650 ई. में
    (C) 1632 ई. में (D) 1606 ई. में
25. अमले सालिह किसकी रचना थी ?
    (A) मुहम्मद सादिक खाँ की
    (B) अलबेरूनी की
    (C) कजवीनी की
    (D) मुहम्मद सालिह की
26. शाहजहाँ का जन्म हुआ था–
    (A) अजमेर में (B) लाहौर में
    (C) मक्का में (D) आगरा में
27. जहाँगीर का गुरु था–
    (A) संत वल्लभाचार्य
    (B) गुरु अंगददास
    (C) अब्दुर्रहीम खानखाना
    (D) बीरबल
28. कौनसा संगीतज्ञ अकबर के राजदरबार से सम्बन्धित नहीं था ?
    (A) तानसेन (B) हरिदास
    (C) बैजू बावरा (D) मियाँचाँद
29. असीरगढ़ का युद्ध हुआ था–
    (A) अकबर एवं हेमू के मध्य
    (B) चाँदबीबी एवं अकबर के मध्य
    (C) मियाँ बहादुरशाह एवं अकबर के मध्य
    (D) अकबर एवं सिखों के मध्य

30. अकबर का साम्राज्य कितने सूबों में वर्गीकृत था ?
 (A) 15 (B) 18
 (C) 17 (D) 16

31. घाघरा का युद्ध लड़ा गया था–
 (A) बाबर एवं सिकन्दर लोदी के मध्य
 (B) बाबर एवं महमूद लोदी के मध्य
 (C) हुमायूँ एवं शेरशाह शूरी के मध्य
 (D) राणा सांगा व इब्राहीम लोदी के मध्य

32. तालीकोट का युद्ध किस सन् में लड़ा गया था ?
 (A) 1565 ई. में (B) 1567 ई. में
 (C) 1569 ई. में (D) 1570 ई. में

33. अबुल फजल के पौत्र का नाम था–
 (A) सरहिन्दी (B) शहजादा मुअज्जाम
 (C) बिशोतान (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (A)	2. (B)	3. (D)	4. (C)	5. (D)
6. (C)	7. (B)	8. (D)	9. (C)	10. (C)
11. (D)	12. (D)	13. (A)	14. (B)	15. (D)
16. (D)	17. (C)	18. (A)	19. (A)	20. (A)
21. (C)	22. (D)	23. (A)	24. (B)	25. (D)
26. (B)	27. (C)	28. (C)	29. (C)	30. (A)
31. (B)	32. (A)	33. (C)		

आई. ए. एस. (प्री)–2003 में पूछे गए प्रश्न

1. बाबर की दिल्ली विजय के समय किसकी चित्र शैली तात्कालिक प्रेरणा देने वाली थी ?
 (A) मंसूर (B) सैयद अली
 (C) बिहज़ाद (D) मिस्कीन

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
 1. एतमाद खान ने, जो गुजरात के मुहम्मद शाह-तृतीय का एक अमीर था, अकबर को गुजरात के मामलों में हस्तक्षेप करने का निमन्त्रण दिया.
 2. जब हकीम मिर्जा की मृत्यु हुई तब काबुल का प्रदेश मुगल साम्राज्य में समाहित कर दिया गया तथा मानसिंह को उसका गवर्नर नियुक्त किया गया.

 उपर्युक्त कथनों में से कौनसा/से सही है/ हैं ?
 (A) केवल 1 (B) केवल 2
 (C) 1 और 2 दोनों (D) न ही 1 और न ही 2

3. निम्नलिखित में से कौनसा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है ?
 (A) हुमायूँनामा – गुलबदन बेगम
 (B) तबकात-ए अकबरी – निज़ामुद्दीन अहमद
 (C) पादशाह-नामा – अब्दुल हमीद लाहोरी
 (D) फुतूहात-ए आलमगीरी – मिर्जा मुहम्मद काज़िम

4. विख्यात पुस्तक हम्ज़ानामा, जो अकबर के आदेशानुसार अभूतपूर्व रूप से बड़े पटल पर चित्रित की गई थी, मूलरूप से किस भाषा में लिखी गई थी ?
 (A) अरबी (B) चग़ताई तुर्की
 (C) फारसी (D) आटोमन तुर्की

5. किस मुगल सम्राट् ने तम्बाकू के प्रयोग पर निषेध लगया ?
 (A) बाबर (B) जहाँगीर
 (C) औरंगजेब (D) मुहम्मद शाह

6. ख्वान्द मीर के हुमायूँनामा में बहल-ए मुराद निम्नलिखित में से किस एक समुदाय के निर्दिष्ट करता है ?
 (A) राजपरिवार एवं अमीर वर्ग
 (B) विद्वानों का वर्ग एवं साहित्यिक वर्ग
 (C) कारीगर, साहूकार एवं कृषक
 (D) संगीतकार नर्तक एवं चारण

7. भारत में **जजमानी प्रथा** के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
 1. मध्यकाल में महाराष्ट्र में ग्रामीण वस्तु-निर्माण का अधिकांश भाग उन कारीगर जातियों द्वारा उपलब्ध कराया जाता था जो कृषक जातियों से सेवार्थी-ग्राहक सम्बन्धों से बँधी हुई थीं.
 2. महाराष्ट्र व गुजरात में जजमानी प्रथा में सामुदायिक कारीगरों के केवल उस प्रकार के ही कार्य नहीं सम्मिलित थे जो सीधे तौर पर कृषि उत्पादन के पूरक थे.

 उपर्युक्त कथनों में से कौनसा/से सही है/ हैं ?
 (A) केवल 1 (B) केवल 2
 (C) 1 और 2 दोनों (D) न ही 1 और न ही 2

8. निम्नलिखित में से किसने औरंगजेब के शासनकाल में व्यंग्यकाव्य (Satirical poetry) की रचना की ?
 (A) सौदा (B) ज़ाफर जटल्ली
 (C) गनी कश्मीरी (D) मुल्ला दाऊद

9. जहाँगीर के शासनकाल में भारत में स्थापत्य की पहली उपलब्धि उसके पिता के मकबरे का निर्माण था. यह कहाँ बनवाया गया था ?
 (A) लाहौर में (B) शिकोहाबाद में
 (C) सूरत में (D) सिकन्दरा में

10. पेशवा बाजीराव प्रथम ने मुगलों से जो सूबेदारियाँ प्राप्त कीं, वे थीं–
 (A) अहमदनगर तथा नागौर

(B) मालवा तथा बीजापुर
(C) गुजरात तथा मालवा
(D) खानदेश तथा बराड़

11. भारत में पुर्तगालियों का वाणिज्यिक उद्देश्य था–
(A) पश्चिमी तट पर क्षेत्रीय अभिग्रहण
(B) वस्त्रों तथा मसालों के व्यापार का अभिग्रहण
(C) भारत के समुद्री व्यापार से अरबों तथा फारसियों का निष्कासन
(D) काली मिर्च तथा अन्य उत्कृष्ट मसालों के व्यापार का अभिग्रहण

12. जहाँगीर के शासनकाल में नादिर-उल-अस्र की उपाधि दी गई थी–
(A) मीर सैयद अली को (B) अब्दुल समद को
(C) अबुल हसन को (D) उस्ताद मंसूर को

13. निम्नलिखित घटनाओं का सही कालक्रम क्या है?
1. तृतीय मराठा युद्ध 2. पानीपत का तृतीय युद्ध
3. तृतीय मैसूर युद्ध 4. तृतीय बर्मा युद्ध
नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए–
कूट :
(A) 1, 3, 2, 4 (B) 2, 3, 1, 4
(C) 3, 4, 1, 2 (D) 4, 1, 3, 2

14. नगर शैली के स्थापत्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है–
(A) कैलाशनाथ मंदिर, काँचीपुरम्
(B) लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर
(C) बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर
(D) कंदरीया महादेव मंदिर, खजुराहो

15. 1761 में पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठा सेनाओं का नेतृत्व किसने किया था?
(A) विश्वनाथ राव (B) सदाशिव राव
(C) माधव राव (D) दत्ताजी सिंधिया

16. रणभूमि में अपने पतियों के साथ स्त्रियों के जाने की प्रथा को किसने बढ़ावा दिया?
(A) सदाशिव राव (B) रघुनाथ राव
(C) बालाजी राव (D) माधव राव

17. निम्न चार महत्वपूर्ण युद्ध भारत में अलग-अलग काल में लड़े गए–
1. चौसा 2. धर्मत
3. हल्दीघाटी 4. खानवा
इन युद्धों का सही कालानुक्रम है–
(A) 1, 2, 3, 4 (B) 4, 3, 2, 1
(C) 4, 1, 3, 2 (D) 3, 2, 1, 4

18. निम्न में से कौनसा वह प्रथम मुगल सम्राट् था जिसने बंगाल के विरुद्ध सैन्य अभियान का नेतृत्व किया था?
(A) बाबर (B) हुमायूँ
(C) जहाँगीर (D) शाहजहाँ

19. 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से सम्बन्धित विख्यात मराठा शासक महादजी का वंश था–
(A) होल्कर (B) सिंधिया
(C) भोंसले (D) गायकवाड़

20. सम्राट् द्वारा नियुक्त, पर सीधे राज्य से वेतन पाने के स्थान पर मनसबदारों से वेतन पाने वाले सैनिक कहलाते थे–
(A) वालाशाही (B) बरआवर्दी
(C) कुमकी (D) दाखिली

उत्तरमाला

1. (C)	2. (C)	3. (D)	4. (C)	5. (B)
6. (B)	7. (C)	8. (D)	9. (D)	10. (C)
11. (D)	12. (D)	13. (B)	14. (B)	15. (B)
16. (A)	17. (C)	18. (B)	19. (B)	20. (D)

संकेत

3. फुतूहात - ए - आलमगीरी – ईश्वरदास नागर.
4. हम्जनामा फारसी नायक अमीर हम्जा अर्थात् हजरत मुहम्मद साहब के चाचा के वीरतापूर्ण कारनामों से सम्बन्धित अर्द्ध-पौराणिक फतांसी है.
10 दुराई-सराय की संधि (1738 ई.) के फलस्वरूप पेशवा को मालवा और गुजरात की सूबेदारी मिली.
12. जहाँगीर ने अबुल हसन को नादिर-उल-जमां की उपाधि से सम्मानित किया.
13. तृतीय मराठा युद्ध – 1818
पानीपत का तृतीय युद्ध – 1761
तृतीय मैसूर युद्ध – 1792
तृतीय बर्मा युद्ध – 1885
14. खजुराहो का कंदरिया महादेव मन्दिर भी यद्यपि नागर शैली में ही बना हुआ है, लेकिन उसमें लिंगराज मन्दिर जैसी विशुद्धता नहीं है.
15. पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठा सेना का औपचारिक सेनापति विश्वास राव था, जबकि वास्तविक सेनापति सदाशिव राव ही था.
16. इस प्रथा की शुरूआत पेशवा बालाजी बाजीराव के काल में हुई थी जिसे आगे चलकर सदाशिव राव ने प्रोत्साहित किया.
17. चौसा – 1539
धर्मत – 1658
हल्दीघाटी – 1576
खानवा – 1527
18. बाबर ने बिहार के अफगानों से युद्ध किया था.

5

मानचित्र अध्ययन
(Map Study)

1605 ई. का भारत

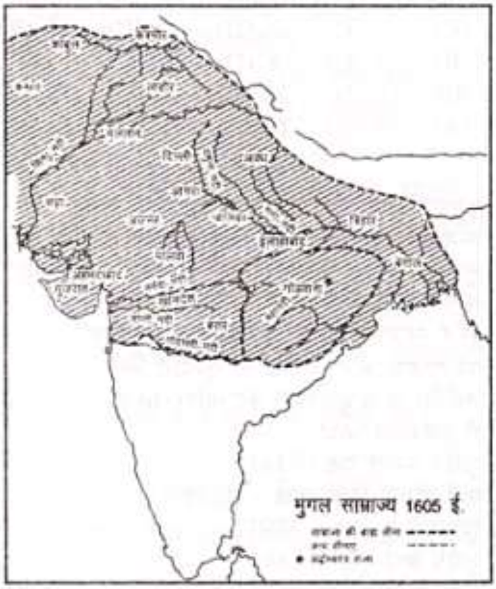

1605 ई. में मुगल सम्राट अकबर का निधन वर्ष था. 49 वर्ष का उसका शासनकाल इस वर्ष में मात्र स्मृति बनकर रह गया था. भारत में मुगल राज्य 1605 ई. में मुगल साम्राज्य में परिणित हो गया था, जिससे उत्तरी भारत में राजनीतिक एकता को बल मिला था. 1556 ई. में अकबर के राज्याभिषेक के समय मुगल पंजाब तक सीमित राज्य था, जिसे क्षेत्रीय राज्य की सीमा में रखा जाना ही उचित होगा, लेकिन अनवरत प्रयास से यह क्षेत्रीय राज्य मुगल साम्राज्य बन गया. 1556 ई. में इस साम्राज्यवादी अभियान का प्रारम्भ हुआ. अकबर ने बैरम खाँ के नेतृत्व में दिल्ली-आगरा, अजमेर, मालवा, गढ़कंटगा को अपने अधिकार में कर लिया. इसके उपरान्त अकबर ने चित्तौड़ एवं हल्दीघाटी की विजय का अंगीकृत कर राजस्थान पर आक्रमण किया. 1604 ई. तक मुगल साम्राज्य काबुल, कश्मीर, लाहौर, मुल्तान, दिल्ली, अवध, आगरा, अजमेर, अहमदाबाद, मालवा, खानदेश, बरार बंगाल, बिहार एवं इलाहाबाद के 15 सूबों में वर्गीकृत हो गया.

महमूद गजनवी के आक्रमण काल का भारत

महमूद गजनवी के आक्रमण

वर्ष A.D.	स्थान
1000	पेशावर के समीप कुछ सीमान्त प्रदेश
1001	पेशावर, वैहिन्द
1004	भीरा
1005-6	मुल्तान
1008	वैहिन्द, नगरकोट
1009	नारायनपुर (अलवर)
1010	मुल्तान
1011	थानेश्वर
1013	नान्दानह (कश्मीर)
1015	कश्मीर घाटी–लोहकोट
1018-19	गंगा यमुना का दोआब-पंजाब, बरन (बुलन्दशहर), महावन (मथुरा), मथुरा, कन्नौज, मुंज (मंझावन, कानपुर के पास), असी (असनी, फतेहपुर के पास), शाखा (सिरसावा, सहारनपुर के पास)
1021-22	ग्वालियर, कालिंजर
1024	लोदोर्ग (जैसलमेर के पास), चिकलोदर (पालनपुर, गुजरात), अन्हिलवाड़ा (गुजरात)
1025	सोमनाथ
1027	अन्तिम आक्रमण जाटों पर (गुजरात)

महमूद गजनवी के आक्रमणकाल में भारत की राजनीतिक दशा

ग्यारहवीं सदी का समय भारतीय इतिहास में राजपूत राज्यों का समय है. यह वह शासक वर्ग था, जिसने हर्ष के

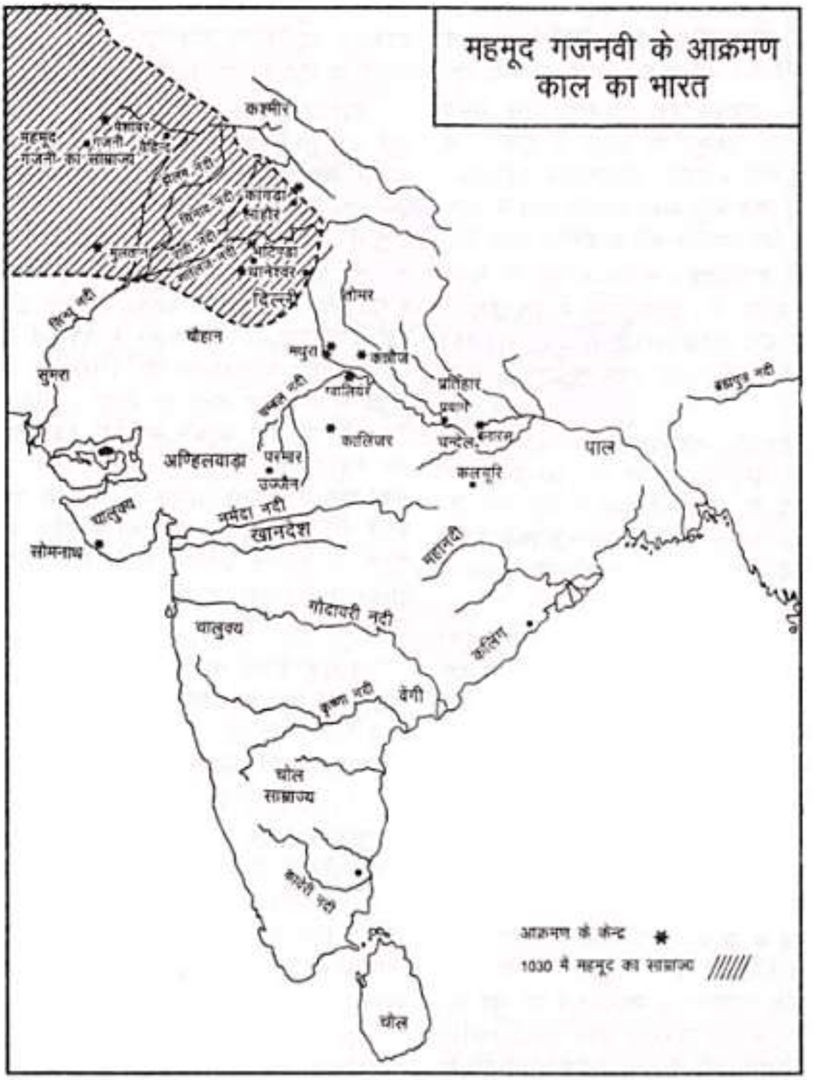

उपरान्त उत्तरी भारत में अपने प्राधान्य को स्थापित किया था. मानचित्र पर दृष्टि डालने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि 11वीं शताब्दी राजनीतिक एकता की शताब्दी नहीं थी. इस काल का भारत अनेक राज्यों में विभक्त था. इनमें से प्रमुख राज्य इस प्रकार थे—

(i) **काबुल तथा पंजाब का हिन्दुशाही राज्य**—मानचित्र में जो भू-भाग महमूद के साम्राज्य की सीमा के अन्तर्गत दिखाया गया है, उसमें पंजाब का क्षेत्र शाही राजवंश के अधिकार में था. महमूद के समय में यहाँ पर जयपाल तथा उसकी मृत्यु के उपरान्त 1002 ई. में आनन्दपाल राज्य कर रहे थे. शाही वंश ने जिस दृढ़ता से महमूद का अन्तिम दम तक सामना किया, वह प्रशंसनीय है.

(ii) **कश्मीर में लोहार वंश**—जिस समय महमूद सिंहासनारूढ़ हुआ, कश्मीर में कर्कोट वंश की रानी दिद्दा का राज्य था, किन्तु 1003 ई. में उसकी मृत्यु के उपरान्त संग्रामराज द्वारा लोहार वंश की स्थापना की गई.

(iii) **दिल्ली के तोमर तथा शाकम्भरी के चौहान**—दिल्ली के तोमर तथा शाकम्भरी के चौहान 11वीं शताब्दी की नवोदित शक्तियों में थे. प्रतिहार शक्ति के ह्रास के कारण उसके पूर्व सामन्त पूर्णतः स्वतन्त्र राज्यों के रूप में स्थापित हो गये थे. इन राज्यों में भी चौहान अधिक प्रसिद्ध व शक्तिशाली थे.

(iv) **मालवा का परमार वंश**—महमूद के आक्रमण के समय मालवा क्षेत्र में परमार वंश का राज्य था. इस समय

यह वंश अपने उत्कर्ष के शिखर पर था. महमूद के शासक बनने के समय यहाँ सिन्धुराज राज्य कर रहा था. 1010 ई. में इस वंश का सबसे अधिक प्रसिद्ध राजा भोज सिंहासनारूढ़ हुआ. वह एक महान् विजेता एवं कला साहित्य का प्रेमी था.

(v) **गुजरात का चालुक्य वंश**—गुजरात इस समय चालुक्यों के अधीन था. महमूद के समय में गुजरात में क्रमशः चामुण्डराज (997-1009), वल्लभराज (1009), दुर्लभराज (1009-24) तथा भीम प्रथम (1024-64) ने राज्य किया. इन राजाओं में भीम प्रथम ने अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की.

(vi) **बुन्देलखण्ड के चन्देल**—चन्देल महमूद के समय महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति थे. उसके काल में इस वंश के तीन प्रसिद्ध राजा हुए. धंग (950-1002), गण्ड (1002-17) तथा विद्याधर (1018-1029). यह समय चन्देलों के चरम उत्कर्ष का समय था.

(vii) **त्रिपुरी के कलचुरी**—महमूद का समय कलचुरी वंश के उत्थान का आरम्भ बिन्दु था. गांगेय देव (1015-1040) की गणना अपने समय के प्रमुख राजाओं में की जाती है. कोकल्ल द्वितीय (990-1015) के सामान्यतः गुमनामी से भरे शासन के उपरान्त गांगेयदेव ने अपने वंश को नया जीवन व शक्ति प्रदान की.

(viii) **कन्नौज के प्रतिहार**—एक समय का महान् गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य अब अपने जीवन की संध्यावेला में था. महमूद के समय यहाँ पर राज्यपाल शासन कर रहा था. राज्यपाल ने शाहियों की सहायता गजनी आक्रमणों के समय की, किन्तु जब उस पर आक्रमण हुआ, तो उन्होंने कायरता का परिचय दिया.

(ix) **बंगाल के पाल**—बंगाल में महमूद के आक्रमण के समय महीपाल (992-1026) राज्य कर रहा था. वह पाल वंश का अन्तिम शासक था.

(x) **दक्षिण भारत के राज्य**—11वीं सदी के आरम्भ की दक्षिण भारत की राजनीति को चोल-चालुक्य राजनीति कहा जा सकता है. यह चोल साम्राज्य के चरमोत्कर्ष का युग था. चोल वंश के महानतम् शासक राजराज प्रथम (985-1014) तथा राजेन्द्र चोल (1014-44) ने इसी समय राज्य किया. कल्याणी के चालुक्य वंश में यह समय सत्याश्रम (997-1015) तथा जयसिंह द्वितीय का समय था. जहाँ तक वेंगी के चालुक्यों का सम्बन्ध है 999 ई. में शक्तिवर्मा प्रथम ने चोल सम्राट् की सहायता से अपने राज्यों को पुनः प्राप्त कर लिया, किन्तु उसकी स्थिति एक कठपुतली राज्य की तरह थी.

सिन्ध को आठवीं सदी में अरबों द्वारा जीत लिया गया था तथा इस समय अरब राज्य मुल्तान तथा मैसूर में था, शेष सिन्ध में स्थानीय राज्य बन गये थे.

महमूद गजनवी के आक्रमण

सुल्तान बनने के एक वर्ष बाद ही महमूद ने भारत पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया था. प्रचलित मान्यता के अनुसार उसने भारत पर सत्रह आक्रमण किए. यह उसके आक्रमणों की पूर्णतः सही संख्या नहीं है. संलग्न मानचित्र उन बारह मुख्य केन्द्रों को प्रदर्शित करता है जो महमूद के आक्रमण का निशाना बने. कुल आक्रमणों की संख्या केन्द्रों की संख्या से कहीं अधिक थी.

पेशावर (1001-02 ई.)—में महमूद ने जयपाल शाही से युद्ध कर उसे परास्त किया तथा बन्दी बना लिया एवं आगे बढ़कर वैहिन्द पर भी अधिकार कर लिया. वैहिन्द में ज्यादा महत्वपूर्ण युद्ध 1008 ई. में आनन्दपाल के साथ हुआ. इस युद्ध में आनन्दपाल पराजित हो गया. भटिण्डा के बीजीराय को एक भयंकर युद्ध के उपरान्त हराने में महमूद 1006 में सफल हुआ. मुल्तान पर महमूद के द्वारा दो आक्रमण किए गए. प्रथम पराजय (1005-6) के उपरान्त दाऊद ने महमूद की आधीनता स्वीकार कर ली. 1010-11 के दूसरे युद्ध ने दाउद के राज्य का अन्त कर दिया. 1009 ई. में महमूद ने तीव्र गति से आगे बढ़कर नगरकोट (कांगड़ा) पर अधिकार कर लिया. 1011-12 ई. में थानेश्वर का राज्य सभा चक्रस्वामी का मन्दिर महमूद के आक्रमण का निशाना बना. शाही वंश के त्रिलोचन पाल तथा भीमपाल को 1013-14 में नंदना के युद्ध में पराजित किया गया. जिन क्षेत्रों में यह आक्रमण हुए उसे अन्ततः महमूद ने अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया था.

1018 ई. में महमूद ने मथुरा पर आक्रमण कर उन मन्दिरों को नष्ट कर दिया जिनके कलात्मक सौंदर्य की उसने स्वयं प्रशंसा की थी. 1019 ई. में मथुरा से आगे बढ़कर उसने कन्नौज पर आक्रमण कर उसे लूटा.

1019 ई. में ही महमूद ने चन्देल राजा विद्याधर की राजधानी कालिंजर पर आक्रमण किया. चन्देलों ने महमूद से टक्कर लेने के लिए बड़े पैमाने पर तैयारी की, किन्तु युद्ध करने के स्थान पर हट गए. 1022 ई. में ग्वालियर को जीतता हुआ महमूद फिर से कालिंजर पहुँचा. चन्देल राजा विद्याधर ने पुनः युद्ध करने के स्थान पर समझौते की नीति अपनाई.

1024-26 में महमूद ने अपना सबसे प्रसिद्ध आक्रमण सोमनाथ पर किया. तीव्र विरोध के उपरान्त भी उसने मन्दिर पर अधिकार कर उसे लूटा.

थानेश्वर, मथुरा, कन्नौज, सोमनाथ जैसे धर्म स्थलों पर आक्रमण के कारण यह कहा जाता है कि महमूद के आक्रमण धन प्राप्ति के लिए किए गए थे. उसने सन् 1027 में अन्तिम आक्रमण सिन्ध के जाटों पर किया.

भारत में बाबर का साम्राज्य

भारत पर बाबर के आक्रमणों का उद्देश्य अपने लिए धन दौलत से भरपूर विशाल साम्राज्य की स्थापना करना था. लोदी साम्राज्य के अन्तर्विरोधी तथा भारतीय शासकों के आपसी झगड़ों ने भी उसे इस विजय कार्य को हाथ में लेने के लिए प्रोत्साहित किया था.

भारत पर बाबर के आरम्भ के आक्रमण, जो 1519 तथा 1520 में हुए, एक प्रकार से सीमावर्ती क्षेत्र पर टोह लेने के आक्रमण थे. उन आक्रमणों से सीमा विस्तार की दिशा में कदम नहीं उठाया गया. 1524 में चौथे आक्रमण के समय बाबर ने लाहौर, जालन्धर, दीपालपुर सहित अधिकांश पंजाब पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया. इसमें से जालन्धर मुल्तान दौलत खाँ को सौंपकर अन्य क्षेत्र उसने अपने अधिकार में रखे.

1525 में बाबर पुनः भारत की ओर बढ़ा. विश्वासघाती दौलत खाँ को हराकर पंजाब से आगे बढ़कर वह पानीपत के मैदान पर पहुँचा. यहाँ अप्रैल 1526 को इब्राहिम लोदी की सेना से उसका युद्ध हुआ. पानीपत के प्रथम युद्ध में प्राप्त सफलता ने बाबर को दिल्ली, आगरा का स्वामी बना दिया. अब विजित प्रदेश के अमीरों को नियन्त्रण में लाने का कार्य आरम्भ हुआ.

पानीपत के युद्ध ने मार्च 1527 ई. में खानवा के युद्ध को अनिवार्य कर दिया. इस युद्ध में बाबर ने राजपूत शक्ति की कमर तोड़ दी. हालांकि राजपूताना में उसने अपनी सीमा का विस्तार नहीं किया, किन्तु उस ओर से निश्चित होकर उसने मेवात, इटावा, अलीगढ़, कन्नौज, रोपड़, जौनपुर आदि क्षेत्रों को अपने पूर्ण नियन्त्रण में ले लिया. 1528 में मेदिनीराय को हराकर चन्देरी के दुर्ग पर उसने अधिकार कर लिया.

1529 में घाघरा के युद्ध में बाबर ने महमूद लोदी की अफगान सेना को पराजित करके बंगाल के नुसरतशाह को अपने साथ समझौता करने को बाध्य किया. इसके अनुसार बिहार पर मुगलों के आधिपत्य को नुसरतशाह ने स्वीकार कर

लिया. अतः 1530 ई. तक आधुनिक पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा बिहार का अधिकांश क्षेत्र मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत आ चुका था.

शेष भारत के राज्य—1530 में मुगल साम्राज्य की स्थापना हो जाने के उपरान्त भारत के अन्य भागों का राजनीतिक परिदृश्य इस प्रकार था—

(i) **राजपूताना**—1527 ई. तक राजपूताना में चित्तौड़ न केवल एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय शक्ति था, अपितु उत्तर-भारत की राजनीति में उसका महत्वपूर्ण स्थान वनता जा रहा था. खानवा की पराजय तथा उसके बाद राणा सांगा की हत्या ने परिदृश्य बदल दिया. मेवाड़ एक स्वतन्त्र राज्य तो रहा, किन्तु अत्यन्त कमजोर हो गया. मेवाड़ के इस पतन ने राजपूताना के दूसरे राज्य मारवाड़ के उत्थान में मदद दी. वह अपने क्षेत्र की प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित होने लगा. 1530 में राव गंगा यहाँ का शासक था.

(ii) **सिन्ध**—सिन्ध भी 1530 ई. में एक स्वतन्त्र राज्य था तथा शाह अरगुन बेग वहाँ पर राज्य कर रहा था. कश्मीर अन्य स्वतन्त्र राज्य था, जहाँ एक प्रकार से अराजकता फैली हुई थी.

(iii) **गुजरात**—1530 में गुजरात एक शक्तिशाली तथा साधन सम्पन्न राज्य था. इस समय वहाँ युवा, किन्तु महत्वकांक्षी बहादुरशाह राज्य कर रहा था. बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमन्त्रण देने वालों में वह भी एक था, किन्तु सुल्तान के रूप में वह मुगलों का कट्टर विरोधी बन गया था.

(iv) **मालवा**—1530 में मालवा राज्य की स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं थी. एक ओर तो आन्तरिक कलह दूसरी ओर पड़ोसी राज्यों, विशेषकर गुजरात व चित्तौड़ के सैनिक दबाव ने उसे कमजोर बना दिया था. इस समय महमूदशाह द्वितीय, जो स्वयं अयोग्य था, शासन कर रहा था.

(v) **खानदेश**—गुजरात की सीमा पर ताप्ती नदी के किनारे स्थित खानदेश का कमजोर राज्य एक तरह से गुजरात के संरक्षण में था. 1530 ई. में महमूद प्रथम यहाँ पर राज्य कर रहा था.

(vi) **उड़ीसा**—सूर्यवंशीय गणपति राजाओं के शासनकाल में उड़ीसा 15वीं-16वीं सदी में एक प्रमुख शक्ति के रूप में था. 1530 में यहाँ प्रताप रुद्र राज्य कर रहा था. प्रताप रुद्र का इतिहास विजयनगर के साथ उसके दीर्घकालीन संघर्षों के लिए प्रसिद्ध था.

(vii) **बहमनी राज्य**—16वीं सदी के आरम्भ में बहमनी साम्राज्य का विघटन हो गया था तथा उसके स्थान पर स्वतन्त्र राज्य स्थापित होने लगे थे. बीदर के अवशिष्ट भाग में बहमनी सुल्तान की स्थिति आन्तरिक रूप से इतनी कमजोर हो गई थी कि उसने बाबर से सहायता की प्रार्थना की थी. यह सुल्तान कलीमुल्लाह था.

संलग्न मानचित्र में अहमदनगर, बरार, गोलकुण्डा तथा बीजापुर की सीमाओं को अलग-अलग रेखांकन किया गया है. यह सत्य है कि 1530 ई. तक इन राज्यों ने औपचारिक तौर पर अपनी सम्प्रभुता की घोषणा नहीं की थी, किन्तु यथार्थ में अहमदनगर मलिक अहमद निजामुलमुल्क (1490) के समय से, बीजापुर, युसूफ आदिल खाँ के समय से, बरार फथउल्लाह इमादउल् मुल्क के तथा गोलकुण्डा कुतुबउल मुल्क के समय से, जो सभी 16वीं सदी के आरम्भ में थे, वास्तविक स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहे थे.

(viii) **विजयनगर साम्राज्य**—1530 का वर्ष विजयनगर साम्राज्य के लिए विभाजक रेखा के रूप में है. इस वर्ष तक तलुवा वंश के महान् शासक कृष्णदेव राय के नेतृत्व में विजयनगर दक्षिण भारत का सबसे महान् राज्य बन गया. 1530 में कृष्णदेव राय की मृत्यु हो गई तथा यहीं से विजयनगर के पतन की कहानी भी आरम्भ हो गई थी.

(ix) **पुर्तगीज**—पश्चिमी समुद्र तट पर गोआ को केन्द्र बनाकर पुर्तगीज एक राजनीतिक शक्ति के रूप में अपने आपको स्थापित कर चुके थे. उनके सम्बन्ध विजयनगर व गुजरात राज्य से मुख्य रूप से रहते थे.

महमूद गजनवी का सोमनाथ पर आक्रमण (1025-1026 ई.)

अब्बासी खिलाफत का पतन 9वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हो गया था. नाममात्र को खलीफा की सत्ता समझने वाले राज्यों का आविर्भाव दसवीं शताब्दी में अब्बासी खिलाफत के अवशेषों पर हुआ था. यहाँ के एक राज्य समानिद के अवशेष पर गजनी के स्वतंत्र राज्य का उदय हुआ था. गजनी साम्राज्य को अलप्तगीन ने संस्थापित किया था. सुबुक्तगीन नामक गजनी के शासक के पुत्र महमूद गजनवी ने 998 से 1030 ई. में गजनी का साम्राज्य संभाला था. महमूद गजनवी ने 1000 से 1027 ई. के मध्य भारत पर सत्रह बार आक्रमण किया था. उसकी पदवी को खलीफा से स्वीकृति नहीं मिली थी, तथापि खलीफा ने उसे यमीनुद्दौला की उपाधि प्रदान की थी. सर्वप्रथम महमूद गजनवी ने 1000 ई. में सीमान्त दुर्गों पर अधिकार किया था. महमूद गजनवी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आक्रमण सोमनाथ पर हुआ था. उस समय सोमनाथ चालुक्यों के अधीन था. सोमनाथ पश्चिमी समुद्रतट पर अवस्थित था. इस पर आक्रमण करने की स्थिति में 1024 ई. में महमूद गजनवी चालुक्यों की राजधानी अन्हिलवाड़ा पहुँचा था, जहाँ का राजा भीमदेव था. भीमदेव महमूद गजनवी के आते ही राजधानी छोड़कर भाग गया था.

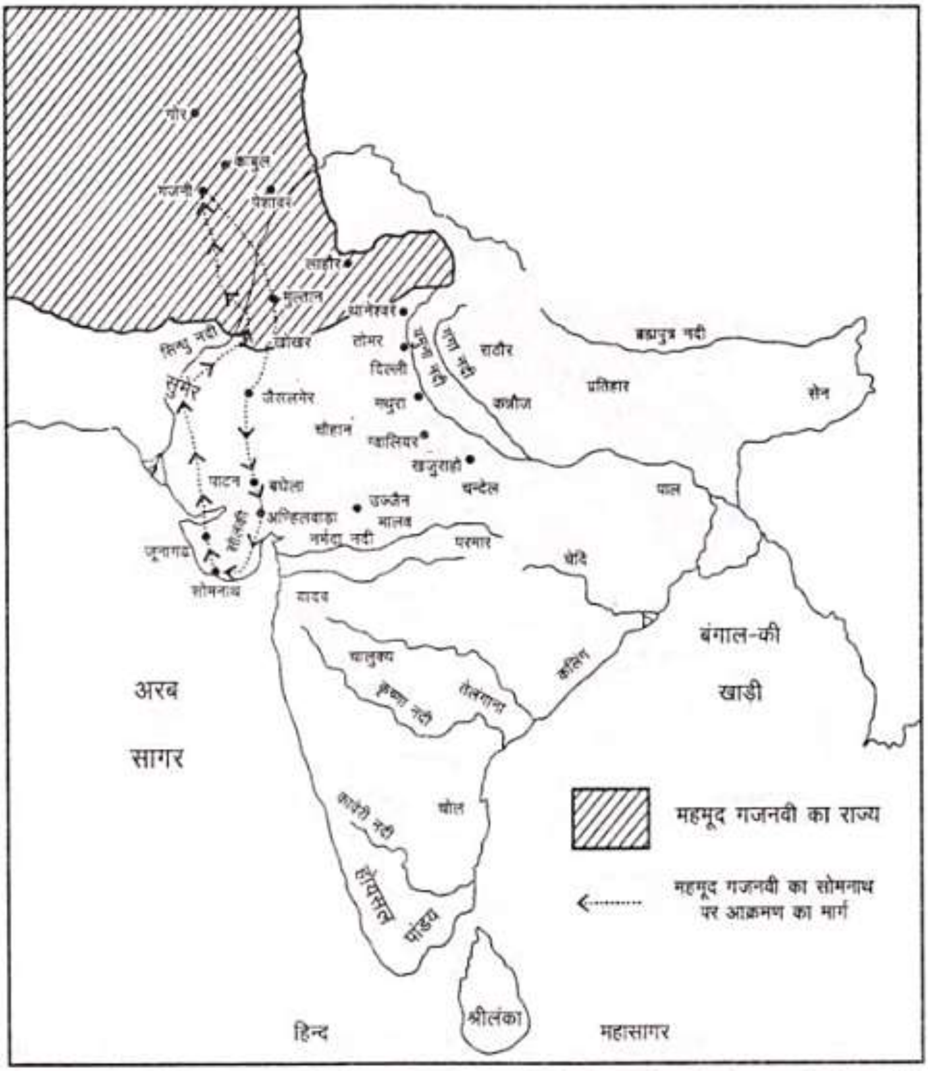

राजधानी अन्हिलवाड़ा से होते हुए गजनवी सोमनाथ तक पहुँचा था. सोमनाथ के मन्दिर और शिवलिंग को तोड़कर गजनवी ने वहाँ से अथाह सम्पत्ति प्राप्त की थी. 1026 ई. में वह सोमनाथ से वापस लौट रहा था वहाँ पर उसे जाटों एवं खोखरों के विरोध का सामना करना पड़ा था. 1027 ई. में उसने जाटों एवं खोखरों के विरुद्ध अभियान छेड़ा, उन्हें दण्डित किया तथा हत्याएँ की थीं. 1030 ई. में महमूद गजनवी की मृत्यु हो गई थी.

मुहम्मद गौरी का साम्राज्य (1173-1206 ई.)

मध्य एशिया के गजनी साम्राज्य के पश्चात गोर राजवंश का आविर्भाव हुआ था. गोर पहले गजनी के सामन्त थे. गजनी की क्षीण शक्ति को देखकर गोर ने अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली थी. इसके बाद गजनी पर भी गोर वंश (शंसवानी) वंश का अधिकार हो गया था. 1173 ई. में शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी (मुइजुद्दीन मुहम्मद बिन-साम) गजनी का शासक बना था. 1175 ई. से 1205 ई. के मध्य उसने भारत पर कई आक्रमण किये थे. सन् 1175 ई. में उसका पहला भारत आक्रमण हुआ था. गोमलदर्रा से वह मुलतान पहुँच गया था. मुलतान एवं उच्छ पर उसने अधिकार कर लिया था. 1179 ई. में पंजाब के शासक खुसरव मलिक को पराजित कर पंजाब पर मुहम्मद गौरी ने अधिकार कर लिया था. सियालकोट पर विजय प्राप्त कर 1189 ई. में उसने भटिण्डा के दुर्ग को अपने साम्राज्य में मिलाकर हांसी, समाना, मेरठ, कोयल (अलीगढ़) एवं सरस्वती पर अधिकार कर लिया था. दिल्ली, बनारस, पंजाब, मुलतान, राजपूताना,

बिहार एवं बंगाल के बड़े भू-भाग पर मुहम्मद गौरी का आधिपत्य हो गया था. 1206 ई. में उसकी मृत्यु हो गई थी.

कुतुबुद्दीन ऐबक का साम्राज्य (1206-1210 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक 1206 ई. में गुलाम वंश के अन्तर्गत दिल्ली सल्तनत का शासक बना था. गुलाम वंश की स्थापना भी उसके द्वारा ही की गई थी. दिल्ली सल्तनत पर शासन का भार संभालने के दौरान कुतुबुद्दीन ऐबक के साम्राज्य के अन्तर्गत भारत के अनेक क्षेत्र आते थे. उत्तर-पश्चिमी सीमा से मध्य भारत तक कुतुबुद्दीन ऐबक का साम्राज्य फैला हुआ था. उसके साम्राज्य के अन्तर्गत मुलतान, उच्छ, सियालकोट, नहरवाला, बतबरहिन्द, लाहौर, तराइन, अजमेर, हाँसी, सरसुती, कुहराम, मेरठ, कोयल, दिल्ली, बदायूँ, भीरा, बनारस, कन्नौज, कलिंजर, अवध और मालवा के क्षेत्र थे. पूर्वी भारत में बिहार एवं बंगाल भी उसके साम्राज्य के अन्तर्गत आता था. 1206 ई. से 1210 ई. तक के शासनकाल में उसने एक विस्तृत क्षेत्र अपने अधिकार में कर रखा था. प्रारम्भिक दौर में कुतुबुद्दीन ऐबक मात्र एक मलिक तथा सिपहसालार था. सुल्तान की पदवी एवं सिक्के ढालने के अधिकार से वंचित था. 1208 ई. में सुल्तान ने उसे दासता से मुक्त कर सिंहासन, छत्र, पताका, दूरयश एवं नक्कारा भेजा तथा सुल्तान की पदवी प्रदान की. इस तरह एक मलिक और सिपहसालार से कुतुबुद्दीन ने सुल्तान के रूप में गुलाम

वंश के अन्तर्गत दिल्ली सल्तनत पर गुलामवंशीय शासकों का नेतृत्व किया. 1210 ई. में उसकी मृत्यु हो गई.

इल्तुतमिश का साम्राज्य (1210-1236 ई.)

इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत गुलाम़ वंश का दूसरा सुल्तान था. वह इलबरी तुर्क था. कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के पश्चात् सन् 1210 ई. में वह दिल्ली सल्तनत का शासक बना था. वह ऐबक का पुत्री दामाद भी था. 18 फरवरी, 1229 ई. को उसने दिल्ली सल्तनत के शासक के रूप में वैधानिकता प्राप्त की थी. उसे दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक कहा जाता था. इल्तुतमिश के साम्राज्य में सीमान्त क्षेत्र के 12 दुर्ग सम्मिलित थे. राजस्थान में रणथम्भौर, मध्य भारत में ग्वालियर, भिलसा तथा पूर्वी प्रदेश में लखनौती तक उसका साम्राज्य फैला हुआ था. उत्तरी भाग में हिमालय के तलहटी प्रदेश से तराइन क्षेत्र तक उसका साम्राज्य फैला हुआ था. इल्तुतमिश के प्रमुख रूप से तीन प्रतिद्वन्द्वी थे–गजनी में यल्दूज, सिन्ध में कुबाचा तथा बंगाल (लखनौती) में अलीमर्दान. इल्तुतमिश ने 1226 ई. में रणथम्भौर 1227 ई. में मंदौर तथा जालौर, अजमेर, बयाना, नागौर एवं ग्वालियर पर विजय प्राप्त कर आधिपत्य स्थापित किया था. सन् 1230 ई. में इल्तुतमिश ने बंगाल पर आक्रमण कर अलाउद्दीन जानी को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया था. सन् 1233 ई. में कलिंजर पर 1233-35 के मध्य नागदा, मालवा, उज्जैन एवं भिलसा पर उसने आधिपत्य कर लिया था. इसी तरह बदायूँ, कन्नौज, बनारस, रुहेलखण्ड,

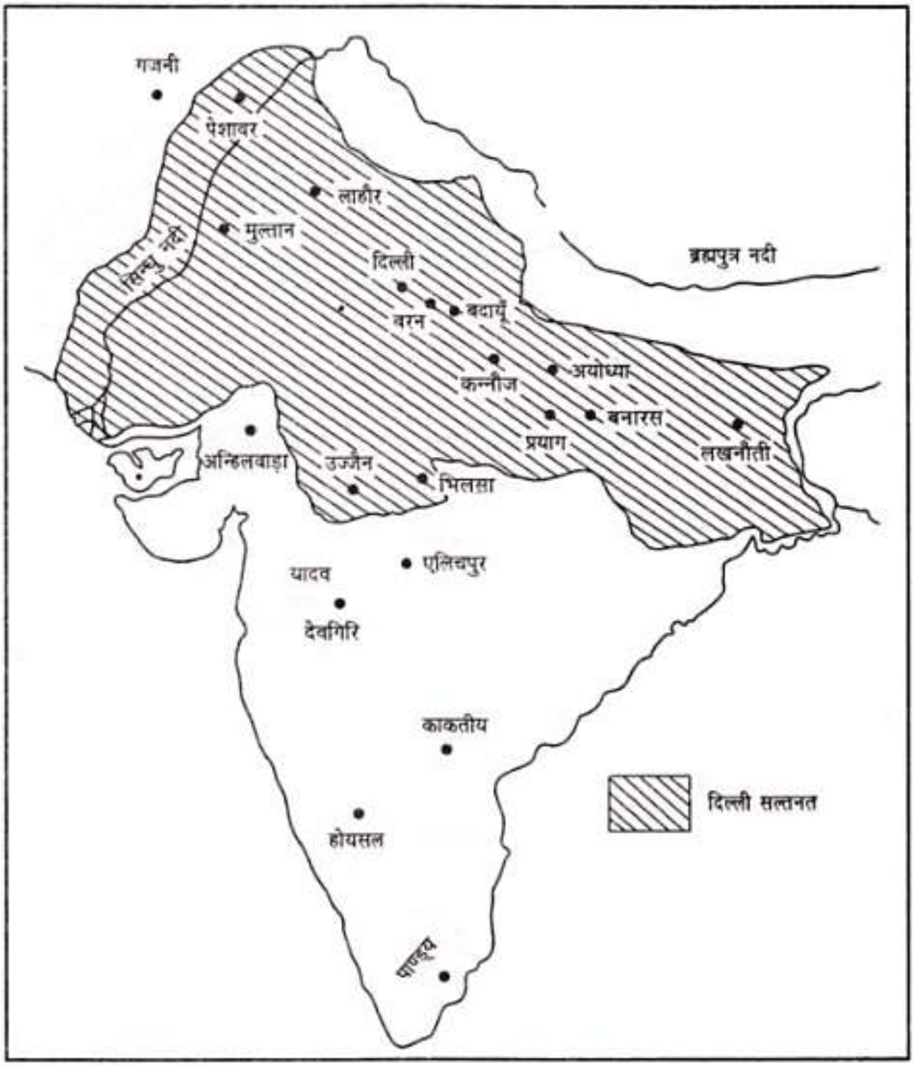

अवध, चन्दावर और तिरहुत पर भी इल्तुतमिश का अधिकार हो गया था. स्यालकोट, जालन्धर एवं नंदन पर आधिपत्य हो जाने के बाद सीमान्त प्रदेश की सुरक्षा के लिए किये जाने वाले अभियान के दौरान 1236 ई. में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गई थी.

गयासुद्दीन बलबन का साम्राज्य (1266-1287 ई.)

सन् 1266 ई. में गयासुद्दीन बलबन दिल्ली सल्तनत का शासक बना था. वह अपने आपको अफरासियाब वंश से सम्बन्धित मानता था. सन् 1287 ई. में गयासुद्दीन बलबन का साम्राज्य लखनौती से लाहौर, मुलतान, उच्छ तक पूर्व-पश्चिमी क्षेत्र में, उत्तर में कांगडा एवं बहराइच, दक्षिण में कड़ा एवं बयाना तक फैला हुआ था. मंगोल आक्रमणकारी तैमूर खाँ का आक्रमण बलबन के काल में ही हुआ था. सन् 1285 ई. में तैमूर खाँ ने आक्रमण कर लाहौर एवं दीपालपुर को लूटा था. उस समय इस क्षेत्र में बलबन के दोनों पुत्रों मुहम्मद और बुगराखाँ का शासन था. मुहम्मद की मृत्यु मंगोलों से लड़ते हुए हो गई थी. बलबन के साम्राज्य में उच्छ, दीपालपुर, लाहौर, समाना, दिल्ली, सुनम, अमरोहा, बदायूँ, कोल, बहराइच, कड़ा, लखनौती एवं नदिया राज्य आते थे. उसका राजत्व सिद्धान्त फारस के राजस्व सिद्धान्त से मिलता-जुलता था. गयासुद्दीन बलबन सुल्तान को पृथ्वी पर अल्लाह का प्रतिनिधि मानता था.

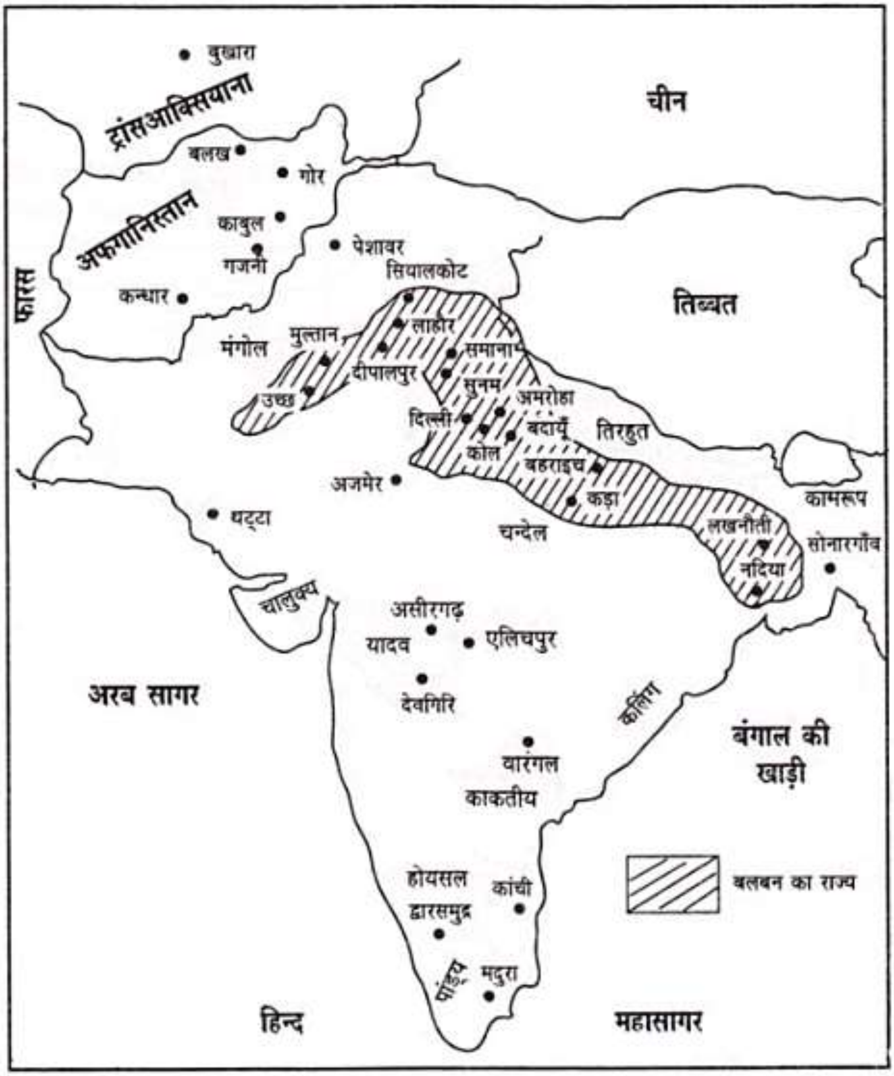

अलाउद्दीन खिलजी का साम्राज्य

(1290-1316 ई.)

सन् 1290 के पश्चात दिल्ली सल्तनत का शासन इल्बरी तुर्कों से खिलजी साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया था. 1290 ई. में खिलजी साम्राज्य की स्थापना जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने की थी. कैकूबाद और कैमूर्स की हत्या कर जलालुद्दीन खिलजी ने यह साम्राज्य स्थापित किया था. जलालुद्दीन खिलजी को मारकर 1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में खिलजी वंश के प्रतिनिधि के रूप में शासन का कार्यभार संभाला था. 1296 ई. से 1316 ई. तक लगभग बीस वर्षों तक दिल्ली सल्तनत पर शासन किया था. पेशावर, लाहौर, मुलतान, दीपालपुर, दिल्ली, रणथम्भौर, ग्वालियर, चित्तौड़, खम्भात, उज्जैन, चन्देरी, कलिन्जर, कड़ा, प्रयाग, एलिचपुर, देवगिरि, वारंगल, तेलंगाना उसके साम्राज्य में आते थे. उसका साम्राज्य अत्यधिक विस्तृत साम्राज्य था तथा उसके राज को दिल्ली सल्तनत का उत्कर्ष काल कहा जाता था. 1316 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु हो गई थी. इसकी मृत्यु के बाद से ही दिल्ली में खिलजी साम्राज्य की श्रेष्ठता का पतन प्रारम्भ हो गया था.

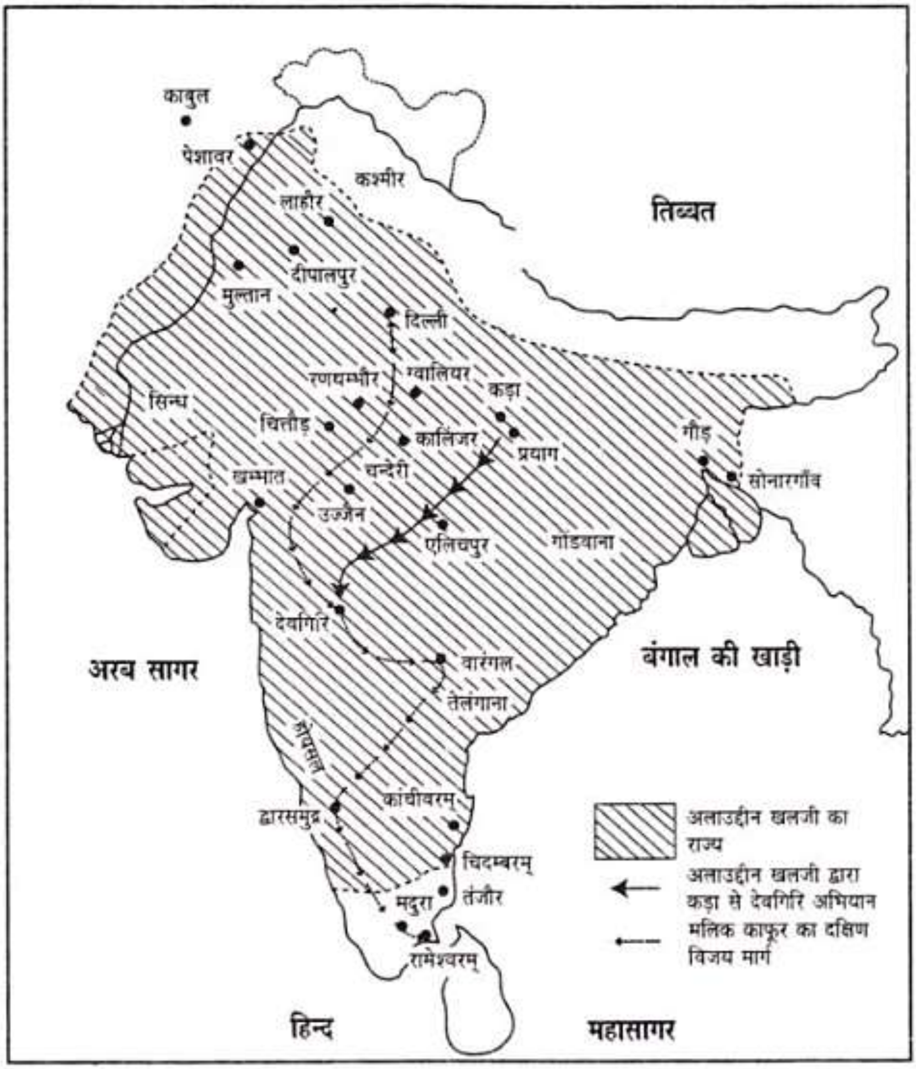

दिल्ली सल्तनतकालीन उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रदेश

दिल्ली सल्तनतकालीन उत्तर-पश्चिमी सीमा मध्य-एशिया से जुड़ी हुई थी. इसी के फलस्वरूप यह सीमा सुरक्षित नहीं थी. मध्य-एशियाई आक्रमणकारी भारत में आसानी से आ सकते थे. प्राचीनकालीन भारत में भी यूनानी, शक, कुषाण हूण आक्रमणकारी भारत में इसी मार्ग से आये थे. सल्तनत काल में भारत पर मंगोलों ने इसी मार्ग से आक्रमण किये थे. तुर्की सत्ता की स्थापना के दौरान मंगोलिया एवं गोबी मरूभूमि क्षेत्र में मंगोलों की शक्ति का आविर्भाव हुआ था. चंगेज खाँ ने मंगोलों को अद्वितीय रूप से सशक्त एवं संगठित बनाया था. मंगोलों ने पूरी तरह से मध्य-एशिया पर भी अधिकार कर लिया. लड़ाकू प्रवृत्ति होने के साथ ही उनकी आकांक्षा तुर्कों की तरह भारत में सत्ता स्थापित करने की थी. अतः उन्होंने बार-बार दिल्ली सल्तनत पर आक्रमण किया था. भारत में तुर्की राज्य को कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में स्थापित किया था. उसे ताजुद्दीन यल्दूज एवं नासिरूद्दीन कुबाचा ने अनेक बार दबाने की कोशिश की. कुबाचा से ऐबक ने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर अपनी सीमा की सुरक्षा की थी. सल्तनतकालीन उत्तर-पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए बलबन ने सीमान्त की सुरक्षा के लिए पुराने दुर्गों की मरम्मत कराई, नये दुर्गों का निर्माण कराया एवं सैनिक चौकियों को लगवाया था.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित मानचित्र पर विचार कीजिए जिसमें कुछ पूर्व सिन्धुकालीन स्थल दिए गए हैं–

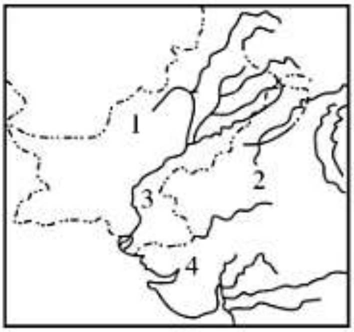

वे स्थल जो 1, 2, 3, 4 संख्याओं में चिह्नित हैं, क्रमशः हैं—

(A) मेहरगढ़, कोटदीजी, सुरकोटड़ा, कालीबंगा

(B) मेहरगढ़, कालीबंगा, कोटदीजी, सुरकोटड़ा

(C) राणा घुण्डई, बणवाली, सुरकोटड़ा, कोटदीजी

(D) रहमान ढेरी, बणवाली, कुल्ली, थारो

2. निम्नलिखित मानचित्र में छायाकृत क्षेत्र में निम्नलिखित में से कौनसी संस्कृति पल्लवित हुई थी–

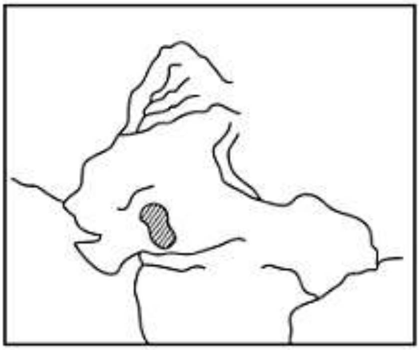

(A) बनास संस्कृति

(B) चित्रित धूसर मृदुभाण्ड संस्कृति

(C) मालवा संस्कृति

(D) जोर्वे संस्कृति

3. दिए गए मानचित्र पर विचार कीजिए–

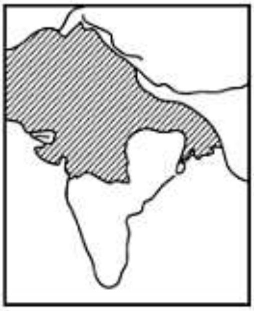

उपर्युक्त मानचित्र में किस समय का मुगल साम्राज्य निर्दिष्ट है–

(A) 1525 ई. (B) 1605 ई.

(C) 1707 ई. (D) 1761 ई.

4. H अंकित स्थान किसका होता है ?

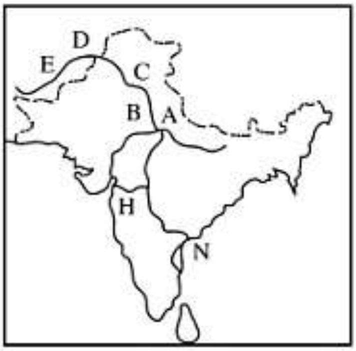

(A) मुम्बई

(B) कैम्बे

(C) सूरत

(D) भड़ौंच

5. N किसका द्योतन करता है ?

(A) विशाखापट्टनम का

(B) मद्रास का

(C) नागपट्टनम का

(D) मसूलीपट्टनम का

6. मार्ग A-E निम्नांकित से होकर जाता है ?
   (A) मुल्तान
   (B) मेरठ
   (C) अजमेर
   (D) लाहौर

7. नीचे दिए गए मानचित्र पर विचार कीजिए–

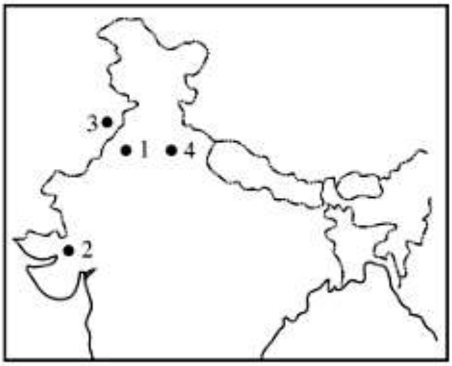

1, 2, 3, 4 से अंकित स्थान क्रमशः हैं–
   (A) रोपड़, बणवाली, सुरकोटड़ा, आलमगीरपुर
   (B) कालीवंगा, सुरकोटड़ा, हड़प्पा, आलमगीरपुर
   (C) कालीवंगा, लोथल, हड़प्पा, हुलास
   (D) बणवाली, धौलावीरा, माण्डा, राखीगढ़ी

8. 1, 2, 3 एवं 4 चिह्नित स्थान क्रमशः निम्नांकित को प्रदर्शित करते हैं–

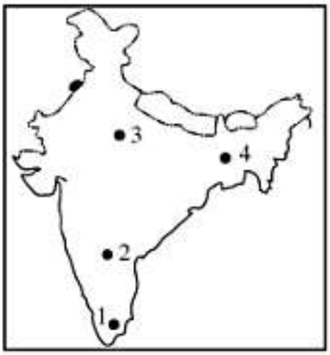

   (A) तंजौर, मालखेट, कौशाम्बी, पटना
   (B) मदुरै, कल्याणी, कान्यकुब्ज, गौड
   (C) मदुरै, गुलबर्गा, दिल्ली, कौशाम्बी
   (D) गौड, मदुरै, कल्याणी, काँची

9. 1, 2, 3 एवं 4 चिह्नित स्थान क्रमशः निम्नांकित को प्रदर्शित करते हैं–

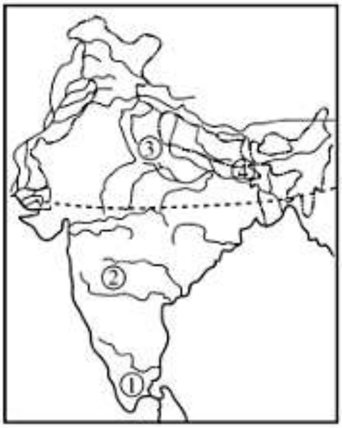

   (A) मदुरै, कल्याणी, कान्यकुब्ज, गौड
   (B) तंजौर, मालखेट, कौशाम्बी, रामावती
   (C) तंजौर, मालखेट, कान्यकुब्ज, रामावती
   (D) उरैपुर, तालाकड़ अहिच्छत्रा, पुण्ड्रनगर

10. मानचित्र में निम्नांकित का स्थान निर्धारित कीजिए–

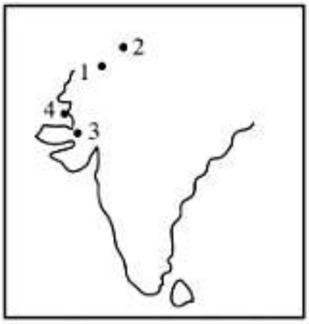

   (1) कालीबंगा
   (2) चन्हूदड़ो
   (3) बणवाली
   (4) सुरकोटड़ा
   (A) 1, 2, 3, 4
   (B) 4, 2, 1, 3
   (C) 2, 1, 3, 4
   (D) 1, 3, 4, 2

11. दिए गए मानचित्र में अशोक के शिलालेख, लघु शिलालेख, अशोक की लाटें एवं स्तूप को चिह्नित किया गया है. चित्र में उन्हें क्रमानुसार पहचानिए–

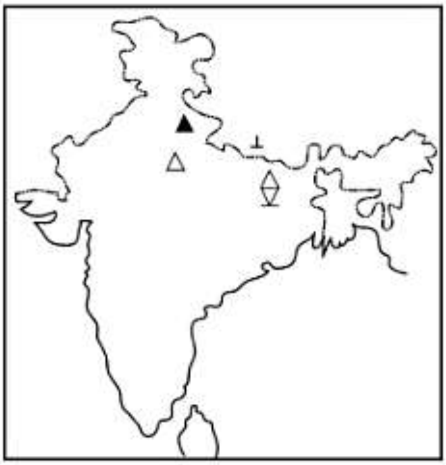

(अ) शिलालेख ▲

(ब) लघु शिलालेख △

(स) स्तूप

(द) लाटें ⊥

(A) शिलालेख, लघु शिलालेख, लाटें, स्तूप

(B) लघु शिलालेख, लाटें, स्तूप, शिलालेख

(C) शिलालेख, लघुशिलालेख, स्तूप, लाटें

(D) लघु शिलालेख, शिलालेख, स्तूप, लाटें

12. निम्नलिखित मानचित्र में नगरों का स्थान क्रमानुसार निर्धारित कीजिए–

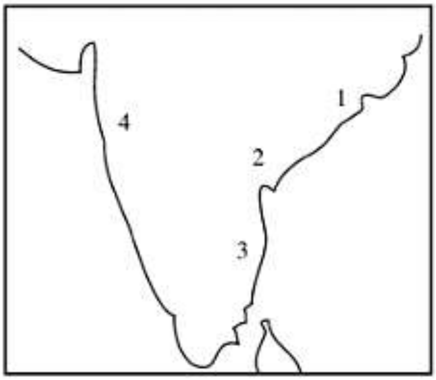

(A) तंजौर, मदुरै, मुजरिस, कोरकई

(B) मुजरिस, तंजौर, मदुरै, कोरकई

(C) कोरकई, मुजरिस, मदुरै, तंजौर

(D) काँची, तंजौर, मदुरै, मुजरिस

13. चित्र A में प्रदर्शित क्षेत्र है–

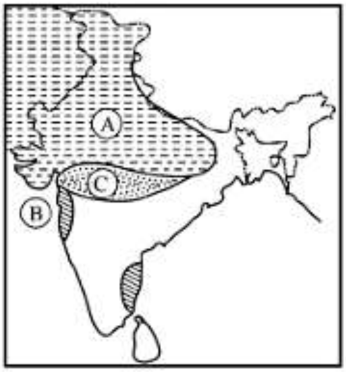

(A) 1605 ई. में अकबर का साम्राज्य

(B) औरंगजेब का साम्राज्य

(C) अलाउद्दीन की सीमा

(D) कोई नहीं

14. चित्र B में दिखाए गए क्षेत्र में किसका अधिकार था ?

(A) 1689 ई. में अंग्रेज

(B) 1600 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी

(C) पुर्तगालियों का साम्राज्य

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

15. चित्र 'C' को किस सम्राट ने विलय कर लिया था ?

(A) शाहजहाँ

(B) जहाँगीर

(C) अकबर

(D) औरंगजेब

16. X चिह्नित क्षेत्र किस शताब्दी में ब्रिटिश अधिपत्य में आया था ?

(A) सत्रहवीं शताब्दी में

(B) उन्नीसवीं शताब्दी में

(C) अट्ठारहवीं शताब्दी में

(D) बीसवीं शताब्दी में

17. नीचे दिये गये मानचित्र में किस सड़क भाग को A—B के द्वारा प्रदर्शित किया गया है ?

(A) लाहौर-हुगली सड़क मार्ग

(B) लाहौर-सतगाँव सड़क मार्ग

(C) काबुल-चटगाँव सड़क मार्ग

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

18. निम्नांकित मानचित्र पर विचार कर बताइए कि रेखांकित साम्राज्य किस समय का है ?

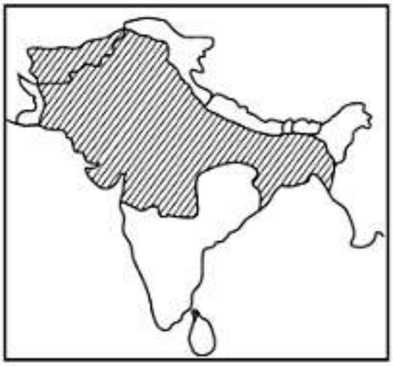

(A) 1605 ई.

(B) 1526 ई.

(C) 1707 ई.

(D) 1761 ई.

19. सत्रहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य का सबसे बड़ा बन्दरगाह दिखाया गया है–

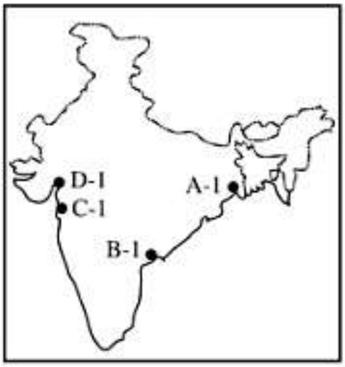

(A) A—1 से (B) D—1 से

(C) C—1 से (D) B—1 से

20. निम्नलिखित मानचित्र में छायांकित क्षेत्र किसके राज्य का है ?

(A) पुलकेशिन द्वितीय (B) ध्रुव

(C) हर्ष (D) सोमेश्वर प्रथम

21. मानचित्र में विन्दु युक्त स्थल कौनसा बन्दरगाह था ?

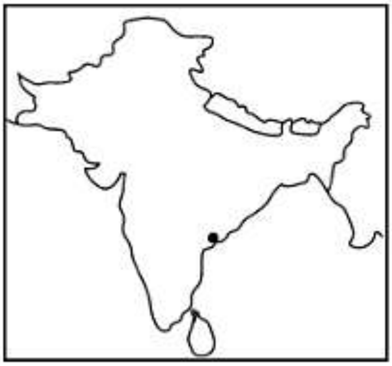

(A) पार्टोनोवो

(B) मसूलीपत्तनम (मछलीपट्टनम)

(C) विशाखापत्तनम

(D) अरिकमेडू

22. प्रदर्शित स्वतन्त्र राज्य उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का है. बताइये ?

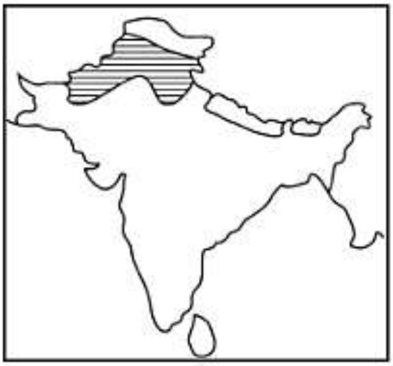

(A) सिख

(B) मुगल

(C) अहमदशाह अब्दाली

(D) सिख मिस्लों

23. किन महाजनपदों को 1, 2, 3 एवं 4 के द्वारा मानचित्र में प्रदर्शित किया गया है ?

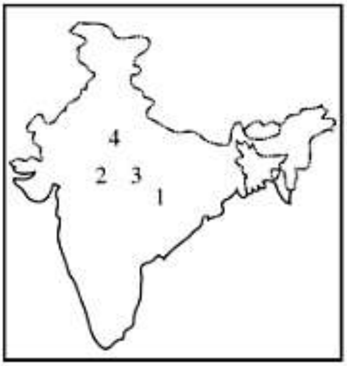

(A) शूरसेन, अश्मक, अवन्ति, चेदि

(B) चेदि, अश्मक, वज्जि, मल्ल

(C) चेदि, अवन्ति, वत्स, शूरसेन

(D) अश्मक, अवन्ति, वज्जि, चेदि

24. निम्नांकित मानचित्र में प्रदर्शित क्षेत्र मुगल साम्राज्य के किस काल का है ?

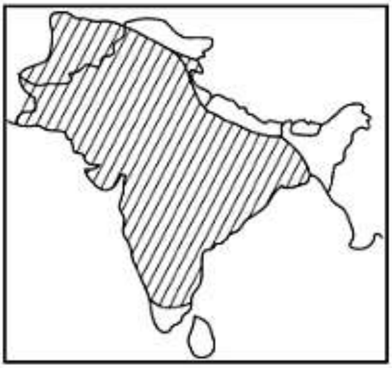

(A) 1568 ई.   (B) 1705 ई.

(C) 1630 ई.   (D) 1651 ई.

25. निम्नलिखित मानचित्र में रेखांकित एवं विन्दुयुक्त प्रदेश अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में किन शासकों के राज्य थे ?

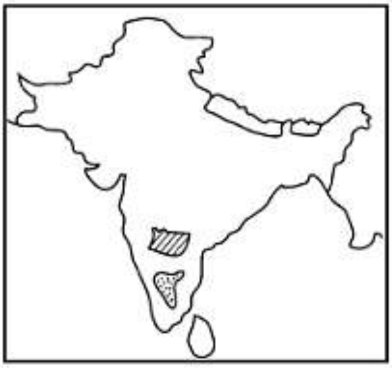

(A) निजाम एवं टीपू सुल्तान

(B) मराठा एवं टीपू सुल्तान

(C) मराठा एवं निजाम

(D) निजाम एवं सिख

26. निम्नलिखित मानचित्र में प्रदर्शित है–

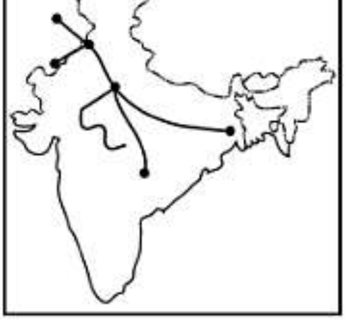

(A) समुद्रगुप्त का अभियान

(B) शेरशाह द्वारा बनवाई गई सड़कें

(C) मौर्य साम्राज्य की सड़कें

(D) अशोककालीन सड़कें

27. निम्नलिखित मानचित्र में किस विदेशी यात्री का मार्ग प्रदर्शित किया गया है ?

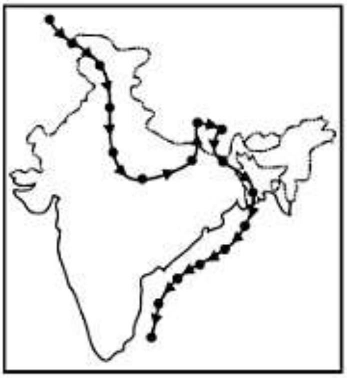

(A) ह्वेनसांग

(B) फाह्यान

(C) इत्सिंग

(D) ता-तांग-सू-ची

28. निम्नलिखित मानचित्र में 1, 2, 3 एवं 4 के स्थान पर कौनसे बन्दरगाह थे ?

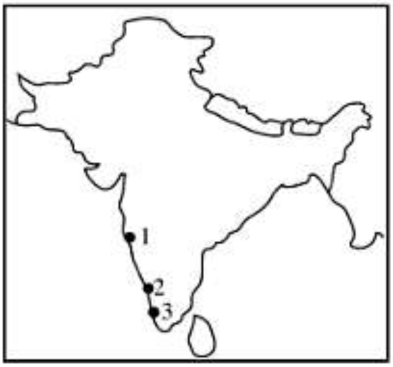

(A) गोआ, मंगलौर, कालीकट

(B) गोआ, कन्नानौर, मंगलौर

(C) क्वीलोन, मंगलौर, कालीकट

(D) गोआ, कालीकट, क्वीलोन

29. निम्नलिखित में से किन स्थलों को प्रदर्शित किया गया है ?

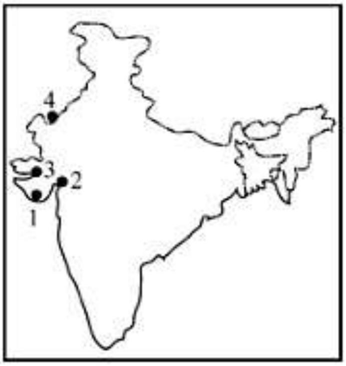

(A) सुरकोटड़ा, लोथल, कोटदीजी, हड़प्पा

(B) प्रभाषपत्तन, लोथल, सुरकोटड़ा, कोटदीजी

(C) हड़प्पा, लोथल, कोटदीजी, सुरकोटड़ा

(D) सुरकोटड़ा, हड़प्पा, लोथल, कोटदीजी

30. निम्नलिखित मानचित्र में चिह्नित क्षेत्र का प्रान्तीय राज्यपाल कौन था ?

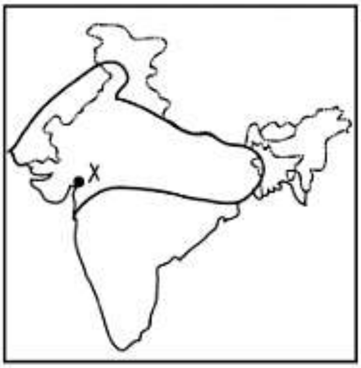

(A) पुष्यगुप्त (B) रूद्रदामन

(C) तुशस्प (D) मेनेन्द्र

उत्तरमाला

1. (B)	2. (C)	3. (B)	4. (D)	5. (D)
6. (D)	7. (B)	8. (B)	9. (C)	10. (D)
11. (D)	12. (D)	13. (A)	14. (A)	15. (A)
16. (B)	17. (C)	18. (A)	19. (B)	20. (A)
21. (B)	22. (A)	23. (C)	24. (B)	25. (A)
26. (B)	27. (B)	28. (D)	29. (B)	30. (A)

6

इतिहास के चुने हुए उद्धरण/प्रसंग

(Selected Quotations on History)

1. हे नारी ! इस मृत पति को त्याग कर पुनः जीवितों के समूह में पदार्पण करो. तुमसे विवाह के लिए इच्छुक जो तुम्हारा भावी पति है, उसे स्वीकार करो.

–ऋग्वेद 10/18/08

2. यदि मैं आपके साथ झूठ का व्यवहार करूँ, तो मेरे धार्मिक कार्य, दान, अच्छे कार्य, स्थान, जीवन व सन्तति भी नष्ट हो जावे. –ऐतरेय ब्राह्मण

3. भारत का इतिहास आर्यों का ही इतिहास समझा जाता है. –राधाकुमुद मुखर्जी

4. आर्यों के मूल स्थान या निवास स्थान की विवेचना जानबूझकर नहीं की गई है, क्योंकि इस विषय पर कोई भी धारणा स्थापित नहीं हो सकी है. –डॉ. वी. ए. स्मिथ

5. यदि राजा एक दण्डनीय अपराध के लिए दण्ड नहीं देता है, तो उसे भी अपराधी समझना चाहिए.

–आपस्तम्बसूत्रम्

6. अब आर्यों के आक्रमण और भारत के मूल निवासियों के साथ उनके संघर्ष की परिकल्पना को धीरे-धीरे त्याग दिया जा रहा है. –राधाकुमुद मुखर्जी

7. छठी शताब्दी ई. पू. मानव इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण काल है. यह असाधारण मानसिक तथा आध्यात्मिक अशान्ति युग था. –डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी

8. मैं कवि हूँ, मेरा पिता भिषग् है और मेरी माता अन्न पीसती है. –ऋग्वेद (I.A.S. Pre. 1996)

9. धर्म का रूप ग्रहण करने में बौद्ध धर्म में उस समय की सभी लोक प्रचलित आस्थाओं से कुछ प्राप्त किया तथा उसकी अनुरूपता ग्रहण की. –प्रो. ए. एल. वाशम

10. देवी मैं क्षत्रिय हूँ, प्याज कैसे खा सकता हूँ.

–सम्राट अशोक महान् (रानी तिष्यरक्षिता से)

11. सृष्टि के प्रारम्भ में हिमालय पर ही वनस्पति एवं मनुष्य का आविर्भाव हुआ. हिमालय का विस्तृत भू-भाग, विकास की मानवानुकूल परिस्थितियाँ आर्यों के आदि निवास के कारकों को प्रस्फुटित करती हैं. हिमालय का दूसरा नाम मेरू था. जिसकी जानकारी विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को थी. इसके अतिरिक्त यदि हम विभिन्न विद्वानों के स्थलों की स्थिति हिमालय से ज्ञात करें, तो स्पष्ट होगा कि यह स्थल केन्द्र में होगा. हिमालय से ही मध्यएशिया, यूरोप एवं अन्य क्षेत्रों में आर्यों का प्रसार हुआ. मध्य-एशिया, कुरूक्षेत्र, हिन्दुकुश पर्वत एवं तिब्बत इनकी चार सीमाएँ थीं. विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तावित आर्यों के आदि निवास का केन्द्र बिन्दु भी हिमालय है. अतः सार्वभौमिक रूप से सिद्ध होता है कि आर्यों का आदि-निवास हिमालय ही था.

–डॉ. के. के. शर्मा (प्राचीन भारत का विश्वकोष)

12. अन्य राष्ट्रों की लड़ाइयों में भूमि को नष्ट करने का चलन है. भारतीयों में भूमि जोतने वाले पड़ोस में लड़ाई चलते रहने के बावजूद कैसे भी संकट के भाव से उद्विग्न नहीं होते और उत्पीड़ित नहीं होते.

–मेगस्थनीज (I.A.S. Pre., 1997)

13. जिस प्रकार एक माँ अपने शिशु को एक कुशल धाय को सौंपकर निश्चिंत हो जाती है कि कुशल धाय संतान का पालन-पोषण करने में समर्थ है. उसी प्रकार मैंने भी अपनी प्रजा के सुख और कल्याण के लिए राजुकों की नियुक्ति की है.

–सम्राट अशोक महान् (कलिंग अभिलेख में)

14. हर क्षण और स्थान पर चाहे वह रसोईघर में हो, अंतःपुर में हो अथवा उद्यान में–मेरे प्रतिवेदक मुझे प्रजा के कार्यों के सम्बन्ध में सूचित करें. मैं जनता का कार्य करने से कभी नहीं अघाता. मुझे प्रजा के हित के लिए कार्य करना चाहिए.

–सम्राट अशोक महान् (षष्ठ शिलाभिलेख)

15. मैं वज्जियों का उन्मूलन कर दूँगा, चाहे वे कितने ही बली व ताकतवर क्यों न हों. मैं इन वज्जियों को उखाड़ दूँगा. मैं इन्हें नष्ट कर दूँगा.

—अजातशत्रु (लिच्छिवियों को परास्त करने के संदर्भ में घोषणा)

16. चौथी सदी में प्रकाश का पुनः आगमन होता है, अंधकार का पर्दा हट जाता है और भारतीय इतिहास में पुनः एकता तथा अभिरुचि उत्पन्न होती है.

—वी. ए. स्मिथ

17. राजकीय भोजों के अवसर पर राजा और उसके दरबार में चार मंत्री राजसिंहासन के नीचे खड़े होकर सलाम करते हैं. इसके उपरान्त वहाँ उपस्थित सभी लोग संगीत, गीत, नृत्य आरम्भ कर देते हैं. राजा मदिरा पान नहीं करता, परन्तु मांस भक्षण करता है और देश की परम्परा के अनुसार सूती वस्त्र धारण करता है तथा आटे की रोटियाँ खाता है. अपनी टेबुल के लिए तथा अनुरक्षक के रूप में काम करने के लिए उसने हजारों नाचने वाली लड़कियों को नियुक्त कर रखा है. प्रतिदिन 3000 लड़कियाँ बारी-बारी से उसकी सेवा में रहती हैं.

—चीनी लेखक चाउ-जु-कुआ द्वारा (चोल राज्य के संदर्भ में)

18. हिन्दू लोग विदेशियों से बहुत घृणा करते हैं. वे समझते हैं कि हमारा देश सबसे अच्छा है. हमारा धर्म, हमारी सभ्यता, हमारा विज्ञान, हमारे रीति-रिवाज सबसे अच्छे हैं. —अलबेरूनी

19. एक वर्ण के रूप में ब्राह्मणों की बौद्धिक श्रेष्ठता उनको मान्यता दिलाने के लिए समुचित पर्याप्त थी और उनमें इतना विवेक था कि वे राजाओं के रूप में नहीं, बल्कि मन्त्रियों के रूप में नियुक्त होकर शासन करते थे. इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि ब्राह्मण सदा अपने पेशे के आदर्शों के अनुसार कार्य नहीं करते थे और समाज में ब्राह्मणों को मिले स्थान के विरोध में लिंगायत जैसे कुछ आन्दोलन भी हुए किन्तु सामान्यतः लोगों को जो आस्था थी, ब्राह्मणों ने अपने को उनके प्रति सच्चा सिद्ध किया तथा समाज के अन्य वर्ग के लोगों ने हर प्रकार से इस औचित्य को स्वेच्छापूर्वक स्वीकार किया. —इलियट

20. इस सेना में सैनिक हर चार मास का वेतन पाते थे और किसी भी व्यक्ति को किसी प्रान्त के राजस्व पर हुण्डी के जरिए वेतन का भुगतान किया जाता था.

—अब्दुर्रज्जाक (विजयनगर साम्राज्य की सेना के लिए)

21. जहाँगीर शराब खूब पीता था तथा नूरजहाँ के हाथ का खिलौना था. —सर टामस रो

22. दीन-ए-इलाही अकबर की मूर्खता का इजहार है.

—वी. ए. स्मिथ

23. संसार की अन्य किसी इमारत में वह आकर्षण नहीं, जो ताजमहल में है. —कीन

24. ताजमहल की योजना देवों ने की और उसका निर्माण जौहरियों ने किया. —लेनपूल

25. मैं लोगों को ऐसे हुक्म देता हूँ जो उनके और राज्य के लिए लाभकारी समझता हूँ. मैं नहीं जानता कि ये शरियत द्वारा अनुमत हैं या नहीं.

—अलाउद्दीन खिलजी (I.A.S. Pre., 1995)

26. मलक्का कैम्बे के बिना नहीं रह सकता और न कैम्बे मलक्का के बिना. अगर उन्हें बहुत धनी और बहुत समृद्ध बनना हो.

—एशिया व्यापार के विषय में टोम पिरेस की टिप्पणी

27. राजकीय मुकुट का प्रत्येक मोती गरीब किसान की अश्रुपूरित आँखों से गिरी हुई रक्त की घनीभूत बूँद है.

—अमीर खुसरो (भारतीय किसानों की गरीबी पर दिल्ली सल्तनत काल में की गई टिप्पणी) (I.A.S Pre., 1997)

28. अन्त्यज जो चार वर्णों में परिगणित नहीं थे, आठ वर्गों अथवा शिल्पी या व्यावसायिक श्रेणियों में संघटित थे.

—अलबेरूनी

29. लोगों के धार्मिक विश्वासों में किसी को भी हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि कोई भी जानबूझ कर गलत धर्म का चयन नहीं करता.

—शाह अब्बास को पत्र में (I.A.S. Pre., 1998)

30. जब उसने राजसत्ता पायी तब वह शरीयत के नियमों और उपदेशों से काफी स्वतन्त्र था.

—जियाउद्दीन बर्नी द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के लिए (I.A.S. Pre., 1999)

31. अपने बड़े सामन्तों के बीच वह सम्राट इतना प्रभावशाली था कि कोई अपना सिर बहुत ऊँचा उठाने की हिम्मत नहीं करता था, लेकिन साधारण वर्ग के लोगों के साथ वह उदार और मिलनसार था और स्वेच्छा से उन्हें अपने पास नहीं आने देता था और उनकी अर्जियाँ सुनता था. वह उनके उपहार खुशी से कबूल करता था. उन्हें अपने हाथों में लेकर अपनी छाती से लगाता था.

—मांसरेट द्वारा अकबर के लिए (I.A.S. Pre., 1999)

32. नगर इतनी बुरी तरह उजड़ गया कि नगर की इमारतों महल और आस-पास के इलाकों में एक बिल्ली या कुत्ता तक नहीं बचा.

–जियाउद्दीन बर्नी (सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की राजधानी के लिए)

33. अब हमें खुले आम बगावत कर देश को विदेशी शासन से मुक्त करना है और साथियों मैं आपका और अपने सभी देशवासी भाइयों एवं बहिनों को इसमें शामिल होने के लिए आह्वान करता हूँ.

–सुभाष चन्द्र बोस (I.A.S. Pre., 1999)

34. निष्ठा की जोरदार स्वीकारोक्तियों के बावजूद किंचित सहानुभूति ही थी. नरमदलीय और गरमदलीय दोनों को ही जर्मन विजयों की जानकारी से एक समान सन्तोष हुआ. वास्तव में जर्मनी के लिए कोई अनुराग नहीं था. केवल हमारे शासकों को नीचा दिखाने की इच्छा थी.

–जवाहर लाल नेहरू (I.A.S. Pre., 1998)

35. ब्रिटिश शासन अपने वजन एवं शक्ति में दुर्घर्ष वेलन है जिसके अपने उपयोग हैं, किन्तु इससे भूमि के उपजाऊ होने में मदद नहीं मिलती.

–बाल गंगाधर तिलक (I.A.S. Pre., 1996)

36. राष्ट्रीयता आत्मन्तर की एक दैवी नियोजित शक्ति है और इसके पूर्व कि सार्वभौम ऊर्जा के हृदय में जहाँ से यह आई है, लौट जाए, इसे अपना ईश्वर प्रदत्त कार्य कर लेना चाहिए.

–श्री अरविन्द घोष (I.A.S. Pre., 1996)

37. एक सच्चा राष्ट्रवादी पुरानी आधारशिलाओं पर निर्माण करने की इच्छा करता है. सामाजिक एवं राजनैतिक सुधारों के नाम पर हम अपनी संस्थाओं का अंग्रेजीकरण एवं अराष्ट्रीयकरण नहीं करना चाहते.

–रवीन्द्रनाथ टैगोर (I.A.S. Pre., 1996)

38. मैं दिव्य दृष्टा नहीं हूँ. मैं एक व्यावहारिक आदर्शवादी होने का दावा करता हूँ.

–महात्मा गांधी (I.A.S. Pre., 1996)

39. चालीस वर्षों के गम्भीर चिन्तन के बाद मैं यह कह रही हूँ, कि विश्व के सभी धर्मों में हिन्दू धर्म से बढ़कर पूर्ण वैज्ञानिक, दर्शनयुक्त एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण धर्म दूसरा कोई नहीं हैं.

–श्रीमती ऐनीबेसेन्ट (सन् 1914 के भाषण में)

40. किसी क्रान्ति का आयोजन करना दुनिया का सबसे लाभदायी खेल समझा गया है. अंग्रेजों के मन में सोने का ऐसा लालच भर गया जो कोर्तेस और पिजाऐ के काल के स्पेनवासियों के बाद कभी देखने को नहीं मिला था. अब खासतौर पर बंगाल को तब तक चैन नहीं मिलने वाला था, जब तक उसके खून की एक-एक बूँद न निचुड़ जाए.

–ब्रिटिश इतिहासकार एडवर्ड थांप्सन एवं जी. टी. गैरेट

41. भारत में सरकार की व्यवस्था, सत्ता की नींव और उसे संभाले रखने तथा सरकार के कार्यकलापों को चलाने के तौर तरीके समान उद्देश्य के लिए यूरोप में अपनाए गए और तौर तरीकों से बिल्कुल भिन्न है. वहाँ सम्पूर्ण सत्ता की नींव और उपकरण तलवार है.

–ड्यूक ऑफ वेलिंग्टन

42. जहाँ तक पुलिस का सवाल है, वह जनता का रक्षक होने की स्थिति से कोसों दूर है. इस सम्बन्ध में जनता की भावना को बिना तथ्य का सहारा लिए मैं अच्छी तरह नहीं रख सकता. हाल के एक रेगुलेशन के अनुसार अगर कोई डकैती हुई हो, तो पुलिस को तब तक जाँच करने की मनाही है, जब तक लूटे गए व्यक्ति उसे नहीं बुलाएँ कहने का मतलब यह है कि गड़रिया भेड़िए से बड़ा भुक्खड़ हिंसक पशु है.

–गवर्नर जनरल बैंटिक, 1832

43. हमें ऐसा वर्ग बनाने के लिए जी-जान से प्रयत्न करना चाहिए, जो हमारे और उन करोड़ों लोगों के बीच, जिन पर हम शासन करते हैं. दुभाषिए का काम कर सकें; यह उन लोगों का वर्ग हो जो रक्त और रंग की दृष्टि से भारतीय मगर रुचि, विचारों, आचरण तथा बुद्धि की दृष्टि से अंग्रेज हो. –लार्ड मैकाले

44. मगर हाय ! तुम्हारी विजय का वह दिन देखने के लिए मैं कभी जिन्दा नहीं रहूँगा. जब दृढ़ता और दिलेरी से तुम गरुड़ के पंखों पर बैठोगी और ऊपर ज्ञान और सुखद स्वतन्त्रता के क्षेत्र में उड़ान भरोगी.

–काशीप्रसाद घोष

45. मेरे देश ! बीती हुई गरिमा के दिनों में तुम्हारे ललाट के चारों ओर एक सुन्दर प्रभामण्डल व्याप्त था और पूजा एक देवता के समान होती थी. वह गरिमा कहाँ है ? अब वह श्रद्धा कहाँ है ? आखिरकार गरुड़ के समान तुम्हारे पंखों को जंजीर से जकड़ दिया गया है और तुम नीचे धूल में औंधे पड़े हो. तुम्हारे चरण तुम्हारी विपन्नता की दुखद कहानी के सिवाय गूंथने के लिए कोई माला नहीं है. –डेरोजिओ (प्रथम राष्ट्रवादी कवि)

46. अगर वह हैदर जैसी सैनिक चातुरी का परिचय दे भी तो वह जानता है कि वह एक मध्यस्तरीय अंग्रेज अधिकारी

जितना वेतन नहीं पा सकता और लगभग 30 वर्ष तक निष्ठापूर्वक सेवा करने के बाद जो पद वह प्राप्त करेगा वह भी उसे इंग्लैण्ड से नये-नये आए किसी रंगरूट की हुक्म अदायगी से सुरक्षित नहीं कर सकेगा.

–इतिहासकार टी. आर. होल्मस (सिपाहियों की दुर्दशा पर)

47. कोई भी मिसाल ऐसी नहीं कि किसी गोरे की गाड़ी पर दोस्ताना निगाह पड़ती हो............

उफ ! ये आँखों की भाषा ! शक की गुंजाइश कहाँ है ? गलत समझाने की गुंजाइश कहाँ है ? यही तो वह चीज है, जिससे मैंने समझा कि हमारी जाति का अक्सर बहुत से लोगों को कोई डर नहीं होता और यह कि नफरत तो इससे सभी करते हैं.

–डब्ल्यू एच. रसल (लन्दन टाइम्स अखबार के संवाददाता, 1858-59)

48. मैं एक ऐसी बड़ी सेना कभी नहीं देखना चाहता जिसकी भावनाएँ और पूर्वाग्रह और सम्पर्क वैसे ही हों, जिसे अपनी शक्ति का भरोसा है और जो मिलकर विद्रोह करने को इतनी उत्सुक हो. अगर एक रेजीमेंट विद्रोह करें, तो दूसरे रेजीमेंट को उससे इतना कटा हुआ देखना पसन्द करूँगा कि वह उस पर गोली चलाने के लिए भी तैयार हो.

–भारत सचिव चार्ल्स वुड (वायसराय केनिंग को 1861 में लिखे पत्र में)

49. मेरा खयाल है कि न तो देशी और न ही यूरोपीय कृषक की वर्तमान दर पर समृद्ध बन सकता है. जमीन की आधी सकल पैदावार सरकार ले लेती है. हिन्दुस्तान (उत्तर भारत) में मैंने शाही अफसरों में यह आम भावना पाई. विदेशी राज्यों की प्रजा की तुलना में कम्पनी के प्रान्तों के किसान बदतर गरीब और पस्त हिम्मत है और यहाँ मद्रास में जहाँ जमीन आम तौर से कम उपजाऊ है, विषमता और स्पष्ट तथ्य यह है कि कोई भी देशी राजा हमारे जितना लगान नहीं माँगता.

–विशप हेवर (1826)

50. मुझे यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि आधी कृषि जनसंख्या को एक साल के अन्त में से दूसरे साल के अन्त तक यह पता नहीं होता कि पेट भर खाना कैसा होता है. –चार्ल्स इलियट

51. इसलिए मैं यह कहने की जुर्रत करूँगा कि भारत की सम्पत्ति या उसके जीवन को सुरक्षा प्राप्त नहीं है. भारत के लाखों-लाख लोगों के लिए जीवन का अर्थ आधा पेट भोजन या भुखमरी या अकाल और महामारी है.

–दादा भाई नौरोजी

52. विदेशी प्रशासन का अत्यधिक खर्चीलापन बहरहाल इसकी अकेली बुराई नहीं है. यह एक नैतिक बुराई भी है और बल्कि यह बड़ी बुराई है. वर्तमान व्यवस्था में भारतीय जाति का कद घटने या उसकी वृद्धि के रुकने की प्रक्रिया चल रही है. हमें अपना पूरा जीवन उसका एक-एक दिन हीनता के वातावरण में जीना पड़ रहा है और हममें जो श्रेष्ठता है उसे भी झुकना पड़ रहा है. हमारी मनुष्यता जिन महान ऊँचाइयों को छू सकती है वहाँ तक वर्तमान व्यवस्था में हम कभी नहीं पहुँच सकेंगे. प्रत्येक स्वशासी जनगण को जिस नैतिक ऊँचाई का अनुभव होता है उसे हम महसूस नहीं कर सकते. हमारी प्रशासकीय और सैनिक योग्यता उपयोग के बिना धीरे-धीरे नष्ट हो जाएंगी और हम अपने ही देश में लकड़ी काटने वालों या कुएँ से पानी निकालने वालों के रूप में जड़ होकर रह जाएँगे. –गोपाल कृष्ण गोखले

53. इस तरह के तीन करोड़ प्राणी जो भारत के शरीर पर इस तरह रेंग रहे हैं जैसे कि सड़ती और बदबू देती लाशों के ऊपर कीड़े रेंगते हैं. हमारे बारे में यही वह तस्वीर है, जो स्वाभाविक तौर पर अंग्रेज अधिकारियों के सामने उभरती है. –स्वामी विवेकानन्द

54. आज हम जो कुछ अपने इर्द-गिर्द देखते हैं, वह एक पतित राष्ट्र है. एक ऐसा राष्ट्र जिसकी प्राचीन महानता ध्वंस होकर बिखरी पड़ी है. इसका राष्ट्रीय साहित्य और विज्ञान, इसका धर्मशास्त्र और दर्शन, इसका उद्योग और वाणिज्य, इसकी सामाजिक समृद्धि और घरेलू सरलता तथा मधुरता, यह सभी समाप्त हो चुकी बातों के साथ लगभग जा चुकी है. जब हम चारों ओर बढ़ते आध्यात्मिक सामाजिक तथा बौद्धिक सूनेपन का दुःखजनक तथा निराशाजनक दृश्य देखते हैं, तो हम इसमें कालिदास के काव्य के, विज्ञान के तथा सभ्यता के देश को पहचानने का व्यर्थ प्रयत्न करते हैं.

–केशवचन्द्र सेन

55. हम दोनों भारत की हवा में सांस लेते हैं और गंगा-यमुना का पवित्र जल पीते हैं. हम दोनों भारत की धरती का अनाज खाकर जीवित रहते हैं. जीवन और मृत्यु, दोनों में हम एक साथ हैं. भारत में हमारे निवास ने हम दोनों का खून बदल डाला है, हमारे शरीर के रंग एक हो चुके हैं, हमारे हुलिए समान हो चुके हैं. मुसलमानों ने अनेक हिन्दू रिवाजों को अपना लिया है तथा हिन्दुओं ने मुसलमानों के आचार-विचार की बहुत-सी बातें ले ली हैं. हम इस कदर एक हो चुके हैं कि हमने एक नई भाषा उर्दू को विकसित किया है, जो न हमारी भाषा है और न हिन्दुओं की. इसलिए हम अपने जीवन के 30

वर्षों को छोड़ दें, जो ईश्वर से सम्बन्धित है, तो निःसन्देह इस आधार पर कि हम दोनों एक ही देश में रहते हैं, हम राष्ट्र है तथा देश को तथा हम दोनों की प्रगति और कल्याण हमारी एकता, पारस्परिक, सहानुभूति और प्रेम पर निर्भर है, जबकि हमारे पारस्परिक मतभेद, अकड़, विरोध तथा दुर्भावना निश्चित ही हमें नष्ट कर देगी. —सैयद अहमद खान

56. जब तक लाखों-लाख लोग भूख तथा अज्ञान से ग्रस्त है मैं हर उस व्यक्ति को देशद्रोही कहूँगा जो उसके खर्च पर शिक्षा पाकर भी उस पर कोई ध्यान नहीं देता.

—स्वामी विवेकानंद

57. क्या आप एक ही देश में नहीं रहते ? क्या आप एक ही धरती पर जलाए और दफनाए नहीं जाते ? क्या आप एक ही जमीन पर नहीं चलते या एक ही धरती पर नहीं रहते ? याद रखिए हिन्दू और मुसलमान शब्द केवल धार्मिक अन्तर के लिए है. —सर सैयद अहमद खान

58. दुनिया में अगर कोई पाप है, तो वह निर्बलता है. निर्बलता का त्याग करो; निर्बलता पाप है, मृत्यु है.

—स्वामी विवेकानन्द

59. होमरूल मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा. —बाल गंगाधर तिलक

60. वह समय आ गया है, जब सम्मान के प्रतीक अपमान अपने बेमेल सन्दर्भ में हमारी शर्म को उजागर करते हैं और जहाँ तक मेरा सवाल है. मैं सभी विशिष्ट उपाधियों से रहित होकर अपने उन देशवासियों के साथ खड़ा होना चाहता हूँ, जो अपनी तथाकथित क्षुद्रता के कारण मानव जीवन के अयोग्य अपमान को सहन करने के लिए बाध्य हो सकते हैं.

—रवीन्द्र नाथ टैगोर (नाइट की उपाधि लौटाते हुए)

61. जिस समय जनता का उत्साह अपनी चरम सीमा को छूने वाला था, उस समय पीछे हट जाने का आदेश देना राष्ट्रीय अनर्थ से कम नहीं था. महात्मा जी के प्रमुख सहयोगी देशबंधु दास, पण्डित मोतीलाल नेहरू और लाला लाजपत राय, जो सब जेलों में थे, भी इस सामूहिक खिन्नता में भागीदार थे. मैं उस समय देश बन्धु के साथ था और मैंने देखा कि जिस तरह महात्मा गाँधी बार-बार गोल-माल कर रहे थे. उस पर वे क्रोध और दुःख से आपे से बाहर हो रहे थे.

—सुभाष चन्द्र बोस ('द इण्डियन स्ट्रगल')

62. मैं एक ही ईश्वर को मानता हूँ, जो सभी आत्माओं की एक आत्मा है और सबसे ऊपर है. मेरा ईश्वर दुःखी मानव है; मेरा ईश्वर पीड़ित मानव है; मेरा ईश्वर हर जाति का निर्धन मनुष्य है. —स्वामी विवेकानन्द

63. हमारा संघर्ष वास्तव में स्वाधीनता के एक और बड़े संघर्ष का भाग था और जो शक्तियाँ हमें प्रेरित कर रही थीं, वे पूरी दुनिया में लाखों दूसरे लोगों को भी प्रेरित कर रही तथा कर्मक्षेत्र में ला रही थीं. संकट की स्थिति में पूँजीवाद ने फासीवाद का रूप लिया. पराधीन औपनिवेशिक देशों में साम्राज्यवाद जो कुछ बहुत पहले से रहा है, स्वयं को जन्म देने वाले कुछ देशों में ही पूँजीवाद ने भी वैसा ही रूप धारण कर लिया. फासीवाद और साम्राज्यवाद इस तरह पतनशील पूँजीवाद के दो रूप बनकर सामने आए. पश्चिम में समाजवाद ने तथा पूर्वी तथा अन्य पराधीन देशों में उदीयमान राष्ट्रवाद ने फासीवाद और साम्राज्यवाद के इस गठजोड़ का विरोध किया. —जवाहर लाल नेहरू

64. भाग्य का चक्र किसी न किसी दिन अंग्रेज जाति को बाध्य करेगा कि वह अपने भारतीय साम्राज्य से हाथ धो ले. लेकिन वे अपने पीछे किस तरह का भारत, कितनी बुरी बदहाली छोड़ जाएँगे ? जब उनके सदियों पुराने प्रशासन का सोता अंततः सूखेगा, तब कितना कूड़ा-करकट और कीचड़ वे अपने पीछे छोड़ जाएँगे.

—रवीन्द्र नाथ टैगोर

65. "मैं जो कार्य कर रहा हूँ, वह भारत पर एक अंग्रेजी व्यवस्था लादने का नहीं है, बल्कि पुरानी देशी-व्यवस्था को पुनर्जीवित एवं विस्तृत करने का है; प्राचीन ग्राम्य-व्यवस्था के जो अवशेष हैं उनका पूर्ण उपयोग करते हुए प्राचीन आधारशिला पर स्थानीय शासन की इमारत खड़ी करनी है." —लार्ड रिपन

66. "हममें से अधिकतर अभी न वेदांती हैं, न पुराणपंथी और न तांत्रिक हैं. हम केवल 'छुओ नहीं' वाले हैं. हमारा धर्म रसोईघर में है. हमारा ईश्वर खाना पकाने के बरतन में है और हमारा धर्म 'मुझे छुओ मत' में पवित्र है. अगर यह एक शताब्दी तक और चलता रहा तो हम सब पागलखाने में होंगे." —स्वामी विवेकानन्द

67. "मैं लैंडहोल्डर्स सोसायटी को इस देश में 'स्वतन्त्रता का अग्रदूत' समझता हूँ. इसने लोगों को अपने-अपने अधिकारों के लिए वैधानिक तरीके से लड़ने की कला का पहला पाठ पढ़ाया और उन्हें सिखाया कि इस प्रकार पुरुषार्थ के साथ अपने दावों के लिए दृढ़ता से आवाज उठानी चाहिए और अपना मत प्रकट करना चाहिए."

—डॉ. राजेन्द्र लाल मित्र

68. "यदि पचास शिक्षित नवयुवक ही स्वार्थ त्यागकर देश की स्वतन्त्रता के लिए संगठित होकर प्रयत्न करें, तो आगे का कार्य सरल हो सकता है." —ए. ओ. ह्यूम

69. "अपनी शिकायतों का निवारण कराने तथा रियायतें पाने के लिए उन्होंने 20 साल से अधिक समय तक कमोवेश जो निरर्थक आन्दोलन चलाया. उसमें उन्हें रोटियों के बजाय पत्थर मिले." —लाला लाजपत राय

70. "काँग्रेस अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रही हैं. भारत में रहते हुए मेरी एक सबसे बड़ी इच्छा यह है कि मैं उसे शान्तिपूर्वक मरने में मदद दे सकूँ." —लार्ड कर्जन

71. "भारत स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहता है, तो उसको भिक्षावृत्ति का परित्याग कर स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा." —लाला लाजपत राय

72. आवश्यकता है वीर सिपाहियों की. वेतन : मृत्यु. पुरस्कार : शहादत. पेंशन : स्वतन्त्रता. युद्ध स्थल : भारत. —'गदर' में प्रकाशित एक विज्ञापन

73. "भारत का पुरुषत्व साम्राज्य की रक्षा में अपना सबसे अच्छा खून बहा है. हमारी वफादारी का इजहार हमारे अपने देशवासियों के खून से मूर्तिवान और पवित्र हो गए हैं. मुझे यह कहने की इजाजत दीजिए कि अगर दुर्भाग्यपूर्ण युद्ध लंबा हुआ और इंग्लैण्ड हमसे धन-जन की मदद की माँग करेगा, तो हमारे पास का आखिरी पैसा, हमारी धमनियों में प्रवाहित होने वाले खून की आखिरी बूँद साम्राज्य की सेना में चढ़ा दी जायेगी."

—सुरेन्द्र नाथ बनर्जी

74. "कौम चुपचाप देखती नहीं रह सकती जब उसकी तकदीर का फैसला होने जा रहा है. हिन्दुस्तान ने जम्हूरी मुल्कों के साथ हाथ मिलाने की कोशिश की थी, लेकिन ब्रिटिश हुकूमत ने बाइज्जत हाथ मिलाना भी नामुमकिन बना दिया. ....अँग्रेज अगर चाहें तो हिन्दुस्तान छोड़कर चले जा सकते हैं. जैसे वे सिंगापुर, मलाया और बर्मा छोड़कर चले आए हैं, लेकिन हिन्दुस्तानी इसे छोड़कर नहीं जा सकते, क्योंकि उनका मुल्क है, घर है. इसलिए उन्हें ऐसी ताकत पैदा करनी होगी जो ब्रिटिश बेड़ी को उतार फेंके और किसी भी नए हमलावर के किसी भी हमले को रोक सके."

—मौलाना अबुल कलाम आजाद

75. "सन् बयालीस की क्रान्ति इस देश के इतिहास में उस समय तक वही स्थान रखती है जो फ्रांस या रूस की क्रान्तियों का अपने-अपने देश में है. जिस पैमाने पर 1942 ई. की क्रान्ति हुई थी, वह इतिहास में अपना सानी नहीं रखती. इतने बड़े जनसमुदाय ने दूसरी किसी क्रान्ति ने भाग नहीं लिया था. सन् 1942 ने देश की कायापलट कर दी, एक नए भारत का निर्माण किया. उसकी राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की. ....बयालीस में लड़ाई ने जनक्रान्ति का रूप लिया. ....अंग्रेजी राज्य का किला, जो अब तक इतना सुदृढ़ और दुर्भेद्य दीख रहा था, अकस्मात् टूटने लगा. कहीं दीवार टूटी, तो कहीं कंगूरा, कहीं कुछ पाए तो कहीं मेहराब. जनता ने समझ लिया कि यह बालू की भीतों का बना हुआ किला है और उसने सीख लिया उन भीतों को ढाह देने का एक नया तरीका."

—श्री जयप्रकाश नारायण

76. "अस्थायी सरकार का काम होगा वह संघर्ष करना और चलाना जो भारत की भूमि से अंग्रेजों और उनके दोस्तों को निकाल बाहर करें. हम भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपने झंडे के इर्द-गिर्द इकट्ठा होने और आक्रमण करने के लिए भारतीय जनता का आह्वान करते हैं. इस संघर्ष को शक्ति और धीरज तथा आखिरी जीत में पूरे विश्वास के साथ तब तक चलाने के लिए जब तक दुश्मन को हिन्दुस्तान की जमीन से निकाल नहीं दिया जाता और भयभीत जनता एक बार फिर आजाद कौम नहीं बन जाती." —सुभाष चन्द्र बोस

77. "मैं किसी चित्रकार की पेंटिंग को देखकर यह बता सकता हूँ कि किस चित्रकार ने पेंटिंग का कौनसा भाग बनाया है." —जहाँगीर

78. "मैं उन लोगों से नफरत करता हूँ, जो चित्रकारी से घृणा करते हैं." —अकबर

79. सम्राट स्वयं सुन्दर भवनों की योजना बनाकर अपने मस्तिष्क एवं हृदय के विचारों को पाषाण एवं मिट्टी के आवरण से सुसज्जित करता था. —अबुल फजल

80. 'मुगल काल में समस्त भूमि का स्वामी राजा होता था.'

—फ्रांसीसी चिकित्सक बर्नियर

81. "मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूँ कि इन लोगों से अच्छा व्यवहार तभी किया जा सकता है जब एक हाथ में तलवार तथा एक में कलम हो." —सर टामस रो

82. "अंग्रेजों को उसी धरातल पर अपने को आधारित रखना चाहिए जिससे हमने आरम्भ किया तथा जिस पर हम टिके हुए हैं यानी भय." —सर टामस रो

83. "समय की माँग है कि आप अपने वाणिज्य का प्रबन्ध अपने हाथों में तलवार लेकर करें."

—बम्बई के गवर्नर जेराल्ड आन्जियर

84. "यह मराठों का अन्तिम पूर्ण प्रशासक था. यह कथन नाना फडनवीस के विषय में कहा गया है."

—कर्नल पामर (M.P. P.S.C., 1996)

85. "दो मोती विलीन हो गये, वाइस सोने के मुहरें लुप्त हो गयीं और चाँदी एवं ताँबे की तो पूरी गणना ही नहीं की जा सकती है."

—पेशवा के पराभव का कूट सन्देश (M.P. P.S.C., 1997)

86. 'इस्लाम की राजधानी (वगदाद) से भेजे वस्त्र आभूषण उपहार को सुल्तान, उसके पुत्र, अमीरों ने धारण किया.'

—फिरोज तुगलक (M.P. P.S.C., 1992, 1993)

87. 'राजा देवत्व का अंश होता है, उसकी समानता कोई भी मनुष्य नहीं कर सकता.'

—बलबन (अपने पुत्र बुगरा खाँ के लिए) (M.P. P.S.C., 1993)

88. 'सर्वशक्तिमान ईश्वर या अल्लाह जब अपने सेवकों की आजीविका वृद्धावस्था में 'वापस नहीं लेता' तो खुदा का बन्दा होने के नाते भला मैं अपने वृद्ध सैनिक को कैसे पदच्युत कर सकता हूँ.'

—फिरोज तुगलक (M.P. P.S.C., 1993)

89. 'पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार.'

—कबीर (I.A.S. Pre., 1994)

90. 'हनूज दिल्ली दूरस्थ' (दिल्ली अभी दूर है.)

—निजामुद्दीन औलिया (M.P. P.S.C., 1996)

91. "अपनी प्रजा की सुरक्षा तथा कल्याण के उद्देश्य को सदैव आगे रखें तभी देश के लोग राजा के कल्याण की कामना करेंगे और राजा का कल्याण तभी होगा जब देश प्रगतिशील और समृद्धिशील होगा."

—राजा कृष्ण देवराय (आयुक्तमाल्यद में)

92. "राजदरबार में स्त्री क्लर्कों, स्त्री अंगरक्षकों के अलावा स्त्री पहलवान, स्त्री ज्योतिषी, स्त्री भविष्यवक्ता भी थी." —नूनिज (विजयनगर साम्राज्य के लिए)

93. "जब भी मैं किसी नीच कुल में उत्पन्न हेय व्यक्ति को देखता हूँ, तो मेरी आँखों से अंगारे फूटने लगते हैं और क्रोध से मेरा हाथ (उसको मारने के लिए) मेरी तलवार पर चला जाता है." —इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी

94. "कुछ हिन्दू जानते हैं कि इस्लाम एक सच्चा धर्म है, लेकिन वे इस्लाम को कबूल नहीं करते."

—सूफी संत निजामुद्दीन औलिया

95. "इस नगर की परिधि साठ मील है. इसकी दीवारें पहाड़ों तक चली गई हैं और इन पहाड़ों की तराई में पहुँचकर उन्होंने घाटियों के इर्द-गिर्द घेरा बना दिया है. इस नगर में शस्त्र धारण करने योग्य नब्बे हजार लोगों के होने का अनुमान है. उनका राजा भारत के अन्य सभी राजाओं से अधिक शक्तिशाली है."

—इतालवी यात्री निकोलो कोंटी (विजय नगर साम्राज्य के लिए)

96. "प्रारम्भिक वैदिक आर्य समुद्री व्यापार नहीं करते थे."

—डॉ. ए. एल. भाषम

97. "राजा इतनी आजादी देता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार आ-जा सकता है और अपने धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकता है. उसे इसके लिए किसी भी प्रकार की नाराजगी नहीं झेलनी पड़ती है और न उसके बारे में यह जानकारी हासिल करने की कोशिश की जाती है कि वह ईसाई है या यहूदी मूर है अथवा नास्तिक."

—बारबोसा

98. "जमीन आबादी से भरी हुई है, जो लोग गाँव में रहते हैं वे बहुत दयनीय अवस्था में हैं, जबकि सरदार लोग खूब समृद्ध हैं और विलासिता का जीवन बिताते हैं."

—सोहलवीं सदी का यात्री निकितिन

99. "पूर्ववर्ती सुल्तानों में से कईयों ने भूमि पर शासन किया, लेकिन समुद्र पर किसी ने नहीं. समुद्री लड़ाई में काफिर हमसे आगे हैं. हमें उन्हें मात देनी है."

—महाप्रतापी सुल्तान सुलेमान

100. "धर्म और अधर्म, दोनों उसी (ईश्वर) की ओर भागे जा रहे हैं और (एक साथ) घोषणा कर रहे हैं—यह (ईश्वर) एक है और उसके राज्य में कोई हिस्सेदार नहीं हैं."

—फारसी कवि सनाई

101. "अलग-अलग व्यक्तियों ने आक्रोश भरी चुनौती के रूप में, जो कार्यवाही शुरू की, वह बढ़कर एक आन्दोलन में बदल गई और फिर आन्दोलन ने एक विद्रोह का रूप ले लिया. ....सरकार ने अपना गुस्सा दिखाया और आतंक तथा जोर-जुल्म की बागडोर ढीली कर दी गई. ....देश एक पुलिस राज्य में बदल गया. ....पुलिस और सेना की गोलियों से 10 हजार से अधिक लोगों को मार डालने के बाद देश में 1857 ई. के बाद इतना भयंकर और देशव्यापी दमन नहीं हुआ था."

—इतिहासकार विपिनचन्द्र, अमलेश त्रिपाठी और बरुण दे

102. "हुमायूँ जीवन भर ठोकरे खाता रहा और ठोकर खाकर ही संसार से विदा हुआ." —लेनपूल

103. "मैंने भारत की प्रशंसा दो कारणों से की है. एक तो यह है कि हिन्दुस्तान मेरी जन्मभूमि और हम सबका वतन है. वतन से प्यार करना एक अहम फर्ज है. ....हिन्दुस्तान स्वर्ग के समान है. इसकी आवोहवा खुरासान से बेहतर है. ....यह हरा-भरा है और सालों भर फूलों से लदा रहता है. ....यहाँ के ब्राह्मण अरस्तू जैसे ज्ञानी हैं और विभिन्न क्षेत्रों में बहुत सारे विद्वान हैं."

—फारसी लेखक अमीर खुसरो

104. "कोई जर्जर बूढ़ी औरत भी अपने सिर पर सोने से भरी टोकरी रखकर यात्रा पर निकल जाती थी, तो शेरशाह द्वारा दी जाने वाली सजा के भय से कोई भी चोर-डाकू उसके पास फटकने की हिम्मत नहीं कर सकता था."

—अब्बास शेरवानी

105. "ऐ मुल्लाओं, मेरा एकमात्र लक्ष्य सत्य का अनुसंधान करना है, सच्चे धर्म के सिद्धान्तों का पता लगाना और उन्हें उद्घाटित करना है." —अकबर

106. "शहंशाह पर जो विभिन्न प्रभाव पड़े उनके फलस्वरूप उसके मन में धीरे-धीरे किसी पत्थर की बाहरी रेखाओं की तरह यह विश्वास जगा कि सभी धर्मों में कुछ न कुछ विवकी लोग हैं. इसलिए यदि कुछ-न-कुछ सच्चा ज्ञान सर्वत्र विद्यमान है, तो सत्य को एक ही धर्म तक क्यों सीमित होना चाहिए ?" —बदायूँनी

107. "उसमें पचास मैदानी तोप शामिल थीं. सबकी सब पीतल की बनी हुई थीं. हर तोप एक सुगढ़ और भली-भाँति रंगी-पुती गाड़ी पर रखी होती थीं. जिसे दो बहुत अच्छे घोड़े खींचते थे और एक तीसरा घोड़ा वक्त जरूरत काम आने के लिए साथ रखा जाता था."

—फ्रांसीसी यात्री बर्नियर

108. "सर्दी के मौसम में, जो हमारा मई है, लोग रूई भरे अंगरखे और टोपियाँ पहनते हैं." —रैल्फ फिच

109. "यदि संस्कृत की रचना ईश्वर ने की तो क्या प्राकृत को चोरों और बदमाशों ने जन्म दिया ? इन झूठे अहंकारों को अलग ही रखिए. ईश्वर किसी भाषा के साथ पक्षपात नहीं करता. उसके लिए तो प्राकृत और संस्कृत समान हैं. मेरी भाषा मराठी में उदात्त भावनाओं को अभिव्यक्त करने की क्षमता है और वह समृद्ध एवं दिव्य ज्ञान के फलों से लदी हुई है." —एकनाथ स्वामी

110. "पुराने मन्दिर को नहीं तोड़ना चाहिए, लेकिन कोई नया मन्दिर नहीं बनने देना चाहिए." —औरंगजेब

111. "धर्म के मामलों में सांसारिक मामलों का क्या दखल है ? और धर्म के मामलों में धर्मांधता के लिए कहाँ जगह है ? आपके लिए आपका धर्म है और मेरे लिए मेरा. यदि आपका सुझाया हुआ यह नियम स्थापित हो जाए तो मेरा कर्त्तव्य सभी (हिन्दू) राजाओं और उनके समर्थकों को खत्म कर देना हो जाएगा." —औरंगजेब

112. "विधाता ने इंग्लैण्ड को भारत का विस्तृत साम्राज्य इसलिए सौंपा है, जिससे क्राइस्ट का झण्डा भारत में लहरा सके." —ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अध्यक्ष मेंगल्स

113. "स्वतन्त्रता के बाद मैं देशी राजाओं के एक संघ को शासन सत्ता सौंपने को तैयार हूँ. यदि वे आजादी की लड़ाई में पूरा सहयोग दें."

—बहादुर शाह जफर (राजपूत नरेशों को लिखे पत्र में)

114. "हर एक हिन्दुस्तानी जो अंग्रेजों की तरफ से नहीं लड़ रहा था, हत्यारा माना गया. दिल्ली के रहने वालों को कत्ले-आम का हुक्म दे दिया गया. ....लूटमार की एक हफ्ते के लिए इजाजत मिली, जो एक माह तक चली. इसके साथ कत्ले-आम भी जारी रहा. ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के पुराने कागजों में गवर्नर जनरल की यह रिपोर्ट दर्ज है." गाँवों में आग लगाकर लोगों को मार डाला गया. फाँसी देने वाले दल जिले में गये. कुछ तो शौकिया फाँसी देने वाले थे, जिन्होंने कलात्मक ढंग से लोगों को मारा."

—थॉमसन, गैरेट एवं मैलेसन द्वारा लिखितांश (1857 की क्रान्ति के समय)

115. "अगर दुनिया में कोई पाप है, तो वह है दुर्बलता."

—स्वामी विवेकानन्द

116. "मेरी छाती पर एक-एक लाठी का प्रहार ब्रिटिश साम्राज्य के तावूत पर एक-एक कील सिद्ध होगी."

—लाला लाजपत राय

117. "मैं स्वतन्त्रता चाहता हूँ, पौ फटने से पहले. मैं आपको एक मंत्र दे रहा हूँ, करो या मरो."

—महात्मा गांधी (8 अगस्त 1942 को काँग्रेस प्रतिनिधियों के समक्ष)

118. दया नहीं बल्कि सेवा, मानव-सेवा ईश्वर तुल्य समझी जानी चाहिए. —रामकृष्ण परमहंस

119. सफलता ने उसका लम्बे समय तक साथ न दिया, भाग्य उसका दुलमुल रहा तथा उस भाग्य ने उसे नष्ट करने के लिए अपनी कटार निकाल ली.

–जियाउद्दीन बर्नी (अलाउद्दीन खिलजी के लिए)

120. सान्ड्रोकॉट्स ने अपने भाषण के साहस से सिकन्दर को क्रुद्ध किया एवं उसकी हत्या का आदेश दे दिया.

–जस्टिन

121. भारतवर्ष में इतिहास रचना कभी भी महाकाव्यों की एक शाखा से अधिक नहीं रही, क्योंकि भारतीयों की इतिहास पद्धति इतिहास और पुराण तथा जनश्रुति अथवा लोकमान्यताओं में सुस्पष्ट भेद स्थापित करने की नहीं रही. –डॉ. विन्टर्निटज

122. "हिन्दू घटनाओं के ऐतिहासिक क्रम की तरफ ध्यान नहीं देते, घटनाओं के कालक्रमानुसार वर्णन में वे बड़ी असावधानी दिखाते हैं. जब उनसे जानकारी प्रदान करने के लिए आग्रह किया जाता है, तो वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर कहानियाँ सुनाने लगते हैं." –अलबेरूनी

123. "भारतीय संस्कृति की कहानी एकता और समाधानों का समन्वय है तथा प्राचीन परम्पराओं और नवीन मतों के पूर्ण संयोग की कहानी है." –हुमायूँ कबीर

124. "हिन्दू के लिए भारतवर्ष न केवल एक सत्ता से शासित होने वाली इकाई है, बल्कि वह उसकी आध्यात्म संस्कृति का मूर्तरूप अथवा मातृदेवी है. उसके लिए भारतवर्ष उसकी संस्कृति का मूर्तमान रूप है, जिसमें उसने आत्मा को उँड़ेल दिया है."

–जे. रेम्जे मेकडानल्ड (इंगलैण्ड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री)

125. "यद्यपि भारत में पाँच से अधिक बोलियाँ हैं, लेकिन इस देश की आध्यात्मिक-धार्मिक भाषा एक है और वह संस्कृत है." –मोनियर विलियम्स

126. "मेरे विचार में इससे अधिक श्रेष्ठ चित्र बनाना असम्भव है. भावनाओं की ऐसी अभिव्यक्ति पाश्चात्य कलाकार नहीं कर सकते." –फरग्यूसन

127. "मालवा और गुजरात के सूबे, जो हुमायूँ के शेष साम्राज्य के बराबर थे, एक पके फल की तरह हुमायूँ के हाथों से गिर गए." –लेनपूल

128. "एक मुट्ठी भर बाजरे के लिए मैं हिन्दुस्तान के साम्राज्य को लगभग खो चुका था." –शेरशाह सूरी

129. "मैं अपने पुत्र के जन्म के अवसर पर आप लोगों को यही भेंट दे सकता हूँ. मेरी कामना है कि कस्तूरी की सुगन्ध जिस तरह इस खेमे में फैल रही है, उसी तरह एकदिन मेरे पुत्र की कीर्ति की सुगन्ध भी पूरे संसार में फैल जाएगी." –हुमायूँ (अकबर के जन्म के अवसर पर)

130. "वह मनुष्यों का जन्मजात बादशाह था. इतिहास के सर्वाधिक शक्तिशाली बादशाहों में से एक होने का उसका न्यायपूर्ण अधिकार है. निःसन्देह उसके इस अधिकार का आधार उसके प्रकृति प्रदत्त असाधारण गुण, उसके मौलिक विचार और उसकी अद्वितीय सफलताएँ थीं." –डॉ. वी. ए. स्मिथ (अकबर के लिए)

131. "वह कोमलता और निष्ठुरता, न्याय और बुद्धि की चंचलता, सुसभ्यता और पशुता, बुद्धिमत्ता और बचपने-पन का अजीब मिश्रण था."

–डॉ. वी. ए. स्मिथ (जहाँगीर के लिए)

132. "राजस्व ईश्वर से निकला हुआ प्रकाश है तथा विश्व को आलोकित करने वाली सूर्य की किरण है."

–अबुल फजल

133. "जब तक मैं मेवाड़ के अतिक्रमणकारियों को निकाल बाहर नहीं कर दूँगा, तब तक चैन से नहीं सोऊँगा. राज्य के सब सुख वैभव का उपयोग नहीं करूँगा और भारतीय स्वतन्त्रता और संस्कृति की रक्षा के लिए आक्रमणकारियों, अतिक्रमणकारियों और आतताइयों के विरुद्ध संघर्ष करता रहूँगा." –महाराणा प्रताप

134. "मुल्क के अन्दर योरोप कौमी पर नजर रखना. यदि खुदा मेरी उम्र बढ़ा देता तो मैं तुम्हें इस डर से आजाद कर देता. अब, मेरे बेटे ! यह काम तुम्हें करना होगा. तैलंग देश में उनकी लड़ाइयों और उनकी कूटनीति की तरफ से तुम्हें होशियार रहना चाहिए. इन तीनों कौमों (अंग्रेज, फ्रांसीसी और पुर्तगाली) को एक साथ निर्बल करने का ख्याल मत रखना. अंग्रेजों की ताकत बढ़ गई है. पहले उन्हें समाप्त करना. जब तुम अंग्रेजों को समाप्त कर लोगे तब बाकी दोनों कौमें तुम्हें अधिक कष्ट नहीं देंगी. मेरे बेटे ! उन्हें किले बनाने या सेना रखने की आज्ञा मत देना. यदि तुमने यह गलती की तो यह देश तुम्हारे हाथ से निकल जाएगा."

–अलीवर्दी खाँ ने सिराजुद्दौला को अपना उत्तराधिकारी बनाते हुए

135. "इतिहास में यह लिखा हुआ है कि सिक्ख सेना ने हम पर आक्रमण करने के लिए अंग्रेजी सीमाओं में प्रवेश किया, परन्तु अधिकांश लोगों को जानकर विस्मय होगा कि वे नदी पार करके केवल अपनी सीमा में आ गये थे." –कैम्पबैल

136. "यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमारी शिक्षा योजना (पाश्चात्य शिक्षा) पर भारत में कार्य किया जाए, तो तीस वर्ष के बाद बंगाल के संभ्रान्त वर्ग में एक भी मूर्ति पूजक नहीं बचेगा." —लार्ड मैकाले

137. "धर्म मनुष्य के भीतर निहित देवत्व का विकास है. धर्म न तो पुस्तकों में है और न धार्मिक सिद्धान्तों में. वह तो केवल अनुभूति में निवास करता है. वह जीवन का अत्यन्त स्वाभाविक तत्त्व है." —स्वामी विवेकानन्द

138. धर्मों की इस संसद में सबसे महान् व्यक्ति विवेकानन्द हैं. उनका भाषण सुन लेने पर अनायास यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि ऐसे ज्ञानी देश (भारत) को सुधारने के लिए धर्म प्रचारक भेजना कितनी मूर्खता की बात है."

—न्यूयार्क के समाचार पत्र में प्रकाशित

139. "यदि पूर्व निश्चय के अनुसार एक साथ, एक ही तारीख को समूचे भारत में स्वतन्त्रता संघर्ष शुरू होता, तो भारत में एक भी अंग्रेज जीवित नहीं बचता और भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो गया होता." —मैलीसन

140. "अल्लाह एक है तथा मुहम्मद उसका पैगम्बर है, का नारा लगाने वालों तथा ब्रह्म के रहस्यों को बुदबुदानों वालों (हिन्दुओं) ने एक-दूसरे के साथ मिलकर बगावत का झंडा बुलन्द किया." —टामसैला

141. "यदि आप लोग (विद्यार्थी), जो देश की आशाओं के केन्द्र हैं तथा उच्च शिक्षा प्राप्त किए हैं, अपने सुख-चैन तथा स्वार्थ को त्याग कर स्वाधीनता प्राप्त करने में नहीं लग सकते, तब कहना होगा कि उन्नति की सब आशाएँ व्यर्थ हैं तथा भारत उसी प्रकार के शासन के योग्य है, जो उसे मिला हुआ है. आपके कंधों पर रखा जुआ तब तक विद्यमान रहेगा, जब तक आप इस ध्रुव सत्य को समझकर उसके अनुसार कार्य करने को उद्यत नहीं होंगे कि आत्म-बलिदान तथा निःस्वार्थ कर्म ही स्थायी सुख एवं स्वतन्त्रता के अचूक पथ प्रदर्शक हैं."

—ए. ओ. ह्यूम

142. मैंने बहुत प्रतीक्षा की कि अहिंसा की शक्ति पैदा करके विदेशी शासन हटाया जाए; परन्तु अब मेरा विचार बदल गया है; मैं सोचता हूँ कि अब और प्रतीक्षा नहीं की जा सकती, क्योंकि और प्रतीक्षा का अर्थ होगा विनाश की प्रतीक्षा. इसलिए मैंने फैसला किया है कि कुछ खतरों पर भी लोग दासता का विरोध करें."

—महात्मा गांधी

143. "ईश्वर के नाम पर मैं यह पवित्र शपथ लेता हूँ कि मैं भारत और उसके अड़तीस करोड़ लोगों को स्वतंत्र कराऊँगा और इस पवित्र युद्ध को अपने जीवन की अन्तिम साँस तक जारी रखूँगा."

—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

144. "आज हमें पाकिस्तान और आत्महत्या में से एक को चुनना होगा." —पंडित गोविन्द वल्लभ पंत

145. "हमारी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूँगा." —नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

146. "कांग्रेसी नेताओं के समक्ष सत्ता के प्रति आकर्षण भी था. इन नेताओं ने अपने राजनैतिक जीवन का अधिकतर भाग अंग्रेजी सत्ता का विरोध करने में ही विताया था और अब वे स्वाभाविक रूप से सत्ता के प्रति आकर्षित हो रहे थे. कांग्रेसी नेता सत्ता का स्वाद चख चुके थे और विजय की घड़ी में वे इससे अलग होने की इच्छा नहीं रखते थे."

—माइकेल ब्रेचर (भारत विभाजन के समय)

147. "यदि जिन्ना की अपनी उस बीमारी के कारण दो वर्ष पहले मृत्यु हो गई होती, तो हम अपने देश को एक बनाए रखने में पूरी तरह सफल रहते; वही एक अकेला व्यक्ति था, जिसने भारत के अखण्ड और एक बने रहने की स्थिति को असंभव बना दिया. यह मुहम्मद अली जिन्ना का बनावटी इस्लामाबाद और हुकूमत की तीव्र लालसा ही थी, जिसने आगे झुक कर भारत के सभी नेताओं एवं जनता को भारत का विभाजन स्वीकार करना पड़ा. जिन्ना ने ही पाकिस्तान की बात छेड़ी थी, उसे उछाला था और मुसलमानों की भावना को दूषित कर पाकिस्तान बनाए जाने के लिए उन्हें भड़काया था. अन्यथा भारत का सामान्य मुसलमान कभी भी भारत के दो टुकड़े हों, ऐसा नहीं चाहता था."

—लॉरी कालिन्स (पुस्तक माउन्टबेटेन एण्ड पार्टीशन ऑफ इण्डिया में)

148. "मैं भारतवासी हूँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है. ....अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चाण्डाल भारतवासी, सब मेरे भाई हैं. भारतवासी मेरे प्राण हैं, भारत के देव-देवियाँ मेरे ईश्वर हैं, भारत का समाज मेरा बचपन का झूला, मेरी जवानी की फुलवारी, मेरा पवित्र स्वर्ग और बुढ़ापे की काशी है. भारत की मिट्टी मेरा सर्वोच्च स्वर्ग है. भारत के कल्याण में ही मेरा कल्याण है." —स्वामी विवेकानन्द

149. "मोहनजोदड़ो की नगरीय सभ्यता के पर्याप्त साक्ष्य वहाँ की नालियाँ, सड़कें, व्यवस्थित मकानों की संरचना में

व्याप्त है. विशाल नगर होने की परिकल्पना की पुष्टि भी स्नानगार एवं अन्नागार करते हैं. 40 फीट लम्बा, 23 फीट चौड़ा और 8 फीट गहरा स्नानागार का निर्माण मोहनजोदड़ो में नहीं होता, यदि वहाँ की जनसंख्या कुछ हजारों में होती. इसके अतिरिक्त अन्न संग्रह के लिए बने अन्नागार की आवश्यकता की बात स्वीकार की जा सकती है, पर इतने विस्तृत क्षेत्र में फैले विशाल अन्नागार में संग्रहित अन्न का उपभोग 10-20 हजार व्यक्तियों के लिए भी कई वर्षों तक के बाद बहुत अधिक होगा. 45·72 मीटर लम्बा और 15·23 मीटर चौड़ा यह अन्नागार अकेला ही मोहनजोदड़ो में होगा, ऐसा प्रतीत नहीं होता. इन सब व्यवस्थाओं को आधारभूत मानकर यदि आकलन किया जाए तो 2·5 वर्ग किलोमीटर में फैली इस सभ्यता की पल्लवित नगरीय जनसंख्या 40,000 से कहीं कम नहीं हो सकती."

–डॉ. के. के. शर्मा

150. "जिस तरह नेपोलियन प्रथम का स्पेन के विरुद्ध अभियान उसके लिए एक बहता हुआ नासूर सिद्ध हुआ. उसी तरह औरंगजेब का दक्षिण अभियान उसके साम्राज्य के लिए विनाशकारी बना." –जे. एन. सरकार

151. "अपने असीम साधनों और अपनी अतिशय शासन निपुणता के बावजूद अकबर महाराणा प्रताप को न दबा सका. आल्पस पर्वत के समान अरावली में भी कोई भी ऐसी घाटी नहीं है जो राणा प्रताप के किसी न किसी वीर कार्य, उज्जवल विजय अथवा उससे अधिक यशपूर्ण पराजय से पवित्र न हुई हो. हल्दीघाटी मेवाड़ की थर्मोपोली और दिवेर मेवाड़ का मेरेथान है."

–कर्नल टॉड

152. "आगरा और फतेहपुर सीकरी दोनों ही लन्दन से बड़े हैं." –राल्फ पिच (I.A.S. Pre., 1998)

153. "किसी को भी अपनी जाति से बाहर विवाह करने, एक व्यवसाय या व्यापार से दूसरे में परिवर्तन करने अथवा एक से अधिक कारोबार करने की अनुमति नहीं थी."

–मेगस्थनीज (I.A.S. Pre., 1996)

154. "गांधीजी के जितने भी मूल विचार थे, वे गलत, ऊल-जलूल और अव्यावहारिक थे. स्वतन्त्र भारत ने उन्हें तिलांजलि दे दी, यह बहुत अच्छा हुआ."[1]

–मन्मथ नाथ गुप्त (काकोरी केस)

155. "उच्च संस्कृति से महान् जनशक्ति के प्रदेश के निवासियों ! आप धन्य हैं. जब मैंने आपमें देशभक्ति का उत्साह पाया तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई. आपके नेताजी का स्थान मेरे से बड़ा है. मैं तो केवल आठ करोड़ जर्मनों का नेता हूँ. मेरे जर्मन सैनिक नेताजी को प्रणाम करते हैं. मुझे पूर्ण विश्वास है कि नेताजी के नेतृत्व में आपका भारत शीघ्र ही स्वतन्त्र होगा."

–हिटलर (आजाद हिन्द फौज के जर्मनी में पहुँचने पर स्वागत वार्ता सुभाष बोस के लिए)

156. "क्रान्तिकारियों का फाँसी चढ़ जाना, इस बात का सबूत है कि खुदगर्जी उनको इस रास्ते पर नहीं लाई. उनमें देश प्रेम था. वे देश में सच्ची स्वतन्त्रता स्थापित करना चाहते थे. उन्होंने जो कुछ भी किया उसकी सारी जिम्मेदारी अंग्रेजी सल्तनत पर हैं."

–पं. मदनमोहन मालवीय

157. "मैं आप लोगों में से कुछ को महान् बनता हुआ देखना चाहता हूँ. आप अपने लिए नहीं, भारत माता को महान् बनाने के लिए महान् बनें. जिससे वह स्वाधीन देशों की पंक्ति में मस्तक ऊँचा करके खड़ी हो सके. जो निर्धन और निष्प्रन्न है, मैं चाहता हूँ कि उनकी निर्धनता और निष्प्रन्नता मातृभूमि की सेवा को समर्पित हो जाये. काम करो ! जिससे मातृभूमि समृद्ध हो सके, कष्ट झेलो ! जिससे मातृभूमि आनन्दित हो सके."

–महर्षि अरविन्द

158. "जिस प्रकार यूनानी लोगों का ध्येय अपने सम्पर्कों में आए हुए जंगली लोगों को सुसंस्कृत बनाना था, उसी प्रकार अंग्रेजों का ध्येय भारतीयों को सभ्य बनाना है."

–प्रो. ओटन

159. यदि कन्याकुमारी अहिंसा के सिद्धान्त का पालन नहीं कर पाती, तो हिमालय की गोद में बसे किसी गाँव को क्यों दण्डित किया जाए ?

–मोती लाल नेहरू (गाँधीजी के विरोध में)

160. "मेरे खून की प्रत्येक बूँद भारत के प्रत्येक घर में आजादी के बीज बोए."

–गोपी मोहन साहा (फाँसी पर झूलते हुए)

---

1. क्रान्तिकारी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस : वचनेश त्रिपाठी

7

मध्यकालीन ऐतिहासिक व्यक्तित्व
(Medieval Historical Personality)

1. औरंगजेब (Aurangjeb)
(1618–1707 ई.)

1. वास्तविक नाम — औरंगजेब आलमगीर
2. प्रसिद्ध नाम — औरंगजेब
3. जन्म — 3 नवम्बर, 1618
4. जन्म-स्थल — दोहद (उज्जैन)
5. पिता का नाम — शाहजहाँ
6. उपाधि — अब्दुल मुजफ्फर मुइनुद्दीन मुहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर पादशाह गाजी
7. राज्याभिषेक — (i) 21 जुलाई, 1658 ई. मुगल सत्ता सँभाली.
   (ii) 5 जून, 1659 ई. में राज्याभिषेक का उत्सव किया.
8. माता का नाम — मुमताजमहल
9. भाषा-ज्ञान — अरबी, फारसी, तुर्की भाषा का ज्ञाता
10. शासनकाल में प्रजा पर प्रतिबन्ध —
    1. सिक्कों पर कलमा लिखे जाने पर रोक.
    2. औरतों के मजार जाने पर रोक.
    3. संगीत और ज्योतिष विद्या के अभ्यास पर रोक.
    4. नौरोज के उत्सव पर रोक.
    5. सती प्रथा, दास विक्री, जुआ, वेश्यावृत्ति एवं नशा करने पर रोक लगा दी गई.
11. पत्नी — रबिया दुर्रानी
12. पुत्री — जेबुन्निसा
13. पुत्र —
    1. सुल्तान मुहम्मद
    2. शहजादा मुअज्जम
    3. आजम
    4. शहजादा अकबर
    5. कामबख्श
14. हिन्दू विरोधी कार्य —
    1. काशी का विश्वनाथ मन्दिर, मथुरा का केशवराय मन्दिर, पाटन के सोमनाथ मन्दिर को ध्वस्त कर दिया गया.
    2. सरकारी कार्यालयों से हिन्दू कर्मचारियों को निष्कासित कर दिया गया.
    3. 1679 ई. में हिन्दूओं पर जजिया (जिज्यह) कर लागू किया.
15. प्रारम्भिक जीवन —
    1. 1636 ई. में पहली बार दक्षिण का सूबेदार बनाया गया.
    2. 1644 ई. में गुजरात का, 1648 ई. में मुल्तान और सिन्ध का तथा 1652 ई. में दक्षिण का सूबेदार बनाया गया.
16. स्थापत्य निर्माण —
    1. लाहौर की बादशाही मस्जिद (1674 ई. में)
    2. बीबी का मकबरा, औरंगाबाद (1678 ई. में) (पत्नी रबिया-उद्-दुर्रानी की स्मृति में)
    3. मोती मस्जिद (दिल्ली के लालकिले में)
17. समकालीन संगीतज्ञ —
    1. सुखीसेन
    2. कलावन्त
    3. किरपा
    4. हयात सरसनैन
    5. रसबैक खाँ
18. तत्कालीन साहित्य —
    1. खफी खाँ की मुन्तखाब उल लुबाब
    2. मिर्जा मुहम्मद काजिम की आलमगीरनामा
    3. मुहम्मद साकी की मआसिरे आलमगीरी
    4. सुजान राय की खुलासत-उत-तवारीख
    5. ईश्वरदास की फ़ुतुहाते-आलमगीरी
    6. भीमसेन बुरहानपुरी की नुस्खा-ए-दिलकुशाँ

19. राज्य का वर्गीकरण	21 सूबों में विभक्त था (14 सूबे उत्तर- भारत, 6 दक्षिण भारत एवं 1 अफगानिस्तान)
20. प्रमुख विद्रोह	1. अफगान विद्रोह (उत्तर-पश्चिमी, सीमान्त क्षेत्र, 1667–1672 ई. में) 2. जाट विद्रोह (मथुरा के जाटों द्वारा 1669, 1685-88 ई. में) 3. सतनामी विद्रोह (मथुरा के पास नारनौल में 1672 ई. में) 4. बुन्देला विद्रोह (1661 ई. में) 5. शहजादा अकबर का विद्रोह (1681 ई. में) 6. अंग्रेजों का विद्रोह (1686 ई. में) 7. राजपूत विद्रोह (1679 ई. में) 8. सिख विद्रोह (1675 ई. से औरंगजेब की मृत्युपर्यन्त)
21. सैन्य प्रबन्ध	60,000 घोड़े, 1,00,000 पैदल सैनिक, 50,000 ऊँट, 3,000 हाथी
22. प्रमुख विदेश यात्री	1. बर्नियर (फ्रेंच चिकित्सक) 2. जीन थिन नाट (फ्रंच यात्री) 3. टैवर्नियर (फ्रेंच जौहरी)
23. उल्लेखनीय कथन	1. "संगीत की मौत हो गई, इसकी कब्र इतनी गहरी दफनाना, ताकि आवाज आसानी से न निकल सके." 2. उसे मामूली सफेद कपड़ों में दफनाया जाए और उसके लिए कोई मकबरा न बनाया जावे.
24. मृत्यु	3 मार्च, 1707 ई. को अहमदनगर के पास

2. बाबर (Babar)

(1483–1530 ई.)

1. वास्तविक नाम	जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर
2. प्रसिद्ध नाम	बाबर
3. जन्म	14 फरवरी, 1483 में
4. जन्मस्थल	फरगना राज्य की राजधानी अन्दिजान (अन्दीना) में
5. पिता	उमर शेख मिर्जा
6. माता	कुतलुगनिगार खानम (यूनुस की पुत्री)
7. राज्याभिषेक	8 जून, 1494 ई. (11 वर्ष, 4 माह की उम्र में)
8. स्वलिखित ग्रन्थ	1. बाबरनामा या तुजुक-ए-बाबरी 1. रिसाल-ए-उसज (खत-ए-बाबरी) 2. मुबइयान (मुस्लिम कानून की पुस्तक)
9. वंश	1. पितृपक्ष से तैमूर का पाँचवाँ वंशज 2. मातृपक्ष से चंगेजखाँ की चौदहवाँ वंशज
10. स्थापित राजवंश	चगताई वंश
11. प्रचलित सिक्के	1. शाहरुख (काबुल में प्रचलित चाँदी का सिक्का). 2. बाबरी (कन्धार में प्रचलित सिक्के) 3. बाबर के चाँदी के सिक्कों में एक ओर कलमा एवं चारों खलीफाओं का नाम तथा दूसरी ओर बाबर का नाम एवं उपाधि अंकित की जाती थी.
12. गुरु	ख्वाजा उबैदुल्ला अहरार
13. स्थापत्य निर्माण	1. काबुली बाग मस्जिद, पानीपत (1529 ई. में) 2. जामी मस्जिद (रुहेलखण्ड में) 3. आगरे की मस्जिद (लोदी किले के अन्दर) 4. नूर अफगान (आगरा में ज्यॉमितीय विधि पर आधारित एक उद्यान) 5. बाबरी मस्जिद (सेनापति मीर बकी द्वारा निर्मित)
14. प्रसिद्ध समकालीन चित्रकार	बिहजाद
15. पुत्री	गुलबदन बेगम
16. सेना के कुशल तोपची	1. उस्ताद अली 2. मुस्तफा
17. युद्ध पद्धति	रूमी एवं तुलगुमा पद्धति
18. उपाधि	गाजी (खानवा के युद्ध में विजय के बाद)
19. विजयी युद्ध	1. पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई. में इब्राहीम लोदी एवं बाबर के मध्य) 2. चंदेरी का युद्ध (1528 ई. में बाबर व मेदिनीराय) 3. खानवा का युद्ध (बाबर व राणा सांगा 1527 ई. में) 4. घाघरा का युद्ध (1529 ई. में बाबर व महमूद लोदी)
20. बाबर के भारत पर आक्रमण	1. बाजौर एवं भीरा आक्रमण (1528 ई. से 1529 ई.) 2. पेशावर आक्रमण (1519 ई.) 3. स्यालकोट, भीरा एवं बाजौर आक्रमण (1520 ई.)

	4. सुल्तानपुर, लाहौर, दीपालपुर आक्रमण (1524 ई.)
21. पुत्र	1. हुमायूँ 2. कामरान 3. अस्करी 4. हिन्दाल
22. प्रमुख मंत्री	निजामुद्दीन अली खलीफा
23. ऐतिहासिक आकलन	फरिश्ता के अनुसार–"भाग्य की गेंद अथवा शतरंज के बादशाह की भाँति वह इधर-उधर मारा-मारा फिरा जैसे समुद्र के किनारे कंकड़ धक्के खाते फिरते हैं."
24. मृत्यु	26 दिसम्बर, 1530 को आगरा में.

3. अकबर महान् (Akbar the Great)

(1542–1605 ई.)

1. प्रारम्भिक नाम	बदरुद्दीन मुहम्मद अकबर
2. वास्तविक नाम	जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर (1546 ई. में रखा)
3. प्रसिद्ध नाम	अकबर महान्
4. जन्म	15 अक्टूबर, 1542 ई. (रविवार)
5. जन्मस्थल	अमरकोट में (राजा वीरसाल के घर)
6. पिता का नाम	हुमायूँ
7. माता का नाम	हमीदा बानो बेगम (शेख अली अकबर जामी की पुत्री)
8. राज्याभिषेक	27 जनवरी, 1556 ई. में (13 वर्ष, 4 महिने की उम्र)
9. पुत्र	1. सलीम 2. दानियाल 3. मुराद
10. धाय माँ	माहम अनगा
11. सुधार कार्य	1562 ई. में दास प्रथा, 1563 ई. में तीर्थयात्रा कर, 1564 ई. में जजिया कर समाप्त किया.
12. पद स्थापन	'दीवान-ए-वजारत-ए-कुल' नामक पद को स्थापित किया.
13. प्रशासन वर्गीकरण	15 सूबों में साम्राज्य विभक्त था.
14. सिक्कों का प्रचलन	1. 1577 ई. में दिल्ली में एक शाही टकसाल का निर्माण कराया. 2. सोने का सिक्का 'मुहर' (2 मुहर = 9 रुपये) 3. शंसब (सोने का 10 तोले का सिक्का) 4. इलाही (गोलाकार सोने का 10 रु. के बराबर) 5. जलाली (चाँदी का सिक्का) 6. दाम (रुपये का 40वाँ भाग, ताँबे का सिक्का) 7. अकबर ने अपने कुछ सिक्कों पर राम और सीता की मूर्ति अंकित कराई एवं देवनागरी में राम-सिया लिखवाया. 8. एक सोने के सिक्के पर एक तरफ बाज तथा दूसरी ओर टकसाल का नाम तथा ढालने की तिथि लिखवाई गई थी.
15. प्रमुख निर्मित इमारतें	1. आगरा का किला (1565-80 ई. आगरा) 2. लाहौर का किला (1565-75 ई. लाहौर) 3. अजमेर का किला (1570 ई. अजमेर) 4. फतेहपुर सीकरी (1571-80 ई. सीकरी) 5. शेख सलीम चिश्ती की दरगाह (1571-72 ई. सीकरी) 6. इबादतखाना (1575 ई. फतेहपुर सीकरी)[1] 7. अटक का किला (1581-82 ई. अटक) 8. इलाहाबाद का किला (1583 ई.) 9. बुलन्द दरवाजा (1602 ई. फतेहपुर सीकरी
16. प्रमुख दरबारी इतिहासकार	1. अबुल फजल 2. हिन्दू बेग 3. निजामुद्दीन अहमद 4. बदायूँनी 5. अब्बास खाँ शेरवानी 6. अहमद यादगार 7. जौहर आफताबची 8. मीर मुहम्मद मासूम 9. रिजकुल्लाह मुश्ताकी 10. बायजिद बयात 11. आरिफ कंधारी 12. मीर अलाउद्दौला कजवीनी

1. 1572 में इबादतखाने को बनाने की अनुमति दी गई थी, जिसका निर्माण 1575 ई. में हुआ था.

17. दरबार के नवरत्न
1. बीरबल
2. टोडरमल
3. अबुल फजल
4. भगवानदास
5. मानसिंह
6. अब्दुर्रहीम खानखाना
7. मुल्ला दो प्याजा
8. हकीम हुमाम
9. फैजी

18. समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थ — अकबरनामा, आइने-अकबरी (अबुल फ़जल), तारीखे फरिश्ता (हिन्दू बेग), तबकाते-अकबरी (निजामुद्दीन अहमद), मुन्तखाब-उत-तवारीख (बदायूँनी), तारीख-ए-शेरशाही (अब्बास खाँ शेरवानी), तारीखे सलातीने अफगना (अहमद यादगार), तज किरातुल वाकयात (जौहर अफ्तावची), तारीखे सिंध (मीर मुहम्मद मासूम), वाकयाते मुश्ताकी (रिजकुल्लाह मुश्ताकी), तजकिराएँ हुमायूँ अकबर (वायजिद बयात), नफाइस-उल-मासिर (मीर अलाउद्दौला कजवीनी), तारीख-ए-अकबरी (आरिफ कन्धारी)

19. प्रमुख विजयी युद्ध
1. पानीपत का द्वितीय युद्ध (अकबर एवं हेमू के मध्य 1556 ई. में)
2. अहमदनगर का युद्ध (चाँदबीबी एवं अकबर, 1600 ई.)
3. असीरगढ़ का युद्ध (मियाँ बहादुरशाह व अकबर 1601 ई. में)

20. सम्पादित कृत्य
1. 1578 ई. तौहीद-ए-इलाही (दैवी एकेश्वरवाद) की स्थापना की जो दीन-ए-इलाही (ईश्वर के धर्म) के नाम से विख्यात हुआ.
2. 1579 ई. में इबादतखाने को बन्द कर 'महजर' की घोषणा की.
3. 1584 ई. में हिज्री सन् के स्थान पर सीर वर्ष चलाया.
4. 1580 ई. जाब्ती व्यवस्था लागू की.
5. 1563 ई. में तीर्थयात्रा कर एवं जजिया कर समाप्त किया.
6. तुलादान, झरोखा दर्शन एवं तिलक लगाने की प्रथा का प्रारम्भ किया.

21. प्रमुख संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद
1. सिंहासन बत्तीसी (फैजी द्वारा 1574-75 ई. में)
2. अथर्ववेद (हाजी इब्राहीम सरहिन्दी द्वारा 1575-76 ई. में), महाभारत (नकीब खाँ, शेख सुल्तान बदायूँनी, रज्मनामा 1582-83 ई. में)
3. रामायण (बदायूँनी द्वारा 1583-84 ई. में)
4. हरिवंश पुराण (मौलाना शैरी द्वारा 1585 ई. में)
5. कालिया दमन (अबुल फजल द्वारा 1589-90 ई. में), राजतरंगिणी (मुल्ला मुहम्मद, 1590 ई. में)
6. लीलावती (फैजी, 1593 ई.), नल-दमयन्ती (फैजी, 1594 ई.)
7. पंचतन्त्र (अबुल फजल, 1596 ई. में)

22. प्रमुख दरबारी कवि
1. अबुल फजल
2. फैजी
3. नजीरी
4. उत्बी
5. रहीम
6. गिजाली

23. तत्कालीन संगीतज्ञ
1. तानसेन
2. बाज बहादुर
3. बैज बख्श
4. गोपाल
5. हरिदास
6. रामदास
7. सुजान खाँ
8. मियाँ चाँद
9. मियाँ लाल
10. बैजू बावरा (दरबार से असम्बन्धित)

24. मृत्यु — 16 अक्टूबर, 1605 ई.

4. जहाँगीर (Jahangir)

1. वास्तविक नाम	सलीम
2. प्रसिद्ध नाम	जहाँगीर
3. जन्म	30 अगस्त, 1569 ई.
4. पिता का नाम	अकबर
5. बाल्यकालीन नाम	शेखो बाबा (शेखू बाबा)
6. माता का नाम	मरियम उज्जमानी या हरकाबाई (आमेर के राजा भारमल्ल की पुत्री)
7. पत्नियाँ	1. मानबाई (आमेर के राजा भगवान दास की पुत्री से विवाह 1586 ई. में)

2. जोधाबाई या जगत गोसाई (मोटा राजा उदयसिंह की कन्या के साथ 1586 ई. में)
3. मेहरुन्निसा (1611 ई. में विवाह किया था)

8. प्रमुख विदेश यात्री
1. कैप्टिन हॉकिन्स (अंग्रेज व्यापारी, 1608-1613 ई.)
2. विलियम फिच (अंग्रेज यात्री, 1608-1612 ई.)
3. जॉन जुरदाँ (पुर्तगाली यात्री, 1608-1617 ई.)
4. निकोलस डाउंटन (अंग्रेज नौ सेना अधिकारी, 1608-1611 ई.)
5. निकोलस विथिंगटन (अंग्रेज यात्री 1612-1616 ई.)
6. टामस कोर्येट (1612-1617 ई. अंग्रेज यात्री)
7. सर टॉमस रो (1615-1619 ई. अंग्रेजी राजदूत)
8. पाल केनिंग (1615-1625 ई. अंग्रेज यात्री)
9. एडवर्ड टेरी (1616-1619 ई. अंग्रेज पादरी)
10. फ्रांसिस्को पेलसर्ट (1620-1627 ई. डच यात्री)
11. पित्रा देला वेली (1622-1660 ई. इटेलियन यात्री)

9. स्थापत्य निर्माण — अकबर का मकबरा (सिकन्दरा में, 1613 ई.)

10. तत्कालीन प्रमुख इतिहासकार
1. नुरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर
2. नियामतुल्ला
3. अब्दुल्ला
4. मोतामिद खाँ
5. गैरत खाँ

11. तत्कालीन ऐतिहासिक पुस्तकें
1. मासिरे जहाँगीरी (गैरत खाँ)
2. इकबालनामाये जहाँगीरी (मोतमिद खाँ)
3. तारीखे दाऊदी (अब्दुल्ला)
4. मखजने अफगाना (नियामतुल्ला)
5. तुजुके जहाँगीरी (नुरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर)

12. प्रेमिका — नूरजहाँ (मेहरुन्निसा)

13. राज्याभिषेक — 3 नवम्बर, 1605 ई. में

14. उपाधि — नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी

15. गुरु — अब्दुर्रहीम खानखाना

16. प्रमुख विद्रोह
1. खुर्रम का विद्रोह (1621 ई.)
2. महावत खाँ का विद्रोह (1626 ई.)

17. पराजय — कांधार आक्रमण (1622 ई. में ईरान के बादशाह शाह अब्बास प्रथम ने जहाँगीर को परास्त किया.

18. सम्पादित कार्य
1. तमगा एवं मीर बहरी जैसे करों पर रोक लगाई.
2. सड़कों के किनारे सराय, मस्जिद, कुओं का निर्माण कराया गया.
3. शराब के उत्पादन एवं बिक्री पर प्रतिबन्ध लगाया गया.
4. अपराधियों को अंग-भंग की सजा देने पर रोक लगा दी गई.
5. अपने जन्म-दिन, राज्यारोहण के दिन एवं अकबर के जन्म-दिन पर पशुवध प्रतिबन्धित कर दिया गया.
6. जेल में बन्द कैदियों को मुक्ति प्रदान की.

19. भाई — 1. दानियाल 2. मुराद

20. राज्य वर्गीकरण साम्राज्य 15 सूबों में वर्गीकृत था.

21. प्रचलित सिक्का
1. निसार रुपये के चौथाई- मूल्य का होता था.
2. कुछ सिक्कों पर नूरजहाँ एवं जहाँगीर अंकित था तथा कुछ सिक्कों में दोनों ओर शराब का प्याला लिए हुए चित्र था.

22. मृत्यु — 28 अक्टूबर, 1627 ई. में लाहौर में.

5. नूरजहाँ (Noorjahan)

(1577–1645 ई.)

1. वास्तविक नाम — मेहरुन्निसा

2. प्रसिद्ध नाम — नूरजहाँ (उपाधि)

3. जन्म — 1577 ई. में

4. जन्म-स्थल — कांधार मार्ग में भारत यात्रा के दौरान

5. पिता — मिर्जा ग्यास बेग (ऐत्मादुद्दौला के नाम से ख्यात)

6. विवाह
1. अली कुली बेग इस्तालजू (शेर-ए-अफगन नाम से प्रसिद्ध)
2. सम्राट् जहाँगीर से 1611 ई. में (विधवा होने पर)

7. उपाधि	1. नूरमहल (राजमहल की रोशनी)
	2. नूरजहाँ (संसार की रोशनी)
	3. पद्मशिषी या बादशाह बेगम
8. संगठित दल	नूरजहाँ गुट
9. माता	अस्मत बेगम
10. भाई	आसफ खाँ
11. पुत्री	लाड़ली बेगम
12. पुत्री दामाद	शहरयार
13. रुचियाँ	कविता, संगीत एवं चित्रकला का विशेष ज्ञान
14. मृत्यु	8 फरवरी, 1645 ई.

6. संगीतकार तानसेन (Tansen)

(1506–1589 ई.)

1. वास्तविक नाम	त्रिलोचन
2. प्रारम्भिक नाम	रामरतनु, तन्ना मिश्र, तनसुख
3. जन्म	1506 ई.
4. जन्मस्थल	ग्वालियर के पास बेहट
5. उपाधि	कण्ठाभरण, वाणी विलास (अकबर द्वारा)
6. प्रसिद्ध नाम	तानसेन, अताअली खाँ
7. पिता	मकरन्द पाण्डे
8. ताऊ	बाबा रामदास (महान गायक)
9. गुरु	ब्रह्मयोगी स्वामी हरिदास (गायन व संगीतज्ञ शास्त्र)
10. दरबारी गायक	1. रामचन्द्र स्वामी (महाराजाधिराज रीवाँ दरबार)
	2. अकबर के दरबार में नवरत्नों में एक
11. समकालीन गायक	1. बैजू बावरा
	2. सूरदास
12. प्रमुख आविष्कृत राग	ध्रुपद गायन शैली का विकास
13. रचनाएँ (संगीत ग्रन्थ)	1. मियाँ की टोडी
	2. मियाँ की सारंग
	3. दरबारी कान्हड़ा
	4. मियाँ की मल्हार
14. मृत्यु	1589 ई. में

7. सन्त कबीर (Saint Kabir)

(1456–1575 ई.)

1. वास्तविक नाम	कबीरदास
2. प्रसिद्ध नाम	संत कबीरदास
3. जन्म	विक्रम संवत् 1456 ई. (विधवा ब्राह्मण कन्या के गर्भ से)
4. जन्मस्थल	काशी
5. गुरु	1. रामानन्द (रामभक्त संन्यासी)
	2. शेख तकी
6. पालन-पोषण	नीरू एवं नीमा जुलाहा दम्पत्ति द्वारा.
7. प्रारम्भिक जीवन	लोक निन्दा के कारण माँ द्वारा काशी के लहरतारा स्थान पर फेंक देने के बाद जुलाहा दम्पत्ति द्वारा आश्रय.
8. पत्नी	लोई
9. पुत्र	कमाल
10. पुत्री	कमाली
11. शिक्षा	अशिक्षित (निर्धनता के कारण)
12. उपासना पद्धति	निर्गुण उपासक
13. प्रभावित	1. वेदान्त के ब्रह्मवाद से
	2. स्वामी शंकराचार्य के अद्वैतवाद से
14. भाषा	सधुक्कड़ी
15. रचना शैली	मुक्तक काव्य के रचयिता
16. प्रमुख विशेषताएँ	1. कुरीतियों एवं बुराइयों के विरुद्ध अपनी काव्यधारा से सरल भाषा में आम जनता को जाग्रत किया.

	2. जाति-धर्म से परे पाखण्डरहित उपासना पद्धति को प्रचारित किया.
17. समकालीन शासक	1. बघेल राजा वीरसिंह देव 2. सिकन्दरशाह लोदी
18. प्रमुख समाविष्ट रस	शान्त एवं शृंगार रस का काव्य में अधिक प्रयोग किया.
19. स्वीकरणीय तथ्य	एकेश्वर, प्रेममार्ग एवं भक्ति पर उनका अत्यधिक विश्वास था.
20. अस्वीकरणीय तथ्य	1. नमाज, रमजान के उपवास, मकबरों एवं कब्रों की पूजा के निंदक थे. 2. जाति-पाँति एवं भेदभाव के कट्टर विरोधी थे.
21. रचनाओं का स्वरूप	1. बीजक 2. सबद 3. साखियाँ 4. रमैनी 5. मंगल 6. बसन्त 7. होली 8. रेखताल
22. अनुयायियों का नामकरण	कबीरपंथी
23. कबीर स्मृति में स्थापित पंथ	कबीर पंथ (धर्मदास एवं सुरति गोपाल द्वारा)
24. मृत्यु	1575 ई. में मगहर नामक स्थान पर (आमी नदी के तट पर)

8. मिर्जा गालिब (Mirza Ghalib)

1. वास्तविक नाम	असादुल्लाह खान गालिब
2. प्रसिद्ध नाम	मिर्जा गालिब
3. जन्म	1797 ई. में
4. जन्मस्थल	आगरा
5. पिता	मिर्जा अब्दुल्ला बेग
6. दादा	कौकान बेग खाँ
7. प्रारम्भिक जीवन	1. छोटी उम्र में पिता की मृत्यु हो जाने के पश्चात् चाचा नसरुल्ला बेग खाँ ने पालन-पोषण किया. 2. 8वीं वर्ष में चाचा की मृत्यु हो जाने पर सरकारी सहायता से गुजर-बसर की.
8. शिक्षक	1. मौलवी मुहम्मद मुअज्जम 2. ईरानी मुल्ला अब्दुस्समद
9. पत्नी	उमराव बेगम (इलाही बख्श खाँ मारूफ की पुत्री)
10. शिष्य	यूसुफ अली खाँ (रामपुर के नवाब)
11. रचनाएँ	1. उर्दू-ए-मुअल्ला 2. ऊर्दे-हिन्दी 3. मकातीबे-गालिब 4. दीवान-ए-गालिब 5. दस्तम्बू
12. मृत्यु	15 फरवरी, 1869 ई.

9. सन्त ज्ञानदेव (Saint Jnandev)

1. वास्तविक नाम	ज्ञानेश्वर
2. प्रसिद्ध नाम	संत ज्ञानदेव, संत ज्ञानेश्वर
3. जन्म	1275 ई.
4. जन्मस्थल	आपेगाँव
5. पिता	विट्ठलपन्त
6. माता	रुक्मणिबाई
7. प्रपितामह	त्र्यम्बक पन्त (गुरु गोरखनाथ के शिष्य)
8. दादा	गोविन्दपन्त
9. दादी	मीराबाई
10. भाई	1. निवृत्तिनाथ 2. सोपानदेव
11. बहिन	मुक्ताबाई
12. गुरु	निवृत्तिनाथ (बड़े भाई)
13. रचनाएँ	1. ज्ञानेश्वरी (श्रीमद्‌भगवद्‌गीता पर टीका) 2. अमृतानुभव 3. हरियाक 4. योगवशिष्ठ टीका 5. स्वात्मपत्र 6. चांगदेनपासष्टी
14. उल्लेखनीय तथ्य	1. महाराष्ट्र में भक्ति आन्दोलन के प्रवर्त्तक थे. 2. धर्म के शुद्ध स्वरूप पर विश्वास था.

15. संरक्षक शासक — देवगिरि का शासक रामदेव

16. मृत्यु — 1296 ई. में (आलन्दी में समाधि लगाकर देहत्याग किया)

10. गुरु नानक (Guru Nanak)

1. वास्तविक नाम — नानक
2. प्रसिद्ध नाम — गुरु नानक
3. जन्म — 1469 ई. में (26 नवम्बर को)
4. जन्मस्थल — पंजाब के ननकाना साहब में
5. परिवार — खत्री परिवार
6. पिता — कालू (गाँव के पटवारी)
7. माँ — तृप्ता
8. बहिन — नानकी
9. शिष्य — 1. भाई बाला 2. भाई मरदाना
10. विरोध — 1. जातिवाद का विरोध
    2. मूर्ति पूजा का विरोध
11. श्वसुर — जैराम
12. प्रसिद्ध वक्तव्य "कोई हिन्दू और मुसलमान नहीं हैं."
13. शिक्षा — फारसी, पंजाबी एवं हिन्दी भाषा का अध्ययन
14. स्वीकरणीय तथ्य — 1. निराकार ब्रह्म में आस्था रखते थे.
    2. कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास था.
    3. मुक्ति को मानव-जीवन का अन्तिम लक्ष्य मानते थे.
15. अनुयायी — सिख
16. प्रारम्भिक गुरु — 1. गोपाल पण्डित
    2. ब्रजलाल पण्डित
    3. मौलवी कुतुबुद्दीन
17. पत्नी — सुलक्षणादेवी (अट्ठारह वर्ष की उम्र में विवाह)
18. यात्रा — एमनाबाद, दिल्ली, गया, काशी, हरिद्वार, जगन्नाथपुरी, सेतुबन्ध-रामेश्वरम, श्रीलंका, अर्बुदगिरि, गढ़वाल, हेमकूट, टिहरी, गोरखपुर, सरमौर, सिक्किम, भूटान, तिब्बत एवं मक्का का भ्रमण.
19. मृत्यु — 1538 ई. में (पंजाब के करतारपुर नामक स्थान पर)

11. शाहजहाँ (Shahjahan)

(1592–1666 ई.)

1. प्रारम्भिक नाम — खुर्रम
2. प्रसिद्ध नाम — शाहजहाँ (जहाँगीर द्वारा प्रदत्त)
3. पिता का नाम — जहाँगीर
4. माता का नाम — जगत गोसाई या जोधाबाई
5. जन्म — 5 जनवरी, 1592 ई.
6. जन्मस्थल — लाहौर
7. पत्नी — मुमताज महल (आसफ खाँ की पुत्री एवं अर्जुमन्द बानू बेगम नूरजहाँ की भतीजी)
8. उपाधि — 1. अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब किरन-ए-सानी
    2. शाहजहाँ (जहाँगीर द्वारा प्रदत्त)
9. राज्याभिषेक — 4 फरवरी, 1628
10. स्थापत्य स्मारक — 1. दिल्ली का लाल किला
    2. जामा मस्जिद
    3. आगरा किले का मोती मस्जिद (1654 ई.)
    4. दीवान-ए-आम (1628 ई., दिल्ली में)
    5. दीवान-ए-खास (1637 ई., दिल्ली में)
    6. ताजमहल (1632-43 ई., आगरा में)
    7. तख्त-ए-ताउस या मयूर सिंहासन
    8. शाहजहाँनाबाद (1638 ई. दिल्ली में)
    9. शालीमार बाग (1637 ई. लाहौर में)
11. तत्कालीन दरबारी इतिहासकार — 1. मुहम्मद सादिक खाँ
    2. मुहम्मद अमीन कजवीनी
    3. अब्दुल हमीद लाहौरी
    4. मुहम्मद सालिह
    5. मुहम्मद वारिस

12. समकालीन ऐतिहासिक पुस्तकें
1. शाहजहाँनामा (मुहम्मद सादिक खाँ)
2. पादशाहनामा (मुहम्मद अमीन कजवीनी)
3. अमले सालिह (मुहम्मद सालिह)
4. पादशाहनामा (मुहम्मद वारिस)

13. अनुदित साहित्य
1. योगवशिष्ठ (1650 ई. में दाराशिकोह द्वारा)
2. भगवत्‌गीता (1652 ई. में दाराशिकोह द्वारा)

14. राज्य वर्गीकरण सम्पूर्ण साम्राज्य 21 सूबों में विभक्त था.

15. सन्तानें
1. जहाँआरा 2. दाराशिकोह
3. रोशनआरा 4. औरंगजेब
5. मुरादबख्श 6. गौहरआरा
7. शाह शुजा

16. प्रचलित संवत् हिज्री संवत् (इलाही संवत् के स्थान पर)

17. आने वाले विदेश यात्री
1. जॉन लॉयट (डच यात्री, 1626-1633 ई.)
2. जॉन फ्रियर (अंग्रेज यात्री, 1627-1631 ई.)
3. पीटर मण्डी (इटेलियन यात्री, 1630-1634 ई.)
4. टैवर्नियर (फ्रैंच जौहरी, 1641-1687 ई.)

18. प्रमुख प्रारम्भिक विद्रोह
1. बुन्देलखण्ड का विद्रोह (1628-35)
2. खानजहाँ लोदी का विद्रोह (1629-31)

19. राजकवि जगन्नाथ पण्डित

20. मृत्यु 22 जनवरी, 1666 ई. में.

12. शेरशाह सूरी (Shershah Suri)

(1472–1545 ई.)

1. वास्तविक नाम फरीद
2. प्रसिद्ध नाम शेरशाह सूरी
3. जन्म
(i) 1486 ई. (डॉ. कानूनगो के अनुसार)
(ii) 1472 ई. (अन्य इतिहासकारों के अनुसार)
4. प्रारम्भिक नाम फरीद
5. दादा इब्राहीम
6. पिता का नाम हसन (जौनपुर का जागीरदार)
7. जन्मस्थल होशियारपुर[1]
8. मूल निवासी रोहड़ी (शेरगढ़ी, अफगानिस्तान के)
9. उपाधि
1. शेरखाँ (दक्षिण विहार के सूबेदार बहारखाँ लोहानी द्वारा प्रदत्त)
2. हजरत आला (1529 ई. में) नुसरत शाह को पराजित करने के उपलक्ष्य में)
10. पत्नी
1. दूदू बेगम (बहार खाँ लोहानी की विधवा)
2. लाड मलिका (ताज खाँ की विधवा)
11. साम्राज्य स्थापन सूरवंश का द्वितीय अफगान साम्राज्य (1540 ई. में) स्थापित किया.
12. राज्य वर्गीकरण सम्पूर्ण साम्राज्य 47 सरकारों में वर्गीकृत था.
13. लगान प्रणालियाँ
1. बटाई
2. मुक्तई
3. जाब्ती (जगई)
14. सिक्का प्रचलन
1. चाँदी का रुपया (180 ग्रेन)
2. ताँबे का दाम (380 ग्रेन)
3. 23 टकसालें कार्यरत् थीं
15. प्रमुख युद्ध
1. चौसा का युद्ध (हुमायूँ एवं शेरशाह सूरी, 1539 ई.)
2. कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध (हुमायूँ एवं शेरशाह सूरी, 1540 ई.)
16. निर्मित इमारतें
1. हसन खाँ का मकबरा (1540 ई. में सहसराम में)
2. किला-ए-कुहना मस्जिद (1542 ई. में दिल्ली में)
3. शेरशाह सूरी का मकबरा (1545 ई. में सहसराम में)
17. सराय निर्माण 1700 सरायों का निर्माण.
18. मृत्यु 22 मई, 1545 ई. में.

13. हुमायूँ (Humayun)

(1508–1556 ई.)

1. वास्तविक नाम नासिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ
2. प्रसिद्ध नाम हुमायूँ
3. जन्म 6 मार्च, 1508 ई.
4. जन्मस्थल काबुल

---

1 कुछ विद्वान् शेरशाह सूरी का जन्म-स्थल नारनौल व हिसार भी मानते हैं.

5. पिता	बाबर
6. माता	माहिम बेगम
7. बहिन	गुलबदन बेगम
8. राज्याभिषेक	30 दिसम्बर, 1530 ई.
9. शिक्षा	अरबी, फारसी एवं तुर्की भाषा तथा सैनिक शिक्षा, तीरंदाजी, घुड़सवारी का प्रशिक्षण लिया.
10. भाई	1. कामरान 2. अस्करी 3. हिन्दाल
11. प्रमुख विजित युद्ध	1. मच्छीवाड़ा का युद्ध (1555 ई. अफगान तातार खाँ के साथ) 2. सरहिन्द का युद्ध (1555 ई., हुमायूँ व सिकन्दर शाह सूरी)
12. प्रमुख पराजित युद्ध	1. चौसा का युद्ध (1539 ई., शेरशाह सूरी की विजय) 2. कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध (1540 ई. शेरशाह सूरी की विजय)
13. स्थापत्य	दीने पनाह (1535 ई.)
14. समकालीन इतिहासकार	1. मिर्जा हैदर दगलात (1500-1551 ई.) 2. गुलबदन बेगम (1523-1560 ई.)
15. समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थ	1. कानूने हुमायूँनी (खोंद मीर) 2. हुमायूँनामा (गुलबदन बेगम) 3. तारीखे रशीदी (मिर्जा हैदर दगलात)
16. उल्लेखनीय बातें	1. हुमायूँ ज्योतिष, जादू-टोना में अत्यधिक विश्वास करता था. 2. अफीम का नियमित सेवन करता था. 3. सप्ताह के सात दिन सात रंग के कपड़े पहनता था.
17. ऐतिहासिक आकलन	इतिहासकार लेनपूल के अनुसार, "हुमायूँ जीवन भर ठोकरें खाता रहा और ठोकर खाकर ही उसके जीवन का अन्त हुआ."
18. मृत्यु	26 जनवरी, 1556 (दीन-ए-पनाह पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर)

14. नामदेव (Namdev)
(1270–1350 ई.)

1. वास्तविक नाम	नामदेव
2. प्रसिद्ध नाम	सन्त नामदेव
3. जन्म	1270 ई. में
4. जन्म-स्थल	महाराष्ट्र
5. परिवार	दर्जी परिवार
6. गुरु	सन्त रामानन्द
7. उपदेश क्षेत्र	पंजाब, पंढ़रपुर (महाराष्ट्र) एवं मथुरा में प्रेम एवं भक्ति का उपदेश.
8. सिद्धान्त	1. एकेश्वरवादिता में विश्वास. 2. मूर्तिपूजा तथा ब्राह्मण प्रभुत्व के विरोधी.
9. प्रसिद्ध वक्तव्य	"मेरे हृदय में बसने वाले प्रभु के लिए मेरा प्रेम कभी क्षत न होगा, नामदेव ने अपना मत सच्चे नाम में लगवा दिया है, जैसे–प्रेम माता-पुत्र में होता है, प्रभु के लिए ऐसे ही प्रेम से मेरा हृदय पूर्ण है."
10. मृत्यु	1350 ई. में (विट्ठल मन्दिर के महाद्वार की सीढ़ी पर)

15. सूरदास (Surdas)
(1478–1583 ई.)

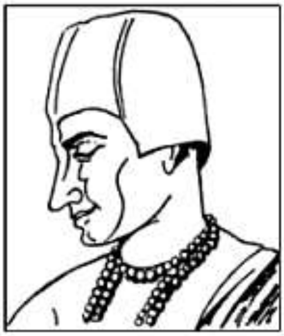

1. वास्तविक नाम	सूरजचन्द्र
2. प्रसिद्ध नाम	सूरदास

3. जन्म	1478 ई. में
4. जन्मस्थल	सीही (दिल्ली के पास)
5. पिता	रामदास
6. परिवार	सारस्वत ब्राह्मण (गरीब परिवार)
7. कुल भाई	सात (छह भाइयों की मृत्यु हो गई थी)
8. पितामह	हरचन्द्र महात्मा
9. उल्लेखनीय तथ्य	जन्म से अन्धे थे
10. रचनाएँ	1. सूरसारावली 2. साहित्य लहरी 3. सूरसागर
11. गुरु	वल्लभाचार्य
12. प्रारम्भिक जीवन	18 वर्ष की उम्र में गृह त्याग कर मथुरा में रहने लगे.
13. भक्तिभाव	दास भाव
14. पद लेखन	विनय एवं हरिलीला से सम्बन्धित
15. भाषा प्रयोग	ब्रजभाषा
16. मृत्यु	सन् 1583 ई. में (गोवर्द्धन के पास पासारौली गाँव में)

16. तुलसीदास (Tulsidas)

(1532–1623 ई.)

1. वास्तविक नाम	रामवोला
2. प्रसिद्ध नाम	तुलसीदास
3. जन्म	1532 ई. में
4. पिता	आत्माराम दुबे
5. माता	हुलसी
6. पत्नी	रत्नावली
7. परिवार	सरयूपारीण ब्राह्मण
8. जन्मस्थल	राजापुर गाँव (बाँदा जिले में)
9. मित्र	कवि अब्दुर्रहीम खानखाना
10. प्रारम्भिक जीवन	1. मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण घर से माता-पिता ने बाहर निकाल दिया. 2. चुनिया नामक दासी ने लालन-पालन किया. 3. पाँच वर्ष की उम्र से भिक्षा माँगकर भरण-पोषण किया.
11. गुरु	1. नरहरिशास्त्री 2. शेष सनातन
12. प्रथम रचना	रामचरितमानस (1574 ई. में रामनवमी को)
13. रामचरित-मानस रचना कार्य	2 वर्ष, सात माह में
14. प्रमुख रचनाएँ	1. रामचरितमानस 2. गीतावली 3. कवितावली 4. विनयपत्रिका
15. रचना की भाषा	अवधी भाषा
16. मृत्यु	1623 ई. में

17. चैतन्य महाप्रभु (Chaitanaya Mahapraphu)

(1485–1533 ई.)

1. वास्तविक नाम	विश्वम्भर
2. प्रारम्भिक नाम	गौरांग, निमाई (माँ द्वारा प्यार का नाम)
3. प्रसिद्ध नाम	चैतन्य महाप्रभु
4. भाई	विश्वरूप (अग्रज)
5. जन्म	1485 ई. में होली के दिन
6. जन्मस्थल	नवद्वीप नगर (बंगाल में)
7. पिता	पं. जगन्नाथ मिश्र
8. माता	शची देवी
9. गुरु	वासुदेव सार्वभौम (न्यायशास्त्र का अध्ययन)

10. सहपाठी	दीधिती के रचनाकार (रघुनाथ शिरोमणि)
11. संन्यास की दीक्षा	स्वामी केशव भारती से
12. शिष्य	कुख्यात डाकू नौरोजी
13. प्रसिद्ध वक्तव्य	"मुझे न शिष्यों की आवश्यकता है, न धन की, न ज्ञान की, न कवित्व शक्ति की, मेरी आत्मा को उसकी भक्ति का एक अंश दे दो. गर्व या अभिमान कोई लाभ नहीं पहुँचाते. जिसे गर्व का नाशक माना जाता है वह कैसे तुम्हारा गर्व सहन कर सकता है."
14. प्रवर्तक	वैष्णव सम्प्रदाय के प्रसिद्ध मत प्रवर्तक
15. उल्लेखनीय तथ्य	15 वर्ष की उम्र में संस्कृत भाषा, साहित्य, व्याकरण एवं तर्कशास्त्र पर आधिकारिक ज्ञान प्राप्त कर लिया था.
16. पत्नी	लक्ष्मी (सर्पदंश से कुछ समय बाद मृत्यु)
17. संन्यासी	1510 ई. में
18. भक्तिस्वरूप	नृत्य एवं गीत, कीर्तनों के माध्यम से श्रीकृष्ण की आराधना करना.
19. मृत्यु	1533 ई. में (पुरी में)

18. टोडरमल (Todarmal)

(1523–89 ई.)

1. वास्तविक नाम	टोडरमल
2. जन्म	1523 ई. में
3. जन्मस्थल	1. लाहरपुर (अयोध्या में)[1] 2. लाहौर (पाकिस्तान में)[2]
4. पिता	भगवतीदास
5. प्रारम्भिक जीवन	1. अल्पायु में ही पिता का देहान्त हो गया. 2. सम्राट् अकबर ने प्रार्थना के फलस्वरूप मुहर्रिर पद पर नियुक्त किया. 3. 972 ई. में सम्राट् ने सैनिक विभाग में नियुक्त किया.
6. विशेषताएँ	1. अकबर के प्रसिद्ध राजस्व सचिव एवं प्रिय सेनापति. 2. सम्राट् अकबर को लम्बे अन्तराल तक विभिन्न युद्धों एवं विद्रोहों में सहयोग दिया. 3. वजीर के पद पर नियुक्ति के पश्चात् उन्हें राजा टोडरमल कहा जाने लगा.
7. सहयोगी	1. मुहिब अली 2. मोहम्मद मसुम
8. रचनाएँ	1. पारसी भाषा में भागवत पुराण का अनुवाद 2. टोडरानन्द (तीनखण्ड–धर्मशास्त्र, ज्योतिष एवं वैद्यक)
9. उल्लेखनीय तथ्य	1. अकबर के नवरत्नों में से एक थे. 2. भूमि का वर्गीकरण, लगान, मापन सम्बन्धी नियमों का उन्होंने प्रारम्भ किया था. 3. अकबर से जजिया कर टोडरमल ने हटवाया था. 4. अन्तिम समय में टोडरमल हरिद्वार चले गये.
10. मृत्यु	1589 ई. में[3] (स्वजाति के व्यक्ति ने हत्या कर दी)

19. रामानुजाचार्य (Ramanujacharaya)

(1017–1137 ई.)

1. वास्तविक नाम	रामानुज
2. प्रसिद्ध नाम	रामानुजाचार्य

1. हिन्दी विश्वकोश, पृष्ठ 58
2. भारतीय इतिहास कोश, पृष्ठ 176
3. भारत के गौरव–भाग III प्रकाशन विभाग, भारत सरकार

3. जन्म 1017 ई. में
4. जन्मस्थल श्री पेरुपुदर (चेन्नई के पास)
5. पिता आसूरि केशव दीक्षित
6. माता कान्तिमती
7. पत्नी रक्षाम्बा
8. उपासना मार्ग 1. भक्ति मार्गी
   2. साकार ब्रह्म के उपासक
9. प्रारम्भिक गुरु यादव प्रकाश (वेद एवं उपनिषदों की शिक्षा)
10. दीक्षा प्रदाता 1. महापूर्ण स्वामी द्वारा वैष्णव सम्प्रदाय की दीक्षा.
   2. गोष्ठीपूर्ण स्वामी से रहस्यमन्त्र की दीक्षा.
11. प्रवर्त्तक विशिष्टाद्वैतवाद के प्रणेता
12. रचनाएँ 1. श्री भाष्य 2. गीता भाष्य
   3. वेदार्थ संग्रह 4. वेदान्तदीप
   5. वेदान्तसार
13. खण्डन शंकराचार्य के अद्वैतवाद का
14. समकालीन निम्बार्क
15. प्रसिद्ध वक्तव्य "ईश्वर निर्गुण नहीं सगुण है, यद्यपि उसमें कोई अवगुण नहीं. वह श्रेष्ठों में भी श्रेष्ठ है और उसमें किसी प्रकार का क्लेश नहीं, जिसके द्वारा वह दोषहीन शुद्ध, सर्वश्रेष्ठ, निर्मल एकरूप ब्रह्म जाना जाता या प्राप्त होता है, वही सच्चा ज्ञान है."
16. मृत्यु 1137 ई. में

20. अमीर खुसरो (Amir Khusro)

(1255–1325 ई.)

1. वास्तविक नाम मुहम्मद हसन
2. प्रसिद्ध नाम अमीर खुसरो
3. जन्म 1255 ई.
4. जन्मस्थल पटियाली (उत्तर प्रदेश के एटा जिले में)
5. पिता सैफुद्दीन महमूद
6. गुरु निजामुद्दीन औलिया
7. प्रमुख रचनाएँ 1. खमसा पजगंज
   2. मतला-उल-अनवर
   3. शीरी व फरहाद
   4. लैला व मजनू
   5. आइने-सिकन्दरी
   6. हश्तविहिश्त देवलरानी
   7. खिज्र खाँ
   8. किरन-उस-सादै
   9. नाज-उल-फुतूह
   10. नूह सिफिर
   11. रसैल इजाज
   12. तुगलकनामा
   13. मिफ्ता-उल-फुतूह
   14. तारीखे दिल्ली
   15. अफजल-उल-फरायद
   16. खजायन-उल-फुतूह
8. प्रमुख विशेषताएँ 1. प्रथम मुसलमान लेखक जिसने भारतीय विषयों पर लेखन एवं हिन्दी शब्दों तथा मुहावरों का प्रथम बार प्रयोग किया.
   2. अपने काव्य में भारतीय जलवायु, पशु-पक्षी, धार्मिक विश्वास एवं जन-भाषा का उल्लेख किया.
   3. भारतीय संगीत का शौकीन एवं ज्ञाता था.
9. रचनाओं की भाषाएँ अरबी, फारसी, तुर्की एवं हिन्दी
10. पदवी अमीर (1290 ई. में जलालुद्दीन खिलजी ने प्रदान की)
11. उपाधि खुसरवे-शोअरा (कवि सम्राट्) अलाउद्दीन द्वारा प्रदत्त.
12. संरक्षक शासक 1. शहजादा मुहम्मद
   2. गयासुद्दीन बलबन
   3. कैकूबाद
   4. जलालुद्दीन खिलजी
   5. अलाउद्दीन खिलजी
   6. मुबारक शाह
13. प्रमुख आविष्कृत राग 1. एमन (भारतीय राग हिण्डोल एवं ईरानी राग नीरीज के साथ)
   2. उशाक (भारतीय राग सारंग एवं बसन्त तथा ईरानी राग नवा)

3. मुनाफिक (भारतीय राग तोडी भालरी एवं ईरानी राग दूरगा हुसैनी)
4. जैल्फ (भारतीय राग खटराग एवं ईरानी राग दूरगा हुसैनी)
5. फरगना (भारतीय राग कंगली एवं गौरा में ईरानी राग फरगना)
6. सराफरदा (भारतीय राग सारंग विलावल एवं ईरानी राग रास्त)
7. बाखरज (भारतीय राग देशकार एवं ईरानी राग)
8. फिरोदोस्त (भारतीय राग कान्हड़ा, गौरी पूर्वी एवं एक फारसी राग)

14. उपनाम	तूतिए-हिन्द
15. मृत्यु	1325 ई. में

21. महाराणा प्रताप (Maharana Pratap)

(1540–97 ई.)

1. वास्तविक नाम	प्रताप
2. प्रसिद्ध नाम	महाराणा प्रताप
3. जन्म	9 मई, 1540 ई. को
4. जन्म-स्थल	उदयपुर
5. माता	रानी जयन्ता बाई (पाली के अखैराजसोन गिरा चौहान की पुत्री)
6. पिता	महाराणा उदयसिंह
7. राज्याभिषेक	28 फरवरी, 1572 ई. को (गोगुन्दा में)
8. पितामह	राणा सांगा
9. प्रसिद्ध युद्ध	1. हल्दीघाटी का युद्ध (अकबर एवं महाराणा प्रताप के मध्य)
	2. कुम्भलगढ़ का युद्ध (मुगलों एवं महाराणा प्रताप के मध्य)
10. वंश	शिशोदिया वंश
11. संकल्प	"चित्तौड़ वापस लेकर रहूँगा."
12. मन्त्री	भामाशाह
13. प्रिय घोड़ा	चेतक
14. पत्नी	महारानी प्रभामयी
15. पथ प्रदर्शक	पृथ्वीराज चौहान
16. पुत्र	अमरसिंह
17. भाई	शक्तिसिंह
18. विजित दुर्ग	32
19. राजधानी	चावण्ड
20. तत्कालीन साहित्य	1. विश्ववल्लभ
	2. मूर्तिमाला
	3. राज्याभिषेक
21. प्रोत्साहित भाषा	संस्कृत भाषा
22. मृत्यु	19 जनवरी, 1597 ई. में (चावण्ड गाँव में)

22. छत्रपति शिवाजी (Chhatrapati Shivaji)

(1630–80 ई.)

1. वास्तविक नाम	शिवाजी
2. प्रसिद्ध नाम	छत्रपति शिवाजी
3. जन्म	19 फरवरी, 1630 ई.
4. जन्म-स्थल	पूना (महाराष्ट्र) के समीप शिवनेरी दुर्ग में.
5. माता	जीजाबाई
6. पिता	शाहजी भौंसले
7. दादाजी	भालोजी
8. प्रारम्भिक जीवन	1. पिता माँ एवं बालक शिवाजी को छोड़कर अलग रहने लगे.
	2. दादाजी कोणदेव, माँ जीजाबाई एवं गुरु रामदास ने पालन-पोषण एवं अध्ययन कराया.
9. गुरु	समर्थ गुरु रामदास
10. उल्लेखनीय तथ्य	1. 1646 ई. में बीजापुर के तोरण किले पर अधिकार किया.
	2. तोरण के दक्षिण-पूर्व में राजगढ़ नामक किला बनवाया.

	3. बीजापुर सुल्तान के कोण्ढाना किले पर अधिकार कर लिया.
	4. कोण्ढाना के किले का नाम बदलकर सिंहगढ़ कर दिया गया.
	5. पिता की प्राणरक्षा के लिए बंगलौर, कोण्ढाना एवं कन्दपी के किलों का समर्पण कर अपने पिता को मुक्त कराया.
11. निर्माण कार्य	भवानी मन्दिर निर्माण (जावली के समीप)
12. पराजित	अफजल खाँ को (बीजापुर का सेनापति)
13. ध्वज	गेहुँआ रंग का (गुरु रामदास के प्रतिनिधि होने का प्रतीक)
14. प्रसिद्ध लड़ाई	सिंहगढ़ की लड़ाई
15. राज्याभिषेक	7 जून, 1674 ई. को
16. उपाधि	छत्रपति
17. साम्राज्य वर्गीकरण	1. उत्तरी प्रांत 2. दक्षिणी प्रांत 3. दक्षिणी-पूर्वी प्रांत 4. नव विजित प्रदेश
18. राज्य में दुर्गों की संख्या	240 दुर्ग
19. मृत्यु	3 अप्रैल, 1680 ई.

23. मुहम्मद गौरी (Muhammad Ghori)

1. वास्तविक नाम	मुइजुद्दीन मुहम्मद-बिन-साम
2. प्रसिद्ध नाम	शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी
3. भाई	गयासुद्दीन (गौर शासक)
4. विशेषताएँ	कुशल सैन्य संचालक एवं महान् विजेता था.
5. प्रमुख विजित युद्ध	1. 1175 ई. में मुल्तान पर विजय प्राप्त की. 2. 1186 ई. में खुसरो को पराजित कर पंजाब पर अधिकार किया. 3. 1176 ई. में उच्छ पर विजय प्राप्त की. 4. 1179 ई. में पेशावर को विजित किया. 5. 1181 ई. में लाहौर, 1182 ई. में देवल एवं सिन्ध, 1184 ई. स्यालकोट, 1189 ई. में भटिण्डा, 1192 ई. में तराइन का द्वितीय युद्ध, 1193 ई. में हाँसी, कुहराम, सुरसुती एवं दिल्ली, 1194 ई. में चन्दावर, 1195-96 ई. में बयाना, 1196 ई. में ग्वालियर पर विजय प्राप्त की.
6. प्रमुख पराजित युद्ध	1. 1178 ई. में अन्हिलवाड़ा में 2. 1191 ई. में तराइन का प्रथम युद्ध
7. संस्थापक	भारत में तुर्की शासन एवं दिल्ली सल्तनत का.
8. शासित क्षेत्र	गोर, गजनी एवं उत्तरी भारत
9. राज्याभिषेक	1203 ई. में (सुल्तान गयासुद्दीन की मृत्यु के पश्चात्)
10. मृत्यु	1206 ई. में (लाहौर से गजनी जाते समय छुरा मारकर हत्या)

24. मुमताज बेगम (Mumtaj Begum)
(1592–1631 ई.)

1. वास्तविक नाम	आर्जुमन्द बानो बेगम
2. उपनाम	कुदसिया
3. प्रसिद्ध नाम	मुमजात महल (रनिवास का रत्न)
4. जन्म	1592 ई. में
5. पिता	आसफ खाँ
6. पति	शाहजहाँ (1612 ई. में विवाह)
7. पुत्र	1. दाराशिकोह 2. शाहशुजा 3. औरंगजेब 4. मुराद
8. पुत्री	जहाँ आरा
9. प्रमुख विशेषताएँ	1. मुमताज बेगम अत्यन्त सुन्दर, पति परायण एवं शाहजहाँ की प्रिय पत्नी थी. 2. वह दयालु एवं गरीबों के प्रति सहानुभूति रखने वाली थी.

3. मृत्यु पर स्मारक के रूप में शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण कराया, जिसमें 31748024 रुपये का व्यय एवं 30 वर्षों में निर्माण कार्य हुआ, जो विश्व के आश्चर्य के रूप में जाना जाता है.

10. मृत्यु — 7 जुलाई, 1631 ई. में

25. इब्राहीम लोदी (Ibrahim Lodi)

1. वास्तविक नाम	इब्राहीम हुसैन लोदी
2. प्रसिद्ध नाम	इब्राहीम लोदी
3. पिता	सिकन्दर शाह लोदी
4. दादा	बहलोल लोदी
5. भाई	जलाल खाँ
6. वंश	लोदी
7. राज्याभिषेक	1. 22 नवम्बर, 1517 ई. में 2. 29 दिसम्बर, 1517 ई. को विधिवत् राज्या-भिषेक
8. प्रसिद्ध युद्ध	पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई. में बाबर एवं इब्राहीम लोदी के मध्य, बाबर विजयी)
9. स्थापत्य	सिकन्दर लोदी का मकबरा (1527 ई. में दिल्ली में)
10. उपाधि	इब्राहीमशाह
11. शासनकाल	1517 से 1526 ई. तक
12. मृत्यु	20 फरवरी, 1526 ई. (पानीपत के युद्ध में)[1]

26. कुतुबुद्दीन ऐबक (Qutubuddin Aibak)

1. वास्तविक नाम	कुतुबुद्दीन ऐबक
2. जाति	तुर्क जनजाति
3. निवासी	तुर्किस्तान
4. प्रारम्भिक जीवन	1. बचपन में तुर्किस्तान से नैशापुर के बाजार में दास के रूप में बेच दिया गया. वहाँ से काजी फखरुद्दीन अब्दुल अजीज कूफी ने खरीद लिया था. 2. अजीज कूफी ने घुड़सवारी, धनुर्विद्या की शिक्षा प्रदान की एवं पालन-पोषण किया. 3. नैशापुर से मुहम्मद गौरी ने खरीद लिया.
5. उपनाम	कुरान ख्वाँ (कुरान का पाठ करने वाला)
6. उल्लेखनीय तथ्य	1. गोरी ने सर्वप्रथम दास से उसे अमीर-ए-आखूर. शाही घुड़साल का अधिकारी नियुक्त किया. 2. गोर, बामियान एवं गजनी के युद्धों में सेवा करने के कारण उसे कुहराम एवं समाना का प्रशासक बना दिया. 3. 1192-1206 ई. तक उत्तरी भारत के विजित प्रदेशों का प्रशासन सँभाला.
7. राज्याभिषेक	25 जून, 1206 ई. में (लाहौर में)
8. सत्ता के त्रिकोणीय संघर्ष	1. ताजुद्दीन यल्दूज 2. नासिरुद्दीन कुबाचा 3. कुतुबुद्दीन ऐबक
9. राजधानी	दिल्ली
10. संस्थापक	गुलाम वंश
11. उपनाम	लाख बख्श (लाखों का दान करने वाला)
12. प्रसिद्ध दरबारी	1. हसन निजामी 2. फर्रुखमुद्दीर
13. स्थापत्य कार्य	1. कुव्वत-उल-इस्लाम (दिल्ली में) 2. ढ़ाई दिन का झोपड़ा (अजमेर में) 3. कुतुबमीनार (दिल्ली में)
14. मृत्यु	1210 ई. में

1 कुछ विद्वान् मृत्यु की तिथि 21 अप्रैल, 1526 भी मानते हैं.

27. आचार्य रामानन्द (Siant Ramanand)

(1299–1411 ई.)

1. वास्तविक नाम	रामानन्द	
2. प्रसिद्ध नाम	आचार्य रामानन्द	
3. जन्म	1299-1300 ई.	
4. जन्म-स्थान	प्रयाग	
5. प्रवर्तक सम्प्रदाय	वैष्णव सम्प्रदाय	
6. उपासक	राम और सीता के	
7. परिवार	कान्यकुब्ज परिवार	
8. प्रारम्भिक शिक्षा	प्रयाग एवं बनारस में	
9. दीक्षा	रामानुज सम्प्रदाय की.	
10. दर्शनधारा	विशिष्ट अद्वैत दर्शन में विश्वास	
11. गुरु	रामानुजाचार्य	
12. प्रमुख शिष्य	1. धन्ना (जाट)	2. सैना (नाई)
	3. रैदास	4. कबीर (मुसलमान)
13. शिष्याएँ	पद्मावती एवं सुरसीर	
14. सिद्धान्त	1. परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण	
	2. मानव बन्धुत्व के प्रति सजग	
15. उपदेश की भाषा	हिन्दी	
16. प्रसिद्ध वक्तव्य	"मैं ब्रह्म की पूजा-अर्जना के लिए चन्दन तथा गन्ध द्रव्य लेकर जाने को था, किन्तु गुरु ने बताया कि ब्रह्म तो तुम्हारे हृदय में है. जहाँ भी मैं जाता हूँ पाषाण और जल की पूजा देखता हूँ, किन्तु यह परमशक्ति है, जिसने सब जगह इसे फैला रखा है. लोग व्यर्थ में ही इसे वेदों में देखने का प्रयत्न करते हैं."	
17. मृत्यु	1411 ई.	

28. मीराबाई (Meera Bai)

(1498–1547 ई.)

1. वास्तविक नाम	मीरा
2. प्रसिद्ध नाम	मीराबाई
3. जन्म	1498 ई. में[1]
4. जन्म-स्थल	कुदकी ग्राम (मेड़ता जिले) में
5. पिता	रतनसिंह
6. परदादा	राव जोधाजी
7. चचेरा भाई	वीर जयमल
8. विवाह	सन् 1516 ई में राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र युवराज भोजराज के साथ
9. पति की मृत्यु	1518-23 ई. के मध्य
10. अनुगामिनी	वैष्णव सम्प्रदाय की
11. प्रखर भक्ति	श्री कृष्ण के प्रति
12. भक्ति भाव	पति भाव
13. ससुर	राणा सांगा
14. कष्टप्रद अनुभूतियाँ	1. मार्च 1527 ई. में पिता रतन सिंह की मृत्यु खानवा के युद्ध में हो गई.
	2. 1528 ई. में ससुर राणा सांगा की मृत्यु हो गई.
	3. 1531 ई. में युवराज रत्नसिंह की मृत्यु.
	4. राणा विक्रमादित्य द्वारा मीराबाई को विष दिया गया.
	5. मेड़ता के सरदार वीरमदेव के पास आश्रय लिया.
	6. जोधपुर के राजा मालदेव द्वारा मेड़ता पर आक्रमण करने के पश्चात् द्वारिका में शरण ली.
15. भजन	राजस्थानी, गुजराती एवं ब्रजभाषा में (कृष्ण के प्रति सख्य भावनात्मक एवं प्रेमपूर्ण)

1. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति–आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव पृष्ठ सं. 55

16. ऐतिहासिक आंकलन	1. महाकवि निराला के अनुसार "वे गीत शैली के काव्य की देवी थीं."
	2. सुमित्रानन्दन पन्त के अनुसार "वे प्रेम और भक्ति के तपस्वी वन की शकुन्तला एवं राजस्थान की मरुभूमि की मन्दाकिनी थीं."
17. माता	कुसुम कुँवर (टाँकनी की राजपूतनी)
18. प्रभावित	अपने दादा राव दूदा की कृष्ण भक्ति से.
19. ताऊ	वीरमदेव
20. गुरु	1. जीव गोस्वामी
	2. पण्डित गजाधर
21. मृत्यु	1547 ई. में (द्वारिका में)

29. महमूद गजनवी (Mahmud Ghaznavi)

(971–1030 ई.)

1. वास्तविक नाम	सुल्तान-उल-आजिम, ममीन उद्दौला निजामुद्दीन, अब्दुलकासिम, महमूद गाजी
2. प्रसिद्ध नाम	महमूद गजनवी
3. जन्म	1. 971 ई. में
	2. हिज्री संवत् 361, 10वीं मुहर्रम की रात को.
4. जन्म-स्थल	गजनी
5. पिता	आमीर-उल-गाजी–नासिरुद्दीन उल्ला सुबुक्तगीन
6. प्रारम्भिक जीवन	1. 997 ई. में पिता की मृत्यु के बाद छोटे भाई ने गजनी का उत्तराधिकार सँभाला, उस दौरान महमूद खुरासान देश का शासक था.
	2. महमूद ने अपने भाई इस्माइल को कैदखाने में डालकर स्वयं गजनी का शासक बन गया.
	3. भारत पर 17 बार आक्रमण कर विस्तृत पैमाने पर धनधान्यादि गजनी में ले गया.
7. प्रमुख आक्रमण	1. सन् 1000 ई. में पहला आक्रमण पेशावर के निकटस्थ सीमान्त प्रदेश के किलों पर.
	2. सन् 1002 ई. में दूसरा आक्रमण पेशावर के शासक जयपाल पर (इस युद्ध में कोहिनूर हीरा महमूद को प्राप्त हुआ था)
	3. 1006 ई. में तीसरा आक्रमण भटिण्डा पर शासक विजयराय पर.
	4. 1006 ई. में चौथा आक्रमण मुल्तान पर (शासक दाऊद करमाथी)
	5. 1007 ई. में पाँचवाँ आक्रमण मुल्तान पर (शासक सुखपाल)
	6. 1008 ई. में छठा आक्रमण वैहिंद (पेशावर पर शासक आनन्दपाल)
	7. 1009 ई. में सातवाँ आक्रमण नारायणपुर (अलवर) पर
	8. 1010 ई. में आठवाँ आक्रमण मुल्तान पर (शासक सुखपाल)
	9. 1013-1014 ई. में नवाँ आक्रमण थानेश्वर पर (शासक राजाराम)
	10. 1014 ई. में दसवाँ आक्रमण नन्दन पर (शासक त्रिलोचनपाल)
	11. 1015-1016 ई. में ग्यारहवाँ आक्रमण कश्मीर पर (शासक संग्राम लाहौर)
	12. 1018-1019 ई. में बारहवाँ आक्रमण मथुरा एवं कन्नौज पर (प्रतिहार शासक)
	13. 1019 ई. में तेरहवाँ आक्रमण कालिंजर पर (चन्देल शासक विद्याधर एवं त्रिलोचन पाल)
	14. 1021 ई. में चौदहवाँ आक्रमण कश्मीर पर
	15. 1022 ई. में पन्द्रहवाँ आक्रमण ग्वालियर एवं कालिंजर पर (शासक गण्ड चन्देल)
	16. 1025 ई.-1026 ई. में सोमनाथ के मन्दिर पर (शासक भीमदेव)
	17. 1027 ई. में सिन्ध के जाटों पर.
8. उल्लेखनीय तथ्य	1. महमूद गजनवी ने भारत आक्रमण के समय 20 हजार मूर्तियों को तोड़ा एवं बीस हजार मन्दिरों को मस्जिदों में परिणित किया था.
	2. पूर्व गजनी से गंगा, पश्चिमी आजाम, खुरासान, तब्रिस्तान, इराक, तुर्की, घोर, निमराज्य तक अपना साम्राज्य स्थापित किया था.
	3. सोमनाथ मन्दिर की देवमूर्ति को महमूद ने महल की सीढ़ियों पर जड़वा दिया था.
	4. 2500 हाथी महमूद के किले की रक्षा करते थे एवं 4 हजार तुर्की सैनिक उसके अंगरक्षक थे.
	5. दो हजार खिदमतगार महमूद की सेना में सोने का छत्र लेकर खड़े रहते थे.
9. पुत्र	सात पुत्र थे.
10. दरबारी कवि	1. अन्सारी
	2. आसजादी
	3. फर्रुखी
	4. फिरदौसी

11. हिन्दू विरोधी कृत्य	ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर की एक देव प्रतिमा के चार टुकड़े कर एक खण्ड को मक्का, दूसरे खण्ड को मदीना एवं दो खण्डों को गजनी की जुम्मा मस्जिद की सीढ़ी में जड़वा दिया था.
12. प्रसिद्ध वक्तव्य	"जब कयामत आयेगी तब तक खुदा मुझसे पूछेंगे कि विधर्मियों के हाथ मूर्ति को बेचने वाला महमूद किधर है, तो मैं क्या जवाब दूँगा. उस समय मुझे शर्म से सर नीचा करना होगा. इससे मैं मूर्ति तोड़ने वाला ही कहलवाना चाहता हूँ."
13. मृत्यु	सन् 1030 ई में

30. समर्थ गुरु रामदास (Samarth Guru Ramdas)

(1608–81 ई.)

1. वास्तविक नाम	नारायण
2. प्रसिद्ध नाम	गुरु रामदास
3. जन्म	1608 ई. में
4. जन्म-स्थल	जाम्ब नामक गाँव में (महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में)
5. पिता	सूर्याजी पन्त
6. माता	राणूबाई
7. प्रारम्भिक जीवन	1. बचपन में अत्यन्त शरारती एवं उदण्डी थे 2. शादी के मण्डप से भागकर पंचवटी के टाकली गाँव में रहने लगे 3. भिक्षा माँगकर भरण-पोषण करते थे
8. प्रमुख रचित ग्रन्थ	1. दासबोध 2. रामायण
9. शिष्य	शिवाजी
10. उपाधि	समर्थ
11. मृत्यु	1681 ई. में (73 वर्ष की उम्र में)

31. अबुल फजल (Abul Fazla)

(1551–1602 ई.)

1. वास्तविक नाम	शेख अबुल फजल
2. उपनाम	अल्लामी (कविता में प्रयुक्त)
3. जन्म	14 जनवरी, 1551 ई. में
4. जन्म-स्थल	आगरा के पास रामबाग
5. पिता	शेख मुबारक
6. भाई	शेख फैजी (मुगलकालीन प्रसिद्ध कवि)
7. प्रारम्भिक जीवन	1. अल्पायु से ही साहित्यिक गतिविधियों का प्रारम्भ किया. 2. 1565 ई. में अकबर के अधीन एक हजार अश्वारोही सैन्य के मनसब एवं 1566 ई. में दिल्ली के दीवान थे.
8. अनुदित रचनाएँ	1. कालिया दमन का फारसी भाषा में 2. महाभारत का फारसी भाषा में 3. अयार-ए-दानिश.
9. पुत्र	अब्दुर्रहमान
10. विरोधी	जहाँगीर (सलीम)
11. उल्लेखनीय तथ्य	1. अबुल फजल प्रसिद्ध कवि, लेखक, विद्वान् एवं अकबर के नौ रत्नों में से एक थे. 2. अबुल फजल प्रतिदिन 22 किलोग्राम मात्रा में भोजन करते थे.
12. पौत्र	विशोतान
13. प्रमुख रचनाएँ	1. अकबरनामा 2. आइन-ए-अकबरी 3. मकतूबात अल्लामी
14. मृत्यु	1602 ई. में (बुन्देला राजा वीरसिंह ने सलीम की आज्ञा से हत्या कर दी थी)

प्रश्नकोश
(Question Bank)

1. एक दिल्ली सुल्तान जिसके यहाँ पर चीन के मंगोल सम्राट का शिष्टमण्डल बौद्ध मन्दिर को देखने के लिए आया था, वह सुल्तान कौन था ?
   (A) बलबन (B) मुहम्मद बिन तुगलक
   (C) सिकन्दर लोदी (D) फिरोज तुगलक
2. विजय नगर साम्राज्य की दूसरी राजधानी थी ?
   (A) उदयगिरि (B) पेनुगोंडा
   (C) कम्पाली (D) परैविड़ु
3. जियाउद्दीन बरनी ने फिरोजशाह के शासनकाल में शांति एवं समृद्धि के लिए उत्तरदायी कहा है–
   (A) उलेमा के समर्थन को
   (B) खलीफा के आशीर्वाद को
   (C) अधिकारियों की योग्यता को
   (D) संगठित सेना को
4. 'खिदमती' क्या था ?
   (A) युद्ध से प्राप्त धन का 1/5 भाग
   (B) पराजित हिन्दू शासकों से लिया जाने वाला कर
   (C) मुस्लिम शासकों से लिया जाने वाला कर
   (D) भू-राजस्व जो पुरोहितों से लिया जाता था
5. "एक मुकुटधारी राजा को सदा धर्म की दृष्टि में रहकर शासन करना चाहिए." यह कथन था–
   (A) कृष्णदेवराय (B) रामराय
   (C) हरिहर प्रथम (D) देवराय II
6. विजयनगर साम्राज्य में सती प्रथा का उल्लेख कौनसा विदेशी यात्री करता है ?
   (A) अब्दुर्रज्जाक (B) मार्कोपोलो
   (C) एडोर्डा बारबोसा (D) निकोलोकोण्टी
7. विजयनगर के 24 मील के घेरे में बने होने का वर्णन कौनसा विदेशी यात्री करता है ?
   (A) नूनिज (B) पीटर मुण्डी
   (C) अब्दुर्रज्जाक (D) सीजर फ्रेडरिक
8. किस खेल में उत्कृष्टतम प्रदर्शन के लिए विजयनगर का राजा खिलाड़ी को पारितोषिक प्रोत्साहन स्वरूप देता था ?
   (A) शतरंज (B) कुश्ती
   (C) छाया नाटक (D) जुआ
9. अलाउद्दीन खिलजी ने किस हिन्दू शासक को रामरायन की उपाधि प्रदान की थी ?
   (A) प्रतापरुद्र देव (B) रामचन्द्र देव
   (C) वीर बल्लाल (D) सुन्दर पाण्ड्या
10. "दिल्ली अभी दूर है" (हुनुज दिल्ली दूरस्थ) यह किसका कथन था ?
   (A) गाजी मलिक (B) शेख सलीम चिश्ती
   (C) निजामुद्दीन औलिया (D) अमीर खुसरो
11. निम्नलिखित में से किस शासक ने विवाह विभाग स्थापित किया था ?
   (A) सिकन्दर लोदी ने
   (B) फिरोजशाह तुगलक ने
   (C) अलाउद्दीन खिलजी ने
   (D) गयासुद्दीन तुगलक ने
12. महमूद गजनवी के आक्रमण का सही क्रम है–
   (A) मुल्तान, थानेश्वर, कश्मीर, मथुरा, कन्नौज
   (B) कश्मीर, कन्नौज, मथुरा, मुल्तान, थानेश्वर
   (C) मुल्तान, कन्नौज, थानेश्वर, मथुरा, कश्मीर
   (D) कश्मीर, मुल्तान, थानेश्वर, कन्नौज, मथुरा
13. कौनसा सुल्तान अपने आपको निजामुद्दीन औलिया का शत्रु मानता था ?
   (A) गयासुद्दीन तुगलक (B) बलबन
   (C) मुहम्मद तुगलक (D) अलाउद्दीन खिलजी
14. औरंगजेब के शासनकाल में जिन सतनामियों ने बगावत कर नरनौल शाह को बेदखल कर दिया था, वे–
   (A) दादू पंथी थे (B) गुरुनानक पंथी थे
   (C) रविदास पंथी थे (D) कबीर पंथी थे

15. "नगर इतनी पूरी तरह उजड़ गया था कि नगर की इमारतों, महल और आसपास के इलाकों में एक बिल्ली या कुत्ता तक नहीं बचा था." सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा राजधानी स्थानान्तरण के बारे में उपर्युक्त कथन था–
(A) अमीर खुसरो का (B) इमामी का
(C) जियाउद्दीन बर्नी का (D) इब्नबतूता का

16. मनूची कहता है कि जजिया फिर से लादे जाने का सरदारों के एक समूह ने जबरदस्त विरोध किया था ? जिसका नेतृत्व किया था ?
(A) जसवंत सिंह ने (B) जहाँआरा ने
(C) शाहस्ता खाँ ने (D) राणा राजसिंह ने

17. मुगल साम्राज्य में अमीरों का वेतन नियत किया जाता था–
(A) उनकी मनसब की संख्या के आधार पर
(B) सम्राट की इच्छा के आधार पर
(C) वंश की श्रेष्ठता और स्वयं की योग्यता के आधार पर
(D) सेना के आकार को देखकर

18. "अपने बड़े सामन्तों के मध्य वह (सम्राट) इतना प्रभावशाली था कि कोई अपना सिर ऊँचा उठाने की हिम्मत नहीं करता था, लेकिन साधारण वर्ग के लोगों के साथ वह उदार और मिलनसार था और स्वेच्छा से उन्हें अपने पास आने देता था और उनकी अर्जियाँ सुनता था. वह उनके उपहार खुशी से कबूल करता था, उन्हें अपनी बाँहों में लेकर अपनी छाती से लगाता था." किसने किसके सम्बन्ध में कहा था ?
(A) मांसरेट–अकबर (B) फिच–शाहजहाँ
(C) टैवर्नियर–जहाँगीर (D) हॉकिन्स–शाहजहाँ

19. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गये कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I (घटनाएँ)	सूची-II (वर्ष)
(a) मालवा की विजय	(1) 1562
(b) सूबों का निर्माण	(2) 1574-75
(c) कश्मीर का सम्मेलन	(3) 1580
(d) समाचार विभाग की स्थापना	(4) 1586

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	1	2	4
(B)	1	3	2	4
(C)	1	3	2	4
(D)	1	3	4	2

20. दिल्ली सल्तनत में क्षेत्रीय राजस्व समनुदेशन को कहते थे–
(A) तुमुल (B) मिल्क
(C) जागीर (D) इक्ता

21. कौनसा युग्म सुमेलित है ?
(A) कृष्ण देवराय – मनुचरितम्
(B) बुक्का I – वैदिक मन्त्र प्रवर्त्तक
(C) अल्लसानिपेदन्ना – अमुक्तमाल्यदा
(D) गंगादेवी – अमरशतक

22. अलाउद्दीन खिलजी ने मालगुजारी का हक पेश किया था–
(A) उपज के 1/4 भाग पर
(B) उपज के 1/2 भाग पर
(C) उपज के 2/5 भाग पर
(D) उपज के 2/3 भाग पर

23. बंगाल के पाल शासकों के खिलाफ निम्नलिखित में से किस एक कृषक समुदाय ने विद्रोह किया था ?
(A) कैवर्ट (कैवर्त) (B) गुर्जर (गूजर)
(C) डोम (D) जाट

24. गयासुद्दीन तुगलक के मकबरे की विशेषता थी–
(A) कन्दाकार गुम्बदें (B) ढलवाँ दीवारें
(C) संगमरमर की दीवारें (D) ऊँची मीनारें

25. स्थायी सेना नियुक्त करने वाला पहला शासक था–
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) गयासुद्दीन तुगलक (D) जलालुद्दीन खिलजी

26. निम्नलिखित में से कौनसा सुल्तान स्वयं को 'नायब-ए-खुदाई' (ईश्वर का प्रतिनिधि) कहता था ?
(A) बलबन
(B) इल्तुतमिश
(C) मुहम्मद बिन तुगलक
(D) अलाउद्दीन खिलजी

27. निम्नलिखित में से किसे 'लाख बख्श' कहा जाता था ?
(A) इल्तुतमिश (B) कुतुबुद्दीन ऐबक
(C) मुहम्मद तुगलक (D) फिरोज तुगलक

28. चचनामा में निम्नलिखित में से ऐतिहासिक स्रोत है–
(A) सिन्ध का (B) गुजरात का
(C) पंजाब का (D) अफगानिस्तान का

29. दिल्ली सल्तनत की स्थापना की पारम्परिक तिथि निम्नलिखित में से कौनसी है ?
(A) 1000 A.D. (B) 1206 A.D.
(C) 1192 A.D. (D) 1210 A.D.

30. अष्ट प्रधान समिति का विघटन किया था–
(A) सम्भाजी ने (B) शिवाजी ने
(C) शाहू ने (D) ताराबाई ने

31. जहाँगीर ने किसे 400 जात का मनसब दिया था ?
(A) फिच को (B) कैप्टन हॉकिन्स को
(C) कोलवर्ट को (D) सर टॉमस रो को

32. शिवाजी निम्नलिखित में से किस किले में पैदा हुए थे ?
(A) जावली (B) चम्पानेर
(C) जिंजी (D) शिवनेर

33. सेना का प्रधानमंत्री कहलाता था–
(A) मीरबख्शी (B) सिपहसालार
(C) फौजदार (D) दीवान

34. किस मुगल शासक ने अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर निर्माण हेतु भूमि अनुदान दिया था ?
(A) अकबर (B) औरंगजेब
(C) जहाँगीर (D) शाहजहाँ

35. मुगलकालीन महिला प्रधानमंत्री थी–
(A) जीजी अनगा (B) कोकी अनगा
(C) सुल्तान बेगम (D) माहम अनगा

36. कौनसे सुल्तान ने खलीफा से खिलवत प्राप्त किया था ?
(A) इल्तुतमिश ने
(B) रजिया सुल्तान ने
(C) सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक ने
(D) गयासुद्दीन तुगलक ने

37. विजयनगर की पुरानी राजधानी थी–
(A) मदुरा (B) धारवाड़
(C) हम्पी (D) बादामी

38. कौनसा भारतीय सूफी संत मुजाहिद कहलाता था ?
(A) शेख अहमद सरहिन्दी
(B) बहाउद्दीन जकारिया
(C) शाहवली उल्लाह
(D) ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती

39. दीवाने-मुस्तखराज विभाग की स्थापना की गई थी–
(A) डाक व्यवस्था में सुधार करने के लिए
(B) बकाया लगान की वसूली हेतु
(C) कृषि विभाग में सुधार के लिए
(D) जागीरदारी मिटाने के लिए

40. पुर्तगालियों ने गोआ पर अधिकार किया था–
(A) 1500 में (B) 1510 में
(C) 1508 में (D) 1512 में

41. शिवाजी के समय परराष्ट्र मामलों के अधिकारी मंत्री की संज्ञा थी–
(A) प्रधान (B) सुमन्त
(C) अमात्य (D) मंत्री

42. आगरा की स्थापना की थी–
(A) खिज्र खाँ ने (B) बहलोल लोदी ने
(C) सिकन्दर लोदी ने (D) फिरोज शाह तुगलक ने

43. हुमायूँ के मकबरे में दफनाये गये बादशाह एवं शहजादों की संख्या थी–
(A) 4 (B) 5
(C) 7 (D) 6

44. मुगलकाल में किस मकबरे में पहली बार पिजाडुरा का प्रयोग हुआ था ?
(A) ऐत्मादुउददौला का मकबरा
(B) ताजमहल
(C) जहाँगीर का मकबरा
(D) अकबर का मकबरा

45. निम्नलिखित में से कौनसा बन्दरगाह पुर्तगालियों के अधिकार में नहीं था ?
(A) दमन
(B) मछलीपट्टनम् (मसूलीपट्टनम्)
(C) बेसिन
(D) हुगली

46. कामरूप में वैष्णव धर्म का प्रवर्त्तन किया था–
(A) शंकरदेव ने (B) चैतन्य ने
(C) निम्बार्क ने (D) रूपगोस्वामी ने

47. शाहनामा का लेखक था–
(A) निजामुद्दीन अहमद (B) अब्दुल हमीद लाहौरी
(C) अबुल फजल (D) अब्दुल कादिर बदायूँनी

48. 'आन्ध्र का भोज' कहा जाता था–
(A) कृष्णदेवराय को (B) देवराय II को
(C) हरिहर को (D) देवाराय को

49. अकबर के राजत्वकाल में गोंडवाना की स्त्री शासिका का नाम क्या था ?
(A) रानी दुर्गावती (B) अहिल्याबाई
(C) ताराबाई (D) इनमें से कोई नहीं

50. अकबर के दरबार का प्रमुख चित्रकार था–
(A) अबुल हसन (B) मंजूर
(C) अब्दुस्समद (D) मुहम्मद नादिर

51. मुगल सैन्य व्यवस्था आधारित थी–
(A) मनसबदारी पर (B) जागीरदारी पर
(C) इक्ता पर (D) इनमें से कोई नहीं

52. भारतीय दर्शन सूफीवाद से प्रभावित हुआ था. सूफीवाद का प्रभाव था–
(A) भक्ति (B) छायावाद
(C) रहस्यवाद (D) अद्वैतवाद

53. तुजुक-ए-बाबरी किस भाषा में लिखी गई थी ?
(A) हिन्दी में (B) तुर्की में
(C) उर्दू में (D) फारसी में

54. कुतुबुद्दीन ऐबक का शासनकाल था–
(A) 1194-1210 ई. (B) 1204-1210 ई.
(C) 1196-1212 ई. (D) 1206-1210 ई.

55. फुतुहात-ए-फिरोजशाही का लेखक कौन था ?
(A) फिरोज तुगलक (B) जियाउद्दीन बर्नी
(C) अमीर खुसरो (D) इमामी

56. सन् 1221 ई. में किस मंगोल ने भारत पर आक्रमण किया था ?
(A) तैमूर ने (B) दारा ने
(C) चंगेज खाँ ने (D) इनमें से कोई नहीं

57. मुहम्मद तुगलक ने दिल्ली से राजधानी स्थानान्तरित की थी–
(A) होशंगाबाद (B) दौलताबाद
(C) गुलबर्गा (D) मांडू

58. दहशाला पद्धति का जनक था–
(A) टोडरमल (B) अब्दुर्रहीम खानखाना
(C) बीरबल (D) अबुल फजल

59. शाहजहाँ के शासनकाल में कौनसा फ्रांसीसी चिकित्सक भारत आया था ?
(A) बर्नियर (B) ट्रैवर्नियर
(C) मनूची (D) टेरी

60. आइने-अकबरी के रचनाकार थे–
(A) अफीफ (B) अबुल फजल
(C) रहीम (D) जियाउद्दीन बर्नी

61. शाहजहाँ का वास्तविक नाम क्या था ?
(A) खुर्रम (B) परवेज
(C) दारा (D) शहरयार

62. महमूद गजनवी किस विद्वान को युद्ध बंधक बनाकर लाया था ?
(A) अलबेरूनी (B) फरिश्ता
(C) साहेब खान (D) अंलजुज

63. निम्नलिखित में से अलबेरूनी की कृति है–
(A) सि-यू-की (B) तहकीक-ए-हिन्द
(C) हुमायूँनामा (D) तारीखे-मुबारकशाही

64. शिवाजी का राज्यारोहण हुआ था–
(A) 1676 में (B) 1674 में
(C) 1672 में (D) 1774 में

65. गुलाम वंश के शासकों में से किसने खलीफा से खिल्वत प्राप्त की थी ?
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक ने (B) रजिया ने
(C) इल्तुतमिश ने (D) बलबन ने

66. इल्तुतमिश को बगदाद के खलीफा द्वारा खिलवत कब प्राप्त हुई ?
(A) 1226 ई. में (B) 1229 ई. में
(C) 1230 ई. में (D) 1232 ई. में

67. इल्तुतमिश गद्दी पर बैठा–
(A) 1210 ई. में (B) 1211 ई. में
(C) 1206 ई. में (D) 1230 ई. में

68. कुतुबुद्दीन ऐबक की राजधानी थी–
(A) दिल्ली (B) लाहौर
(C) आगरा (D) जौनपुर

69. 'सिजदा' और 'पैथबोस' प्रथा का प्रचलन किया–
(A) इल्तुतमिश ने (B) रजिया सुल्तान ने
(C) बलबन ने (D) अलाउद्दीन खिलजी ने

70. पहली बार मंगोलों का आक्रमण किसके शासनकाल में हुआ ?
(A) इल्तुतमिश (B) बलबन
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) मुहम्मद बिन तुगलक

71. 'रक्त एवं लौह' की नीति अपनाने वाला सुल्तान था–
(A) गयासुद्दीन बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) फिरोज तुगलक (D) सिकन्दर लोदी

72. चाँदी का टका और ताँबे का जीतल का प्रचलन शुरू किया–
(A) इल्तुतमिश ने
(B) बलबन ने
(C) अलाउद्दीन खिलजी ने
(D) मुहम्मद बिन तुगलक ने

73. इल्तुतमिश गद्दी पर बैठने से पूर्व कहाँ का सूबेदार था ?
(A) सिन्ध (B) बदायूँ
(C) बदख्शां (D) लाहौर

74. पुर्तगालियों के विरुद्ध अंग्रेजों की सफलता में निम्नलिखित में से कौनसा कारण नहीं था ?
    (A) भारत में पुर्तगालियों की बढ़ती अलोकप्रियता
    (B) अंग्रेजों की नाविक शक्ति
    (C) मुगलों एवं अंग्रेजों के पारस्परिक सम्बन्ध
    (D) पुर्तगालियों के घटते संसाधन

75. दिल्ली के सुल्तानों में किसे 'लाख बख्श' के रूप में जाना जाता है ?
    (A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) इल्तुतमिश
    (C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) जलालुद्दीन खिलजी

76. खिलजी क्रान्ति कब हुई ?
    (A) 1206 ई. में (B) 1290 ई. में
    (C) 1296 ई. में (D) 1320 ई. में

77. अलाउद्दीन दिल्ली का सुल्तान कब बना ?
    (A) 1290 ई. (B) 1296 ई.
    (C) 1316 ई. (D) 1320 ई.

78. सुल्तान बनने से पूर्व अलाउद्दीन खिलजी द्वारा जीता गया–
    (A) मेवाड़ (B) देवगिरि
    (C) मालवा (D) गुजरात

79. अलाउद्दीन के गुजरात आक्रमण के समय वहाँ का शासक था–
    (A) बघेला शासक कर्ण
    (B) यादव शासक रामचन्द्र देव
    (C) वीर बल्लाल तृतीय
    (D) राणा हम्मीर देव

80. अलाउद्दीन ने चित्तौड़ का घेरा डाला–
    (A) 1301 ई. (B) 1303 ई.
    (C) 1305 ई. (D) 1311 ई.

81. चहलगामी या चालीसा का संहार किया–
    (A) रजिया सुल्तान ने
    (B) बलबन ने
    (C) जलालुद्दीन खिलजी ने
    (D) गयासुद्दीन तुगलक ने

82. निम्नलिखित दिल्ली सुल्तानों को कालक्रमबद्ध कीजिए–
    (A) इल्तुतमिश, आरामशाह, बलबन एवं रजिया
    (B) आरामशाह, बलबन, इल्तुतमिश एवं रजिया
    (C) आरामशाह, इल्तुतमिश, रजिया एवं बलबन
    (D) बलबन, आरामशाह, इल्तुतमिश एवं रजिया

83. निम्नलिखित में से किस सुल्तान के कोई सिक्के नहीं प्राप्त हुए हैं ?
    (A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) इल्तुतमिश
    (C) जलालुद्दीन (D) मुबारक शाह

84. निम्नलिखित में इल्तुतमिश के विषय में कौनसा कथन सत्य नहीं है ?
    (A) इल्तुतमिश दिल्ली का प्रथम वैधानिक सुल्तान था
    (B) उसने तुर्कानि चहलगानी का गठन किया
    (C) इल्तुतमिश की राजधानी लाहौर थी
    (D) पहली बार मंगोल आक्रमण इसी के समय हुआ

85. निम्नलिखित में कौनसा सही सुमेलित नहीं है ?
    (A) कुतुबुद्दीन ऐबक – कुत्बी वंश
    (B) इल्तुतमिश – शम्सी वंश
    (C) गयासुद्दीन तुगलक – तुगलक वंश
    (D) रजिया सुल्तान – बलबनी वंश

86. सल्तनतकालीन शासकों में सबसे अधिक समय तक शासन करने वाला सुल्तान था ?
    (A) इल्तुतमिश (B) अलाउद्दीन खिलजी
    (C) बलबन (D) फिरोज तुगलक

87. अलाउद्दीन खिलजी की गुजरात अभियान की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी–
    (A) अपार धन सम्पत्ति
    (B) मलिक काफूर को प्राप्त करना
    (C) साम्राज्य का विस्तार
    (D) इस्लाम का प्रचार

88. दक्षिण भारत की विजय करने वाला दिल्ली का प्रथम सुल्तान था–
    (A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
    (C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोजशाह तुगलक

89. बलबन के बाद दिल्ली की गद्दी पर कौन बैठा ?
    (A) आरामशाह (B) रजिया
    (C) कैखुसरो (D) कैकुबाद

90. अलाउद्दीन के दक्षिणी भारत अभियान के दौरान निम्नलिखित में से किस सेनानायक का योगदान सराहनीय रहा ?
    (A) नसरत खाँ (B) जफर खाँ
    (C) उलूग खाँ (D) मलिक काफूर

91. अलाउद्दीन ने देवगिरि पर कितनी बार आक्रमण किया ?
    (A) दो बार (B) चार बार
    (C) एक बार (D) तीन बार

92. निम्नलिखित में से किस सुल्तान के प्रसिद्ध सूफी सन्त निजामुद्दीन औलिया के साथ अच्छे सम्बन्ध नहीं थे ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) मुहम्मद बिन तुगलक
(D) सिकन्दर लोदी

93. अलाउद्दीन द्वारा जीते गये राज्यों को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिये–
(A) गुजरात, रणथम्भौर, चित्तौड़ एवं जालौर
(B) रणथम्भौर, गुजरात, चित्तौड़ एवं जालौर
(C) चित्तौड़, गुजरात, रणथम्भौर एवं जालौर
(D) गुजरात, जालौर, गुजरात एवं रणथम्भौर

94. निम्नलिखित में कौन सही सुमेलित नहीं है ?

(A) देवगिरि	–	राजा रामचन्द्र देव
(B) होयसल	–	वीर बल्लाल तृतीय
(C) पाण्ड्य	–	भारवर्मन कुलशेखर
(D) काकतीय	–	राय महलक देव

95. पद्मिनी की कथा का वर्णन मिलता है ?
(A) पृथ्वीराज रासो में
(B) पद्मावत में
(C) चचनामा में
(D) फतवा-ए-जहाँदारी में

96. गोरा व बादल सैनिक थे–
(A) रणथम्भौर के (B) कालिन्जर के
(C) चित्तौड़ के (D) मेवाड़ के

97. मुहम्मद बिन तुगलक को एक और नाम से जाना जाता था, वह नाम था–
(A) अलप खाँ (B) जूना खाँ
(C) गाजी मलिक (D) खुर्रम

98. रजिया सुल्तान ने कितने वर्ष तक शासन किया ?
(A) 4 वर्ष (B) 6 वर्ष
(C) 10 वर्ष (D) 12 वर्ष

99. सूची-I में सुल्तान का नाम तथा सूची-II में सिंहासनारूढ़ वर्ष दिया गया है. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए–

सूची-I	**सूची-II**
(a) इल्तुतमिश	(1) 1211 ई.
(b) रजिया	(2) 1236 ई.
(c) बलबन	(3) 1266 ई.
(d) कुतुबुद्दीन ऐबक	(4) 1206 ई.

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	1	3	2	4
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	2	1

100. दिल्ली सल्तनत का प्रथम वैधानिक सुल्तान था–
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) इल्तुतमिश
(C) बलबन (D) अलाउद्दीन खिलजी

101. निम्नलिखित में से किस सुल्तान की मृत्यु चौगान खेलते समय हुई ?
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) इल्तुतमिश
(C) बलबन (D) रजिया

102. 1206 ई. से 1290 ई. तक उत्तरी भारत में शासन करने वाले सुल्तानों के लिए सबसे उचित संज्ञा होगी–
(A) तुर्की (B) शम्सी
(C) मामलूक (D) इल्बरी

103. तैमूर लंग का आक्रमण हुआ–
(A) 1313 ई. (B) 1398 ई.
(C) 1526 ई. (D) 1761 ई.

104. सल्तनतयुग का विवादास्पद शासक था–
(A) इल्तुतमिश (B) बलबन
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) सिकन्दर लोदी

105. निम्नलिखित में से कौन अपने चाचा की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बना ?
(A) जलालुद्दीन खिलजी
(B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुबारक शाह खिलजी
(D) मुहम्मद बिन तुगलक

106. सैय्यद वंश का संस्थापक था–
(A) खिज्र खाँ (B) उलूग खाँ
(C) गाजी मलिक (D) मुबारक शाह

107. दिल्ली सल्तनत में अक्ता (इक्ता) प्रणाली का प्रारम्भ किसके काल में हुआ ?
(A) इल्तुतमिश (B) बलबन
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) गयासुद्दीन तुगलक

108. सल्तनतकालीन वह कौनसा सुल्तान है, जो पैदायशी हिन्दू था और बाद में मुसलमान हो गया ?
(A) गाजी मलिक (B) नसिरुद्दीन खुसरवशाह
(C) इल्तुतमिश (D) खिज्र खाँ

109. निम्नलिखित में किसके बारे में कहा जाता है कि उसने आठ दिल्ली के सुल्तानों का काल देखा था ?
(A) अमीर खुसरो (B) जियाउद्दीन बरनी
(C) मिन्हास उस मिराज (D) याहिया बिन अहमद

110. उस दक्षिण भारतीय राजा का क्या नाम था, जिसने 1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की सेना को परास्त किया था ?
(A) बल्लाल तृतीय (B) प्रतापरुद्र द्वितीय
(C) राजा रामचन्द्र (D) कुलशेखर

111. निम्नलिखित में किस सुल्तान के समय राजधानी दिल्ली से आगरा स्थानान्तरित की गई ?
(A) मुहम्मद बिन तुगलक (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) सिकन्दर लोदी (D) कुतुबुद्दीन ऐबक

112. अलाउद्दीन का प्रसिद्ध सेनानायक नसरत खाँ किस युद्ध में मारा गया ?
(A) गुजरात (B) रणथम्भौर
(C) चित्तौड़ (D) मालवा

113. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने भूमि को नापने की प्रथा बन्द करवाई ?
(A) मुहम्मद बिन तुगलक (B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) फिरोज तुगलक (D) अलाउद्दीन खिलजी

114. इल्तुतमिश की मृत्यु तथा गयासुद्दीन बलबन के सिंहासन पर बैठने से पूर्व दिल्ली में कितने शासकों ने शासन किया ?
(A) 4 (B) 6
(C) 2 (D) 5

115. मुहम्मद गौरी की मृत्यु के पश्चात् उसके साम्राज्य का वास्तविक दावेदार कौन था ?
(A) ताजुद्दीन यल्दूज (B) नासिरुद्दीन कुबाचा
(C) कुतुबुद्दीन ऐबक (D) उक्त तीनों

116. अमीर खुसरो का जन्म कहाँ हुआ था ?
(A) बरन (B) पटियाली
(C) सिन्ध (D) पेशावर

117. निम्नलिखित में से किस इतिहासकार ने फिरोज तुगलक की तुलना अकबर से की थी ?
(A) हेनरी इलियट (B) लेनपूल
(C) विन्सेंट स्मिथ (D) वुल्जले हेग

118. 'मुहम्मद तुगलक' में पागलपन का कुछ अंश था. कथन है–
(A) डॉ. ईश्वरी प्रसाद (B) आर. पी. त्रिपाठी
(C) एलफिन्सटन (D) स्मिथ

119. मुहम्मद बिन तुगलक ने नगरकोट को कब जीता ?
(A) 1326 ई. में (B) 1333 ई. में
(C) 1337 ई. में (D) 1340 ई. में

120. अलाउद्दीन खिलजी का असली नाम था–
(A) अली गुरशास्पबधित (B) उलूच खाँ
(C) गाजी मलिक (D) तातार खाँ

121. फिरोज तुगलक के विषय में दिये गये तथ्यों में कौनसा कूट सत्य नहीं है ?
(A) फिरोज तुगलक हिन्दू माँ का पुत्र था
(B) सल्तनतकालीन शासकों में सबसे अधिक समय तथा बलबन के राज्यकाल से कम समय तक शासन किया
(C) फिरोज तुगलक का शासनकाल सार्वजनिक कार्य के लिए प्रसिद्ध है
(D) फिरोज तुगलक मुहम्मद बिन तुगलक का पुत्र नहीं था

122. लोदी वंश का संस्थापक था–
(A) बहलोल लोदी (B) सिकन्दर लोदी
(C) इब्राहीम लोदी (D) मुहम्मदशाह रंगीला

123. मध्यकाल में जाजनगर जाना जाता था–
(A) महाराष्ट्र
(B) पंजाब व सिन्ध
(C) उड़ीसा
(D) बुन्देलखण्ड एवं रुहेलखण्ड

124. समसुन्दरी अभिलेख में दुनिया का खान कहा गया है–
(A) जूना खाँ (B) बलबन
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) सिकन्दर शाह

125. मलिक गाजी शहना ने किस सुल्तान के समय में वास्तु-कारिता के क्षेत्र में अद्वितीय उपलब्धि हासिल की ?
(A) रजिया सुल्तान (B) सिकन्दर लोदी
(C) इब्राहीम शाहशर्की (D) फिरोज तुगलक

126. बादलगढ़ के किले का निर्माण कराया–
(A) बहलोल लोदी (B) सिकन्दर लोदी
(C) फिरोज तुगलक (D) दौलत खाँ लोदी

127. सार्वजनिक निर्माण के लिए विख्यात सुल्तान था–
(A) इल्तुतमिश (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) इब्राहीम शाहशर्की (D) फिरोज तुगलक

128. कश्मीर का अकबर के रूप में प्रसिद्ध था–
(A) शिहाबुद्दीन (B) हाजी खाँ
(C) सूहादेव (D) जैन-उल-ओबेदीन

129. मुहम्मद बिन तुगलक के समय निम्नलिखित में से कहाँ-कहाँ पर विद्रोह हुआ ?
   (1) सागर (2) सिन्ध
   (3) मुल्तान (4) बंगाल
   (5) मालाबार
   (A) 2 एवं 4 (B) 2, 3 एवं 4
   (C) 1 एवं 5 (D) 1, 2, 3, 4 एवं 5

130. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने जौनपुर को दुबारा दिल्ली सल्तनत में मिलाया ?
   (A) मुहम्मद बिन तुगलक (B) फिरोज तुगलक
   (C) खिज्र खाँ (D) बहलोल लोदी

131. दिल्ली सल्तनत का वह कौनसा प्रथम सुल्तान था जिसने सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण कराया ?
   (A) इल्तुतमिश (B) गयासुद्दीन तुगलक
   (C) फिरोज तुगलक (D) सिकन्दर शाह

132. सैय्यद वंशीय सुल्तानों में से सबसे अधिक समय तक किसने शासन किया ?
   (A) खिज्र खाँ (B) मुबारक शाह
   (C) मुहम्मद शाह (D) अलाउद्दीन आलमशाह

133. "किसानों की कमर टूट गई. वे जो धनी थे, उपद्रवी हो गये, भूमि बरबाद हो गई और कृषि की उन्नति रुक गई. अनाज महँगा हो गया, वर्षा में कमी आ गई इसलिए दुर्भिक्ष सर्वव्यापी हो गया. यह वर्षों तक चलता रहा और इसलिए हजारों मनुष्य मर गये." उपर्युक्त कथन किसका है ?
   (A) इब्नबतूता (B) जियाउद्दीन बरनी
   (C) मिनहास-उस-सिराज (D) शम्स-ए-सिराज

134. 18वीं शताब्दी में निम्नलिखित में से कौन ताँबे एवं पीतल उद्योग के लिए प्रसिद्ध था ?
   (A) बम्बई, कलकत्ता, पूना
   (B) अहमदाबाद, दिल्ली और नासिक
   (C) बनारस, पूना, नासिक
   (D) बनारस, आगरा और लखनऊ

135. निम्नलिखित में कौन तुगलक वंश के शासक हैं ?
   (1) गयासुद्दीन तुगलक
   (2) गयासुद्दीन तुगलक शाह द्वितीय
   (3) नासिरुद्दीन मुहम्मद
   (4) अलाउद्दीन सिकन्दर शाह
   (5) नासिरुद्दीन महमूद तुगलक
   (A) केवल 1 (B) 1 एवं 5
   (C) 1, 3 एवं 5 (D) 1, 2, 3, 4 एवं 5

136. 'शशगनी' नाम के सिक्कों का प्रचलन करवाया–
   (A) शेरशाह सूरी (B) शाहजहाँ
   (C) मुहम्मद गौरी (D) फिरोज तुगलक

137. जफरनामा व मलफूजात तैमूरी के अनुसार भारत पर तैमूर आक्रमण का मूल उद्देश्य था–
   (A) भारत पर विजय कर साम्राज्य क्षेत्र को बढ़ाना
   (B) भारत की अपार सम्पदा के प्रति लालच एवं उसकी लूट
   (C) काफिरों का संहार
   (D) उपर्युक्त तीनों

138. लोदी वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक था–
   (A) बहलोल लोदी (B) सिकन्दर शाह लोदी
   (C) इब्राहीम लोदी (D) दौलत खाँ लोदी

139. 1526 ई. में हुए पानीपत के प्रथम युद्ध के समय दिल्ली का सुल्तान था–
   (A) सिकन्दर लोदी (B) बहलोल लोदी
   (C) इब्राहीम लोदी (D) दौलत खाँ लोदी

140. निम्नलिखित में से कौनसी योजना मुहम्मद बिन तुगलक से सम्बन्धित नहीं है ?
   (A) दोआब में कर वृद्धि
   (B) राजधानी का परिवर्तन
   (C) ताँबे के सिक्कों का प्रचलन
   (D) बाजार नियन्त्रण

141. नीचे कथन A एवं कारण R दिया गया है. उस पर विचार करते हुए सत्य कूट का चयन कीजिए–
   कथन (A) : 14वीं शताब्दी के अन्त तक तुगलक साम्राज्य अन्तिम साँस ले रहा था.
   कारण (R) : 1398 में तैमूर लंग का भारत पर आक्रमण हुआ.
   कूट :
   (A) A एवं R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है.
   (B) A एवं R दोनों सही हैं तथा R, A की व्याख्या नहीं करता है.
   (C) A सही है तथा R गलत है.
   (D) A गलत है तथा R सही है.

142. महान् मौर्य शासक सम्राट् अशोक के स्तम्भों को, जो टोपरा व मेरठ में स्थित थे, दिल्ली मँगवाने का श्रेय किस सुल्तान को है ?
   (A) अलाउद्दीन खिलजी (B) मुहम्मद बिन तुगलक
   (C) फिरोज तुगलक (D) इब्राहीम लोदी

143. जौनपुर में शर्की वंश की नींव डाली–
(A) ख्वाजा जहाँ ने
(B) मलिक करनफूल ने
(C) इब्राहीमशाह शर्की ने
(D) मुबारकशाह ने

144. दिल्ली सल्तनत में सबसे लम्बी अवधि तक किस वंश का शासन रहा ?
(A) मामलूक वंश (B) खिलजी वंश
(C) तुगलक वंश (D) लोदी वंश

145. निम्नलिखित में से कौनसा लोदी शासक हिन्दू माँ का बेटा था ?
(A) बहलोल लोदी (B) सिकन्दर लोदी
(C) इब्राहीम लोदी (D) मुहम्मद बिन तुगलक

146. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने स्वयं को ईरानी शासक 'अफराशियाब' के वंश का घोषित किया था ?
(A) इल्तुतमिश (B) बलबन
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) फिरोज तुगलक

147. भारत के 'शीराज' की उपाधि मिली थी ?
(A) हिसार (B) आगरा
(C) दिल्ली (D) जौनपुर

148. सिकन्दर शाह लोदी के समय चार प्रमुख सरदार थे, जिनके नाम सूची-I में तथा जागीरें सूची-II में दी गई हैं. सुमेलित कीजिए–

सूची-I (सरदार)	सूची-II (जागीर)
(a) महमूद खाँ	(1) कालपी
(b) मियाँ आलम	(2) इटावा व चन्दावर
(c) मुबारक खाँ	(3) लखनऊ
(d) दौलत खाँ	(4) लाहौर

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	1	3	2	4
(C)	2	3	1	4
(D)	4	3	2	1

149. सिकन्दर लोदी ने 1504 ई. में आगरा नगर की नींव डाली, क्योंकि–
(A) उसे नगर बसाने का शौक था.
(B) दिल्ली की अपेक्षा आगरा जलवायु की दृष्टि से ज्यादा अच्छा था.
(C) वह इटावा, बयाना, ग्वालियर एवं धौलपुर आदि जागीरों पर अधिक नियन्त्रण चाहता था.
(D) उपर्युक्त दिया गया कोई तथ्य सत्य नहीं है.

150. निम्नलिखित में से किस सुल्तान के विषय में बरनी लिखता है कि एक ही समय पर वह सुलेमान एवं सिकन्दर दोनों था ?
(A) गयासुद्दीन तुगलक (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज शाह तुगलक

151. निम्नलिखित में से किसे धनवानों का राजकुमार कहा जाता है ?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) सिकन्दर लोदी

152. फिरोज तुगलक ने निम्नलिखित में से किसे 'खाने जहाँ' (विश्व का स्वामी) की उपाधि से नवाजा था ?
(A) कुन्नू या खाने जहाँ मकबूल
(B) हिसामुद्दीन
(C) खुशख शाह
(D) रेहान

153. दिल्ली सल्तनत का वह कौनसा सुल्तान था, रिश्वत देने के कारण जिसके व्यक्तित्व पर चोट पहुँची ?
(A) फिरोज तुगलक (B) जलालुद्दीन खिलजी
(C) खिज्र खाँ (D) मुबारक शाह खिलजी

154. सूची-I में सुल्तान एवं सूची-II में वंश का नाम दिया गया है. सही ढंग से मिलान कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) गाजी मलिक	(1) लोदी वंश
(b) खिज्र खाँ	(2) तुगलक वंश
(c) रजिया	(3) सैय्यद वंश
(d) निजाम खाँ	(4) शम्सी वंश

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	2	1	3	4
(D)	2	3	4	1

155. सल्तनतकाल में स्वर्णद्वारी क्या था ?
(A) दिल्ली का एक स्थान, जहाँ सुल्तान घूमने टहलने जाते थे.
(B) मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा बनवाया गया कन्नौज के निकट एक शिविर.
(C) फिरोज तुगलक के महल का नाम.
(D) बलबन का सिंहासन.

156. सैय्यद वंश के संस्थापक खिज्र खाँ ने निम्नलिखित में से कौनसी उपाधि ग्रहण की ?
(A) जिल्ले इलाही (B) सिकन्दर-ए-सानी
(C) रैय्यत-ए-आला (D) लाख बक्श

157. इब्नेबतूता भारतवर्ष कब आया ?
(A) 1320 ई. (B) 1333 ई.
(C) 1420 ई. (D) 1442 ई.

158. सैय्यदवंशीय सुल्तानों को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए–
(A) खिज्र खाँ, मुबारक शाह, मुहम्मद शाह, अलाउद्दीन आलम शाह
(B) खिज्र खाँ, मुहम्मद शाह, मुबारक शाह, अलाउद्दीन आलमशाह
(C) खिज्र खाँ, मुबारक शाह, अलाउद्दीन आलमशाह, मुहम्मद शाह
(D) मुबारक शाह, मुहम्मद शाह, खिज्र खाँ, अलाउद्दीन आलमशाह

159. खाने जहाँ मकबूल के सन्दर्भ में कुछ कथन दिये गये हैं, इनमें से सत्य कथनों पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिए–
I. खाने जहाँ मकबूल तेलंगाना का हिन्दू था.
II. अपने कर्मों के द्वारा कुछ समय तक फिरोज तुगलक का प्रधानमंत्री रहा.
III. वह एक कुशल प्रशासक था.
IV. वह भोग विलासी नहीं था.
(A) I, II एवं III सत्य है
(B) II, III एवं IV सत्य है
(C) II एवं III सत्य है
(D) I, II, III एवं IV सत्य है

160. निम्नलिखित में कौनसा सही सुमेलित नहीं है ?
(A) इब्राहीम शर्की – जौनपुर
(B) अहमदशाह – गुजरात
(C) हुसंगशाह – मालवा
(D) अलाउद्दीन हुसैनशाह – आन्ध्र प्रदेश

161. कल्हण की राजतरंगिणी के विषय में कुछ कथन दिये गये हैं. इनमें से असत्य कूट का चयन कीजिए–
(A) यह उर्दू एवं डोगरी में लिखी गई.
(B) यह रचना आठ वर्गों में विभक्त है, जिसमें 8000 से ऊपर श्लोक हैं.
(C) इसमें कश्मीर के विभिन्न राजवंशों की सूची मिलती है.
(D) कल्हण ने अपने से पूर्व के 11 विद्वानों का उल्लेख किया है.

162. 'दीवान-ए-मुस्तखराज' विभाग की स्थापना हुई–
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) जलालुद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

163. अन्तिम अब्बासी खलीफा का वध करने वाला व्यक्ति था–
(A) चंगेज खाँ (B) हलाकू
(C) आहोमन शासक (D) मंगबरनी

164. 'विजारत' का चरमोत्कर्ष रूप दिखाई देता है–
(A) मामलूकाल (B) खिलजीकाल
(C) तुगलककाल (D) लोदीकाल

165. कश्मीर की वूलर झील में 'जैना लंका' नामक द्वीप का निर्माण कराया–
(A) अशोक (B) कनिष्क
(C) जहाँगीर (D) जैन-उल-ओबेदीन

166. निम्नलिखित में से कौनसा इतिहासकार तैमूर आक्रमण के समय था ?
(A) मिनहाज-उस-सिराज (B) जियाउद्दीन बरनी
(C) अमीर खुसरो (D) शम्स-ए-शिराफ

167. सल्तनतकालीन चार महत्वपूर्ण विभाग थे–
(A) दीवाने विजारत, दीवाने आरिज, दीवाने अमीरकोही, दीवाने इंशा
(B) दीवाने आरिज, दीवाने वकूफ, दीवाने अमीरकोही, दीवाने मुस्तखराज
(C) दीवाने विजारत, दीवाने आरिज, दीवाने इंशा, दीवाने रसालत
(D) दीवाने रसालात, दीवाने इंशा, दीवाने मुस्तखराज, दीवाने वकूफ

168. सल्तनत काल में वजीर के कार्यालय को कहा जाता था–
(A) दीवाने-ए-विजारत (B) दीवान-अ-आरिज
(C) दीवान-ए-इंशा (D) दीवान-ए-रसालात

169. निम्नलिखित में से कौन-कौन दीवाने-ए-विजारत का अंग था ?
(1) दीवान-ए-वकूफ (2) दीवान-ए-मुस्तखराज
(3) दीवान-ए-अमीरकोही (4) दीवान-ए-इंशा
(A) केवल 2 (B) 1 एवं 2
(C) 1, 2 एवं 3 (D) 1, 2, 3 एवं 4

170. 'तबकात-ए-नासिरी' का लेखक था–
(A) जियाउद्दीन बरनी (B) मिनहास-उस-सिराज
(C) शम्स-ए-सिराज (D) अमीर खुसरो

171. निम्नलिखित में से कौनसी हसन निजामी की कृति है ?
(A) तबकात-ए-नासिरी
(B) तारीख-ए-मसूदी
(C) ताज-उल-मासिर
(D) तारीख ए सलातीन अफगाना

172. निम्नलिखित में से किसने विख्यात पारसी त्यौहार नौरोज का प्रचलन किया ?
(A) इल्तुतमिश (B) बलबन
(C) सिकन्दरशाह (D) इब्राहीमशाह शर्की

173. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने उलेमा गतिविधियों को सीमित किया ?
(A) बलबन (B) रजिया
(C) फिरोज तुगलक (D) अलाउद्दीन खिलजी

174. दिल्ली का वह कौनसा प्रथम सुल्तान था, जिसने हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद कराया ?
(A) इल्तुतमिश (B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) फिरोज तुगलक (D) सिकन्दर शाह लोदी

175. फिरोज तुगलक के सिक्कों पर निम्नलिखित में से किन खलीफाओं के नाम उत्कीर्ण हैं ?
(1) अलकाकिन (2) अलमुताजिद
(3) अलमुतावक्किल (4) अलमुस्तकिफे
(A) केवल 1 (B) 1 एवं 2
(C) 1, 2 एवं 3 (D) 1, 2, 3 एवं 4

176. सर्वप्रथम सुल्तान की उपाधि से विभूषित होने वाला शासक था–
(A) चंगेज खाँ (B) हलाकू
(C) आहोमन शासक (D) मंगबरनी

177. निम्नलिखित में से किस सुल्तान के समय वजीर की शक्तियाँ निम्नतम बिन्दु पर जा पहुँची ?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

178. निम्नलिखित में से किस सुल्तान के काल में वजीर की सहायता के लिए एक नया कार्यालय 'वकील-ए-सुल्तान' की स्थापना की गई ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) मुहम्मद बिन तुगलक
(D) नासिरुद्दीन महमूद तुगलक

179. अहमदाबाद नगर की स्थापना की–
(A) अहमदशाह प्रथम (B) हुसंगशाह
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) औरंगजेब

180. सल्तनतकालीन भारतीय इतिहास की जानकारी का स्रोत है–
(1) किताबुल हिन्द (2) तबकात-ए-नासिरी
(3) तुजुक-ए-जहाँगीरी (4) तारीख-ए-फिरोजशाही
(5) तुजक-ए-बाबरी
(A) 1, 2 एवं 3 (B) 2, 3 एवं 4
(C) 2, 4 एवं 5 (D) 3, 4 एवं 5

181. निम्नलिखित में कौनसा सही सुमेलित नहीं है ?
(A) मुफ्ती – धर्म का व्याख्याता
(B) बरीद-ए-मुमालिक – बाजार पर नियन्त्रण
(C) अमीर-ए-आखुर – अश्वशाला पर नियन्त्रण
(D) शाहना-ए-पील – हस्तिशाला प्रमुख

182. गुजरात का शासक फतह खाँ को जाना जाता था–
(A) मलिक (B) महमूद बेंगडा
(C) खाने-जहाँ-मकबूल (D) हसन गांगू

183. सिकन्दर लोदी का वजीर था–
(A) मियाँ भुआ (B) खाने जहाँ मकबूल
(C) मलिक काफूर (D) ख्वाजा हसन बारी

184. मुहम्मद बिन तुगलक के सिक्के पर किस खलीफा का नाम मिलता है ?
(A) अल मुस्तसिम (B) अल मुस्तकिफि
(C) अल हाकिम (D) अल मुताजिद

185. दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत उलेमा वर्ग था–
(A) इस्लामी सिद्धान्तों का व्याख्याकार
(B) सुल्तान के सलाहकार
(C) सेना की टुकड़ी
(D) विजारत का एक अंग

186. 'विजारत' की अवधारणा अब्बासी खलीफाओं ने कहाँ से ग्रहण की ?
(A) मिस्र (B) फारस
(C) भारत (D) चीन

187. निम्नलिखित में से कौनसा पहला विदेशी मुस्लिम विद्वान है, जिसने भारत के धर्म, समाज एवं विज्ञान की विस्तृत जानकारी अपनी रचना में दी थी ?
(A) अमीर खुसरो (B) जियाउद्दीन बरनी
(C) अलबेरूनी (D) अबुल फजल

188. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) दीवान-ए-अर्ज	(1) पत्राचार विभाग
(b) दीवान-ए-इंशा	(2) सैन्य विभाग
(c) दीवान-ए-बंदगान	(3) दान विभाग
(d) दीवान-ए-खैरात	(4) दास विभाग

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	2	3	1	4
(D)	4	2	1	3

189. निम्नलिखित में से किस इतिहासकार ने लिखा है कि तुगलक काल में वजीर के पद का न केवल महत्त्व बढ़ा बल्कि फिरोज के समय चरम शिखर पर पहुँची ?
(A) अमीर खुसरो (B) जियाउद्दीन बरनी
(C) शम्स-ए-शिराज (D) मिनहास-उस-सिराज

190. 'गैर इस्लामी प्रथाओं को स्वीकृत किये बिना सार्वभौम सत्ता सम्भव नहीं हो पाती.' उक्त कथन किसका है ?
(A) अमीर खुसरो (B) जियाउद्दीन बरनी
(C) बलबन (D) मिनहास-उस-सिराज

191. निम्नलिखित में से कौनसा सही सुमेलित नहीं है ?
(A) फतवा-ए-जहाँदारी – जियाउद्दीन बरनी
(B) किताब-उर-रेहला – अलबरूनी
(C) किताब-उल-यमीनी – उत्बी
(D) फतूह-उस-सलातीन – ख्वाजा अबू मलिक

192. बहमनी राज्य की स्थापना 1347 ई. में किसने की ?
(A) हरिहर एवं बुक्का (B) हसन गंगू
(C) अहमदशाह (D) महमूद शाह

193. निम्नलिखित में से कौनसा सुल्तान/सुल्तानों को 'नासिर-ए-अमीर-उल-मोमिनीन' (खलीफा का सहायक) घोषित किया ?
(1) इल्तुतमिश (2) अलाउद्दीन खिलजी
(3) मुबारक खिलजी (4) गयासुद्दीन तुगलक
(5) मुहम्मद बिन तुगलक (6) फिरोज तुगलक
(A) 1 एवं 2 (B) 1, 2 एवं 3
(C) 2 एवं 4 (D) 2, 5 एवं 6

194. निम्नलिखित में से कौनसा सही सुमेलित है ?
(A) खानदेश – बुरहानपुर
(B) बहमनी राज्य – बंगाल
(C) शर्की वंश – लाहौर
(D) कुत्बी वंश – जौनपुर

195. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने अपनी आत्मकथा लिखी थी ?
(A) इल्तुतमिश (B) फिरोज तुगलक
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) नासिरुद्दीन तुगलक

196. दिल्ली का वह कौनसा प्रथम सुल्तान था, जिसने खिलाफत का विरोध कर स्वयं को खलीफा घोषित किया ?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुबारक खिलजी (D) मुहम्मद बिन तुगलक

197. सूची-I में सुल्तान का नाम तथा सूची-II में वजीरों के नाम दिये गये हैं, इनको सुमेलित कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) इल्तुतमिश	(1) निजामुलमुल्क मु. जुनैदी
(b) बलबन	(2) ख्वाजा हसन बसरी
(c) जलालुद्दीन खिलजी	(3) ख्वाजा खातिर
(d) अलाउद्दीन खिलजी	(4) ताजुलमुल्क काफुरी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	2	3	4	1
(D)	4	3	2	1

198. 'दीवान-ए-वकूफ' की स्थापना की गई–
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) जलालुद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

199. निम्नलिखित में से किसके समय में अमीरों का प्रभुत्व चरम सीमा पर हो गया ?
(A) खिलजी (B) तुगलक
(C) सैयद (D) लोदी

200. निम्नलिखित में से किस तुगलक बादशाह ने मिस्र के अब्बासी खलीफा से मान्य-पत्र तथा मालक सूचक वस्त्र प्राप्त किये थे ?
(A) गयासुद्दीन तुगलक
(B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) फिरोज तुगलक
(D) नासिरुद्दीन महमूद तुगलक

201. "मैं नहीं जानता कि यह विधि के अनुरूप है या नहीं, मैं केवल राज्य के कल्याण को ध्यान में रखकर ही सभी आज्ञाएँ देता हूँ." उपरोक्त कथन है–
(A) मुहम्मद बिन तुगलक
(B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुबारक शाह खिलजी
(D) सिकन्दर लोदी

202. भारत पर तुर्की विजय की प्रारम्भिक जानकारी मिलती है–
(A) तबकात-ए-नासिरी से

(B) तारीख-ए-फिरोजशाही से
(C) फतवा-ए-जहाँदारी से
(D) फुतहु-अस-सलातीन से

203. निम्नलिखित में से कौनसी अमीर खुसरो की रचना/रचनाएँ हैं ?
(1) आशिका (2) चूह सिपिहर
(3) तुगलकनामा (4) खजाइन-उल-फुतूह
(5) किरान-उस-सादेन
(A) 1 एवं 2 (B) 2 एवं 4
(C) 1, 3, 4 एवं 5 (D) 1, 2, 3, 4 एवं 5

204. संस्कृत विद्वान उदयन राजा निम्नलिखित में से किसका दरबारी कवि था ?
(A) महमूद बेंगडा (B) मलिक अम्बर
(C) इब्राहीम शाह शर्की (D) हुसंगशाह

205. निम्नलिखित में से किस सुल्तान के दरबार में दासों की संख्या सबसे अधिक थी ?
(A) इल्तुतमिश (B) बलबन
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) मुबारक शाह खिलजी

206. निम्नलिखित कथनों में से कौनसा कथन सुल्तानों के सन्दर्भ में असत्य है ?
(A) सुल्तान पूर्ण रूप से निरंकुश शासक था.
(B) राज्य की सम्पूर्ण शक्तियाँ उसके हाथ में केन्द्रित थीं.
(C) उलेमा वर्ग का सुल्तान पर नियन्त्रण रहता था.
(D) सुल्तान प्रधान कार्यकारी तथा प्रधान न्यायाधीश का अधिकार रखता था.

207. 'मुशरिफ-ए-मुमलिक' और 'मुस्तौफी-ए-मुमलिक' निम्नलिखित में से किसके अंग थे ?
(A) वित्त विभाग
(B) सैन्य विभाग
(C) सुल्तान के निजी कर्मचारी
(D) धार्मिक विभाग

208. सल्तनतकाल में 'मजलिस-ए-खलवत्' थी–
(A) एक प्रकार की मंत्रिपरिषद्
(B) उलेमा वर्ग का संगठन
(C) उलेमाओं की बस्ती
(D) सेना विभाग

209. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने दौलताबाद का क्षेत्र एक साहूकार को 13 करोड़ में ठेके पर दिया था ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) फिरोज तुगलक (D) अलाउद्दीन बहमनशाह

210. सल्तनत कालीन धार्मिक कर थे–
(1) जजिया (2) जकात
(3) सदका (4) खराज
(5) खम्स
(A) केवल 1 (B) 2 एवं 3
(C) 1, 2 एवं 3 (D) 3, 4 एवं 5

211. सर्वाधिक मंगोल आक्रमण किस सुल्तान के समय में हुए ?
(A) इल्तुतमिश (B) बलबन
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) फिरोज तुगलक

212. सल्तनतकाल में भू-राजस्व निर्धारण के तरीका/तरीके प्रचलित थे–
(A) बटाई (B) मसाहत
(C) मुक्ताई (D) उक्त सभी

213. 'उश्र' क्या था ?
(A) मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमिकर.
(B) मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर.
(C) हिन्दुओं से लिया जाने वाला भूमिकर.
(D) हिन्दुओं से लिया जाने वाला धार्मिक कर.

214. 'उश्र कर' की निर्धारित दरें थीं–
(A) 10 से 20% (B) 20 से 30%
(C) 30 से 40% (D) 30 से 50%

215. सल्तनतयुगीन वित्तनीति आधारित थी–
(A) सुन्नी विधिवेत्ताओं के हनीफीशाखा सिद्धान्त पर
(B) फारसी शासकों के सिद्धान्त पर
(C) रोमन शासकों के सिद्धान्त पर
(D) प्राचीनकालीन भारतीय राजाओं के सिद्धान्त पर

216. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए–

सूची-I (प्रशासन इकाई)	सूची-II (मुखिया)
(a) प्रान्त	(1) शिकादार
(b) जिला	(2) वली
(c) परगना	(3) मुकद्दम
(d) गाँव	(4) फौजदार

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	4	3	2	1
(D)	4	2	3	1

217. 'फिकह' शब्द का तात्पर्य है–
(A) कानून की व्याख्या
(B) इस्लामी धर्मशास्त्र
(C) आरामशाह
(D) नमाज अदा करने का स्थान

218. सल्तनतकाल में मुकता प्रथा क्या थी ?
(A) अनुदान में दी जाने वाली जमीन
(B) ठेके पर दी जाने वाली जमीन
(C) सैनिक सेवा के बदले दी जाने वाली जमीन
(D) उक्त सभी

219. अक्ता पर केन्द्रीय नियन्त्रण छोड़ देने का प्रचलन किस सुल्तान के समय में प्रारम्भ हुआ ?
(A) मुहम्मद विन तुगलक (B) फिरोज तुगलक
(C) खिज्र खाँ (D) सिकन्दर लोदी

220. निम्नलिखित में से कौन हिन्दू माँ की सन्तान हैं ?
(1) फिरोज तुगलक (2) गयासुद्दीन तुगलक
(3) मुहम्मद विन तुगलक (4) सिकन्दर लोदी
(5) अलाउद्दीन खिलजी
(A) केवल 4 (B) 3 एवं 4
(C) 1 एवं 5 (D) 2, 3, 4

221. लोदी सुल्तान निम्नलिखित में से किस नस्ल के थे ?
(A) अरब (B) पर्सियन
(C) तुर्क (D) अफगान

222. मुकद्दम, खुत तथा चौधरी किस स्तर के राजकीय कर्मचारी थे ?
(A) जिला स्तर के (B) परगना स्तर के
(C) प्रान्त स्तर के (D) ग्रामीण स्तर के

223. निम्नलिखित में से कौनसा सही सुमेलित नहीं है ?
(A) चंगेज खाँ – इल्तुतमिश
(B) हुलाकू – नासिरुद्दीन महमूद
(C) तैमूर खाँ – बलवन
(D) कुतलुग ख्वाजा – जलालुद्दीन खिलजी

224. सबसे भयंकर मंगोल आक्रमण कब हुआ ?
(A) 1299 ई. (B) 1305 ई.
(C) 1285 ई. (D) 1328-29 ई.

225. सल्तनतकाल में प्रान्तपति की संज्ञा थी–
(A) सूबेदार (B) गवर्नर
(C) वली (D) नायक

226. सल्तनतकाल में 'हाब-ए-शर्ब' क्या था ?
(A) गृहकर (B) चारागाह कर
(C) सिंचाई कर (D) चुंगी कर

227. भारत में इक्ता का प्रचलन विधिवत् किस सुल्तान के समय में प्रारम्भ हुआ ?
(A) मुहम्मद गौरी (B) कुतुबुद्दीन ऐबक
(C) इल्तुतमिश (D) बलबन

228. अक्ता प्राप्त अधिकारियों को कहा जाता था–
(A) मुक्ता (B) अमीर
(C) मलिक (D) उक्त सभी

229. रिश्वत और बेईमानी को रोकने के लिए निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने लगान अधिकारियों के वेतन में वृद्धि की ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) मुहम्मद विन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

230. 'तारीखे-फिरोजशाही' का रचनाकार है–
(A) जियाउद्दीन बरनी (B) शम्स-ए-शिराज
(C) अमीर खुसरो (D) अ और ब

231. दिल्ली का वह कौनसा सुल्तान था, जिसने सर्वप्रथम सिंचाई कर लगाया ?
(A) रजिया (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) गयासुद्दीन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

232. 'खम्स' क्या है ?
(A) लूट का धन
(B) कृषि पर कर
(C) हिन्दुओं पर लगाया गया कर
(D) तीर्थ यात्रा कर

233. 'खम्स' के बारे में क्या सत्य है ?
(A) यह एक प्रकार का लूट का धन था
(B) यह एक धर्म निरपेक्ष कर था
(C) सामान्यतया लूट का 4/5 भाग सैनिकों में बाँट दिया जाता था
(D) उपर्युक्त सभी सत्य है

234. मंगोल आक्रमणों ने दिल्ली सुल्तानों की किस नीति पर सर्वाधिक प्रभाव डाला ?
(A) धार्मिक नीति (B) सैनिक नीति
(C) आर्थिक नीति (D) गृह नीति

235. निम्नलिखित में से किस प्रकार की भूमि पर राज्य कोई कर नहीं लगाता था ?
(1) खालसा (2) अक्ता
(3) मिल्क (4) वक्फ
(5) इनाम
(A) 1 एवं 2 (B) 2 एवं 3
(C) 3, 4 एवं 5 (D) उक्त सभी

236. किस सुल्तान ने सर्वप्रथम अकालग्रस्त लोगों को सहायता प्रदान करने के लिए अकाल संहिता तैयार की ?
(A) इल्तुतमिश (B) बलवन
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) मुहम्मद बिन तुगलक

237. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने एक वस्त्र निर्माण-शाला की स्थापना करवाई, जहाँ 400 जुलाहे काम करते थे ?
(A) मुहम्मद बिन तुगलक (B) फिरोज तुगलक
(C) सिकन्दर शाह लोदी (D) इब्राहीम लोदी

238. ब्राह्मणों पर जजिया कर सर्वप्रथम किसने लगाया ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) फिरोज तुगलक (D) सिकन्दर लोदी

239. "अनाज के भण्डार में आग लगाकर तथा उनके मवेशियों को हड़पकर हिन्दू विद्रोहियों को नष्ट कर दें, जिन्होंने राज्य की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा किया." उक्त फरमान किस सुल्तान का था ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) बलबन
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

240. किस सुल्तान ने बागवानी क्षेत्र में अधिक रुचि ली ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) फिरोज तुगलक (D) खिज्र खाँ

241. सर्वप्रथम किस सुल्तान ने कर का निर्धारण भूमि की पैदाइश के आधार पर किया ?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) गयासुद्दीन तुगलक (D) मुहम्मद बिन तुगलक

242. प्रश्न संख्या 239 में उद्धृत फरमान कहाँ के लिए जारी हुआ था ?
(A) सिन्ध (B) जाजनगर
(C) दोआब (D) बंगाल

243. सल्तनतकालीन केन्द्रीय सेना कहलाती थी–
(A) बंदगान-ए-खास (B) हश्म-ए-कल्ब
(C) हश्म-ए-अतरफ (D) सवार-ए-कल्ब

244. फिरोजशाह के राजस्व पदाधिकारी ख्वाजा हिसामुद्दीन ने खालसा भूमि का राजस्व निश्चित किया था–
(A) पाँच करोड़ टंका
(B) छः करोड़ पचासी लाख टंका
(C) साढ़े सात टंका
(D) 10 करोड़ टंका

245. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने तुगलकाबाद शहर बसाया ?
(A) गयासुद्दीन तुगलक
(B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) फिरोज तुगलक
(D) खिज्र खाँ

246. अलाउद्दीन खिलजी ने अधिशेष राशि सरकारी कोष में ही जमा की जाय, इसके लिए किन अधिकारियों की नियुक्ति की ?
(A) बरीद (B) शहना-ए-मंडी
(C) नवसिंद एवं सरहंग (D) दीवान-ए-रसालात

247. नीचे दिये गये तथ्यों में से कौनसा तथ्य खालसा के विषय में असत्य है ?
(A) सीधे केन्द्रीय नियन्त्रण की भूमि खालसा कहलाती थी.
(B) खालसा क्षेत्र का प्रशासन अक्ता प्रणाली से भिन्न था.
(C) खालसा भूमि की आय उलेमा वर्ग के जीवनयापन के लिए थी.
(D) खालसा क्षेत्र के राजस्व की वसूली अर्थ विभाग के कर्मचारी करते और सीधे शाही खजाने में जमा करते थे.

248. मंगोल किस धर्म के अनुयायी थे ?
(A) इस्लाम (B) ईसाई
(C) बौद्ध (D) यहूदी

249. निम्नलिखित में से किस / किन विदेशी यात्रियों से सल्तनतकालीन इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है ?
(1) इब्नेबतूता (2) मार्कोपोलो
(3) निकितिन (4) फ्रेडरिक सीजर
(5) राल्फपिच
(A) केवल 1 (B) 1 एवं 2
(C) 1, 2 एवं 3 (D) 3, 4 एवं 5

250. सुल्तान की शक्ति का वास्तविक स्रोत था–
(A) सैनिक शक्ति
(B) उलेमा वर्ग का समर्थन
(C) जनता का समर्थन
(D) अपार धन सम्पत्ति का होना

251. निम्नलिखित में से कौन-कौनसे राजस्व कर्मचारी थे ?
(1) वजीर (2) नायब वजीर
(3) वकूफ (4) नवीसंद
(5) पटवारी
(A) केवल 1 (B) 1, 2 एवं 3
(C) 1, 2 एवं 5 (D) 1, 2, 3, 4 एवं 5

252. निम्नलिखित में से किस सुल्तान के समय में मंगोल आक्रमण नहीं हुआ ?
(A) इल्तुतमिश (B) वलवन
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) फिरोज तुगलक

253. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने 24 विवादग्रस्त एवं अन्याय संगत करों को वन्द किया ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) फिरोज तुगलक (D) सिकन्दर लोदी

254. निम्नलिखित में से कौन चित्तौड़ अभियान के दौरान अलाउद्दीन खिलजी के साथ गया था ?
(A) निनहाज सिराज (B) अलबेरूनी
(C) अमीर खुसरो (D) जियाउद्दीन वरनी

255. निम्नलिखित में से कौन सही सुमेलित नहीं है ?
(A) कुरान – इस्लाम धर्म का सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ
(B) हदीस – पैगम्बर के कथनों एवं कार्यों का विवेचन
(C) इजमा – मुजतहिदों द्वारा व्याख्या किया गया कानून
(D) कयास – अनुमान के आधार पर व्याख्यापित कानून

256. निम्नलिखित में से कौन-कौनसे शासक नहरों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध थे ?
(1) इल्तुतमिश (2) अलाउद्दीन खिलजी
(3) बलबन (4) गयासुद्दीन तुगलक
(5) मुहम्मद बिन तुगलक (6) फिरोज तुगलक
(A) 1 एवं 2 (B) 2 एवं 5
(C) 3 एवं 4 (D) 4 एवं 6

257. मुस्लिम कानून के प्रमुख स्रोत कौन हैं ?
(1) कुरान (2) हदीस
(3) इजमा (4) कयास
(A) केवल 1 (B) 1 एवं 2
(C) 1, 2 एवं 3 (D) 1, 2, 3 एवं 4

258. निम्नलिखित में से किस सुल्तान के काल में भू-राजस्व दर सबसे अधिक थी ?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

259. मुहम्मद बिन तुगलक के समय में निम्नलिखित में से कौन चीन गया था ?
(A) जियाउद्दीन बरनी (B) अमीर खुसरो
(C) इब्नेबतूता (D) निकितिन

260. इब्नेबतूता ने निम्नलिखित में से कहाँ के गवर्नर को सूखे मेवे व बादाम भेंट स्वरूप दिये थे ?
(A) थट्टा (B) बंगाल
(C) मुल्तान (D) सिन्ध

261. बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के विरुद्ध रावर्ट क्लाइव ने एक षड्यंत्र रचा. निम्नलिखित में से किसने इस षड्यंत्र में भाग लिया ?
(A) मीर जाफर, मीर कासिम
(B) मीर जाफर, अमीर चन्द्र
(C) मीर जाफर, मीर कासिम तथा अमीर चन्द्र
(D) मीर कासिम, अमीर चन्द्र

262. आववाव क्या थे ?
(A) उपकर (B) स्मारक
(C) पुरस्कार (D) राजस्व सिद्धान्त

263. 'माहुआँ' नामक चीनी यात्री भारत में कब आया ?
(A) 1206 ई. में (B) 1306 ई. में
(C) 1406 ई. में (D) 1506 ई. में

264. सल्तनतकालीन प्रशासन में 'बरीद-ए-मुमलिक' था–
(A) गुप्तचर विभाग का मुख्य अधिकारी
(B) सेना प्रमुख
(C) प्रान्तीय प्रमुख
(D) बाजार का निरीक्षक

265. सल्तनतकालीन ग्रन्थों में अनारों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध बताया गया है–
(A) कन्नौज (B) जोधपुर
(C) कश्मीर (D) देवल

266. मुहम्मद बिन तुगलक के विषय में कौनसा कथन सत्य है ?
(A) वह एक विद्वान सुल्तान था
(B) उसके द्वारा अपनाई गई सारी नीतियाँ सफल रहीं
(C) उसने कृषि क्षेत्र में कोई सुधार नहीं किया
(D) उसके समय में कोई विद्रोह नहीं हुआ

267. कुतुबनुमा का प्रयोग प्रारम्भ हुआ–
(A) 11वीं शताब्दी (B) 12वीं शताब्दी
(C) 13वीं शताब्दी (D) 14वीं शताब्दी

268. तुर्क सेनापति, जिसने विक्रमशिला और नालन्दा विश्व-विद्यालयों को नष्ट किया, कौन था ?
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) बख्तियार खिलजी
(C) बलबन (D) इल्तुतमिश

269. निम्नलिखित में से कौनसा कल्याणकारी कार्य फिरोज तुगलक द्वारा नहीं कराया गया ?
(A) उसने एक विवाह विभाग बनवाया.
(B) एक रोजगार विभाग की स्थापना की.
(C) उसने खैराती अस्पताल की स्थापना की.
(D) आम जनता को शिक्षित करने के लिए शिक्षा विभाग की स्थापना की.

270. सल्तनतकालीन प्रशासन में 'दीवान-ए-इश्तिकाक' से तात्पर्य था–
(A) पेंशन विभाग
(B) विवाह विभाग
(C) वित्त विभाग का एक अंग
(D) पत्राचार विभाग

271. सल्तनतकाल में 'दलाल-ए-बाजारहा' क्या था ?
(A) क्रय-विक्रय कर (B) चुंगी कर
(C) पथ कर (D) सीमा कर

272. सल्तनतकाल में तरबूज कहाँ से मँगाया जाता था ?
(A) ख्वारिज्म व बुखारा (B) बगदाद
(C) अरब (D) चीन

273. भारत में प्रारम्भिक मुस्लिम आक्रमण के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें–
1. अफगानिस्तान पर आक्रमण एवं हिन्दू शासन समाप्त करने वाला प्रथम तुर्की शासक माकूवहब्न लायम था
2. अरब लोग पंजाब पर विजय प्राप्त नहीं कर सके
3. महमूद गजनवी ने हिन्दू स्थापत्य कला की आलोचना की.
निम्नलिखित में से सत्य कूट का चयन करें–
(A) 1 एवं 2 (B) 2 एवं 3
(C) 1 एवं 3 (D) 1, 2 एवं 3

274. निम्नलिखित में से किस महत्वपूर्ण कार्य के कारण सुल्तान फिरोज की तुलना एक इतिहासकार ने रोमन सम्राट आगस्टस से की थी ?
(A) ब्राह्मणों पर जजिया लगाना.
(B) हिन्दुओं पर अत्याचार करना.
(C) अपने धर्म के लोगों के उत्थान के लिए कार्य करना.
(D) सार्वजनिक निर्माण एवं सिंचाई का प्रबन्ध करना.

275. अलाउद्दीन खिलजी ने सरदारों, अमीरों के विद्रोहों को दमन करने तथा एक सशक्त प्रशासन देने के लिए निम्नलिखित में से कौनसे उपाय अपनाए ?
1. धार्मिक अनुदानों द्वारा तथा भूमि निःशुल्क उपहारों का उन्मूलन किया गया.
2. जासूसी व्यवस्था का संगठन किया.
3. मदिरापान वर्जित कर दिया.
4. सरदारों तथा अमीरों पर सामाजिक सभाओं में जाना तथा अन्तर्जातीय विवाह पर पाबन्दी लगा दी गयी.
(A) 1 एवं 2 (B) 2 एवं 4
(C) 1, 2 एवं 3 (D) 1, 2, 3 एवं 4

276. 'दारुल शफा' का तात्पर्य है–
(A) खैराती अस्पताल (B) दान विभाग
(C) विवाह विभाग (D) दास विभाग

277. भारत में चरखे का प्रचलन शुरू हुआ–
(A) गुप्तकाल (B) पूर्व मध्यकाल
(C) सल्तनतकाल (D) मुगलकाल

278. निम्नलिखित में से किस इतिहासकार ने इल्तुतमिश को भारत में मुस्लिम राज्य का वास्तविक संस्थापक माना है ?
(A) के. ए. निजामी ने (B) आर. पी. त्रिपाठी ने
(C) विन्सेन्ट स्मिथ ने (D) लेनपूल ने

279. अलाउद्दीन के समय बाजार नियन्त्रण से सम्बन्धित अधिकारी थे–
(A) शहना-ए-मंडी, बरीद, मुनहियान एवं मुहतसिब
(B) शहना-ए-मंडी, बरीद, मुनहियान एवं दीवान-ए-रिसायत
(C) शहना, बरीद, कोतवाल एवं मुफ्ती
(D) बरीद, कोतवाल, मुनहियान एवं कोतवाल

280. वह मुस्लिम शासक जिसने सिकन्दर-ए-सानी की उपाधि धारण की कौन था ?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) सिकन्दर लोदी

281. सल्तनतकाल में सर्वाधिक विस्तृत साम्राज्य था–
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) बलबन
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) सिकन्दर शाह लोदी

282. 'खिदमती' क्या है ?
(A) युद्ध में प्राप्त धन का पाँचवाँ भाग
(B) क्रय एवं विक्रय पर लगने वाला कर
(C) हिन्दुओं से लिया जाने वाला गृहकर
(D) पराजित हिन्दू शासकों से लिया जाने वाला कर

283. सूची-I से सूची-II का मिलान कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) दबीर	(1) सचिव
(b) शहना-ए-मंडी	(2) बाजार का निरीक्षक
(c) परवाना नवीस	(3) परमिट देने वाला अधिकारी
(d) मुनहियान	(4) गुप्तचर पुलिस

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	2	4	1	3
(D)	4	3	2	1

284. निम्नलिखित में से कौनसा एक सूफी कवि नहीं था ?
(A) कुतुवन (B) जायसी
(C) अमीर हसन (D) अमीर खुसरो

285. सल्तनतकाल में इत्र के लिए प्रसिद्ध था–
(A) बनारस (B) मुल्तान
(C) ग्वालियर (D) कन्नौज

286. फिरोज तुगलक के समय विद्रोह करने वाला अमीर था–
(A) खान-ए-जहाँ मकबूल
(B) कुतलग खाँ
(C) मलिक शमसुद्दीन दमधनी
(D) नासिरुद्दीन कुवाचा

287. दिल्ली का वह कौनसा सुल्तान था, जिसने भूमि की नाप की आज्ञा निरस्त करके उसके स्थान पर गल्ला बटाई को अपनाया ?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) गयासुद्दीन तुगलक (D) सिकन्दर लोदी

288. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने दिल्ली में नक्षत्र घड़ी, जल घड़ी एवं धूप घड़ी लगवाई ?
(A) नासिरुद्दीन महमूद (B) इल्तुतमिश
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

289. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने दीवान-ए-रियासत नाम का नया विभाग स्थापित किया ?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

290. सल्तनतकालीन पूर्वी भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर था–
(A) सोनारगाँव (B) सतगाँव
(C) उज्जैन (D) ताम्रलिप्ति

291. सल्तनतकाल में आयात की प्रमुख मद थी–
(A) घोड़े (B) सोना व चाँदी
(C) रेशमी वस्त्र (D) मेवे तथा फल

292. किस मुगल सम्राट ने दीवाने-ए-वजीरात ए कुल नाम से नये पद का गठन किया ?
(A) अकबर (B) जहाँगीर
(C) शाहजहाँ (D) औरंगजेब

293. अलाउद्दीन के बाजार नियन्त्रण सम्बन्धी बातों में से निम्नलिखित में से कौनसी असत्य हैं?
(A) उसने रोजमर्रा की लगभग सभी वस्तुओं के दाम निश्चित किये
(B) उसने एक सरकारी बाजार (सराय-ए-आदिल) की स्थापना करवाई.
(C) बाजार नियन्त्रण के लिए नये अधिकारियों की नियुक्ति की.
(D) उसकी बाजार व्यवस्था पूरे साम्राज्य में लागू थी.

294. सल्तनतकाल में निम्नलिखित में से क्या-क्या नया आविष्कार हुआ ?
1. रेशम के कीड़े पालन 2. कालीन उद्योग
3. कुतुबनुमा का प्रयोग 4. रहट
(A) केवल 3 (B) 1 एवं 3
(C) 1, 2 एवं 3 (D) 1, 2, 3 एवं 4

295. नासिरुद्दीन महमूद के विषय में क्या असत्य है ?
(A) वह इल्तुतमिश का पुत्र था.
(B) उसने 20 वर्ष तक नाममात्र का शासन किया.
(C) वह सादगी भरा जीवन पसन्द करता था.
(D) उसके समय में मंगोलों का कोई भय नहीं था.

296. खजाइनुल फुतूह में अमीर खुसरो ने अलाउद्दीन खिलजी के लिए निम्नलिखित में से किन पदवियों का प्रयोग किया ?
1. विश्व का सुल्तान 2. पृथ्वी के शासकों का सुल्तान
3. युग का विजेता 4. जनता का चरवाहा
(A) 1 एवं 3 (B) 1, 2, 3
(C) 1, 2, 3 एवं 4 (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

297. सल्तनतकालीन निर्यात की वस्तु/वस्तुएँ थीं–
1. तलवारें 2. सूती वस्त्र
3. नील 4. मशालें
(A) 2 एवं 4 (B) 1, 2 एवं 4
(C) 1, 3 एवं 4 (D) 1, 2, 3 एवं 4

298. दिल्ली सल्तनत के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. भारत में आयात की जाने वाली वस्तुओं में घोड़े सबसे अधिक महँगे थे.
2. गुजरात से मुख्यतया सीसा, सोना, चाँदी और केसर भारतीय निर्यात की वस्तुएँ थीं.
3. चीन के जहाज बंगाल के बन्दरगाह आते थे.
अधोलिखित कूट से सही उत्तर चुनिए–
(A) 2 एवं 3 (B) 1 एवं 2
(C) 1 एवं 3 (D) 1, 2 एवं 3

299. चरखे का पहला लिखित साक्ष्य मिलता है–
(A) तारीखे-फिरोजशाही (B) खजायनुल फुतूह
(C) तबकाते नासिरी (D) फुतूह-उस-सलातीन

300. "मेरा साम्राज्य बीमार हो गया है और इसका कोई इलाज नहीं है, वैद्य सिरदर्द को ठीक करता है, तो बुखार आ धमकता है, बुखार को ठीक करता है, तो कोई अन्य बीमारी आ धमकती है. मेरे राज्य की भी यही स्थिति है मैं अपने राज्य के एक भाग में असन्तोष को दबाता हूँ, तो दूसरे भाग में वही स्थिति उत्पन्न हो जाती है. फिर मैं सन्देह या कल्पना के आधार पर दण्ड देने के लिए बढ़ता हूँ." उक्त कथन किसका है ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) बलबन
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

301. फिरोज तुगलक की धार्मिक नीति के सन्दर्भ में कुछ कथन दिये गये हैं. इनमें से सही कथन का चयन कीजिए–
1. फिरोज धर्म सहिष्णु सुल्तान था.
2. उसने शिया और सुन्नी में मतभेद नहीं किया.
3. उसने तमाम हिन्दू मन्दिरों को तुड़वाया.
4. उसने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगाया.
5. उसने खलीफा के प्रति सम्मान प्रकट नहीं किया.
(A) 1, 2 एवं 3 (B) 3 एवं 4
(C) 2, 3 एवं 4 (D) 3, 4 एवं 5

302. निम्नलिखित लोदियों में से किसकी माँ हिन्दू थी ?
(A) बहलोल (B) इब्राहीम
(C) सिकन्दर (D) सभी की माँ

303. सल्तनतकाल में कवाजिल शब्द का तात्पर्य था–
(A) काजी को दिया गया अनुदान
(B) ग्रामीण स्तर का सरकारी कर्मचारी
(C) राज्य को प्रेषित अधिशेष राशि
(D) राज्य की भूमि

304. 'जवापित' से क्या तात्पर्य था ?
(A) कृषि दर (B) व्यापार कर
(C) राज्य के कानून (D) दान में दी गई वस्तु

305. भारत से दासों के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाया था–
(A) बलबन (B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) फिरोज तुगलक (D) खिज्र खाँ

306. उस इतिहासकार का नाम बताइये, जिसने भारत का विवरण बिना यहाँ आये हुए ही लिखा था ?
(A) इब्नेबतूता (B) मार्कोपोलो
(C) अलबेरूनी (D) शिहाबुद्दीन अल उमरी

307. अमीर खुसरो किसके निकट था ?
(A) महमूद गजनवी (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) बहलोल लोदी (D) बाबर

308. निम्नलिखित में से किस राजवंश के सुल्तानों ने सामान्यतः खलीफा के नायब के रूप में अपना नाम सिक्कों पर अंकित करवाया ?
(A) मामलूक (B) खिलजी
(C) तुगलक (D) लोदी

309. कौनसा विदेशी यात्री दिल्ली का काजी हुआ था ?
(A) अलबेरूनी (B) इब्नेबतूता
(C) बरनी (D) बर्नियर

310. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने 'आधा' और 'विश्व' नामक सिक्के जारी किये ?
(A) इल्तुतमिश
(B) बलबन
(C) मुबारक शाह खिलजी
(D) फिरोज तुगलक

311. निम्नलिखित में से किन क्षेत्रों से दिल्ली सल्तनत को राजस्व मिलता था ?
1. जजिया 2. जकात
3. खम्स 4. उश्र
5. खराज 6. तरकात
(A) 1 एवं 5 (B) 2, 3 एवं 5
(C) 1, 2, 3 एवं 5 (D) सभी

312. शर्ब कर किस पर लागू होता था ?
(A) हिन्दुओं पर (B) ईसाइयों पर
(C) सिंचाई पर (D) व्यापार पर

313. 'गाजी' शब्द का तात्पर्य था–
(A) खलीफा का आशीर्वाद प्राप्त करने वाला व्यक्ति
(B) काफिरों का वध करने वाला
(C) सेना प्रमुख
(D) सुल्तान का निजी अंगरक्षक

314. कश्मीर में मार्तण्ड मन्दिर का विध्वंश कराया–
(A) शम्सुद्दीन (B) सिकन्दर
(C) अलीशाह (D) बख्तियार खिलजी

315. बहमनी राज्य की राजधानी का गुलबर्गा से बीदर स्थानान्तरण किसके काल में हुआ ?
(A) ताजुद्दीन फिरोज
(B) शमसुद्दीन दाउद
(C) शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम
(D) सिकन्दर शाह

316. लक्ष्मी की आकृति युक्त सिक्के किसने चलाये ?
(A) महमूद गजनवी ने (B) पृथ्वीराज चौहान ने
(C) मुहम्मद गौरी ने (D) आनन्द पाल ने

317. अलाउद्दीन खिलजी पहला मुस्लिम शासक था, जिसने निम्नलिखित में से क्या काम किया ?
1. स्थाई सेना का गठन किया.
2. दक्षिण को पहली बार जीता.
3. ब्राह्मणों पर जजिया लगाया.
4. मंगोलों से युद्ध किया.
(A) 1 एवं 2 (B) 2 एवं 3
(C) 3 एवं 4 (D) 1, 2 एवं 4

318. फिरोजशाह तुगलक द्वारा रचित ग्रन्थ है–
(A) तारीखे-फिरोजशाही
(B) फतुहात-ए-फिरोजशाही
(C) दलायल-ए-फिरोजशाही
(D) सीतारात-ए-फिरोजशाही

319. निम्नलिखित में से किस विदेशी यात्री ने महमूद बेगडा का यशोगान यूरोप तक किया ?
(A) एल. वारथेमा (B) मानडेस्लो
(C) निकितिन (D) पीटरमुण्डी

320. सुल्तान फिरोजशाह तुगलक द्वारा बनवाई गई नहरों का वर्णन है–
(A) फतवा-ए-जहाँदारी
(B) तारीखे फिरोजशाही
(C) सीरत-ए-फिरोजशाही
(D) फतुहात फिरोजशाही

321. निम्नलिखित सुल्तानों में से कौनसा उलेमा की इच्छाओं का पालन किया करता था ?
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) इल्तुतमिश
(C) फिरोजशाह तुगलक (D) अलाउद्दीन खिलजी

322. 13वीं और 14वीं शताब्दियों में भारतीय किसान निम्नांकित की खेती नहीं करते थे–
(A) चना (B) गेहूँ
(C) उरद (D) मक्का

323. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिये कूट के प्रयोग से सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I (वर्ष)	सूची-II (घटनाएँ)
(a) 1206 ई.	(1) तैमूर का आक्रमण
(b) 1290 ई.	(2) खिलजी क्रान्ति
(c) 1333 ई.	(3) इब्नेबतूता का भारत आगमन
(d) 1398 ई.	(4) कुतुबुद्दीन ऐबक का राज्यारोहण

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	4	2	3	1
(C)	4	3	2	1
(D)	4	1	2	3

324. इल्तुतमिश, बलबन और अलाउद्दीन खिलजी ने–
(A) खलीफा को चुनौती दी.
(B) मंगोलों का सामना किया.
(C) हिन्दुओं के साथ अच्छा व्यवहार किया.
(D) राजपूत राजकुमारियों से विवाह किया.

325. मिनहास-उस-सिराज किन शासकों का समकालीन था–
(A) मामलूक वंश (B) खिलजी वंश
(C) तुगलक वंश (D) लोदी वंश

326. सल्तनतकाल में महदवियों का विद्रोह किसने दबाया था ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी (B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) फिरोज तुगलक

327. इब्नेबतूता यात्री कहाँ का था ?
(A) चीन (B) मिस्र
(C) मोरक्को (D) अरब

328. मुहम्मद बिन तुगलक के समय में स्थापित दीवान-ए-अमीर किस विभाग से सम्बन्धित था ?
(A) धार्मिक (B) न्याय
(C) आचार (D) कृषि

329. राजकीय कार्यों में उलेमाओं का विरोध सर्वप्रथम किसने किया ?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) सिकन्दर लोदी

330. वह कौनसा सुल्तान था, जिसने खाद्यान्न पर से 'जकात' हटा लिया था ?
(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) सिकन्दर लोदी (D) फिरोजशाह तुगलक

331. महमूद गवाँ ने किसकी सेवा की ?
(A) विजयनगर शासकों की
(B) बहमनियों की
(C) लोदियों की
(D) खिलजियों की

332. बलबन अपने को किसका वंशज मानता था ?
(A) मंगोलों का (B) अब्बासी खलीफा
(C) अफरासियाब (D) मुहम्मद साहब

333. निम्नलिखित सुल्तानों में से किसने दिल्ली सल्तनत की शाही संरचना के तीन सबसे प्रमुख अंगों–इक्ता सेना और मुद्रा प्रणाली को सुव्यवस्थित किया ?
(A) इल्तुतमिश (B) बलबन
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) गयासुद्दीन तुगलक

334. निम्नलिखित में से किसने कृषकों को त्रकावी ऋण प्रदान किया. जिसे सोन्धर कहा जाता था ?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) मुहम्मद बिन तुगलक
(D) फिरोज तुगलक

335. अलाउद्दीन खिलजी ने 'दीवाने मुस्तखराज' की स्थापना किसलिए की ?
(A) अमीरों पर नियन्त्रण के लिए
(B) बाजार के नियन्त्रण के लिए
(C) दासों पर नियन्त्रण के लिए
(D) बकाया लगान की वसूली के लिए

336. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने तुर्कान चहलगानी का दमन किया ?
(A) इल्तुतमिश (B) बलबन
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) मुहम्मद तुगलक

337. रतन नाम के हिन्दू को किसके शासनकाल में राजस्व अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया था ?
(A) बलबन (B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) खिज्र खाँ

338. सल्तनत काल के दो प्रमुख सिक्के 'टका' और 'जीतल' का प्रचलन किसने किया ?
(A) इल्तुतमिश (B) बलबन
(C) रजिया (D) अलाउद्दीन खिलजी

339. दिल्ली का वह कौनसा सुल्तान था जिसने बंगाल के तीन टुकड़े करके लखनौती, सतगाँव एवं सोनारगाँव तीन स्वतन्त्र प्रशासकीय क्षेत्र स्थापित किये ?
(A) बलबन (B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) मुहम्मद बिन तुगलक (D) सिकन्दर लोदी

340. फिरोज तुगलक द्वारा सिंचाई की व्यवस्था में सर्वाधिक लाभ किस क्षेत्र में हुआ ?
(A) राजस्थान (B) उत्तर प्रदेश
(C) पंजाब (D) कश्मीर

341. मेवाड़ के शासक राणा कुम्भा के विषय में कुछ कथन दिये गये हैं. उन कथनों पर विचार करते हुए असत्य कूट का चयन कीजिए–
(A) वह कछवाहा वंशीय राजपूत था.
(B) उसने कुम्भलगढ़ किले का तथा कीर्तिस्तम्भ का निर्माण कराया.
(C) वह महान कवि एवं संगीतकार था.
(D) 1469 में उसके पुत्र द्वारा उसकी हत्या की गई.

342. निम्नलिखित में से किस बंगाली शासक के समय चीनी दूत भारत आया और अपना दूत चीन भेजा–
(A) हाजी इलियास (B) सिकन्दरशाह
(C) गयासुद्दीन आजम (D) हुसैन शाह

343. निम्नलिखित में से कौनसा अधिकारी बाजार नियन्त्रण से सम्बन्धित नहीं था ?
1. शाहना-ए-मण्डी 2. बरीद-ए-मण्डी
3. दरोगा-ए-मण्डी 4. दीवान-ए-रियासत
(A) केवल 3 (B) 3 एवं 4
(C) 1 एवं 2 (D) 1, 2 एवं 4

344. सल्तनतकाल के सन्दर्भ में दिये गये कथनों पर विचार करें एवं सत्य कूट का चयन कीजिए–
(A) वाह्य व्यापार की उन्नति हुई.
(B) उर्दू भाषा का विकास हुआ.
(C) हिन्दू, मुसलमान सन्तों का आदर करते थे.
(D) उपर्युक्त सभी सत्य हैं.

345. निम्नलिखित घटनाओं का सही अनुक्रम क्या है ? दिये गये कूट से सही उत्तर चुनिये–
1. तैमूर का आक्रमण
2. इब्नेबतूता का भारत आगमन
3. बहमनी राज्य की स्थापना
4. खिलजी क्रान्ति
(A) 1, 2, 3, 4 (B) 2, 3, 4, 1
(C) 4, 2, 3, 1 (D) 4, 3, 2, 1

346. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
कथन (A) : अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण अभियान धन प्राप्ति के प्रयास थे.
कारण (R) : उसने दक्षिणी राज्यों का विलय नहीं किया.
सही कूट का चयन कीजिए–
(A) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की व्याख्या करता है.
(B) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की व्याख्या नहीं करता है.

(C) A सही तथा R गलत है.
(D) A गलत तथा R सही है.

347. खजायन-उल-फुतूह में किसके सैनिक अभियानों का विवरण है ?
(A) जाजनगर में फिरोज तुगलक
(B) दक्षिण भारत में मलिक काफूर
(C) बंगाल में बलबन का
(D) जौनपुर में बहलोल लोदी

348. निम्नलिखित में से कहाँ के शासकों ने 'सुल्तान उसशर्क' की उपाधि धारण की ?
(A) मालवा (B) जौनपुर
(C) गुजरात (D) बंगाल

349. अलाउद्दीन खिलजी द्वारा सैन्य व्यवस्था में सुधार किये गये–
(A) सैनिक जाँच (B) हुलिया प्रथा
(C) दाग प्रथा (D) उक्त सभी

350. "राजकीय मुकुट का प्रयोग मोती गरीब किसान की अश्रुपूरित आँखों से गिरी हुई रक्त की घनीभूत बूँद है." सल्तनतकालीन गरीब किसानों पर की गई टिप्पणी है–
(A) अमीर खुसरो की (B) बरनी की
(C) शम्स-ए-शिराज की (D) इसामी की

351. अपने राज्यारोहण के ठीक पूर्व मुक्ती के रूप में सुल्तान इल्तुतमिश के पास निम्नलिखित में से कौनसा इक्ता था ?
(A) बदायूँ (B) लखनौती
(C) मुल्तान (D) बंगाल

352. मुहम्मद तुगलक का वास्तविक नाम था–
(A) मोतमाद खाँ (B) जौना खाँ
(C) जूना खाँ (D) मुजीब खाँ

353. शिवाजी का प्रशासन था–
(A) निरंकुश प्रशासन (B) निरंकुश लोकहितकारी
(C) सैन्य प्रधान (D) निरंकुश राजतन्त्र

354. मध्यकालीन भारत में नल दमयन्ती का अनुवाद किया गया था–
(A) तुर्की में (B) फारसी में
(C) उर्दू में (D) हिन्दी में

355. भारत में यूरोपीय व्यापारियों के आगमन का सही क्रम निम्नलिखित में से कौनसा है ?
(A) पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी, अंग्रेज
(B) पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच, अंग्रेज
(C) डच, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, अंग्रेज
(D) पुर्तगाली, अंग्रेज, डच, फ्रांसीसी

356. बाबर ने अपनी आत्मकथा लिखने में किस भाषा का प्रयोग किया था ?
(A) तुर्की (B) फारसी
(C) उर्दू (D) हिन्दी

357. 1526 ई. में दो शक्तिशाली राजपूत राज्य थे–
(A) गहड़वाल–मेवाड़ (B) गहड़वाल–मारवाड़
(C) गहड़वाल–चौहान (D) मारवाड़–मेवाड़

358. मुगलकाल के किस निम्नलिखित मकबरे में प्रथम बार पित्राडुरा का प्रयोग मिलता है ?
(A) ताजमहल (B) एत्मादुउद्दौला
(C) जहाँगीर का मकबरा (D) अकबर का मकबरा

359. कौनसी पुस्तक सुल्तान फिरोज तुगलक की आत्मकथा है ?
(A) तारीख-ए-फिरोजशाही
(B) तुजुक-ए-फिरोजशाही
(C) फतुहात-ए-फिरोजशाही
(D) फतुहात-ए-आलमगीर

360. अकबर के दरबार का प्रमुख चित्रकार था–
(A) अबुल हसन (B) मंजूर
(C) मुहम्मद नादिर (D) अब्दुस्समद

361. अकबर के राजस्व काल में गोंडवाना की स्त्री शासिका का नाम था–
(A) अहिल्याबाई (B) रानी दुर्गावती
(C) ताराबाई (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

362. गुलाम वंश के किस शासक को 'लाख बख्श' की उपाधि दी गयी ?
(A) नासिरुद्दीन महमूद (B) इल्तुतमिश
(C) कुतुबुद्दीन ऐबक (D) बलबन

363. शाहजहाँ को किस बुन्देला सरदार के विद्रोह का सामना करना पड़ा ?
(A) छत्रपाल (B) चम्पत राय
(C) गोकुला (D) जुझार सिंह

364. हुमायूँ की असफलता का कारण था –
(A) शेरशाह की रणनीति
(B) उसके भाईयों का विश्वासघात
(C) असंगठित राज्य
(D) कमजोर चरित्र

365. जेम्स प्रथम का राजदूत जो जहाँगीर के दरबार में आया–
(A) फादर हेरास (B) बारबोसा
(C) सर टामस रो (D) मॉनियर विलियम्स

366. 12वीं शताब्दी में भक्ति आन्दोलन के संस्थापक थे–
(A) शंकराचार्य (B) वल्लभाचार्य
(C) रामानन्द (D) रामानुजाचार्य

367. विदेशी यात्री किस शासक के राज्यकाल में आये ?
(A) देवराय प्रथम (B) देवराय द्वितीय
(C) हरिहर द्वितीय (D) देवकृष्ण राय

368. मोहम्मद तुगलक के सम्मान में उसके उत्तराधिकारी फिरोज खाँ ने एक नगर की स्थापना की–
(A) फिरोजाबाद (B) फतेहाबाद
(C) जौनपुर (D) गाजीपुर

369. इस्लाम के प्रचार के लिए मुगल शासक औरंगजेब ने राजकीय अधिकारियों की नियुक्ति की वह अधिकारी थे–
(A) काजी-उल-उजात (B) मुहतसिब
(C) सद्-उस-सुदूर (D) वरीद

370. भारतीय दर्शन सूफीवाद से प्रभावित हुआ. सूफीवाद का प्रभाव था–
(A) भक्ति (B) रहस्यवाद
(C) छायावाद (D) अद्वैतवाद

371. मुहम्मद गौरी भारत आक्रमण में पराजित हुआ–
(A) तराइन प्रथम युद्ध (B) तराइन द्वितीय युद्ध
(C) कन्नौज युद्ध (D) माउन्ट आवू का युद्ध

372. अलाउद्दीन ने सिंहासन पर बैठने के बाद उपाधि धारण की–
(A) सिकन्दर-ए-आला (B) सिकन्दरे-आजम
(C) सिकन्दर-ए-सानी (D) सिकन्दर-ए-ख्वाजा

373. मुगल सैन्य व्यवस्था आधारित थी–
(A) मनसवदारी पर (B) जागीरदारी पर
(C) इक्ता पर (D) कोई नहीं पर

374. प्लासी युद्ध में क्लाइव को क्या मिला ?
(A) क्लाइव नवाव का सलाहकार था.
(B) क्लाइव अंग्रेजी सेना का प्रधान नियुक्त हुआ.
(C) क्लाइव को बंगाल की सत्ता हासिल हुई.
(D) क्लाइव वंगाल का गवर्नर नियुक्त हुआ.

375. मुगल शासक अकबर के अधूरे छोड़े गये किस कार्य को जहाँगीर ने पूरा किया ?
(A) कन्धार विजय (B) बंगाल विजय
(C) रणथम्भौर विजय (D) मेवाड़ विजय

376. मुगल प्रान्तीय प्रशासन की विशेषता थी–
(A) प्रान्तीय स्वायत्ता
(B) प्रशासन का केन्द्रीयकरण
(C) सैनिक नियन्त्रण
(D) दोहरा नियन्त्रण

377. तैमूर ने किसके शासनकाल में आक्रमण किया ?
(A) सैयद काल में (B) तुगलक काल में
(C) मुगल काल में (D) लोदी काल में

378. दहशाला पद्धति किसने लागू की ?
(A) टोडरमल ने (B) बीरवल ने
(C) अवुल फजल ने (D) अब्दुर्रहीम ने

379. मांडु की स्थापना किसने की ?
(A) रानी रायमती (B) होशंगशाह
(C) महमूद शाह (D) वाजवहादुर

380. शाहनामा का लेखक कौन था ?
(A) निजामुद्दीन अहमद (B) अब्दुल कादिर बदायूँनी
(C) अवुल फजल (D) अब्दुल हमीद लाहौरी

381. मुहम्मद तुगलक ने दूसरी राजधानी कहाँ बनाई ?
(A) होशंगाबाद (B) दौलताबाद
(C) गुलवर्गा (D) मांडू

382. 1221 में किस मंगोल ने भारत पर आक्रमण किया ?
(A) दारा (B) तैमूर
(C) चंगेज खाँ (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

383. तैमूर ने भारत पर आक्रमण कब किया ?
(A) 1221 ई. में (B) 1305 ई. में
(C) 1398 ई. में (D) 1418 ई. में

384. प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध की समाप्ति–
(A) तले गाँव की सन्धि (B) वडगांव की सन्धि
(C) सालबाई की सन्धि (D) वेसिन की सन्धि

385. पानीपत का युद्ध किस-किस के बीच हुआ ?
(A) अकवर–हेमू
(B) वैरम खाँ–हेमू
(C) वावर–राणा सांगा
(D) अहमद शाह अब्दाली–सदाशिवराव

386. अकबर ने पानीपत के दूसरे युद्ध में किसे हराया था ?
(A) शेरशाह (B) मुहम्मद शाह
(C) हेमू (D) वैरम खाँ

387. अकबर ने बुलन्द दरवाजा क्यों बनवाया था ?
(A) बंगाल विजय के उपलक्ष्य में
(B) राजस्थान विजय के उपलक्ष्य में
(C) गुजरात विजय के उपलक्ष्य में
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

388. महमूद गजनवी ने सबसे पहले किसे हराया ?
(A) जयपाल (B) आनन्द पाल
(C) त्रिलोचन पाल (D) कोई नहीं

389. अकबर ने किस शहर की स्थापना की और उसे अपनी राजधानी बनाया ?
(A) आगरा (B) दिल्ली
(C) फतेहपुर सीकरी (D) इलाहाबाद

390. 'हुमायूँनामा' का लेखक कौन था ?
(A) अबुल फजल (B) फैजी
(C) गुलबदन बेगम (D) माहिन बेगम

391. शेरशाह को 'अकबर का पूर्वगामी' क्यों कहा जाता था ?
(A) अकबर ने शेरशाह की नीतियों को लागू किया.
(B) शेरशाह की नीतियों को लागू नहीं किया.
(C) उसने कड़ा प्रशासन किया.
(D) शेरशाह ने अकबर को प्रशासन सम्बन्धी निर्देश दिया.

392. पुर्तगालियों ने गोआ पर कब अधिकार कर लिया ?
(A) 1500 ई. में (B) 1508 ई. में
(C) 1510 ई. में (D) 1512 ई. में

393. रजिया के पतन का क्या कारण था ?
(A) याकूत से प्रेम
(B) तुर्क विद्रोह अमीरों का
(C) स्त्री होना
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

394. कुतुबुद्दीन का शासन काल था–
(A) 1194-1210 ई. (B) 1204-1210 ई.
(C) 1196-1212 ई. (D) 1206-1210 ई.

395. मुगल साम्राज्य के पतन में कौनसा कारण नहीं था ?
(A) अयोग्य उत्तराधिकारी
(B) उदार धार्मिक नीति
(C) विस्तृत साम्राज्य
(D) औरंगजेब की दक्षिण नीति

396. मुहम्मद तुगलक की राजधानी परिवर्तन की असफलता का कारण क्या था ?
(A) योजना अव्यावहारिक थी
(B) उसने जल्दबाजी में कदम उठाया
(C) नागरिकों का साथ न देना
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

397. दिल्ली के लाल किले का निर्माण कराया–
(A) अकबर ने (B) जहाँगीर ने
(C) शाहजहाँ ने (D) औरंगजेब ने

398. किसने दास प्रथा को प्रश्रय नहीं दिया ?
(A) फिरोज तुगलक (B) बलबन
(C) मुहम्मद तुगलक (D) इल्तुतमिश

399. याहिया-बिन सरहिन्दी सैय्यद वंश के किस शासक का समकालीन था–
(A) नुसरत शाह (B) मुबारक शाह
(C) खिज्र शाह (D) मोहम्मद तुगलक

400. हुमायूँ चौसा में क्यों पराजित रहा ?
(A) उसने गलत रणनीति अपनायी
(B) उसके भाइयों ने साथ नहीं दिया
(C) शेरशाह की शक्ति का उसने गलत अनुमान लगाया
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

401. अलबेरूनी की रचना कौनसी है ?
(A) सि-यू-की (B) तारीखे-मुबारकशाही
(C) तहकीक-ए-हिन्द (D) हुमायूँनामा

402. जाब्ती भूमि सुधार प्रथा का विकास किसने किया ?
(A) अलाउद्दीन (B) सिकन्दर लोदी
(C) शेरशाह (D) अकबर

403. शिवाजी का राज्यारोहण कब हुआ ?
(A) 1674 ई. में (B) 1676 ई. में
(C) 1672 ई. में (D) 1774 ई. में

404. चित्रकला का सर्वाधिक विकास किसके काल में हुआ ?
(A) शाहजहाँ (B) औरंगजेब
(C) अकबर (D) जहाँगीर

405. अकबर की सैनिक एवं असैनिक सेवा का नाम था–
(A) जमींदार (B) जागीरदार
(C) मनसबदार (D) सामन्त

406. भक्ति आन्दोलन ने दिया–
(A) एक सादा सरल धर्म (B) जाति प्रथा युक्त धर्म
(C) कर्मकाण्ड युक्त धर्म (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

407. शिवाजी का उत्तराधिकारी कौन था ?
(A) शम्भा जी (B) शाहू
(C) शिवाजी द्वितीय (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

408. जजिया कर को किसने हटाया था ?
(A) अलाउद्दीन (B) फिरोज तुगलक
(C) अकबर (D) औरंगजेब

409. अन्तिम मुगल शासक का नाम क्या था ?
(A) आलम शाह (B) बहादुर शाह प्रथम
(C) शाह आलम (D) बहादुर शाह द्वितीय

410. अलाउद्दीन खिलजी की विजय में मुख्य योगदान रहा–
(A) अमीर खुसरो (B) मलिक काफूर
(C) नुसरत शाह (D) मुहम्मद तुगलक

411. लोदी स्थापत्य का सर्वश्रेष्ठ नमूना है–
(A) अदीना मस्जिद (B) एक लखा मस्जिद
(C) मोहम्मद की मस्जिद (D) इनमें से कोई नहीं

412. शाहजहाँ का नाम था–
(A) परवेज (B) शहरयार
(C) खुर्रम (D) दारा

413. शिवाजी के दमन के लिए औरंगजेब ने किसे भेजा था ?
(A) जयसिंह (B) शाइस्ता खाँ
(C) दिलेर खाँ (D) रामसिंह

414. राजस्व के मामले में पूर्ण रुचि लेने वाला सुल्तान था–
(A) बलबन (B) सिकन्दर लोदी
(C) अलाउद्दीन खिलजी (D) मुबारक शाह

415. 'आईने अकबरी' की रचना किसने की थी ?
(A) फैजी (B) अबुल फजल
(C) रहीम (D) जियाउद्दीन बरनी

416. मुहम्मद-बिन कासिम कौन था ?
(A) तुर्क (B) मंगोल
(C) अफगानी (D) अरबी

417. पानीपत के तृतीय युद्ध से किस शक्ति का उत्थान हुआ ?
(A) मराठों की (B) पुर्तगालियों की
(C) अंग्रेजों की (D) फ्रांसिसियों की

418. मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज को हराया–
(A) तराइन के प्रथम युद्ध में
(B) चन्दावर के युद्ध में
(C) तराइन के द्वितीय युद्ध में
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

419. मुगलकालीन मुद्रा का नाम है ?
(A) दीनार (B) दिरहम
(C) रुपया (D) दाम

420. बहमनी राज्य के पतन पर कितने राज्य उदित हुए ?
(A) 2 (B) 5
(C) 4 (D) 3

421. कौनसा विद्वान था, जो महमूद गजनवी के साथ भारत आया ?
(A) फरिस्ता (B) अलजुज
(C) अलबेरूनी (D) साहेब खान

422. किस सन्धि से छत्रपति ने पेशवा को पूर्ण अधिकार दिया ?
(A) बेसिन की सन्धि (B) सालबाई की सन्धि
(C) पुरन्दर की सन्धि (D) संगोला की सन्धि

423. शेरशाह सूरी की मृत्यु कहाँ हुई ?
(A) दिल्ली में (B) सहसाराम में
(C) कालिंजर के दुर्ग में (D) ग्वालियर में

424. विजयनगर साम्राज्य का संस्थापक कौन था ?
(A) कृष्णदेव राय (B) देवराय प्रथम
(C) स्वामी विद्यारण्य (D) हरिहर बुक्का

425. किस मुगल शहजादे ने उपनिषदों का फारसी में अनुवाद करवाया था ?
(A) अकबर (B) दाराशिकोह
(C) शाह आलम (D) परवेज

426. औरंगजेब की किस नीति से मुगल साम्राज्य का पतन हुआ ?
(A) धार्मिक नीति (B) साम्राज्यवादी नीति
(C) आर्थिक नीति (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

427. विजयनगर का सर्वश्रेष्ठ शासक कौन था ?
(A) हरिहर प्रथम (B) हरिहर द्वितीय
(C) कृष्ण देवराय (D) देवराय द्वितीय

428. मराठा शक्ति के उत्थान के लिए कौनसा कारण उत्तरदायी नहीं था ?
(A) महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थिति
(B) शिवाजी की सैनिक कुशलता
(C) धार्मिक कारण
(D) विदेशी शक्तियों का आगमन

429. शाहजहाँ के काल में कौनसा फ्रांसीसी चिकित्सक भारत आया था ?
(A) बर्नियर (B) ट्रैवर्नियर
(C) ननूची (D) टेरी

430. अमीर खुसरो किसके काल में प्रतिष्ठित था ?
(A) अलाउद्दीन (B) शेरशाह
(C) अकबर (D) फिरोज तुगलक

431. फतेहपुर सीकरी का निर्माण किसने कराया था ?
(A) शाहजहाँ (B) जहाँगीर
(C) अकबर (D) शेरशाह

432. सुल्तान जिसने शान्तिपूर्वक राजगद्दी प्राप्त की–
(A) इल्तुतमिश (B) रजिया
(C) बलबन (D) फिरोज तुगलक

433. नूरजहाँ ने किसे जहाँगीर का उत्तराधिकारी नियुक्त किया ?
(A) अमीर खुसरो (B) इब्राहिम लोदी
(C) शाहजहाँ (D) शहरयार

434. 'तुजूके' जहाँगीरी क्या है ?
(A) आत्मकथा (B) धार्मिक ग्रन्थ
(C) जीवनी (D) सामाजिक ग्रन्थ

435. सल्तनतकाल में सर्वप्रथम किसने दक्षिण विजय की ?
(A) अकबर (B) शेरशाह
(C) अलाउद्दीन (D) औरंगजेब

436. जौनपुर में शर्की वंश का संस्थापक था–
(A) ख्वाजाजहाँ (B) मुबारक शाह
(C) इब्राहिम (D) बहलोल

437. इक्ता प्रथम किसने प्रारम्भ की ?
(A) इल्तुतमिश (B) कुतुबुद्दीन ऐबक
(C) अकबर (D) औरंगजेब

438. मुन्तखब-उल-तवारीख किसकी रचना थी ?
(A) अब्दुल-कादिर बदायूँनी
(B) कल्हण
(C) अलबेरूनी
(D) फिरदौसी

439. लीलावती किस विषय से सम्बन्धित है ?
(A) गणित (B) ज्योतिष
(C) कला (D) दर्शन

440. सल्तनत काल में मूल्यों पर नियन्त्रण किसने लगाया ?
(A) मुहम्मद तुगलक (B) फिरोज तुगलक
(C) बलबन (D) अलाउद्दीन खिलजी

441. किस सुल्तान ने अपने को उलेमाओं से मुक्त रखा ?
(A) फिरोज तुगलक (B) मुहम्मद तुगलक
(C) अलाउद्दीन (D) जलालुद्दीन

442. कुव्वतुल-उल-इस्लाम मस्जिद किसने बनवायी ?
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) बलबन
(C) शेरशाह (D) अकबर

443. तैमूर का आक्रमण किसके काल में हुआ ?
(A) गयासुद्दीन (B) मुहम्मद तुगलक
(C) नासिरुद्दीन महमूद (D) शेरशाह

444. अकबर एक राष्ट्रीय शासक था, यह बात किस दृष्टि-कोण से प्रत्याशित होती है ?
(A) वह एक महान साम्राज्यवादी था.
(B) वह प्रजा के कल्याण के लिये इबादत करवाता था.
(C) धार्मिक दृष्टि से उदार एवं प्रजापालक था.
(D) वह राष्ट्र की हित की कामना के लिये चिंतन करता था.

445. मुहम्मद गौरी ने किस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हराया ?
(A) पानीपत का प्रथम युद्ध
(B) तराइन का प्रथम युद्ध
(C) पानीपत का द्वितीय युद्ध
(D) तराइन का द्वितीय युद्ध

446. दिल्ली सल्तनत में स्थायी सैन्य व्यवस्था किसने लागू की ?
(A) बलबन (B) कुतुबुद्दीन ऐबक
(C) फिरोज तुगलक (D) अलाउद्दीन खिलजी

447. आगरा का किला किसने बनवाया ?
(A) अकबर (B) जहाँगीर
(C) शाहजहाँ (D) सिकन्दर लोदी

448. नहरें बनवाने वाला पहला सुल्तान कौन था ?
(A) बलबन (B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) मुहम्मद तुगलक (D) फिरोज तुगलक

449. आईने दहसाला किसके समय में सर्वप्रथम शुरू हुआ ?
(A) औरंगजेब (B) अकबर
(C) जहाँगीर (D) शाहजहाँ

450. मराठों में सबसे बड़ा किसका साम्राज्य था ?
(A) शिवाजी (B) बालाजी बाजीराव
(C) बालाजी विश्वनाथ (D) बाजीराव पेशवा

451. पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने किसको पराजित किया था ?
(A) इब्राहीम लोदी (B) महमूद लोदी
(C) बलबन (D) अमीर खाँ

452. इब्नेबतूता किसके काल में भारत आया ?
(A) मुहम्मद तुगलक (B) फिरोज तुगलक
(C) बलबन (D) औरंगजेब

453. गुलाम वंश के शासकों में से किसने खलीफा से खिल्वत प्राप्त की ?
(A) कुतुबुद्दीन (B) इल्तुतमिश
(C) रजिया (D) बलबन

454. नादिरशाह का आक्रमण किस मुगल शासक के काल में हुआ ?
(A) मुहम्मद शाह (B) शाह आलम
(C) फर्रुखसियर (D) उस्मान शाह

455. सल्तनत काल में सेना की देखभाल निम्नलिखित में से कौन करता था ?
(A) वजीर (B) नायाव
(C) आरिज-ए-मुमालिक (D) काजी

456. अलाई दरवाजा का निर्माण किसने करवाया ?
(A) शेरशाह (B) अलाउद्दीन
(C) अकवर (D) वावर

457. सल्तनत काल में राज्य की आय का प्रमुख स्रोत था–
(A) आन्तरिक व्यापार (B) वाह्य व्यापार
(C) भू-राजस्व (D) जकात

458. किसने चहलगानी प्रथा प्रारम्भ की ?
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) इल्तुतमिश
(C) अकवर (D) शेरशाह

459. मुगल शासन में वह मन्त्री जो सेना का प्रधान था, क्या कहलाता था ?
(A) सिपहसालार (B) दीवान
(C) फौजदार (D) मीरवख्शी

460. पगा क्या था ?
(A) सैन्य अभियान
(B) गुरिल्ला युद्ध तकनीक
(C) मराठा किलों के आसपास का क्षेत्र
(D) नियमित सेना

461. निम्नलिखित में से किस सूफी संत ने यौगिक क्रिया को अपनाया और सिद्ध कहलाया ?
(A) फरीद
(B) सलीम चिश्ती
(C) निजामुद्दीन औलिया
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

462. निम्नलिखित में से शिवाजी किस जिले में पैदा हुए थे ?
(A) जावली (B) चम्पानेर
(C) जिंजी (D) शिवनेर

463. अष्ट प्रधान समिति का विघटन किसने किया ?
(A) शिवाजी (B) शाहू
(C) सम्भाजी (D) ताराबाई

464. निम्नलिखित में से कौन मुगल काल की एकमात्र महिला प्रधानमंत्री थी ?
(A) सुल्तान बेगम (B) कोकी अनया
(C) माहम अनगा (D) जीजी अनगा

465. जवावित क्या थे ?
(A) हिन्दुओं के सम्बन्धित कार्य
(B) कृषि कर
(C) राज्य के कानून
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

466. हुजूर साहिव का गुरुद्वारा किसकी याद में वना था ?
(A) गुरु गोविन्द सिंह (B) गुरु नानक
(C) गुरु रामदास (D) गुरु तेग वहादुर

467. निम्नलिखित में से किस मुगल सेनापति ने शिवाजी को पुरन्दर संधि (1665) पर हस्ताक्षर करने के लिए वाध्य किया ?
(A) वहादुर खाँ (B) राजा जयसिंह
(C) राजा जसवंत सिंह (D) शाइस्ता खाँ

468. निम्नलिखित में से किस मुगल शासक ने अमृतसर में स्वर्ण निर्माण हेतु भूमि अनुदान में दी ?
(A) औरंगजेब (B) शाहजहाँ
(C) जहाँगीर (D) अकवर

469. भारत में चिश्तिया सिलसिले की स्थापना किसने की थी ?
(A) सलीम चिश्ती (B) फरीद
(C) मुईनुद्दीन चिश्ती (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

470. रज्मनामा जिसका संकलन फारसी भाषा के अनेक विद्वानों ने किया, किसका अनुवाद था ?
(A) पंचतन्त्र (B) रामायण
(C) महाभारत (D) ऋग्वेद

471. अष्ट प्रधान समिति का विघटन किसने किया ?
(A) शिवाजी (B) शाहू
(C) सम्भाजी (D) तराबाई

472. जहाँगीर की सर्वोच्च राजनीतिक सफलता 1614 ई. में मेवाड़ से की गई उनकी शांति संधि थी. निम्नलिखित में से कौनसी शर्त नहीं थी ?
(A) चित्तौड़ के किलों की मरम्मत की जायेगी.
(B) राजकुमार करण ने 5000/5000 का मनसव जहाँगीर के दरवार में प्राप्त किया.
(C) राणा अमरसिंह द्वारा मुगलों को 1500 घोड़े प्रदान किए जाने थे.
(D) चित्तौड़ सहित सभी क्षेत्र राजा अमरसिंह को प्रदान किये जाने थे.

473. सूफी विचारधारा में तर्क-ए-दुनिया का अर्थ है ?
(A) उद्‌बुद्ध विश्व (B) विश्व का परित्याग
(C) सहिष्णु संसार (D) इनमें कोई नहीं

474. चैतन्य ने भक्ति आन्दोलन में जो विशिष्टया जोड़ी वह थी–

(A) ईश्वर के नाम प्रार्थना करना

(B) कीर्तन

(C) मूर्ति पूजा

(D) स्त्री तथा पुरुष दोनों को अनुयायी स्वीकार करना

475. वह अंग्रेज कौन था जिसे जहाँगीर ने 400 जात का मनसब प्रदान किया था ?

(A) फिच (B) कैप्टन हॉकिन्स

(C) कोलबर्ट (D) सर टॉमस रो

476. निम्नलिखित में से शिवाजी के विषय में कौनसा कथन सत्य नहीं है ?

(A) फारसी इतिहासकार खाफी खाँ ने शिवाजी की धार्मिक नीति की प्रशंसा की है

(B) हिन्दवी स्वराज की प्राप्ति के उद्देश्य से शिवाजी आगरा में सम्राट् औरंगजेब से मिले

(C) शिवाजी ने अपने पीछे स्थायी साम्राज्य छोड़ा

(D) शिवाजी ने व्यापार एवं वाणिज्य की उपेक्षा की

477. तुजुके बाबरी से सम्बन्धित निम्नलिखित कथनों को पढ़े–

1. इसका प्रथम फारसी अनुवाद अबुल कादिर बदायूँनी ने किया था.

2. इसका प्रथम अंग्रेजी अनुवाद ए. एस. बेवरिज ने किया था.

3. इसका प्रथम फ्रांसीसी अनुवाद ली देन एवं अर्सकिन ने किया था.

असत्य कथनों का पता करें–

(A) 1 और 2 (B) 2 और 3

(C) 1 और 3 (D) 1, 2 और 3

478. पुष्टिमार्ग के दर्शन का प्रारम्भ किया–

(A) बल्लाभाचार्य (B) कबीर

(C) सूरदास (D) तुलसीदास

479. भारत में डचों ने किस प्रदेश में अपने प्रारम्भिक कारखाने स्थापित किये ?

(A) गुजरात एवं सिन्ध (B) बम्बई एवं सिन्ध

(C) मद्रास एवं अवध (D) गुजरात एवं बिहार

480. वह मराठा वीरांगना, जिसने मराठा शक्ति को मुगलों के आक्रमण से बचाया था–

(A) मस्तानी (B) पार्वतीबाई

(C) ताराबाई (D) तुलसीबाई

481. रामायण का फारसी अनुवाद किसने किया था ?

(A) अमीर खुसरो ने

(B) मलिक मुहम्मद जायसी ने

(C) अब्दुल कादिर बदायूँनी ने

(D) मुल्लाशीरी ने

482. अक्ता का अर्थ है–

(A) एक प्रशासकीय अनुदान या माफी

(B) नकद वेतन के बदले किसी खास भू-भाग का राजस्व अधिन्यास

(C) किसी भू-भाग का अधिन्यास पारितोषिक एवं सेवा निवृत्ति वेतन स्वरूप

(D) उपर्युक्त (B) एवं (C) दोनों

483. निम्नलिखित में से कौनसा न तो जौहरी और न ही शिल्पकार था ?

(A) ट्रेविर्नर (B) ऑस्टिन

(C) वेरेनिया (D) मनुची

484. दिल्ली का वह कौनसा सुल्तान था, जिसने भूमि की नाप की आज्ञा निरस्त करके उस स्थान पर गल्ला बँटाई को अपनाया ?

(A) बलबन (B) अलाउद्दीन खिलजी

(C) गयासुद्दीन (D) सिकन्दर लोदी

485. निम्नलिखित में से किस सुल्तान ने खलीफा से खिलवत प्राप्त किया ?

(A) कुतुबुद्दीन ऐबक (B) इल्तुतमिश

(C) रजिया (D) गयासुद्दीन तुगलक

486. निम्नलिखित में से कौन एक विजयनगर राजाओं की पुरानी राजधानी का द्योतक है ?

(A) धारवाड़ (B) मदुरा

(C) बादामी (D) हम्पी

487. विजयनगर साम्राज्य के नायक थे–

(A) सामन्त प्रमुख

(B) पैतृक सैनिक सूबेदार

(C) सेनानायक

(D) उच्च दीवानी एवं सैनिक अधिकारी

488. निम्नलिखित में से यूरोपीय व्यापारिक शक्ति को 1717 ई. में सीमा शुल्क मुक्ति की स्वीकृति प्राप्त हुई–

(A) डच (B) ब्रिटेन

(C) फ्रांसीसी (D) पुर्तगाली

489. वे चिश्ती संत कौन थे जिनके प्रति शहाबुद्दीन गौरी बहुत अनुकूल था ?
(A) शेख सलीम चिश्ती
(B) निजामुद्दीन औलिया
(C) ख्वाजा अब्दुल अहमद चिश्ती
(D) ख्वाजा मुहम्मद मुइनुद्दीन चिश्ती

490. "पूरब का साम्राज्य हमारे पैरों पर है." यह कथन किससे सम्बन्धित है ?
(A) प्रथम आंग्ल–मैसूर युद्ध से
(B) द्वितीय आंग्ल–मैसूर युद्ध से
(C) तृतीय आंग्ल–मैसूर युद्ध से
(D) चतुर्थ आंग्ल–मैसूर युद्ध से

उत्तरमाला

1. (B)	2. (B)	3. (A)	4. (B)	5. (A)
6. (C)	7. (D)	8. (A)	9. (B)	10. (C)
11. (B)	12. (A)	13. (A)	14. (B)	15. (C)
16. (D)	17. (A)	18. (A)	19. (D)	20. (D)
21. (B)	22. (B)	23. (A)	24. (B)	25. (B)
26. (A)	27. (B)	28. (A)	29. (B)	30. (A)
31. (B)	32. (D)	33. (A)	34. (A)	35. (D)
36. (A)	37. (C)	38. (A)	39. (B)	40. (B)
41. (B)	42. (C)	43. (D)	44. (A)	45. (B)
46. (A)	47. (B)	48. (A)	49. (A)	50. (C)
51. (A)	52. (C)	53. (B)	54. (D)	55. (A)
56. (C)	57. (B)	58. (A)	59. (A)	60. (B)
61. (A)	62. (A)	63. (B)	64. (B)	65. (C)
66. (B)	67. (A)	68. (B)	69. (C)	70. (A)
71. (A)	72. (A)	73. (B)	74. (D)	75. (A)
76. (B)	77. (B)	78. (C)	79. (A)	80. (B)
81. (B)	82. (C)	83. (A)	84. (C)	85. (D)
86. (D)	87. (B)	88. (B)	89. (C)	90. (D)
91. (A)	92. (B)	93. (A)	94. (D)	95. (B)
96. (C)	97. (B)	98. (A)	99. (A)	100. (B)
101. (A)	102. (C)	103. (B)	104. (C)	105. (B)
106. (A)	107. (A)	108. (B)	109. (B)	110. (B)
111. (C)	112. (C)	113. (B)	114. (A)	115. (C)
116. (B)	117. (A)	118. (C)	119. (C)	120. (A)
121. (B)	122. (A)	123. (C)	124. (A)	125. (D)
126. (B)	127. (D)	128. (D)	129. (D)	130. (D)
131. (C)	132. (B)	133. (B)	134. (C)	135. (D)
136. (D)	137. (C)	138. (B)	139. (C)	140. (D)
141. (B)	142. (C)	143. (D)	144. (C)	145. (B)
146. (B)	147. (D)	148. (A)	149. (C)	150. (C)
151. (C)	152. (A)	153. (A)	154. (D)	155. (B)
156. (C)	157. (B)	158. (A)	159. (A)	160. (D)
161. (A)	162. (A)	163. (B)	164. (C)	165. (D)
166. (D)	167. (C)	168. (A)	169. (C)	170. (B)
171. (C)	172. (B)	173. (D)	174. (C)	175. (C)
176. (B)	177. (A)	178. (D)	179. (A)	180. (C)
181. (B)	182. (B)	183. (C)	184. (B)	185. (B)
186. (B)	187. (C)	188. (B)	189. (C)	190. (B)
191. (B)	192. (B)	193. (D)	194. (A)	195. (B)
196. (C)	197. (A)	198. (B)	199. (D)	200. (C)
201. (B)	202. (A)	203. (C)	204. (A)	205. (C)
206. (C)	207. (A)	208. (A)	209. (B)	210. (C)
211. (C)	212. (D)	213. (A)	214. (A)	215. (A)
216. (B)	217. (B)	218. (B)	219. (B)	220. (D)
221. (D)	222. (D)	223. (D)	224. (D)	225. (C)
226. (C)	227. (C)	228. (D)	229. (A)	230. (D)
231. (D)	232. (A)	233. (D)	234. (B)	235. (C)
236. (D)	237. (A)	238. (C)	239. (C)	240. (B)
241. (B)	242. (C)	243. (B)	244. (B)	245. (A)
246. (C)	247. (C)	248. (C)	249. (C)	250. (A)
251. (A)	252. (D)	253. (C)	254. (C)	255. (D)
256. (D)	257. (D)	258. (B)	259. (C)	260. (C)
261. (B)	262. (A)	263. (C)	264. (A)	265. (B)
266. (A)	267. (C)	268. (B)	269. (D)	270. (A)
271. (B)	272. (C)	273. (D)	274. (D)	275. (D)
276. (A)	277. (C)	278. (B)	279. (B)	280. (B)
281. (C)	282. (D)	283. (A)	284. (C)	285. (D)
286. (C)	287. (C)	288. (D)	289. (B)	290. (B)
291. (A)	292. (A)	293. (D)	294. (D)	295. (D)
296. (C)	297. (D)	298. (C)	299. (D)	300. (C)
301. (C)	302. (C)	303. (C)	304. (C)	305. (C)
306. (D)	307. (B)	308. (C)	309. (B)	310. (D)
311. (D)	312. (C)	313. (B)	314. (B)	315. (C)
316. (B)	317. (A)	318. (B)	319. (D)	320. (B)
321. (B)	322. (B)	323. (B)	324. (B)	325. (A)
326. (D)	327. (C)	328. (D)	329. (B)	330. (C)
331. (B)	332. (C)	333. (A)	334. (C)	335. (D)
336. (B)	337. (C)	338. (A)	339. (B)	340. (C)
341. (A)	342. (C)	343. (A)	344. (D)	345. (C)
346. (A)	347. (B)	348. (B)	349. (D)	350. (A)
351. (A)	352. (C)	353. (B)	354. (B)	355. (D)
356. (A)	357. (D)	358. (B)	359. (C)	360. (D)

361. (B)	362. (C)	363. (D)	364. (D)	365. (C)
366. (D)	367. (B)	368. (C)	369. (B)	370. (B)
371. (A)	372. (C)	373. (A)	374. (D)	375. (D)
376. (D)	377. (B)	378. (A)	379. (B)	380. (D)
381. (B)	382. (C)	383. (C)	384. (C)	385. (A)
386. (C)	387. (C)	388. (A)	389. (C)	390. (C)
391. (A)	392. (C)	393. (C)	394. (D)	395. (B)
396. (C)	397. (C)	398. (D)	399. (B)	400. (B)
401. (C)	402. (D)	403. (A)	404. (D)	405. (C)
406. (A)	407. (A)	408. (C)	409. (D)	410. (B)
411. (B)	412. (C)	413. (A)	414. (C)	415. (B)
416. (D)	417. (C)	418. (C)	419. (C)	420. (B)
421. (C)	422. (D)	423. (C)	424. (D)	425. (B)
426. (A)	427. (C)	428. (D)	429. (A)	430. (A)
431. (C)	432. (D)	433. (D)	434. (A)	435. (C)
436. (B)	437. (A)	438. (A)	439. (A)	440. (D)
441. (C)	442. (A)	443. (C)	444. (C)	445. (D)
446. (D)	447. (A)	448. (D)	449. (B)	450. (D)
451. (A)	452. (A)	453. (B)	454. (A)	455. (C)
456. (B)	457. (C)	458. (B)	459. (D)	460. (D)
461. (C)	462. (D)	463. (C)	464. (C)	465. (C)
466. (B)	467. (B)	468. (D)	469. (C)	470. (C)
471. (C)	472. (A)	473. (A)	474. (B)	475. (B)
476. (B)	477. (B)	478. (A)	479. (D)	480. (C)
481. (C)	482. (B)	483. (D)	484. (C)	485. (B)
486. (D)	487. (A)	488. (B)	489. (D)	490. (D)

परिशिष्ट
(Appendix)

मध्यकालीन इतिहास की प्रमुख घटनाएँ (कालानुक्रम से)

750 ई. — पाल वंश की स्थापना, गोपाल प्रथम शासक बना.

753 ई. — बरार में दन्तिदुर्ग के नेतृत्व में राष्ट्रकूट राज की स्थापना हुई.

757 ई. — बादामी के चालुक्य वंश का अन्त. राष्ट्रकूटों द्वारा कीर्तिवर्मन द्वितीय को पराजित.

758 ई. — राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम का राज्याभिषेक.

760 ई. — प्रतिहार शासक कुक्कुक का उज्जैन में सिंहासनारोहण.

770 ई. — आयुध वंश की कन्नौज वज्रायुध ने स्थापना की.

770 से 810 ई. — पाल शासक धर्मपाल का शासनकाल.

778 ई. — उद्योतनसूरि द्वारा कुवलयमाला की रचना की.

779 से 793 ई. — राष्ट्रकूट शासक ध्रुव का शासनकाल.

783 से 795 ई. — प्रतिहार शासक वत्सराज का शासनकाल.

785 ई. — उत्तर भारत में त्रिकोणीय संघर्ष का प्रारम्भ.

786 ई. — राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने प्रतिहार शासक वत्सराज को पराजित किया.

788 ई. — अद्वैतवादी दार्शनिक एवं महान् सन्त शंकराचार्य का केरल के कलाड़ी ग्राम में जन्म.

793 ई. — राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय का महाराष्ट्र-दक्कन में शासन.

795 ई. — पश्चिम भारत में नागभट्ट द्वितीय का शासन.

810 ई. — कश्मीर में अवन्तिवर्मन ने उत्पल वंश की स्थापना की. कश्मीर में कार्कोट वंश का पतन हुआ.

814 ई. — राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष का शासनकाल.

815 ई. — बंगाल में पाल शासक देवपाल का शासन अरबी यात्री सुलेमान की भारत यात्रा.

820 ई. — शंकराचार्य का मृत्युकाल.

833 ई. — प्रतिहार शासक रामभद्र का सिंहासनारोहण.

836 ई. — प्रतिहार शासक मिहिरभोज का राज्याभिषेक मिहिरभोज का कन्नौज पर अधिकार.

843 ई. — मिहिरभोज द्वारा राजपूताना विजय प्राप्त की.

855 से 860 ई. — बंगाल में विग्रहपाल का शासन

860 से 915 ई. — बंगाल में पाल शासक नारायणपाल का शासन.

871 से 907 ई. — आदित्य प्रथम चोल का शासनकाल.

879 ई. — नेपाल के नेवाड़ी संवत् का आरम्भ.

880 ई. — राष्ट्रकूट अमोघवर्ष की मृत्यु. कृष्ण द्वितीय का राज्याभिषेक.

885 से 902 ई. — कश्मीर में उत्पल वंश के शासक शंकर वर्मन का शासनकाल.

889 ई. — मिहिरभोज की मृत्यु.

890 ई. से 910 ई. — प्रतिहारवंशीय शासक महेन्द्रपाल का शासनकाल.

892–918 ई. — वेंगी के चालुक्य शासक भीम प्रथम का शासनकाल.

897 ई. — चोल नरेश आदित्य प्रथम ने पल्लव वंश का अन्त किया.

908 ई. — प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की मगध विजय.

914 ई. — राष्ट्रकूट शासक कृष्ण II की मृत्यु.

914 से 922 ई. — राष्ट्रकूट शासक इन्द्र तृतीय का शासनकाल.

914 से 946 ई. — प्रतिहार शासक महिपाल प्रथम का शासन.

915 से 916 ई. — बगदाद के यात्री अलमसूदी ने गुजरात की यात्रा की.

916 ई. — राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीय का कन्नौज पर आक्रमण.

929 ई. — राष्ट्रकूट शासक कृष्ण III का राज्याभिषेक.

929–935 ई. — वेंगी के चालुक्य शासक युद्धमल्ल II ने राष्ट्रकूटों के प्रभाव में शासन सँभाला.

935–946 ई. — वेंगी के चालुक्यराज भीम तृतीय के नेतृत्व में चालुक्य वंश का पुनः उत्कर्ष.

942 ई. — गुजरात के चालुक्य वंश की मूलराज प्रथम ने स्थापना की.

946 ई. — वेंगी के चालुक्य शासक अम्म II का राज्याभिषेक.

950–1003 ई. — कश्मीर में रानी दिद्दा का शासनकाल.

954 ई. — चंदेल शासक धंग का राज्याभिषेक.

955 ई. — चोल शासक परान्तक प्रथम की मृत्यु.

955–985 ई. — चोल साम्राज्य के पतन का काल.

962 ई. — गजनी में अलप्तगीन ने स्वतन्त्र तुर्की राज्य स्थापित किया.

972 ई. — मालवा के प्रथम स्वतन्त्र शासक सियुक II की मृत्यु.

974 से 995 ई. — मालवा के श्रेष्ठतम शासक मुंज परमार का शासनकाल.

975 ई. लगभग — परिमल गुप्त द्वारा नवसाहसांक चरितम् की रचना.

977 ई. — गजनी में स्वतन्त्र गजनवी वंश की स्थापना, सुबुक्तगीन का प्रथम शासक के रूप में राज्याभिषेक.

983 ई. — श्रवण बेलगोला में गंगराज्य के मंत्री चामुण्डराय द्वारा गोमतेश्वर की 561/2 फुट ऊँची प्रतिमा का निर्माण कराया.

985 से 1014 ई. — चोलवंशीय शासक राजराज का शासनकाल.

986 ई. — गजनी के सुबुक्तगीन द्वारा भारत पर पहला आक्रमण.

990 से 1018 ई. — प्रतिहार नरेश राज्यपाल का शासनकाल.

990 ई. — सोमदेव सूरी द्वारा 'नीतिवाक्यम' की रचना

995 ई. — सिन्धुराज परमार का राज्याभिषेक.

997 ई. — गजनी के शासक सुबुक्तगीन की मृत्यु.

998 ई. — गजनवी में महमूद गजनवी का राज्याभिषेक.

999 ई. — महमूद गजनवी ने खलीफा से भारत पर प्रतिवर्ष आक्रमण करने की प्रतिज्ञा की.

1000 ई. — महमूद गजनवी ने पंजाब के सीमान्त प्रदेशों पर आक्रमण किया.

1001 ई. — पेशावर के पास महमूद गजनवी ने हिन्दू शासक जयपाल को हराया.

1002 ई. — पंजाब के राजा जयपाल ने आत्महत्या की.

1005 ई. — महमूद गजनवी ने भटिण्डा पर आक्रमण किया.

1006 ई. — महमूद गजनवी ने पंजाब के राजा आनन्दपाल को पराजित किया एवं आगे मुल्तान पर आक्रमण किया.

1008 ई. — महमूद गजनवी ने सुखपाल को पराजित कल्याणी के शासक विक्रमादित्य-V का राज्याभिषेक.

1009 ई. — महमूद गजनवी ने नारायणपुर (अलवर) पर विजय प्राप्त की.

1010 ई. — प्रख्यात परमार शासक भोज का मालवा में राज्याभिषेक किया गया.

मुल्तान को महमूद गजनवी ने गजनी राज्य में मिलाया. तंजौर के मन्दिर 'राजराजेश्वर' मंदिर का निर्माण राजराज चोल ने पूरा कराया. राजराज चोल ने श्रीलंका पर विजय प्राप्त की.

1012 ई. — महमूद गजनवी ने गरशिस्तान पर विजय प्राप्त की.

1014 ई. — चोल शासक राजराज की मृत्यु एवं राजेन्द्र चोल का राज्याभिषेक हुआ.

1015 ई. — कल्याणी के चालुक्यराज जयसिंह द्वितीय का राज्याभिषेक.

1016 ई. — राजेन्द्र प्रथम द्वारा चीन में पहला राजदूत भेजा गया.

1017 ई. — महमूद गजनवी ने ख्वारिज्म पर विजय प्राप्त की.

1018 ई. — महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण कर, कन्नौज और मथुरा में लूट-खसोट की.

1020 ई. — महमूद का गोर पर अधिकार.

1021 ई. — पंजाब के शासक त्रिलोचन पाल की मृत्यु से शाहिया वंश का पतन.

1022 ई. — महमूद गजनवी ने चन्देल शासक पर द्वितीय आक्रमण किया.

पंजाब में राजा भीमपाल का राज्याभिषेक. राजेन्द्र प्रथम ने पूर्वी भारत पर विजय प्राप्त की.

1026 ई. — महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मन्दिर पर आक्रमण कर उसे लूटा.

बंगाल के पास राजा महिपाल प्रथम के सारनाथ अभिलेख की तिथि.

1027 ई. — महमूद गजनवी का भारत पर 17वाँ आक्रमण सिन्ध के जाटों पर.

1028 ई. — कश्मीर के लोहारवंशीय शासक अनन्तराय का राज्याभिषेक.

1030 ई. — तहकीक-ए-हिन्द के रचनाकार अलबेरून भारत में आया. महमूद गजनवी की मृत्यु.

1032 ई. — आबू पर्वत पर दिलवाड़ा मन्दिर का निर्माण राजपूत सूबेदार विमलशाह ने कराया.

1033 ई. — राजेन्द्र प्रथम ने चीन के लिए अपना दूसरा राजदूत भेजा. नियाल्गीन पंजाब के तुर्की सूबेदार का भारत पर आक्रमण.

1034 ई. — कलचुरि शासक गांगेय देव का महिपाल एवं वाराणसी पर आक्रमण.

1036 ई. — अन्तिम प्रतिहार शासक यशपाल की अन्तिम ज्ञात तिथि.

1039 ई. — कलचुरि शासक गांगेय देव की मृत्यु.

1040 ई. — कलचुरि शासक लक्ष्मीकर्ण का शासनकाल.

1041 ई. — श्रीलंका पर राजेन्द्र चोल का आक्रमण.

1044 ई. — राजाधिराज चोल का राज्याभिषेक.

1050 ई. — भक्ति आन्दोलन के प्रवर्त्तक रामानुज का तिरुपति में जन्म हुआ.

1052 ई. — राजेन्द्र II चोल शासक का राज्याभिषेक.
दिल्ली के किले का निर्माण पूरा हुआ.

1060 ई. — चन्देल शासक कीर्तिवर्मा का राज्याभिषेक.

1064 ई. — वीर राजेन्द्र चोल का राज्याभिषेक.

1070 ई. — चोल शासक कुलोतुंग प्रथम का राज्याभिषेक.

1077 ई. — कुलोत्तुंग चोल ने चीन में 72 व्यापारियों का प्रतिनिधिमण्डल भेजा.

1079 ई. — कर्णाटवंशीय शासक नान्यदेव का मिथिला में राज्याभिषेक.

1089 से 1101 ई. — कश्मीर में विद्वान् शासक श्रीहर्ष का शासनकाल.

1094 ई. — चौलुक्य राजकर्ण त्रैलोक्यमल्ल की मृत्यु.

1095 ई. — बंगाल में विजयसेन ने सेनवंश की स्थापना की.

1100 ई. — विज्ञानेश्वर की मिताक्षरा एवं विल्हण की विक्रमांगदेवचरितम् का रचनाकाल.

1102 से 1143 ई. — गुजरात में चालुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज का शासनकाल.

1103 ई. — गहड़वाल राजा मदनपाल का राज्याभिषेक.

1110 ई. — विष्णुवर्द्धन द्वारा द्वारसमुद्र में होयसल राज्य की स्थापना की.

1114 से 1154 ई. — गहड़वाल शासक गोविन्दचन्द्र का शासनकाल.

1120 ई. लगभग — जैन आचार्य हेमचन्द्र सूरी की न्यास, द्वयाश्रय एवं त्रिषष्ठिशलाका पुरुषचरित का अनुमानित रचनाकाल.

1128 ई. — कश्मीर में अन्तिम लोहार शासक जयसिंह का राज्याभिषेक.

1133 ई. — अजमेर में राजपूत शासक अर्णोराज का शासनकाल.

1135 ई. — कुलोत्तुंग द्वितीय चोल का राज्याभिषेक.

1150 ई. — लाहौर में गजनवी शासक खुसरो शाह का सिंहासनारोहण.
कम्बन की 'तमिल रामायण' का रचनाकाल.

1155 ई. — कश्मीर में लोहार वंश का अन्त.
गहड़वाल शासक विजयचन्द्र का राज्याभिषेक.

1160 ई. — लाहौर में गजनी शासक खुसरो मलिक का राज्याभिषेक.

1167 ई. — अन्तिम चन्देल शासक परमार्दि का राज्याभिषेक.

1170 ई. — कन्नौज में गहड़वाल शासक जयचन्द्र का राज्याभिषेक.

1171 ई. — चौलुक्य शासक कुमारपाल की मृत्यु.

1173 ई. — गजनी में मुहम्मद गौरी. शहाबुद्दीन का राज्याभिषेक.
होयसल सम्राट् वीर बल्लाल का द्वारसमुद्र में राज्याभिषेक.

1175 ई. — मुहम्मद गौरी का मुल्तान पर अधिकार.

1176 ई. — मुहम्मद गौरी का उच्छ के दुर्ग पर अधिकार.

1178 ई. — दिल्ली में पृथ्वीराज चौहान का राज्याभिषेक.

1179 ई. — गुजरात में चौलुक्य शासक भीम द्वितीय का राज्याभिषेक.

1181 से 1201 ई. — कम्बूज के राजा जयवर्मन सप्तम का शासनकाल.

1181 ई. — पृथ्वीराज चौहान की महोबा विजय कल्याणी के अन्तिम शासक सोमेश्वर चतुर्थ का राज्याभिषेक.

1182 ई. — मुहम्मद गोरी का देबल और सिन्ध पर अधिकार.

1184 ई. — मुहम्मद गौरी का स्यालकोट पर आक्रमण.

1185 से 1205 ई. — बंगाल में लक्ष्मणसेन का शासन.

1186 ई. — मुहम्मद गौरी का लाहौर पर आक्रमण मलिक खुसरो की पराजय से गजनवी वंश का अन्त.
पृथ्वीराज चौहान की गुजरात विजय.

1189 ई. — कल्याणी के चालुक्य वंश का अन्त मुहम्मद गौरी का भटिण्डा पर प्रथम आक्रमण.

1190 ई. — जटावर्मन कुलशिखर पाण्ड्य का राज्याभिषेक.

1191 ई. — तराइन का प्रथम युद्ध और पृथ्वीराज चौहान द्वारा मुहम्मद गौरी की पराजय.

1192 ई. — तराइन का द्वितीय युद्ध, पृथ्वीराज चौहान की पराजय.
कवि जगनिक का आल्हाखण्ड एवं श्रीहर्ष के नैषधीयचरितम् का रचनाकाल.

1193 ई. — मुहम्मद गौरी का दिल्ली पर अधिकार.

1195-96 ई. — मुहम्मद गौरी की बयाना के शासक कुमारपाल पर विजय.

1196 ई. — त्रिपुरी के हैहय वंश का अन्त.

1197 से 1247 ई. — यादव वंशीय शासक सिंघन का शासनकाल.

1201-1202 ई. — चोल राज्य में दुर्भिक्ष पड़ा.

1203 ई. — मुहम्मद गौरी गोर का शासक बना.

1206 ई. — धामीयक में मुहम्मद गौरी का निधन, दिल्ली सल्तनत की स्थापना एवं प्रथम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक का राज्याभिषेक, बंगाल में अलीमर्दान का राज्याभिषेक.

1208 ई. — कुतुबुद्दीन ऐबक का गजनी पर अधिकार.

1210 ई. — कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु.
लाहौर में आरामशाह का राज्याभिषेक.

1211 ई. — इल्तुतमिश का राज्याभिषेक.

1212 ई. — बंगाल में अलीमर्दान की हत्या.

1215 ई. — तराइन के युद्ध में इल्तुतमिश ने यल्दूज को हराया.

1217 ई. — यल्दूज की मृत्यु.

1221 ई. — मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खाँ भारत की सीमा पर पहुँचा.

1226 ई. — इल्तुतमिश का रणथम्भौर पर अधिकार.

1232 ई. — इल्तुतमिश द्वारा कुतुबमीनार का निर्माण पूरा किया.

1235 ई. — शेख मोइनुद्दीन चिश्ती की मृत्यु.

1235 से 1285 ई. — चिश्ती सम्प्रदाय के सूफी संत शेख कुतुबुद्दीन काकी का कालक्रम.

1236 ई. — रजिया सुल्तान ने दिल्ली का राजसिंहासन प्राप्त किया.

1241 ई. — मंगोलों का लाहौर पर अधिकार.

1242 ई. — बहरामशाह की हत्या.

1244 ई. — गुजरात में विशालदेव का राज्याभिषेक.

1245 ई. — बलबन दिल्ली का अमीरे-हाजिब बना.

1250 ई. — मराठी भाषा में संत ज्ञानेश्वर द्वारा ज्ञानेश्वरी की रचना की गई.

1251 से 1254 ई. — चीनी यात्री चाउ-जु-कुआ की भारत यात्रा.

1253 ई. — पटियाली (उत्तर प्रदेश) में उर्दू-फारसी विद्वान् अमीर-खुसरो का जन्म हुआ.

1258 ई. — सुन्दर पाण्ड्य द्वारा अन्तिम चोल शासक राजेन्द्र तृतीय पराजित, चोल साम्राज्य का पतन.

1265 ई. — दिल्ली में बलबन का राज्याभिषेक.

1289 ई. — कैखुसरो की हत्या. पश्चिमोत्तर भारतीय सीमा पर मंगोलों का आक्रमण.

1290 ई. — कैकूबाद एवं कैयूमर्स की हत्या, दास वंशीय सत्ता का पतन.
खिलजी वंश की स्थापना, जलालुद्दीन खिलजी बना दिल्ली का शासक.

1292 ई. — होयसल शासक वीर बल्लाल तृतीय का राज्याभिषेक. मार्कोपोलो का भारत से प्रस्थान.

1296 ई. — अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली का शासन सँभाला.

1297 ई. — अलाउद्दीन खिलजी का मुल्तान पर आक्रमण.

1300 ई. — रणथम्भौर पर अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण.

1310 ई. — पाण्ड्य शासक कुलशेखर की हत्या.

1312 ई. — देवगिरि में सिंघनदेव का राज्याभिषेक.

1314 ई. — हरपाल देव देवगिरि का शासक नियुक्त.

1316 ई. — अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु. मलिक काफूर की हत्या. दिल्ली में शहाबुद्दीन उमर का राज्याभिषेक एवं पतन.

1320 ई. — मुबारकशाह की हत्या एवं खिलजी वंश का अन्त. तुगलक वंश की स्थापना, गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली का शासक.

1321 ई. — जूना खाँ का विद्रोह.

1325 ई. — बंगाल राज्य का विभाजन, कन्नड़ भारत के लेखक एवं महाकवि कुमार व्यास का जन्म.
मुहम्मद तुगलक के नाम से जूना खाँ दिल्ली का शासक बना.
प्रसिद्ध सूफी संत निजामुद्दीन ओलिया की मृत्यु. अमीर खुसरो की मृत्यु.

1327 ई. — दिल्ली से राजधानी दौलताबाद बनाई गई.

1329 ई. — मुहम्मद तुगलक द्वारा ताँबे की सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन.
उड़िया के महान् लोक कवि सरलादास का जन्म.

1333 ई. — मोरक्का के यात्री इब्नेबतूता का भारत आगमन

1336 ई. — विजयनगर की हरिहर एवं बुक्का ने स्थापना की.

1337 ई. — सोनारगाँव में मुबारकशाह ने स्वयं को स्वतन्त्र घोषित किया.

1339 ई. — शम्सुद्दीन शाह मिर्जा ने कश्मीर में मुस्लिम शासन की स्थापना की.

1342 ई. — इब्नेबतूता का भारत से प्रस्थान. द्वारसमुद्र के होयसल सम्राट वीर बल्लाल द्वितीय की मृत्यु.

1344 ई. — खलीफा द्वारा मुहम्मद तुगलक को प्रथम नियुक्ति-पत्र प्रदान किया गया.

1347 ई. — दक्कन में अलाउद्दीन बहमनशाह द्वारा बहमनी राज्य की स्थापना.

1349 ई. — इमामी ने फुतूह-उस-सलातीन की रचना की.

1350 ई. — फारसी इतिहासकार शम्से सिराज अफीफ का जन्म.

1351 ई. — मुहम्मद तुगलक की मृत्यु, फीरोज तुगलक का राज्याभिषेक.

1354 ई. — फारसी विद्वान् एवं इतिहासकार जियउद्दीन बर्नी द्वारा तारीखे-फीरोजशाही की रचना.

1364 ई. — मेवाड़ के हम्मीरदेव का मृत्यु काल

364–1382 ई. — मेवाड़ में राणा क्षेत्रसिंह का शासनकाल.

1368 ई. — पाण्डुआ की अदीना मस्जिद का सिकन्दरशाह ने निर्माण कराया.

1369 ई. — समरकन्द में तैमूर का राज्याभिषेक.

1377 ई. — इब्नेबतूता की मोरक्को में मृत्यु.

1377 से 1404 ई. — विजयनगर में हरिहर द्वितीय का शासन-काल.

1380 ई. से 1479 ई. — प्रसिद्ध मैथिली कवि विद्यापति का कालक्रम.

1389 ई. — गयासुद्दीन तुगलक को अपदस्थ कर अबू-बक को शासन सौंपा.

शाहजादा मुहम्मद का समाना में राज्या-भिषेक)

1394 ई. — जौनपुर में मलिक सरवर द्वारा शर्की वंश की स्थापना.

मारवाड़ राज्य की चुंद ने स्थापना की.

1395 ई. — दिल्ली में महमूद तुगलक का राज्याभिषेक.

1396 ई. — मुजफ्फरशाह ने गुजरात की स्वतन्त्रता की घोषणा की.

1397 से 1422 ई. — फीरोजशाह बहमनी का शासनकाल.

1398 ई. — दिल्ली पर तैमूर का आक्रमण. शुम्से सिराज अफीफ द्वारा तारीखे-फीरोजशाह की रचना.

1399 ई. — जौनपुर के सम्राट् मलिक सरवर की मृत्यु खिज्र खाँ तैमूर का प्रतिनिधि नियुक्त.

1399–1402 ई. — जौनपुर में मुबारकशाह का शासनकाल

1402–1436 ई. — जौनपुर में शर्की शासक इब्राहीमशाह का शासनकाल.

1404 ई. — गुजरात के शासक मुहम्मदशाह की हत्या तथा गुजरात में ज़फ़र खाँ पुनः शासक बना.

1405 ई. — बंगाल के सम्राट् गयासुद्दीन आजम का पहला दूतमण्डल चीन के मिंग शासक के दरबार में पहुँचे.

1406 ई. — विजयनगर में गृह युद्ध छिड़ा तथा देवराय प्रथम का राज्याभिषेक हुआ. मालवा में हुशंगशाह द्वारा स्वतन्त्र राज्य स्थापित.

1408 ई. — जौनपुर में इब्राहीमशाह के द्वारा अतला मस्जिद का निर्माण.

1411 ई. — गुजरात में अहमदशाह का राज्याभिषेक. गुजरात के शासक जफर खाँ की मृत्यु.

1413 ई. — महमूद तुगलक की मृत्यु एवं तुगलक वंश का अन्त.

1414 ई. — दिल्ली में खिज्र खाँ ने सैय्यद वंश की स्थापना की.

1415 ई. — बंगाल में राजा गणेश ने हिन्दू शासन की स्थापना की.

गुजराज के शासक अहमदशाह ने अहमदाबाद नगर की नींव रखी.

1420 ई. — इटालियन शासक निकोलोकोण्टी विजयनगर की यात्रा पर आया.

1420 से 1470 ई. — कश्मीर में जैनुल आबदीन का शासनकाल.

1421 ई. — दिल्ली में मुबारकशाह का राज्याभिषेक.

1422 से 1446 ई. — विजयनगर में शक्तिशाली शासक देवराय द्वितीय का शासनकाल.

1430 से 1469 ई. — मेवाड़ में राणाकुम्भा का शासनकाल.

1434 ई. — सैय्यदवंशीय शासक मुबारकशाह की हत्या, मुहम्मदशाह का राज्याभिषेक हुआ.

1436 ई. — मालवा में महमूदशाह ने खिलजी वंश की स्थापना की.

जौनपुर में महमूद-शाह-शर्की का राज्या-भिषेक.

1440 से 1519 ई. — भक्ति आन्दोलन के प्रमुख सन्त कबीरदास का जीवनकाल.

1442 से 1450 ई. — गुजरात में मुहम्मदशाह का शासनकाल.

1443 ई. — फारसी शासक अब्दुर्रज्जाक की विजयनगर यात्रा.

1445 ई. — सैय्यद सम्राट् अलाउद्दीन आलमशाह बना दिल्ली का शासक.

1456 ई. — सन्त रामानन्द की मृत्यु.

1458 ई. — जौनपुर में हुसैनशाह का राज्याभिषेक.

1459 से 1511 ई. — गुजरात में महमूद बेगड़ा का शासनकाल.

1464 ई. — बिक्का ने बीकानेर राज्य की स्थापना की.

1469 ई. — सिख सम्प्रदाय के सन्त गुरुनानक का ननकाना साहिब में जन्म.

1472 ई. — शेरशाह सूरी का जन्म.

1474 ई. — बनारस के निकट बल्लभाचार्य का जन्म.

1483 ई. — मुगल वंश की स्थापना करने वाले बाबर का जन्म. सूरदास का जन्म.

1484 ई. — बरार में स्वतन्त्र इमादशाही वंश की स्थापना.

1485 ई. — वैष्णव सन्त चैतन्य का जन्म.

1486 ई. — विजयनगर में संगम वंश का अन्त. नरसिंह सलुव ने स्थापित किया सलुव वंश.

1489 ई. — सिकन्दर लोदी का दिल्ली में राजयाभिषेक बहलोल लोदी की मृत्यु.

1494 ई. — बाबर का ग्यारह वर्ष की उम्र में फरगाना में राज्याभिषेक.

सिकन्दर लोदी ने जौनपुर में शर्की वंश का अन्त कर अधिकार किया.

1503 ई. — कोचीन में पुर्तगालियों ने पहले किले का निर्माण कराया.

1505 ई. — पुर्तगाली गवर्नर फ्रांसिस्को अल्मीड़ा भारत में आया. विजयनगर में वीर नरसिंह ने स्थापित किया तुलुव वंश. कन्नूर में पुर्तगालियों ने दूसरे किले का निर्माण किया.

1508 ई. — काबुल में हुमायूँ का जन्म.

1509 ई. — विजयनगर में कृष्णदेवराय का राज्याभिषेक.

1509 से 1527 ई. — मेवाड़ में राणा सांगा का शासनकाल.

1509 से 1515 ई. — पुर्तगाली गवर्नर अलफांसो डि अल्वुकर्क का भारत में कालक्रम.

1510–1531 ई. — मालवा में महमूद द्वितीय का शासनकाल.

1517 ई. — इब्राहीम लोदी का दिल्ली में राज्याभिषेक.

1518 ई. — पुर्तगाली यात्री बारबेसा की विजयनगर यात्रा.

खातोली के युद्ध में राणा सांगा ने इब्राहीम लोदी को परास्त किया.

1519 ई. — बाबर का भारत पर आक्रमण. मीरा एवं बजौर पर बाबर ने अधिकार किया.

1523 ई. — बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम का जन्म. लाहौर एवं सरहिन्द पर बाबर ने किया आक्रमण.

1526 ई. — पानीपत का पहला युद्ध : इब्राहीम लोदी को हराकर बाबर ने दिल्ली पर अधिकार किया.

1527 ई. — बहमनी साम्राज्य का अन्त. खानवा के युद्ध में बाबर ने राणा सांगा को हराया. बीदर में अमीर अली बरीद ने स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की.

1528 ई. — राणा सांगा की मृत्यु. चित्तौड़ में राणा रत्नसिंह का राज्याभिषेक हुआ.

1529 ई. — घाघरा का युद्ध हुआ, जिसमें बाबर ने अफगानों को पराजित किया.

1530 ई. — कृष्णदेव राय की मृत्यु. भारत के पुर्तगाली साम्राज्य की राजधानी गोआ बना. हुमायूँ का राज्याभिषेक. बाबर की आगरा में मृत्यु हुई.

1532 से 1587 ई. — सन्त तुलसीदास का कालक्रम.

1533 ई. — बहादुरशाह का रणथम्भौर एवं अजमेर पर अधिकार.

1534 ई. — मन्द्रैल का युद्ध में मुगल सेना ने तातार खाँ को पराजित किया. हुमायूँ ने मालवा में प्रवेश किया.

1538 ई. — गुरु नानक की मृत्यु. महमूद शाह को पराजित कर शेरशाह ने गौड़ पर अधिकार किया. हुमायूँ का गौड़ पर अधिकार, हुसैनी राजवंश का पतन.

1540 ई. — हिन्दुस्तान के सम्राट् के रूप में शेरशाह का आगरा में राज्याभिषेक.

1542 ई. — वर्तमान पटना नगर की शेरशाह ने स्थापना की. अमरकोट में अकबर का जन्म.

1545 ई. — कालिंजर अभियान के दौरान शेरशाह सूरी की मृत्यु.

1546 ई. — महाराणा प्रताप का जन्म. संत कवयित्री मीराबाई का निधन.

1553 ई. — आदिलशाह का राज्याभिषेक. फरह का युद्ध में सिकन्दर शाह ने इब्राहीमशाह को पराजित किया.

1554 ई. — मुहम्मद खाँ सूर ने बंगाल में स्वतन्त्र सत्ता की घोषणा की.

1555 ई. — हुमायूँ का लाहौर पर अधिकार. सरहिन्द का युद्ध जिसमें हुमायूँ ने अफगानों को परास्त किया.

1556 ई. — हुमायूँ की पुस्तकालय की छत से गिरने पर मृत्यु.
कालानूर में अकबर का राज्याभिषेक, पानीपत का द्वितीय युद्ध.

1557 ई. — भारत में प्रथम मुद्रित पुस्तक का प्रकाशन गोआ में पुर्तगालियों ने किया.

1558 ई. — इब्राहीम खाँ सूर की मृत्यु के साथ ही सूर वंश का अन्त.

1564 ई. — अकबर ने जजिया कर समाप्त किया.

1567 ई. — विजयनगर में तिरूमल ने अरविदु वंश की स्थापना की.

1569 ई. — मरियम उज्जमानी की कोख से सलीम का जन्म.

1571 ई. — फतेहपुर सीकरी की स्थापना.

1575 ई. — फतेहपुर सीकरी में अकबर के द्वारा इबादतखाने का निर्माण.
मनसबदारी प्रथा का संगठन.

1581 ई. — सिख गुरु रामदास की मृत्यु. काबुल का मुगल साम्राज्य में विलय हुआ.

1584 ई. — अकबर द्वारा इलाही संवत् की स्थापना.

1585 ई. — कश्मीर का मुगल साम्राज्य में विलय.

1592 ई. — लाहौर में शाहजहाँ का जन्म.

1595 से 1600 ई. — बीजापुर में चाँदबीबी का शासनकाल.

1597 ई. — महाराणा प्रताप का युद्ध

1600 ई. — भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना.

1605 ई. — अकबर की मृत्यु एवं जहाँगीर का राज्याभिषेक.

1606 ई. — जहाँगीर के पुत्र खुसरो ने विद्रोह किया. गुरु अर्जुनदेव को जहाँगीर ने प्राणदण्ड दिया.

1608 ई. — सूरत में अंग्रेजों की प्रथम कोठी की स्थापना.

1611 ई. — मसूलीपट्टनम् में अंग्रेजों ने कारखाना स्थापित किया. जहाँगीर का नूरजहाँ से विवाह.

1612 ई. — शाहजहाँ का मुमताज महल से विवाह हुआ. बंगाल की राजधानी राजमहल से ढाका स्थानान्तरित.

1618 ई. — औरंगजेब का दोहद (उज्जैन) में जन्म.

1627 ई. — शिवनेर में शिवाजी का जन्म. राजूरी के पास जहाँगीर की मृत्यु.

1628 ई. — शाहजहाँ का राज्याभिषेक.
गुरु गोविन्द सिंह ने मुगल सेना को हराया.

1630 से 1634 ई. — इटली के यात्री पीटर मण्डी द्वारा मुगल साम्राज्य की यात्रा.

1631 ई. — मुमताज महल की मृत्यु.
सिकन्दरा में अकबर का मकबरा बनकर पूर्ण हुआ.

1633 ई. — निजामशाही सल्तन का पतन, अहमदनगर का मुगल साम्राज्य में विलय.
बालासोर (उड़ीसा) में अंग्रेज फैक्ट्री की स्थापना.

1636 ई. — शाहजहाँ ने गोलकुण्डा व बीजापुर से सन्धि की. औरंगजेब दक्कन का वायसराय बना.

1641 ई. — डचों ने पुर्तगालियों से मलक्का दुर्ग जीता.

1642 ई. — फ्रेंच जौहरी टेवर्नियर की भारत की प्रथम यात्रा.
मालवा एवं गोंडवाल के भील विद्रोह का मुगलों ने दमन किया.

1651 ई. — हुगली में अंग्रेजी फैक्ट्री की स्थापना.

1656 से 1687 ई. — इटालियन विदेशी यात्री मनुची का भारत यात्रा काल.

1661 ई. — इंगलैण्ड के सम्राट् चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगालियों ने बम्बई दहेज में दी.

1665 ई. — पुरन्दर की सन्धि (शिवाजी व मुगल सेनापति जयसिंह के मध्य)

1666 ई. — लम्बी बीमारी के बाद शाहजहाँ की आगरा में मृत्यु.

1667 ई. — औरंगजेब ने मराठों से सन्धि कर शिवाजी को राजा की मान्यता दी.

1669 ई. — औरंगजेब ने काशी के विश्वनाथ मन्दिर को तुड़वाया.

1674 ई. — फ्रेंकोई मार्टिन ने पाण्डिचेरी की स्थापना की. रायगढ़ में शिवाजी का राज्याभिषेक.

1675 से 1708 ई. — दसवें सिख गुरु गोविन्दसिंह का कालक्रम.

1678 ई. — शिवाजी की बीजापुर सन्धि.

1679 ई. — औरंगजेब ने जजिया कर लगाया.

1680 ई. — शिवाजी की मृत्यु. मेवाड़ के राजा राजसिंह का मुगलों से संघर्ष.

1687 ई. — औरंगजेब की गोलकुण्डा विजय.

1690 ई. — चन्द्रनगर में फ्रांसीसी कारखाना खुला. सुतानट्टी में अंग्रेज फैक्ट्री की स्थापना की.

1700 ई. — जॉब चार्नक ने कलकत्ता की स्थापना की.
सुतानट्टी में अंग्रेजों के फोर्ट विलियम किले का निर्माण.

1701 ई.	— मुगलों ने गुरु गोविन्द सिंह को आनन्दपुर छोड़ने के लिए बाध्य किया.
1702 ई.	— गुरु गोविन्द सिंह ने आनन्दपुर पर पुनः अधिकार किया.
1703 ई.	— मराठों ने बरार पर आक्रमण किया.
1707 ई.	— औरंगजेब की मृत्यु. शाहआलम ने बहादुरशाह के नाम से सम्राट् घोषित किया.
1708 ई.	— नान्दे में गुरु गोविन्द सिंह की हत्या.
1712 ई.	— मुगल शासक बहादुरशाह की मृत्यु, जहाँदार शाह का राज्याभिषेक.
1719 ई.	— मुहम्मदशाह मुगल सम्राट् बना.
1720 से 1740 ई.	— पेशवा बाजीराव प्रथम का कालक्रम.
1724 ई.	— अवध में सआदत खाँ द्वारा स्वतन्त्र सत्ता की घोषणा. शूकरखेड़ा का युद्ध, निजाम ने मुगलों को हराया.
1729 ई.	— मराठों का उज्जैन पर अधिकार. मुगल सेनापति जयसिंह मालवा का सूबेदार बना.
1739 ई.	— अफगान शासक नादिरशाह का दिल्ली पर आक्रमण.
1740 ई.	— अलीवर्दी खाँ बंगाल का नवाब बना.
1748 ई.	— हैदराबाद के निजामुल मुल्क की मृत्यु. मुगल सम्राट् मुहम्मदशाह की मृत्यु.
1748 से 1754 ई.	— मुगल सम्राट् अहमदशाह का शासनकाल.
1749 ई.	— मद्रास पर अंग्रेजों ने पुनः अधिकार किया. छत्रपति शाहुजी की मृत्यु.
1750 से 1754 ई.	— द्वितीय कर्नाटक युद्ध.
1756 ई.	— अलीवर्दी खाँ की मृत्यु. सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना. काल कोठरी की दुर्घटना. अलीनगर की सन्धि नवाब सिराजुद्दौला एवं अंग्रेजों के मध्य.

शब्दावली

(750 ई. से मुगलकाल तक)

750 ई. से 1200 ई. के भारत की शब्दावली

देशज	— दस गाँवों का मुखिया
कोट्टम	— चरागाह युक्त कृषि क्षेत्र
अग्रहार	— ब्राह्मणों को दान में मिला गाँव
श्रोतिय	— वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण
हासिन	— हल चलाने वाला
शातिश	— सौ गाँवों का प्रमुख
प्रवृत्ति रस	— व्यापारिक संगठन
आदियान	— दास
अलवार	— वैष्णव सन्त (गाकर धर्म का प्रचार करने वाले)
नयनार	— शैव सन्त
पंच महाशब्द	— सामन्तीय विशेषाधिकार
देवदान	— मन्दिरों को दिया जाने वाला दान
पलिचन्दा	— जैन और बौद्धों को दी जाने वाली भूमि
विंश तिष	— 20 गाँवों का प्रमुख
भट्टारक	— जैन धर्म के शिक्षक
बसाढ़ी	— जैन विहार
भोज्यान्ना	— शूद्र द्वारा ब्राह्मण के लिए तैयार भोजन
उदयार	— ईश्वर या मालिक
चिट्टिरामेली	— किसानों का संगठन
करज	— भूमि अनुदान
वीरागल	— वीर स्तम्भ
मण्डलामुडालि	— मण्डल का सरदार
कनिका	— ग्रामीणों द्वारा अधिकारियों को दिया जाने वाला कर
वेलाकुला करना	— बन्दरगाह का अधिकारी
हसिन	— हल चलाने वाला
देश्या	— भूमि अनुदान
अर्धिक	— हिस्सेदार
परिहार	— कर से मुक्त व्यक्ति
स्कन्धावर	— सैनिक शिविर
पुरोहित	— राजदरबार का ब्राह्मण जो यज्ञादि कर्म करता था.
राष्ट्रभतारा	— प्रान्तीय अधिकारी
पलिचन्दा	— जैन और बौद्धों को दी जाने वाली भूमि.
कनिका	— ग्रामीणों द्वारा अधिकारियों को दिया जाने वाला कर

दुस्तसाध्य	—	पुलिस अधिकारी
मण्डलान्तर	—	सामन्त का राज्य
अक्षपट्टालिका	—	राजस्व अधिकारी
ओलई	—	मुख्य न्यायालय
कमावचेरि	—	शिल्पकारों के भवन
शुडुगाड	—	शमशान घाट
युग	—	व्यवसायियों की समिति
उर	—	गैर ब्राह्मण बस्ती या सभा
एरिवियत्तना	—	गोदाम एवं वितरण केन्द्र
रथराज	—	वर्णसंकरों का वर्ग
परैया	—	अछूत लोग
पेरूंगुर्रि	—	महासभा
वेल्लाल	—	शूद्र कृषक
पण्डिका बलकूलि	—	सुरक्षा कर
शुडुगाड	—	शमशानघाट
पल्लियों	—	खेतिहर मजदूर
वेडैक्कार	—	राजा के अंगरक्षक
सन्धि विग्रहिक	—	कूटनीतिज्ञ
जलपथकराना	—	राजमार्गों की देखभाल करना
कोट्टपाल	—	दुर्गों का रक्षक
तन्त्रपाल	—	स्थानीय प्रशासक
व्यवहारिक	—	प्रमुख न्यायाधिकारी
महापुरोहित	—	धार्मिक मामलों का प्रधान
भाण्डगारिक	—	राजकोष का प्रधान
धर्मस्थ	—	न्याय विभाग का प्रधान
साधनिक	—	पुलिस अधिकारी

सल्तनतकालीन शब्दावली

मुहतासिब	—	नैतिक नियमों का पालक
यजकी	—	गुप्तचर
मुफ्ती	—	कानूनी व्याख्याकार
खान	—	सेना का सर्वोच्च अधिकारी
खजीन	—	खजांची
उलेमा	—	इस्लाम के व्याख्याकार
खलीफा	—	मुस्लिम राज्य एवं इस्लामी धर्म का प्रधान.
दबीर	—	लेखक
अमीर-ए-हाजिक	—	अनुशासन मंत्री
सद्र-उस-सुदूर	—	धर्म मन्त्री
मजूमदार	—	आय-व्यय का व्यवस्थापक
वकील-ए-सल्तनत	—	वजीर का सहयोगी
दीवाने बकूफ	—	व्यय के कागजात तैयार कराने वाला विभाग.
दीवान-ए-रसालत	—	विदेशमंत्री
मुतशर्रिफ	—	कारखाने का प्रधान
काजी-उल-कुजात	—	न्याय विभाग का सर्वोच्च अधिकारी
आरिज-ए-मुमालिक	—	सेना मंत्री
अमीर-ए-आखूर	—	अश्वशाला का प्रधान
शाहना-ए-पील	—	राजकीय हस्तिशाला का प्रधान
दबीर-ए-खास	—	आलेख विभाग का प्रधान
कोतवाल एवं मुफरिद	—	किलों के रक्षक
अमीर-ए-कोही	—	कृषिविभाग का प्रधान
दीवान-ए-रसालत	—	विदेश मंत्री
वकील-ए-दर	—	सुल्तान और शाही महल का व्यक्तिगत सेवक
दीवान-ए-इंशा	—	पत्राचार विभाग
दीवान-ए-खैरात	—	दान विभाग
दीवान-ए-बन्दगान	—	दास विभाग
दीवान-ए-विजारत	—	वजीर का विभाग
कारकुन	—	क्लर्क

मुगलकालीन शब्दावली

जामी	—	प्रधान मस्जिद
काजी-उल-कजात	—	न्यायाधीश
उश्र	—	मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर
नदीम	—	सुल्तान का सहचर
इनामघर	—	भोजन तथा आराम का कक्ष
अक्ता	—	सैनिक पदाधिकारियों को जीवन निर्वाह एवं सैन्य संचालन के लिए दी जाने वाली राशि.
अमीर	—	500 से 2500 तक के मनसबदार को.
अमीरे आजम	—	2500 से भी अधिक मनसबदार.
मुहतसिब	—	प्रजा के नैतिक चरित्र का संरक्षक
नायब	—	सुल्तान की अनुपस्थिति में शासन का भार सँभालने वाला.
पोलज	—	सर्वश्रेष्ठ भूमि जिस पर प्रतिवर्ष खेती होती हो.
मीर-आतिश	—	तोपखाना विभाग का प्रधान
नदीम	—	सुल्तान का सहचर
इदरार	—	धार्मिक एवं विद्वान् व्यक्तियों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता.

दाखिली	—	राज्य द्वारा नियुक्त मनसबदारों का अधीनस्थ.
अहदी	—	बादशाह द्वारा नियुक्त अंगरक्षक
हश्मे क्लब	—	केन्द्र सरकार की सेना
मीर-बख्शी	—	सैन्य विभाग का प्रमुख
दाग महाली	—	अकबर के समय में एक विभाग जिसका कार्य हाथी-घोड़ों पर दाग लगाना था.
गाजी	—	जिहाद में विश्वास रखने वाला वीर सिपाही या योद्धा
सद्र-उस-सद्र	—	धार्मिक मामलों में बादशाह का सलाहकार
सम्पत्ति जाब्ती	—	मनसबदार की मृत्यु पर राज्य द्वारा सम्पत्ति जब्त करना.
मिरास	—	वंशानुगत अधिकार
किसास	—	गम्भीर अपराध के प्रति दिया जाने वाला दण्ड.
जजिया	—	हिन्दुओं से लिया जाने वाला कर
जकात	—	मुसलमान से लिया जाने वाला धार्मिक कर.
मनसबदार	—	500 से नीचे मनसब प्राप्त करने वाला.

पूर्व मध्यकाल में त्रिकोणीय संघर्ष में भाग लेने वाले राजवंश एवं उनके प्रसिद्ध शासक

गुर्जर प्रतिहार वंश

वत्सराज	—	783–795 ई.
नागभट्ट द्वितीय	—	795–833 ई.
रामभद्र	—	833–836 ई.
मिहिरभोज	—	836–889 ई.
महेन्द्र पाल	—	890–910 ई.

राष्ट्रकूट वंश

ध्रुव	—	779–793 ई.
गोविन्द तृतीय	—	793–814 ई.
अमोघवर्ष	—	814–878 ई.
कृष्ण द्वितीय	—	878–914 ई.

पाल वंश

धर्मपाल	—	770–819 ई.
देवपाल	—	815–855 ई.
विग्रहपाल	—	855–866 ई.
नारायणपाल	—	860–915 ई.

चोल शासक एवं उनका शासनकाल

क्र.सं.	नाम शासक	शासन काल
1.	विजयालय	850–875
2.	आदित्य प्रथम	875–907
3.	परान्तक प्रथम	907–935
4.	परान्तक द्वितीय	953–973
5.	राजाराम प्रथम	985–1014
6.	राजेन्द्र प्रथम	1014–1044
7.	राजाधिराज प्रथम	1044–1052
8.	राजेन्द्र द्वितीय	1052–1064
9.	वीर राजेन्द्र	1064–1070
10.	अधिराजेन्द्र	1070
11.	कुलोतुंग प्रथम	1070–1120
12.	विक्रम चोल	1120–1133
13.	कुलोतुंग द्वितीय	1133–1150
14.	राजाराज द्वितीय	1150–1173
15.	राजाधिराज II	1173–1182
16.	कुलोतुंग III	1182–1216
17.	राजाराज तृतीय	1216–1250
18.	राजेन्द्र तृतीय	1250–1279

राजपूतों की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न इतिहासकारों का मत

क्र. सं.	इतिहासकार	प्रस्तावित मत
1.	ईश्वरी प्रसाद एवं जी. आर. भण्डारकर	विदेशी मूल के लोगों से
2.	चन्दबरदाई	अग्निकुण्ड से
3.	गौरीशंकर ओझा	प्राचीन क्षत्रियों से उत्पत्ति
4.	कर्नल टॉड	सीथियनों से उत्पन्न
5.	वी. ए. स्मिथ	शक एवं कुषाणों के सामूहिक सन्तान

परमारवंशीय राजा भोज द्वारा लिखित साहित्य

1. समरांगण सूत्रधार (शिल्पशास्त्र)
2. सरस्वतीकण्ठा भरणम् (अलंकारशास्त्र)
3. शृंगारशास्त्र (अलंकारशास्त्र)
4. पातंजलयोग सूत्रवृत्ति (योगशास्त्र)
5. कूर्मशतक (काव्यनाटक)
6. चम्पूरामायण (काव्यनाटक)
7. शृंगारमंजरी (काव्यनाटक)
8. आयुर्वेद सर्वस्व (आयुर्वेद)
9. तत्वप्रकाश (शब्दग्रन्थ)
10. नाममालिका (शब्दकोष)
11. शब्दानुशासन (शब्दकोष)

राष्ट्रकूट शासक एवं उनका शासनकाल

क्र. सं.	नाम शासक	शासनकाल
1.	दन्तिदुर्ग	152–779 ई.
2.	ध्रुव	779–793 ई.
3.	गोविन्द तृतीय	793–814 ई.
4.	अमोघवर्ष	814–878 ई.
5.	कृष्ण द्वितीय	878–914 ई.
6.	इन्द्र तृतीय	914–927 ई.
7.	गोविन्द चतुर्थ	927–931 ई.
8.	कृष्ण तृतीय	939–967 ई.
9.	खोट्टिग	967–972 ई.
10.	कर्क II	972–974 ई.

पूर्व मध्यकालीन दर्शन ग्रन्थ एवं दार्शनिक

क्र. सं.	नाम ग्रन्थ	ग्रन्थकार
1.	न्यायवर्तिका	उद्योतकर
2.	न्यायकणिका	वाचस्पति मिश्र
3.	भाभति	वाचस्पति मिश्र
4.	न्याय मंजरी	जयंत भट्ट
5.	लक्षणावली	उदयनाचार्य
6.	न्याय कुसुमांजलि	उदयनाचार्य
7.	न्याय सागर	आसर्वज्ञ
8.	न्यायकंदली	श्रीधराचार्य
9.	न्यायलीलावती	वल्लभाचार्य

पूर्व मध्यकाल के प्रमुख स्थापत्य

क्र. सं.	स्थापत्य	अवस्थित स्थल	वर्ष	निर्माता
1.	सात पैगोडा रथ मन्दिर	मामल्लपुर	650 ई.	नरसिंहवर्मन प्रथम
2.	लिंगराज का मन्दिर	भुवनेश्वर	667 ई.	ययाति केशरी
3.	कैलाशनाथ का मन्दिर	काँची	700 ई.	नरसिंहवर्मन II
4.	शोर मन्दिर	मामल्लपुर	705 ई.	नरसिंहवर्मन II
5.	विरूपाक्ष का मन्दिर	पट्टडकल	740 ई.	विक्रमादित्य चालुक्य
6.	एहोल का मन्दिर	एहोल	740 ई.	विक्रमादित्य चालुक्य
7.	कैलाश मन्दिर	एलोरा	770 ई.	कृष्ण प्रथम (राष्ट्रकूट)
8.	एलिफेंटा गुहा मंदिर	एलिफेंटा	8वीं शताब्दी	राष्ट्रकूट
9.	कोरंगनाथ मन्दिर	त्रिचनापल्ली	940 ई.	परान्तक चोल
10.	खजुराहो का मन्दिर	खजुराहो	850–1050 ई.	चन्देल शासक
11.	गोमतेश्वर की प्रतिमा	श्रवण बेलगोला	983 ई.	चामुण्ड राज्य
12.	कन्दरिया महादेव मन्दिर	खजुराहो	990 ई.	—
13.	वृहदेश्वर मन्दिर	तंजौर	1000–1005 ई.	—
14.	गंगैकोण्ड चोलपुरम् मन्दिर	गंगैकोण्ड चोलपुरम्	1025 ई.	—
15.	दिलवाड़ा मन्दिर	आबू पर्वत	1032 ई.	—
16.	रुद्रमहाकाल मन्दिर	सिद्धपुर (गुजरात)	1130 ई.	—
17.	होयसलेश्वर मन्दिर (हैलविड़)	हैलविड़ (द्वार समुद्र)	1175–1190 ई.	—
18.	मीनाक्षी मन्दिर	मदुरै	12-13वीं शताब्दी	—
19.	जगन्नाथ मन्दिर	पुरी	1200 ई.	—
20.	सूर्य मन्दिर	कोणार्क	1236-1264 ई.	—

महमूद गजनवी के भारत पर 17 आक्रमण

क्र. सं.	आक्रमण प्रदेश	आक्रमण वर्ष	आक्रमण वाले प्रदेश के शासक
1.	पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों पर	1000 ई.	हिन्दुशाही राजा जयपाल
2.	पेशावर	1001 ई.	हिन्दुशाही राजा जयपाल
3.	भटिण्डा	1005 ई.	विजयराय
4.	मुल्तान	1006 ई.	दाऊद करमाक्षी
5.	मुल्तान	1007–1008 ई.	सुखपाल
6.	वैहिंद (पेशावर)	1008–1009	हिन्दुशाही राजा आनन्द पाल
7.	नारायणपुर (अलवर)	1009 ई.	स्थानीय अज्ञात शासक
8.	मुल्तान	1010 ई.	सुखपाल
9.	थानेश्वर	1013-1014 ई.	राजाराम
10.	नन्दन	1014 ई.	त्रिलोचनपाल
11.	कश्मीर	1015-1016 ई.	संग्राम लोहार
12.	मथुरा एवं कन्नौज	1018-1019 ई.	प्रतिहार राज्यपाल
13.	कालिंजर	1019 ई.	गण्ड चन्देल एवं त्रिलोचनपाल
14.	कश्मीर	1021 ई.	स्त्री शासिका
15.	ग्वालियर व कालिंजर	1022 ई.	गण्ड चन्देल
16.	सोमनाथ के मन्दिर पर	1025–1026 ई.	भीमदेव
17.	सिन्ध के जाटों पर	1027 ई.	—

प्रमुख दर्शन एवं उनके प्रवर्तक

क्र. सं.	नाम दर्शन शाखा	दार्शनिक/प्रवर्तक
1.	बौद्ध दर्शन	गौतम बुद्ध
2.	जैन दर्शन	महावीर
3.	आजीवक	मक्खलिगोशाल (मुक्खलि घोषाल)
4.	अक्रियावाद	पूरण काश्यप
5.	नित्य पदार्थवाद (भौतिकवादी)	पकुध कच्यायन (पकुध काच्चायन)
6.	अद्वैतवाद	शंकराचार्य
7.	विशिष्टाद्वैत	रामानुजाचार्य
8.	द्वैताद्वैत	निम्बकाचार्य
9.	शुद्धाद्वैत	वल्लभाचार्य
10.	अनेकान्तवाद	संजय वलाट्ठि पुत्त
11.	पाशुपत	नकुलीश (लकुलिश)

शंकराचार्य द्वारा लिखित साहित्यिक, दार्शनिक ग्रन्थ

1. ब्रह्मसूत्रभाष्य
2. गीताभाष्य
3. शिव स्त्रोत
4. आत्मबोध
5. विवेक चूडामणि
6. सौन्दर्य लहरी

शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ

क्र.सं.	मठ का नाम	स्थापना स्थल
1.	श्रृंगेरी मठ	रामेश्वरम्
2.	शारदा मठ	द्वारिका (उड़ीसा)
3.	गोवर्द्धन मठ	जगन्नाथपुरी
4.	ज्योतिर्मठ	बदरिकाश्रम

तांत्रिक सम्प्रदाय की पंचमकारीय साधना

1. मद्यपूजा
2. मत्स्य पूजा
3. मांस सेवन
4. मुद्रा
5. मैथुन

तांत्रिक सम्प्रदाय के प्रमुख अवयव

1. तन्त्र
2. मंत्र
3. यंत्र
4. चर्या
5. क्रिया
6. योग
7. ज्ञान
8. दीक्षा
9. मातृदेवी की पूजा

अलवेरूनी द्वारा वर्णित ब्राह्मणों द्वारा वर्जित पाँच सब्जियाँ

1. लहसुन
2. प्याज
3. कद्दू
4. क्रंच
5. नली

अलवेरूनी द्वारा वर्णित संवत्

1. विक्रम संवत्
2. शक संवत्
3. वल्लभ संवत्
4. गुप्त संवत्
5. हर्ष संवत्

अलवेरूनी द्वारा वर्णित नदियाँ

1. सिन्धु
2. सरस्वती
3. गोमती
4. गण्डकी
5. झेलम
6. व्यास
7. शतुद्रि
8. गंगा
9. सरयू

अलवेरूनी द्वारा वर्णित सात द्वीप

1. जम्बू द्वीप
2. शक द्वीप
3. कुश द्वीप
4. क्रौंच द्वीप
5. समतल द्वीप
6. गौमेर द्वीप
7. पुष्कर द्वीप

मुहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण

क्र.सं.	आक्रमण प्रदेश	आक्रमण क्षेत्र का शासक	आक्रमण वर्ष
1.	मुल्तान	करमाथी शासक	1175 ई.
2.	उच्छ	करमाथी शासक	1176 ई.
3.	अन्हिलवाड़ (गुजरात)	चालुक्य रानी नाईक देवी (अल्पवयस्क युवराज भीम द्वितीय)	—
4.	पेशावर	मलिक खुसरो	1179 ई.
5.	लाहौर	मलिक खुसरो	1180 ई.
6.	देवल व सिन्ध	सुम्र शासक	1182 ई.
7.	स्यालकोट	मलिक खुसरो	1184 ई.
8.	लाहौर	मलिक खुसरो	1186 ई.

9.	भटिण्डा	चौहान सूबेदार	1189 ई.
10.	तराइन	पृथ्वीराज चौहान	1191 ई.
11.	तराइन	पृथ्वीराज चौहान	1192 ई.
12.	हाँसी, कुहराम, सरसुती एवं दिल्ली	स्थानीय शासक	1193 ई.
13.	कन्नौज (चन्दावर)	जयचन्द्र	1194 ई.
14.	बयाना	कुमारपाल	1195 ई.
15.	ग्वालियर	सुलक्षणपाल	1196 ई.

मुस्लिम कानून के चार स्रोत

1. कुरान — मुस्लिम नियमों का प्रमुख स्रोत
2. हदीस — पैगम्बर के कथनों एवं कार्यों का संकलन
3. इज्मा — विधिवेत्ता मुजतहिदों द्वारा व्याख्या किये गये कानूनी स्रोत
4. कयास — तर्क एवं विश्लेषणात्मक रूप से की गयी कानून की व्याख्या

अलाउद्दीन के बाजार नियन्त्रण व्यवस्था में मुख्य अनाज एवं वस्तुओं के दाम

क्र.सं.	नाम वस्तु/अनाज	दर
1.	मक्खन/घी	प्रति 2 सेर का 1 जीतल
2.	चीनी	प्रति सेर एक जीतल
3.	गेहूँ	प्रति मण 7 जीतल
4.	चावल	प्रति मण 5 जीतल
5.	जौ	प्रति मण 4 जीतल
6.	दाल	प्रति मण 5 जीतल

अलाउद्दीन के समय में हुए प्रमुख मंगोल आक्रमण

क्र. सं.	मंगोल आक्रमणकारी	स्थान	वर्ष	विद्रोह को दबाने वाला नेतृत्वकर्ता
1.	कादर खाँ	पंजाब, लाहौर	1297-98 ई.	उलुग खाँ, जफर खाँ
2.	सलदी	सेहयान	1298 ई.	जफर खाँ
3.	तर्गी मलिक	सीरी का किला एवं दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र	1303 ई.	मलिक काफूर
4.	अलीबेग तर्गी मलिक तार्ताक	अमरोह	1305 ई.	मलिक काफूर गाजी
5.	गाजी मलिक (इकबालमन्द)	रावी के तट पर	1306 ई.	गयासुद्दीन तुगलक

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला

क्र.सं.	स्थापत्य	स्थल	निर्माणकर्ता
1.	कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद	दिल्ली	कुतुबुद्दीन ऐबक
2.	कुतुबमीनार	दिल्ली	कुतुबुद्दीन एवं इल्तुतमिश
3.	अढ़ाई दिन का झोपड़ा	अजमेर	कुतुबुद्दीन ऐबक
4.	नासिरुद्दीन का मकबरा (सुल्तानगढ़ी)	दिल्ली	इल्तुतमिश
5.	इल्तुतमिश का मकबरा	दिल्ली	इल्तुतमिश
6.	जामा मस्जिद	बदायूँ	इल्तुतमिश
7.	अवतारकिन का दरवाजा	नागौर	इल्तुतमिश
8.	बलबन का मकबरा	दिल्ली	बलबन
9.	लालमहल	दिल्ली	बलबन
10.	अलाई दरवाजा	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी
11.	जमातखाँ मस्जिद	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी
12.	हजार सितुन (स्तम्भ)	दिल्ली	अलाउद्दीन खिलजी
13.	ऊखा मस्जिद	बयाना	मुबारक खिलजी
14.	तुगलकाबाद	दिल्ली	ग्यासुद्दीन तुगलक
15.	गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा	दिल्ली	ग्यासुद्दीन तुगलक
16.	आदिलाबाद	दिल्ली	मुहम्मद तुगलक
17.	फिरोजशाह का मकबरा	दिल्ली	फिरोज तुगलक
18.	खान-ए-जहाँ तेलंगानी का मकबरा	दिल्ली	जूनाशाह
19.	कबीरुद्दीन औलिया का मकबरा	दिल्ली	—
20.	काली-मस्जिद	दिल्ली	जूनाशाह खानेजहाँ
21.	खिड़की मस्जिद	दिल्ली	जूनाशाह खानेजहाँ
22.	मुबारक सैय्यद का मकबरा	दिल्ली	अलाउद्दीन आलमशाह
23.	सिकन्दर लोदी का मकबरा	दिल्ली	इब्राहीम लोदी
24.	मोठ की मस्जिद	दिल्ली	मियाँ भुवा

सल्तनतकालीन प्रमुख रचनाएँ, रचनाकार एवं उनकी भाषा

क्र.सं.	नाम रचना	रचनाकार	भाषा
1.	चचनामा	बंद्रचाच	अरबी
2.	तारीख-ए-फिरोजशाही	शम्स-ए-सिराज अफीक	फारसी
3.	तारीख-ए-फिरोजशाही	जियाउद्दीन बर्नी	फारसी
4.	तबकाते नासिरी	मिन्हास-उस-सिराज	फारसी
5.	तहकीक-ए-हिन्द	अलबेरूनी	अरबी

6.	तुगलकनामा	अमीर खुसरो	फारसी
7.	तारीख-ए-मुहम्मदी	मोहम्मद विहायद खानी	फारसी
8.	फतवाँ-ए-जहाँदारी	जियाउद्दीन बरनी	फारसी
9.	किताबुल रेहला	इब्नबतूता	फारसी
10.	तारीख-ए-मुबारकशाही	याहिया-बिन-अहमद सरहिन्दी	फारसी
11.	फुतूह-उस-सलातीन	ख्वाजा अबू-बक-इलामी	फारसी
12.	मिफता-उल-फुतूह	अमीर खुसरो	फारसी
13.	नूहसियेटर	अमीर खुसरो	फारसी
14.	आशिका	अमीर खुसरो	फारसी
15.	ताजुल मासिर	हसन निजामी	—

भक्ति आन्दोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्त्ता

1. रामानुज
2. माधवाचार्य
3. विष्णु स्वामी
4. निम्बार्क
5. वल्लभाचार्य
6. रामानन्द
7. चैतल
8. कबीर
9. गुरुनानक

सल्तनतकालीन प्रमुख सूफी सन्त

1. ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती
2. बाबा मस्जिद
3. शेख निजामुद्दीन औलिया
4. गेसूदराज
5. नासिरुद्दीन
6. चिराज-ए-दिल्ली
7. शहाबुद्दीन सुहरार्दी
8. बख्तियार काकी
9. शेख हुसैनी
10. बहाउद्दीन जकारिया
11. जलालुद्दीन तबरीजी
12. हमीदुद्दीन नागौरी

सल्तनतकालीन गुलाम वंश के शासक एवं शासनकाल

क्र.सं.	शासक का नाम	शासनकाल
1.	कुतुबुद्दीन ऐबक	1206–1210 ई.
2.	आरामशाह	1210-1211 ई.
3.	इल्तुतमिश	1211-1236 ई.
4.	रुकनुद्दीन फिरोज	1236 ई.
5.	रजिया सुल्तान	1236–1240 ई.
6.	मुईजुद्दीन बहरामशाह	1240–1242 ई.
7.	अलाउद्दीन मसूदशाह	1242–1246 ई.
8.	नासिरुद्दीन महमूद	1246–1266 ई.
9.	बलबन	1266–1286 ई.
10.	कैकुबाद	1287–1290 ई.

मध्यकाल में प्रचलित प्रमुख धार्मिक आन्दोलन

क्र. सं.	सम्प्रदाय का नाम/ धार्मिक आन्दोलन	संस्थापक/प्रवर्तक	कालक्रम
1.	चिश्ती सम्प्रदाय (सूफी)	मुइनुद्दीन चिश्ती	1190 ई.
2.	सुहरावर्दी सिलसिला (सूफी)	बहाउद्दीन जकारिया	1250 ई.
3.	फिरदौसिया सम्प्रदाय (सूफी)	सरफुद्दीन याहिया	14वीं शताब्दी
4.	धर्मदासी सम्प्रदाय	संत कबीरदास	15वीं शताब्दी
5.	महादवी आन्दोलन	सैय्यद मुहम्मद महदी	15वीं सदी
6.	सत्तारी सम्प्रदाय (सूफी)	अब्दुल्ला सत्तारी	15वीं सदी
7.	कादिरी सिलसिला (सूफी)	शेख अब्दुल कादिर	1500 ई.
8.	निपख आन्दोलन	संत दादूदयाल	16वीं शताब्दी
9.	सिख सम्प्रदाय	गुरुनानक	16वीं शताब्दी
10.	हरिकीर्तन 'मण्डली'	चैतन्य महाप्रभु	16वीं शताब्दी
11.	रोशनिया आन्दोलन	मियाँ बाजिद अन्सारी	16वीं शताब्दी
12.	पुष्टि मार्ग	वल्लभाचार्य	16वीं सदी
13.	बारकरी सम्प्रदाय	एकनाथ	16वीं सदी
14.	नक्शबन्दी सिलसिला (सूफी)	ख्वाजा बाकी बिल्लाह	17वीं शताब्दी
15.	धारकरी सम्प्रदाय	रामदास	17वीं शताब्दी

मध्यकालीन महिला शासिकाएँ, उनका कालक्रम वंश एवं राज्य

क्र.सं.	महिला शासक	शासनकाल	वंश	राज्य
1.	रजिया सुल्तान	1236–1240 ई.	गुलाम	दिल्ली
2.	रानी रुद्रम्मा	1260–1291 ई.	काकतीय	द्वार समुद्र
3.	मखदूम जहाँ	1461–1469 ई.	बहमनी	दक्षिण (बहमनी)
4.	रानी दुर्गावती	1560–1564 ई.	गोंड	गढ़कटंगा
5.	चाँदबीबी सुल्ताना	1595-1596 ई.	अहमदशाही	अहमदनगर
6.	बेगम बड़ी साहिबा	1656–1663 ई.	आदिलशाही	बीजापुर
7.	ताराबाई	1700–1707 ई.	भोंसले	मराठा राज्य

मध्यकालीन प्रान्तीय भाषा, विद्वान् एवं उनकी रचनाएँ

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	भाषा	काल
1.	ज्ञानेश्वरी	संत ज्ञानेश्वर	मराठी	1250 ई.
2.	विराट पर्व	तिककन्न	तेलुगू	1220–1300 ई.
3.	लक्ष्मीनरसिंह पुराण	ऐर्रन्न	तेलुगू	1280–1350 ई.
4.	राघव पाण्डवीयम्	भीमकवि	तेलुगू	14वीं शताब्दी
5.	मनसा मंगल	विप्रदास	बंगला	1495 ई.
6.	नैषधम	श्रीनाथ	तेलुगू	1441 ई.
7.	कन्नड़ भारत	कुमार व्यास	कन्नड़	1350–1400 ई.
8.	चण्डीपुराण विलंकरामायण	सरलादास	उड़िया	1330–1400
9.	हारावती	रामचन्द्र	उड़िया	15वीं शताब्दी
10.	प्रेम पंचायत	भूपति पण्डित	उड़िया	15वीं शताब्दी
11.	रसकल्लोल	दीनकृष्ण	उड़िया	15वीं शताब्दी
12.	श्रीकृष्ण विजय	मालाधार बसु	बंगला	15वीं शताब्दी
13.	बाणासुर वध	महावतार	कश्मीरी	15वीं शताब्दी
14.	आन्ध्र भागवत	पेतराजु	तेलुगू	15वीं शताब्दी
15.	भारतेश वैभव	रत्नाकरवर्णी	कन्नड़	15वीं शताब्दी
16.	शृंगारमाला, धनलीला	नरसी मेहता	गुजराती	1480 ई.
17.	सप्तसती, नलाख्यान	मालवण कवि	गुजराती	1500 ई.
18.	कीर्तन घोषा, बरगीत	शंकरदेव	असमी	1519 ई.
19.	आदि ग्रन्थ	गुरुनानक	पंजाबी	1539 ई.
20.	घोषा	माधवदेव	असमी	16वीं शताब्दी
21.	कानखोजा	श्रीधरकंदलि	असमी	16वीं शताब्दी
22.	वेदारण्य पुराणम्	परंजोति मुनिवर	तमिल	16वीं शताब्दी
23.	मनुचरित्र	पेछना	तेलुगू	16वीं शताब्दी
24.	सारंगधर चरित्रमु	वेंकटकवि	तेलुगू	16वीं शताब्दी
25.	मलयाली रामायण	तुंचतु रामानुज	मलयालम	16वीं शताब्दी
26.	रूक्मणी स्वयंवर	एकनाठ	मराठी	16वीं शताब्दी
27.	परागल महाभारत	कवि रवीन्द्र	बंगला	16वीं शताब्दी
28.	चण्डी मंगल	माधवाचार्य	उड़िया	16वीं शताब्दी
29.	चैतन्य भागवत	वृन्दावनदास	बंगला	16वीं शताब्दी
30.	कैवल्य गीत	संतअरवा	गुजराती	16वीं शताब्दी
31.	चैतन्य चरितामृत	कृष्णदास कविराज	बंगाली	16वीं सदी
32.	प्रभावती रास	नयसुन्दर	गुजराती	1620 ई.
33.	हरमाला, हुण्डी	प्रेमानन्द	गुजराती	1734 ई.

प्रमुख सिख धर्म गुरु एवं उनका काल

क्र.सं.	सिख धर्म गुरु	कालक्रम	उल्लेखनीय तथ्य
1.	गुरुनानक देव	1469–1538 ई.	सिख धर्म की स्थापना
2.	गुरु अंगद	1538–1552 ई.	गुरुमुखी लिपि के प्रणेता
3.	गुरु अमरदास	1552–1574 ई.	22 गद्दियों के संस्थापक
4.	गुरु रामदास	1574–1581 ई.	अमृतसर के संस्थापक
5.	गुरु अर्जुनदेव	1581–1606 ई.	गुरु ग्रन्थ साहिब के संकलक
6.	गुरु हरगोविन्दसिंह	1606–1645 ई.	अकाल तख्त के संस्थापक
7.	गुरु हरराय	1645–1661 ई.	उत्तराधिकार युद्ध में शामिल
8.	गुरु हरकिशन	1661–1664 ई.	उम्र के प्रारम्भ में ही मृत्यु
9.	गुरु तेगबहादुर	1664–1675 ई.	औरंगजेब द्वारा इस्लाम धर्म न स्वीकार करने पर फाँसी
10.	गुरु गोविन्द सिंह	1675–1708 ई.	खालसा सेना के संस्थापक अन्तिम सिख धर्मगुरु

मध्यकालीन प्रमुख प्रान्तीय राजवंश

क्र.सं.	नाम वंश	संस्थापक	राज्य	शासनकाल
1.	संगम वंश	हरिहर, बुक्का	विजयनगर	1336–1486 ई.
2.	मिर्जा (मुस्लिम) वंश	शम्सुद्दीन शाह मिर्जा	कश्मीर	1339–1540 ई.
3.	इलियासशाही वंश	शम्सुद्दीन इलियास शाह	बंगाल	1345–1412 ई.
4.	बहमनी वंश	अलाउद्दीन बहमनशाह	दक्कन	1347–1527 ई.
5.	फारुकी वंश	मलिक राजा फारूकी	खानदेश	1390–1601 ई.
6.	शर्की वंश	मलिक सरवर	जौनपुर	1344–1500 ई.
7.	मुजफ्फर शाही वंश	जफरशाह मुजफ्फरशाह	गुजरात	1401–1537 ई.
8.	हुशंग शाही वंश	अल्पखाँ हुशंगशाह	मालवा	1406–1436 ई.
9.	भादुड़ी (कंश) वंश	राजा गणेश	बंगाल	1415–1442 ई.
10.	सूर्यवंश	कपिलेन्द्र	उड़ीसा	1434–1542 ई.
11.	खिलजी वंश	महमूद शाह	मालवा	1436–1534
12.	इमादशाही वंश	फुतह-उल्ला इमादशाह	बरार	1484–1574 ई.
13.	सलुव वंश	नरसिंह सलुव	विजयनगर	1486–1505 ई.
14.	अहमदशाही वंश	मलिक अहमद	अहमद नगर	1490–1633
15.	आदिलशाही वंश	युसुफ आदिलशाह	बीजापुर	1489–1686 ई.
16.	हुसैनशाही वंश	अलाउद्दीन हुसैनशाह	बंगाल	1493–1538 ई.
17.	तुलुव वंश	वीर नरसिंह	विजयनगर	1505–1567 ई.
18.	कुतुबशाही वंश	कुलीशाह	गोलकुण्डा	1512–1687 ई.
19.	बरीदशाही वंश	अली बरीद	बीदर	1527–1619 ई.
20.	अरविन्द वंश	तिरुमल	विजयनगर	1567–1620 ई.
21.	आडयार वंश	राजा आडयार	मैसूर	1612–1762 ई.

मध्यकाल के प्रमुख युद्ध

क्र. सं.	युद्ध का नाम	पक्ष प्रतिपक्ष	विजय पक्ष	वर्ष
1.	अलाउद्दीन का रणथम्भीर सैनिक अभियान	अलाउद्दीन एवं हम्मीरदेव	अलाउद्दीन	1301 ई.
2.	रायचूर का युद्ध	फिरोजशाह बहमनी एवं बुक्का II	फिरोजशाह बहमनी	1398 ई.
3.	पांगुल का युद्ध	फिरोजशाह बहमनी देवराय II	दवराय II	1420 ई.
4.	कांजीवरम् का युद्ध	मुहम्मद II बहमनी एवं विरूपाक्ष	मुहम्मद II	1481 ई.
5.	चौल का युद्ध	महमूद बेगड़ा एवं पुर्तगाली	महमूद बेगड़ा	1508 ई.
6.	शिवसमुद्रम का युद्ध	कृष्णदेवराय एवं उम्मतूर का नायक	कृष्णदेवराय	1511-12 ई.
7.	उदयगिरी का युद्ध	कृष्णदेवराय एवं प्रताप रुद्र	कृष्णदेवराय	1514 ई.
8.	खातौली का युद्ध	राणा साँगा व इब्राहीम लोदी	राणा सांगा	1518 ई.
9.	पानीपत का प्रथम युद्ध	बाबर एवं इब्राहीम लोदी	बाबर	1526 ई.
10.	खानवा का युद्ध	बाबर एवं राणा साँगा	बाबर	1527 ई.
11.	चंदेरी का युद्ध	बाबर एवं मेदिनी राय	बाबर	1528 ई.
12.	घाघरा का युद्ध	बाबर एवं महमूद लोदी	बाबर	1529 ई.
13.	चौसा का युद्ध	हुमायूँ एवं शेरशाह सूरी	शेरशाह	1529 ई.
14.	कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध	हुमायूँ एवं शेरशाह सूरी	शेरशाह	1540 ई.
15.	मच्छीवारा का युद्ध	हुमायूँ एवं अफगान तातार खाँ	हुमायूँ	1555 ई.
16.	सरहिन्द का युद्ध	हुमायूँ एवं सिकन्दर शाहसूरी	हुमायूँ	1555 ई.
17.	पानीपत का द्वितीय युद्ध	अकबर एवं हेमू	अकबर	1556 ई.
18.	गढ़कटंगा का युद्ध	गौंडरानी दुर्गावती एवं मुगल सेनापति आसफ खाँ	आसफ खाँ	1564 ई.
19.	तालीकोट का युद्ध	निजामशाह एवं रामराजा	निजामशाह	1565 ई.
20.	हल्दीघाटी का युद्ध	राणा प्रताप एवं अकबर (सेनापति मानसिंह)	अकबर	1576 ई.

21.	अहमदनगर का युद्ध	चाँदबीबी एवं (अकबर)	अकबर	1600 ई.
22.	असीरगढ़ का युद्ध	मियाँ बहादुरशाह एवं अकबर	अकबर	1601 ई.
23.	धरमत का युद्ध	औरंगजेब एवं दाराशिकोह	औरंगजेब	1658 ई.
24.	सामूगढ़ का युद्ध	औरंगजेब एवं दाराशिकोह	औरंगजेब	1658 ई.
25.	देवराई का युद्ध	औरंगजेब एवं दाराशिकोह	औरंगजेब	1659 ई.

मुगलकालीन भारत में यूरोपीय व्यापारियों का आगमन

क्र.सं.	विदेशी व्यापारी	कालावधि	प्रथम स्थापित
1.	पुर्तगाली	1498 ई.	कोचीन 1503 में
2.	डच	1602 ई.	मसुलीपट्टनम् 1605 में
3.	अंग्रेज	1600 ई.	सूरत 1608 ई. में
4.	डेन	1616 ई.	ट्रंकूबार 1620 ई. में
5.	फ्रांसीसी	1604 ई.	सूरत1688 ई. में

मुगलकालीन दरबारी कवि, उनकी रचनाएँ एवं आश्रयदाता शासक

क्र. सं.	दरबारी कवि	रचना	आश्रयदाता शासक	काल
1.	अबुल फजल	अकबरनामा आइने-अकबरी	अकबर	1551-1602 ई.
2.	बदायूँनी	मुन्तखब-उत तवारीख	अकबर	16वीं शताब्दी
3.	मुहम्मद अमीन कजवीनी	शाहजहाँनामा	शाहजहाँ	17वीं शताब्दी
4.	मिन्हास-उस-सिराज	तबकात-ए-नासिरी	इल्तुतमिश एवं नासिरुद्दीन	1193 ई.
5.	हसन निजामी	ताज-उल मासिर	कुतुबुद्दीन ऐबक एवं इल्तुतमिश	13वीं शताब्दी
6.	मीर महमूद मासूम	तारीख-ए-सिन्ध	अकबर	16वीं शताब्दी
7.	हिन्दु बेग	तारीख-ए-फरिश्ता	अकबर	16वीं शताब्दी
8.	अब्बास खाँ सेखानी	तारीख-ए-शेरशाही	अकबर	16वीं शताब्दी
9.	नियामतुल्ला	मखजन-ए-अफगान	जहाँगीर	17वीं शताब्दी
10.	अब्दुल्ला	तारीख-ए-दाऊदी	अकबर	17वीं शताब्दी
11.	आरिफ कंधारी	तारीख-ए-अकबरी	अकबर	16वीं शताब्दी
12.	बायजिद बयात	तजकिरा-ए-हुमायूँ-अकबर	अकबर	16वीं शताब्दी
13.	गुलबदन बेगम	हुमायूँनामा	हुमायूँ अकबर	1523–1560 ई.
14.	मीर अलाउद्दौला कजवीनी	नफाइस-उल-मासिर	अकबर	16वीं शताब्दी
15.	मुहम्मद सादिक खाँ	शाहजहाँनामा	शाहजहाँ	17वीं शताब्दी
16.	गैरत खाँ	मासिर-ए-जहाँगीरी	जहाँगीर	17वीं शताब्दी
17.	गुलाम नकवी	इमामुस्सादात	औरंगजेब	17वीं शताब्दी
18.	मुहम्मद वारिस	पादशाहनामा	शाहजहाँ	17वीं शताब्दी
19.	खाजी खाँ	मुन्तखब-उल-सुलब	औरंगजेब	17वीं शताब्दी
20.	बद्र-ए-चाच	चचनामा	मुहम्मदतुगलक	13वीं शताब्दी

अकबरकालीन प्रमुख वित्त मंत्री एवं उनका नियुक्ति वर्ष

क्र.सं.	नाम वित्तमंत्री	नियुक्ति वर्ष
1.	अब्दुल मजीद आसफ खाँ	1560 ई.
2.	एतमाद खाँ (बहलोल मलिक)	1563 ई.
3.	मुजफ्फुर खाँ (प्रथम दीवान)	1564 ई.
4.	शिहाबुद्दीन अहमद खाँ	1568 ई.
5.	मुजफ्फर खाँ	1570 ई.
6.	टोडरमल	1580 ई.

प्रमुख मुगल शासक एवं शासनकाल

क्र.सं.	नाम शासक	शासनकाल
1.	जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर	1526–1530 ई.
2.	नसिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ	1530–556 ई.
3.	जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर	1556–1605 ई.
4.	नुरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर	1605–1627 ई.
5.	शाहजहाँ	1627–1658 ई.
6.	औरंगजेब	1658–1707 ई.

मुगलकाल में दिल्ली पर शासन करने वाले राजवंश

क्र.सं.	वंश	संस्थापक	शासनकाल
1.	गुलाम वंश	कुतुबुद्दीन ऐबक	1206–1290 ई.
2.	खिलजी वंश	जलालुद्दीन खिलजी	1290–1320 ई.
3.	तुगलक वंश	ग्यासुद्दीन तुगलक	1320–1413 ई.
4.	सैयद वंश	खिज्र खाँ	1414–1451 ई.
5.	लोदी वंश	बहलोल लोदी	1451–1526 ई.
6.	मुगल वंश	जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर	1526–1857 ई.
7.	अफगान वंश	शेरशाह सूरी	1540–1555 ई.
8.	हिन्दू वंश	हेमू विक्रमादित्य	1556 ई.

मुगलराज में लिखा गया हिन्दी साहित्य

क्र.सं.	ग्रन्थ का नाम/रचना	ग्रन्थकार/रचनाकार
1.	रामचरितमानस	तुलसीदास
2.	विनयपत्रिका	तुलसीदास
3.	रामचन्द्रिका	केशवदास
4.	पदमावती	मलिक मुहम्मद जायसी
5.	सूरसागर, साहित्य लहरी	सूरदास
6.	रसिकप्रिया, कविप्रिया	केशवदास
7.	प्रेमवर्तिका	रसखान
8.	सूरसारावली	सूरदास
9.	कविन्द्र कल्पतरु	कविन्द्र आचार्य
10.	चौरासी वैष्णवों की वार्ता	विट्ठलनाथ
11.	सुन्दर शृंगार	सुन्दर कविराय
12.	रास पंचाध्यायी	नन्ददास
13.	कविता रत्नाकार	सेनापति
14.	अलंकार मंजरी	केशवदास

अकबर के दरबार के नवरत्न

क्र.सं.	रत्नों के नाम	उल्लेखनीय तथ्य
1.	बीरबल	कविराज, कविप्रिय की उपाधि अकबर ने प्रदान की. 1583 ई. में न्याय विभाग का सर्वोच्च अधिकारी बन गया.
2.	अबुल फजल	अकबर का मुख्य सलाहकार एवं सचिव. दीन-ए-इलाही धर्म का मुख्य पुरोहित. आईन-ए-अकबरी, अकबरनामा का लेखक.
3.	टोडरमल	जाब्ती प्रथा का जन्मदाता. 1572 ई. में गुजरात का दीवान बनाया गया.
4.	भगवानदास	आमेर के राजा भारमल का पुत्र. 'अमीर-उल-उमरा' की उपाधि प्राप्त. 5 हजारी मनसब प्राप्त करता था.
5.	तानसेन	संगीत सम्राट्, ध्रुपद शैली के विकासक, मियाँ का मल्हार, मियाँ की टोडी, मियाँ की सारंग, दरबारी कान्हड़ा
6.	मानसिंह	आमेर के राजा भारमल के पौत्र. अकबर से करीबी सम्बन्ध.
7.	अब्दुर्रहीम खानखाना	प्रसिद्ध विद्वान् एवं कवि. बाबरनामा का फारसी में अनुवाद किया.
8.	मुल्ला दो प्याजा	अकबर के दरबार के नवरत्नों में से मुल्ला दो प्याजा भी एक था. भोजन में प्याज अधिक पसन्द होने के कारण अकबर ने उसे यह नाम दिया.
9.	फैजी	अबुल फजल का अग्रज. अकबर द्वारा राजकवि के पद पर नियुक्त.

मुगलकालीन अष्टभुजाकार मकबरे

क्र.सं.	मकबरा	निर्माता	स्थल	स्थापना वर्ष
1.	खानेजहाँन तेलंगानी का मकबरा	जीनाशाह	दिल्ली	1368-69 ई.
2.	मुबारक सैयद का मकबरा	मुहम्मदशाह सैयद	दिल्ली	1434 ई.
3.	मुहम्मद सैयद का मकबरा	अलाउद्दीन आलमशाह	दिल्ली	1444 ई.
4.	सिकन्दर लोदी का मकबरा	इब्राहीम लोदी	दिल्ली	1517 ई.
5.	हसन खाँ सूरी का मकबरा	शेरशाह सूरी	सहसराम	1540 ई.
6.	शेरशाह सूरी का मकबरा	शेरशाह सूरी	सहसराम	1545 ई.
7.	इस्लाम शाह का मकबरा	आदिलशाह सूरी	सहसराम	1553 ई.

अकबर के सम्पूर्ण साम्राज्य के सूबे (प्रान्त)

1. आगरा	2. दिल्ली
3. इलाहाबाद	4. अवध
5. अजमेर	6. बंगाल
7. बिहार	8. अहमदाबाद
9. मुल्तान	10. लाहौर
11. मालवा	12. काबुल
13. खानदेश	14. अहमदनगर
15. बरार	

मुगलकालीन संस्कृत साहित्य

क्र.सं.	रचना	रचनाकार
1.	अकबरकालीन इतिहास	महेश ठाकुर
2.	रस गंगाधर	पण्डित जगन्नाथ
3.	अकबरशाही शृंगार दर्पण	पद्म सुन्दर
4.	भानुचन्द्र चरित्र	सिन्धचन्द्र जैन आचार्य

शिवाजी के अष्टप्रधान

1.	पेशवा (प्रधानमंत्री)	नागरिक एवं सैनिक मामलों का सर्वोच्च अधिकारी
2.	मजूमदार (परीक्षक)	राज्य की आय और व्यय का लेखा-जोखा करने वाला अधिकारी
3.	वाकयानवीस	राजा के व्यक्तिगत मामलों की देखरेख करने वाला अधिकारी
4.	दबीर व सुमन्त	विदेश सचिव, जो विदेशी मामलों के सम्बन्ध में राजा का सलाहकार था.
5.	सुरनिस	राजकीय पत्र-व्यवहारों की देखरेख करने वाला अधिकारी
6.	पण्डित राव	धार्मिक मामलों का प्रमुख अधिकारी
7.	सर-ए-नौबत	सेना का प्रधान सेनापति
8.	न्यायाधीश	न्याय विभाग का अधिकारी

आइन-ए-अकबरी में वर्णित सूफी सम्प्रदाय की चौदह शाखाएँ

1. चिश्ती	2. सुहरावर्दी
3. हबीबी	4. तफूरी
5. करबी	6. शक्ति
7. जुनैदी	8. काजरूनी
9. तूसी	10. फिरदौसी
11. जैदी	12. इयादी
13. सदहमी	14. हुबैरी

प्रमुख परवर्ती मुगल शासक

क्र.सं.	मुगल शासक	शासनकाल
1.	बहादुरशाह I	1708–12 ई.
2.	जहाँदरशाह	1712-13 ई.
3.	फर्रुखसियर	1713–19 ई.
4.	मुहम्मदशाह	1719–48 ई.
5.	अहमदशाह	1748–54 ई.
6.	अजीमुद्दीन आलमगीर II	1754–59 ई.
7.	शाह आलम II	1759–1806 ई.
8.	अकबर II	1806–37 ई.
9.	बहादुरशाह II	1837–58 ई.

शिवाजी द्वारा दान की गयी सात धातुएँ

1. सोना	2. चाँदी
3. ताँबा	4. जस्ता
5. टिन	6. सीसा
7. लोहा	

मराठाकालीन प्रमुख सन्धियाँ

क्र.सं.	सन्धि	पक्ष-प्रतिपक्ष	वर्ष
1.	पुरन्दर की संधि	शिवाजी एवं जयसिंह के मध्य	22 जून 1665 ई.
2.	सूरत की संधि	रघुनाथ राव तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के मध्य	1775 ई.
3.	राक्षस भुवन की संधि	पेशवा माधवराव तथा निजाम के मध्य	1763 ई.
4.	कंकापुर की संधि	माधवराव एवं जनोजी के मध्य	1769 ई.
5.	संगोला की संधि	बालाजी बाजीराव एवं रामराजा के मध्य	1750 ई.
6.	झलकी की संधि	बालाजी एवं हैदराबाद के निजाम के मध्य	1752 ई.
7.	पुरन्दर की संधि	पेशवा माधव नारायण राव एवं अंग्रेजों के मध्य	1776 ई.
8.	बडगाँव की संधि	पेशावर माधव नारायण राव एवं अंग्रेजों के मध्य	1779 ई.
9.	सालबाई की संधि	सिंधिया की मध्यस्थता में पेशवा माधव नारायण राव एवं अंग्रेजों के मध्य	1782 ई.
10.	बसीन की संधि	बाजीराव द्वितीय एवं अंग्रेजों के मध्य	1802 ई.
11.	देवगाँव की संधि	बरार के भौंसले एवं अंग्रेजों के मध्य	1803 ई.
12.	सुजी-अर्जन गाँव	सिंधिया एवं अंग्रेजों के मध्य	1803 ई.
13.	राजापुर घाट की संधि	होल्कर एवं अंग्रेजों के मध्य	1804 ई.
14.	पूना की संधि	बाजीराव II एवं अंग्रेजों के मध्य	1817 ई.

मध्यकालीन प्रमुख राजवंश एवं शासक

गुलाम वंश

कुतुबुद्दीन ऐबक	—	1206-1210 ई.
आरामशाह	—	1210-1211 ई.
इल्तुतमिश	—	1211-1236 ई.
रूकनुद्दीन	—	1236 ई.
रजिया	—	1236-1240 ई.
मुइजुद्दीन बहरामशाह	—	1240-1242 ई.
अलाउद्दीन मसूदशाह	—	1242-1246 ई.
नासिरुद्दीन महमूद	—	1246-1266 ई.
बलबन	—	1266-1286 ई.
कैकुबाद	—	1286-1290 ई.

खिलजी वंश

जलालुद्दीन-फिरोज खिलजी	—	1290-1296 ई.
अलाउद्दीन खिलजी	—	1296-1316 ई.
कुतुबुद्दीन मुबारक खाँ	—	1316-1320 ई.
नासिरुद्दीन खुसरवशाह	—	1320 ई.

तुगलक वंश

गयासुद्दीन तुगलक	—	1320-1325 ई.
मुहम्मद-बिन-तुगलक	—	1325-1351 ई.
फिरोज तुगलक	—	1351-1388 ई.
गयासुद्दीन तुगलक-II		
मुहम्मद		
हुमायूँ	—	1394-1395 ई.
नासिरुद्दीन महमूद		

सैय्यद वंश

खिज्र खाँ	—	1414-1421 ई.
मुबारक शाह	—	1421-1434 ई.
मुहम्मदशाह	—	1434-1445 ई.
अलाउद्दीन आलमशाह	—	1445-1450 ई.

लोदी वंश

बहलोल लोदी	—	1451-1489 ई.
सिकन्दर लोदी	—	1489-1517 ई.
इब्राहिम लोदी	—	1517-1526 ई.

मुगल वंश

बाबर	—	1526-1530 ई.
हुमायूँ	—	1530-1556 ई.
अकबर	—	1556-1605 ई.
जहाँगीर	—	1605-1627 ई.
शाहजहाँ	—	1628-1658 ई.
औरंगजेब	—	1658-1707 ई.
बहादुरशाह प्रथम	—	1707-1712 ई.
जहाँदार शाह	—	1712-1713 ई.
फर्रुखसियर	—	1713-1719 ई.
मुहम्मदशाह	—	1719-1748 ई.
अहमदशाह	—	1748-1754 ई.
आलमगीर II	—	1754-1759 ई.
शाह आलम II	—	1759-1806 ई.
अकबर II	—	1806-1837 ई.
बहादुरशाह II	—	1837-1857 ई.

मध्यकालीन अन्य राजवंश एवं शासक

मराठा

शिवाजी	—	1674-1680 ई.
शम्भाजी	—	1680-1689 ई.
राजाराम	—	1689-1700 ई.
छत्रपति शिवाजी द्वितीय (संरक्षिका– ताराबाई)	—	1700-1707 ई.
शाहु	—	1707-1749 ई.

पेशवा

बालाजी विश्वनाथ	—	1713-1720 ई.
बाजीराव प्रथम	—	1720-1740 ई.
बालाजी बाजीराव	—	1740-1761 ई.
माधवराव प्रथम	—	1761-1772 ई.

अफगान (सूरवंश)

शेरशाह सूर	—	1540-1545 ई.
इस्लामशाह सूर	—	1545-1553 ई.
फिरोजशाह सूर	—	1553 ई.
मोहम्मद आलिदशाह सूर	—	1553-1555 ई.

बहमनी वंश

अबुल हसन मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमनशाह	—	1347-1358 ई.
मुहम्मदशाह प्रथम	—	1358-1375 ई.
अलाउद्दीन मुजाहिद	—	1375-1378 ई.
मुहम्मदशाह II	—	1378-1397 ई.
ताजुद्दीन फिरोजशाह	—	1397-1422 ई.
अहमदशाह	—	1422-1436 ई.
अलाउद्दीन अहमदशाह	—	1436-1458 ई.
हुमायूँ	—	1458-1461 ई.
निजामशाह	—	1461-1463 ई.
मुहम्मदशाह तृतीय	—	1463-1482 ई.
महमूदशाह	—	1482 ई.

विजयनगर साम्राज्य

हरिहर प्रथम	—	1336-1356 ई.
बुक्का	—	1356-1377 ई.
हरिहर द्वितीय	—	1377-1404 ई.
विरूपाक्ष प्रथम	—	1404-1405 ई.
बुक्का द्वितीय	—	1405-1406 ई.
देवराय प्रथम	—	1406-1422 ई.
रामचन्द्र	—	1422 ई.
विजय	—	1422-1430 ई.
देवराज द्वितीय	—	1430-1446 ई.
विजय द्वितीय	—	1446-1447 ई.
मल्लिकार्जुन	—	1447-1465 ई.
विरूपाक्ष	—	1465-1485 ई.
नरसिंह सालुव	—	1485-1490 ई.
वीर नरसिंह तुलुव	—	1490-1509 ई.
कृष्ण देवराय	—	1509-1529 ई.
अच्युत राय	—	1529-1542 ई.
सदाशिवराय	—	1542-1565 ई.

सल्तनतकालीन प्रमुख पदाधिकारी

1. **आरिज-ए-मुमालिक**	— सैन्य विभाग का प्रमुख
2. **इंशा-ए-मुमालिक**	— पत्राचार विभाग का प्रमुख
3. **दीवान-ए-वजीर**	— साम्राज्य का प्रमुख लेखाकार
4. **रसालात-ए-मुमालिक**	— विदेश विभाग का प्रमुख
5. **काजी-उल-कजात**	— न्याय विभाग का प्रमुख
6. **बरीद-ए-मुमालिक**	— गुप्तचर विभाग का प्रमुख
7. **सद्र-उस-सुदूर**	— धार्मिक कार्यों का प्रमुख
8. **मुन्सिफ-ए-मुमालिक**	— महालेखाकार
9. **सर-ए-जांदार**	— अंगरक्षकों का मुखिया
10. **मुफ्ती**	— इस्लाम धर्म का व्याख्याता
11. **बरीद-ए-मुमालिक**	— गुप्तचर विभाग का प्रमुख
12. **अमीर-ए-आखुर**	— घुड़शाला का प्रमुख
13. **शाहना-ए-पील**	— हस्तिशाला का प्रधान
14. **कोतवाल**	— शहर की शान्ति व्यवस्था का प्रमुख अधिकारी
15. **अमीर-ए-बहर**	— जलसेना का प्रमुख
16. **वकील-ए-दर**	— सुल्तान के व्यक्तिगत मामलों का प्रमुख
17. **अमीर-ए-दाद**	— बड़े नगरों का मजिस्ट्रेट
18. **दीवान-ए-रियासत**	— बाजार का नियन्त्रणकर्त्ता
19. **अमीर-ए-मजलिस**	— शाही मजलिस का प्रबन्धनकर्त्ता
20. **बरबक**	— दरबार की गतिविधियों का संचालक

मध्यकालीन ऐतिहासिक पुस्तकें एवं इतिहासकार

ऐतिहासिक पुस्तकें	इतिहासकार
राजतरंगिणी	— कल्हण
अकबरनामा	— अबुल फजल
हुमायूँनामा	— गुलबदन बेगम
तुज्क-ए-बाबरी	— बाबर
तारीखे-शेरशाही	— शेरशाह
बादशाहनामा	— अबुल अहमद लाहौरी
पद्मावती	— मलिक मुहम्मद जायसी
पुरुष परीक्षा	— विद्यापति ठाकुर
किरान उस् सादेन	— अमीर खुसरो
मसनवी तुगलकनामा	— अमीर खुसरो
खजाइन उल फुतूह	— अमीर खुसरो
तबकात-ए-नासिरी	— मिन्हाज उस सिराज
फतवा-ए-जहाँदारी	— जियाउद्दीन बरनी
तारीख-ए-फिरोजशाही	— जियाउद्दीन बरनी
देवलरानी खिज्र खाँ	— अमीर खुसरो
नूरे सिपेहर	— अमीर खुसरो

शाहजहाँनामा	—	इनायत खाँ
तारीख-ए-शेरशाही	—	अब्बास खान शेरवानी
तोहफा-ए-अकबरशाही	—	अब्बास खान शेरवानी
बाबरनामा	—	बाबर
मनसत-ए-महरू	—	ऐन-उल-मुल्क मुल्तानी
इंशा-ए-महरू	—	ऐन-उल-मुल्क मुल्तानी
फतूहात-ए-फिरोजशाही	—	सुल्तान फिरोजशाह तुगलक
फुतूह-उस-सलातीन	—	इसामी
तारीख-ए-मुबारकशाही	—	यह्या
मीरात-ए-अहमदी	—	दीवान अली मुहम्मद खाँ
गुलशन-ए-अब्राहीमी	—	मुहम्मद कासिम
तारीख-ए-फरिश्ता	—	मुहम्मद कासिम
फतुहात-ए-आलमगीरी	—	ईश्वरदास नागर
मुन्तखब-उल-लुबाब	—	मुहम्मद हाशिम खाफी खाँ
मआसिर-ए-आलमगीरी	—	मुहम्मद साकी मुस्तैद खाँ
मुन्तखब उत् तवारीख	—	अब्दुल कादिर बदायूँनी
तबरात-ए-अकबरी	—	निजामुद्दीन अहमद

मध्यकालीन साहित्य एवं साहित्यकार

साहित्य		साहित्यकार
गिरात-ए-अहमदी	—	दीवान अली मोहम्मद-बिन-खान
इंशा-ए-गाहरू	—	आईन-उल-मुल्क-मुल्तानी
हकीकी-हिन्दी	—	अब्दुल बहीद किलग्रामी
चैतन्यचरित अमृता	—	कृष्णदास कविराज
तारीख-ए-मसुदी	—	अलबहरी
ताज-किरात-उल-मुलुक	—	रफीउद्दीन शिराज
ब्रह्मसूत्र	—	रामानुज
आलम-ए-सलेह	—	मुहम्मद सलेह
कानून-ए-हुमायूँनी	—	गयासुद्दीन अहमद
मुकजुल जहाव	—	अलमसूदी
शाहजहाँनामा	—	इनायत खान
मंजुलबहरीन	—	दाराशिकोह
लीलावती का रूपान्तरण	—	फैजी
जाम्बती कल्याण	—	कृष्णदेव राय
तुगलकनामा, अफजलुल कवायद, आइन-ए-सिकन्दरी, खजाए-बुल-फतूह, तारीख-ए-अलाई, किरा-नुस्सादैन, मिफ्ता-उल-फुतूह, देवल रानी, नूरे सिपेहर, खिज्र खाँ, लैला मजनू, एजाज-ए-खुशखी	—	अमीर खुसरो
प्रेमवाटिका	—	रसखान
रामचरितमानस	—	तुलसीदास
विनय-पत्रिका चन्दावत	—	मुल्ला दाउद
हम्मीर काव्य	—	सारंगधर
हम्मीर रासो	—	सारंगधर
जवानी-उल-हिकायत	—	नूरुद्दीन
लुबाते-उल-अल्बाब	—	नूरुद्दीन
बालगमी-उल-रिवायत	—	नूरुद्दीन
इर्शाद-बद-उल-बयान	—	शहाबुद्दीन
हवश-ए-कुफियाह	—	शहाबुद्दीन
फतवा-ए-जहाँदारी	—	जियाउद्दीन बरनी
तारीख-ए-फिरोजशाही	—	जियाउद्दीन बरनी
मुक जुल जहाव	—	अलमसूदी
अकबरनामा	—	फैज सरहिन्दी
तज-किरात-उल-वाकियात	—	जौहर
तौफीक-ए-अकबरशाही	—	अब्बास खाँ शेरवानी
मसालिक-अल्-आवसारी	—	शिहाबुद्दीन अल उमरी
मसालिक-उल-अमशार	—	शिहाबुद्दीन अल उमरी
तहकीक-ए-हिन्द	—	अल्बरूनी
तारीख-उल-हिन्द	—	अल्बरूनी
बीसलदेव रासो	—	नरपतिनाथ
तारीख-ए-सिन्ध	—	मुहम्मद मासूम
तारीख-ए-दाऊदी	—	अब्दुल्ला
तारीख-ए-फिरोजशाही	—	शम्से सिराज अफीफ
तारीख-ए-अकबरशाही	—	अब्बास खाँ शेरवानी
तारीख-ए-शेरशाही	—	अब्बास खाँ शेरवानी
इसरारे मक्तब	—	गिजाली
नक्शेवहीद	—	गिजाली
मिरातुल कायनात	—	गिजाली
मकरजे अदवार	—	शेख फैजी
नलोगमन	—	शेख फैजी
मवारी दुल कला	—	शेख फैजी
हफ्त अक्लीम	—	खुदामीर

आलमगीरनामा	—	काजिम
वाकयात्	—	असद बेग
फुतुहात-ए-आलमगीरी	—	ईश्वरदास
बादशाहनामा	—	मोहम्मदवारिस शाह
पादशाहनामा	—	मोहम्मद अमीर खान कायज्मा
मिरात-ए-सिकन्दरी	—	सिकन्दर-बिन मोहम्मद मुंज
तारीख-ए-सल्तनत-ए-अफगाना	—	अहमद यादगार
मुकजुल जहाब	—	अलमसूदी
गंगलहरी	—	जगन्नाथ पण्डित
रस गंगाधर	—	जगन्नाथ पण्डित
सुन्दर शृंगार	—	सुन्दर कविराय
कविता रत्नाकर	—	सेनापति
सूरसागर	—	सूरदास
साहित्य लहरी	—	सूरदास
सूर सारावली	—	सूरदास
कविन्द्र कल्पतरू	—	कविन्द्र आचार्य
अलंकार मंजरी, कविप्रिया	—	केशवदास
विज्ञान गीता	—	केशवदास
रामचन्द्रिका	—	केशवदास
रसिक प्रिया	—	केशवदास
कवि प्रिया	—	केशवदास
जाप साहिब	—	गुरु गोविन्द सिंह
वचित्र नाटक	—	गुरु गोविन्द सिंह
शृंगार दर्पण	—	परमसुन्दर
अकबरशाही	—	परमसुन्दर
कविता रत्नाकर	—	सेनापति
दशबोध	—	गुरु रामदास
गुरु ग्रन्थसाहिब	—	गुरु अर्जुनदेव
ज्ञानेश्वरी	—	सन्त ज्ञानेश्वर
किताबुल अहदिश	—	अब्दुल कादिर बदायूँनी
तारीख-ए-अल्फी	—	अब्दुल कादिर बदायूँनी
तारीख-ए-बदायूँनी	—	अब्दुल कादिर बदायूँनी
मुन्तखाब-उल-तवारीख	—	अब्दुल कादिर बदायूँनी
बरहान-ए-मासिर	—	सैय्यद-अली-तबतबा
तारीख-ए-खाफी-खाँ	—	मुहम्मद हाशिम खाफी खाँ
मासिर-ए-आलमगीरी	—	मोहम्मद साकी मुस्तैद-खाँ
तबकात-ए-अकबरी	—	निजामुद्दीन अहमद
मिरात-ए-सिकन्दरी	—	सिकन्दरी बिन मोहम्मद मुंज
तारीख-ए-सल्तनत-ए-अफगाना	—	अहमद यादगार
फुतूह-उस-सलातीन	—	ख्वाजा अब्दमलिक इसामी

मध्यकाल में भारत भ्रमण करने वाले विदेशी यात्री

विदेशी यात्री	देश	भ्रमणकाल	शासनकाल
मार्को पोलो	इटली	1298-1292 ई.	पांड्य
इब्नबतूता	मोरक्को	1333-1342 ई.	मुहम्मद तुगलक
निकोलो कोंटी	इटली	1420-1422 ई.	देवराय प्रथम
चेंग हो	चीन	1421-1431 ई.	जलालुद्दीन
अब्दुर्रज्जाक	ईरान	1442-1443 ई.	देवराय द्वितीय
अथनासियस निकितन	रूस	1470-1474 ई.	मुहम्मद तृतीय (बहमनी)
एडुअर्डो बारबोसा	पुर्तगाल	1516-1518 ई.	कृष्ण देवराय
डोमिगोज पेइज	पुर्तगाल	1520-1522 ई.	कृष्ण देवराय
नूनिज	पुर्तगाल	1535-1537 ई.	अच्युत देवराय
एन्थोनी मांसेरात	पुर्तगाल	1578-1582 ई.	अकबर
राल्फ फिच	ब्रिटेन	1585-1591 ई.	अकबर
सीजर फ्रेडरिक	पुर्तगाल	16वीं शताब्दी	विजयनगर
जॉन लिंसकोतेन		16वीं शताब्दी	विजयनगर
कैप्टन हाकिन्स	ब्रिटेन	1608-1613 ई.	जहाँगीर
विलियम फिंच	ब्रिटेन	1608-1613 ई.	जहाँगीर
जॉन जुरदा	पुर्तगाल	1608-1617 ई.	जहाँगीर
निकोलस डाउटन	ब्रिटेन	1608-1617 ई.	जहाँगीर
निकोलस विथिंगटन	ब्रिटेन	1612-1617 ई.	जहाँगीर
सर टामस-रो	ब्रिटेन	1615-1619 ई.	जहाँगीर
एडवर्ड टेरी	ब्रिटेन	1616-1619 ई.	जहाँगीर
फांसिस्को पेलसर्ट		1620-1627 ई.	जहाँगीर
पित्रा देला वेली	इटली	1622-1660 ई.	जहाँगीर
जॉन लायट		1626-1633 ई.	शाहजहाँ
पीटर मण्डी	इटली	1630-1634 ई.	शाहजहाँ
टैवर्नियर	फ्रांस	1641-1687 ई.	शाहजहाँ, औरंगजेब
मनूची	इटली	1656-1687 ई.	औरंगजेब
बर्नियर	फ्रांस	1658-1668 ई.	औरंगजेब

मध्यकालीन प्रमुख युद्ध

1. तराइन का प्रथम युद्ध

सन् 1191 ई. तराइन के मैदान में पृथ्वीराज चौहान एवं मुहम्मद गौरी के मध्य तराइन का प्रथम युद्ध हुआ. इस युद्ध में मुहम्मद गौरी परास्त हुआ.

2. तराइन का द्वितीय युद्ध

सन् 1192 ई. में पुनः तराइन के मैदान में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज पर आक्रमण किया. इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की पराजय हुई.

3. चन्दावर का युद्ध

सन् 1194 ई. में फिरोजाबाद के पास चन्दावर के मैदान में हुआ. मुहम्मद गौरी ने गहड़वाल वंश के कन्नौज शासक जयचन्द्र पर आक्रमण किया जिसमें जयचन्द्र मारा गया एवं मुहम्मद गौरी विजयी हुआ.

4. तैमूर आक्रमण

यह आक्रमण सन् 1398 ई. में तैमूर लंग ने दिल्ली के तत्कालीन शासक नासिरुद्दीन महमूद पर किया. इस आक्रमण में नासिरुद्दीन महमूद पराजित हुआ.

5. पानीपत का प्रथम युद्ध

सन् 1526 ई. में बाबर ने लोदी वंश के शासक इब्राहीम पर आक्रमण किया. पानीपत के मैदान में बाबर ने इस युद्ध में भारत में पहली बार बारूद का प्रयोग किया था. पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहीम परास्त हुआ एवं इसके बाद मुगल साम्राज्य स्थापित हुआ.

6. खानवा का युद्ध

खानवा के मैदान में सन् 1526 ई. में मेवाड़ के राजपूत शासक राणा सांगा एवं बाबर के मध्य यह युद्ध हुआ. खानवा के युद्ध में राणा सांगा की पराजय हुई.

7. चन्देरी का युद्ध

यह युद्ध सन् 1528 ई. में चन्देरी के शासक मेदिनीराय एवं बाबर के मध्य हुआ. मेदिनीराय खानवा के युद्ध में राणा सांगा का सहयोगी था अतः प्रतिशोध की भावना से बाबर ने यह युद्ध लड़ा. इस युद्ध में चन्देरी शासक मेदिनीराय को हार स्वीकारनी पड़ी.

8. घाघरा का युद्ध

सन् 1529 ई. में बाबर एवं अफगानों के मध्य घाघरा नदी के किनारे यह युद्ध लड़ा गया. बाबर इस युद्ध में भी विजयी रहा.

9. चौसा का युद्ध

सन् 1539 ई. हुमायूँ एवं शेरशाह के मध्य लड़ा गया. हुमायूँ करारी हार के बाद जान बचाने के लिए भाग खड़ा हुआ.

10. बिलग्राम/कन्नौज का युद्ध

सन् 1540 ई. शेरशाह एवं हुमायूँ के मध्य कन्नौज के पास बिलग्राम में यह युद्ध हुआ. इसमें हुमायूँ पराजित हुआ एवं शेरशाह ने उसके राज्य पर अधिकार कर लिया.

11. पानीपत का द्वितीय युद्ध

सन् 1556 ई. में अकबर एवं हेमू के मध्य पानीपत के मैदान में यह युद्ध हुआ. इसमें अकबर ने हेमू को बन्दी बनाकर मार दिया.

12. बन्नीहटी/तालीकोटा का युद्ध

सन् 1565 ई. में विजयनगर साम्राज्य एवं बहमनी साम्राज्य के मध्य यह युद्ध लड़ा गया. इस युद्ध में बहमनी साम्राज्य के सारे मुस्लिम शासक विजयनगर साम्राज्य के विरुद्ध एकजुट थे, परिणामस्वरूप विजयनगर साम्राज्य को करारी पराजय स्वीकारनी पड़ी.

13. हल्दीघाटी का युद्ध

18 जून सन् 1576 में हल्दीघाटी के मैदान में (वर्तमान उदयपुर में) मेवाड़ के शासक राणा प्रताप एवं अकबर के मध्य यह युद्ध लड़ा गया. महाराणा प्रताप की पराजय हुई.

14. असीरगढ़ का युद्ध

यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध था. इसमें विजयी होने के बाद अकबर ने 'दक्षिण के सम्राट' की उपाधि धारण की. यह अकबर की अन्तिम जीत थी. असीरगढ़ का युद्ध 1599-1600 के दौरान मीरन बहादुर एवं अकबर के मध्य हुआ. दक्षिण के फाटक असीरगढ़ के दुर्ग पर अकबर ने 6 माह तक घेरा बनाकर मीरन बहादुर को परास्त किया था.

15. स्वेलीहोल का युद्ध

सन् 1612 ई. में अंग्रेजों एवं पुर्तगालियों के मध्य स्वेलीहोल नामक स्थल पर यह युद्ध लड़ा गया. इसमें अंग्रेज विजयी रहे और भारत में स्थापित होने का अवसर प्राप्त किया.

16. करनाल का युद्ध

सन् 1739 ई. में मुगल सम्राटों एवं नादिरशाह के मध्य करनाल में यह युद्ध लड़ा गया. इस युद्ध में नादिरशाह विजयी रहा.

मध्यकालीन प्रमुख स्थल

आगरा

1. मध्यकालीन इतिहास का प्रमुख नगर.
2. मुगल बादशाहों की राजधानी.
3. मुमताज की स्मृति में शाहजहाँ द्वारा बनाये. गये ताजमहल के कारण ख्यात.
4. अकबर का विशाल किला जिसमें दीवान-ए-खास, दीवान-ए-आम, खासमहल, शीशमहल, मोती मस्जिद एवं नगीना मस्जिद आदि इमारतें हैं.

5. औरंगजेब की बहिन जहाँआरा द्वारा निर्मित जामा मस्जिद.
6. आगरा से 8 किमी. दूर सिकन्दरा गाँव में अकबर का मकबरा.
7. एतमादउद्दौला का मकबरा, दयालबाग एवं राधास्वामी का मन्दिर दर्शनीय स्थल.

अहमदनगर
1. दक्षिण भारत का प्रमुख ऐतिहासिक नगर.
2. चंगेज खाँ का महल, रूमी खाँ का मकबरा, रूमी खाँ की मस्जिद, काली मस्जिद, तोरा बीबी की मस्जिद एवं नियामत खाँ के महल के लिए विख्यात.
3. अहमदनगर का किला, बाग-ए-रोजा, कोटला मस्जिद एवं पतलें मीनार प्रमुख दर्शनीय स्थल.

चित्तौड़
1. भारत में राजपूतों की नगरी के रूप में प्रसिद्ध.
2. राजस्थान का प्रमुख ऐतिहासिक नगर.
3. राणा सांगा, महाराणा प्रताप, पद्मावती एवं मीराबाई से सम्बन्धित.
4. चित्तौड़ का दुर्ग, विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, राणा कुम्भा का महल, गोकुल मन्दिर के लिए दर्शनीय स्थल.

हम्पीनगर
1. विजयनगर साम्राज्य की राजधानी के रूप में इतिहास में ख्यात.
2. कर्नाटक का प्रसिद्ध वास्तुकलाजन्य नगर.
3. राजा कृष्ण देवराय द्वारा निर्मित विट्ठल मन्दिर प्रमुख इमारत.
4. हम्पीनगर परकोटा, हजारा राम मन्दिर प्रमुख दर्शनीय स्थल.

दिल्ली
1. भारत का सर्वाधिक ऐतिहासिक नगर.
2. मध्यकालीन इतिहास में भारत की राजधानी.
3. शाहजहाँ द्वारा निर्मित लाल किला कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा निर्मित कुतुबमीनार चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा बनाया मेहरौली लौह-स्तम्भ प्रमुख ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल.
4. जामा मस्जिद, इल्तुतमिश का मकबरा, अलाई दरवाजा इत्यादि प्रसिद्ध इमारतें.

लखनऊ
1. 'नवाबों की नगरी' के नाम से प्रसिद्ध.
2. लक्ष्मण द्वारा स्थापित नगर लखनपुर से लखनऊ नाम पड़ा.
3. नवाब आसफुद्दौला द्वारा निर्मित इमामबाड़ा एवं छोटा इमामबाड़ा, रूमी दरवाजा, रेजीडेन्सी तथा बेगम हजरत महल पार्क प्रमुख रूप से प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल.

बीजापुर
1. दक्षिण भारत का एक प्रमुख ऐतिहासिक नगर.
2. आदिलशाही सुल्तानों का केन्द्र.
3. बीजापुर का किला, गोल गुम्बद, जामा मस्जिद, रोजा-ए-इब्राहीम, अली शाहिद पीर की मस्जिद, गगन महल, शाह मकबरे एवं मेहतर भवन के लिए प्रसिद्ध नगर.

गोलकुण्डा
1. हैदराबाद का प्रमुख राजनैतिक एवं ऐतिहासिक केन्द्र.
2. शिया शासकों की राजधानी के रूप में ख्यात.
3. सन् 1632 ई. में गोलकुण्डा पर शाहजहाँ का अधिकार.
4. सन् 1687 ई. में गोलकुण्डा पर औरंगजेब का अधिकार.

फतेहपुर सीकरी
1. आगरा से 37 किमी. दूरी पर अवस्थित.
2. प्रसिद्ध सूफी सन्त शेख सलीम चिश्ती का जन्म स्थान.
3. सभी इमारतें लगभग 15 वर्षों में अकबर द्वारा निर्मित.
4. जोधाबाई का महल, हवामहल, दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, खास महल, बीरबल की कोठी, जामा मस्जिद, मरियम का महल, बुलन्द दरवाजा, शेख सलीम चिश्ती प्रमुख ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल.

जौनपुर
1. पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर.
2. जूना खाँ के नाम पर सन् 1359 ई. में फिरोज तुगलक द्वारा स्थापित नगर.
3. अटाला मस्जिद, बड़ी मस्जिद, चार अंगुल की मस्जिद, शाही इमाम एवं जौनपुर का किला प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों के रूप में ज्ञेय.

ग्वालियर
1. मध्य प्रदेश का एक प्रमुख ऐतिहासिक नगर.
2. सन्त ग्वालिया के नाम पर राजा सूरज द्वारा स्थापित नगर.
3. 'दुर्गों का नगर' के रूप में ख्यात है.
4. तानसेन की जन्मस्थली एवं कब्रगाह, जहाँ पर प्रतिवर्ष संगीतज्ञों का मेला लगता है.
5. प्रसिद्ध दुर्गों, सूर्य मन्दिर के लिए प्रसिद्ध.

अजमेर
1. भारत का एक प्रसिद्धतम ऐतिहासिक नगर.
2. पृथ्वीराज चौहान एवं कुतुबुद्दीन शासकों का प्रमुख नगर.
3. कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा निर्मित 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा', मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह, पुष्कर एवं जैन मन्दिर के लिए ख्यात.

मुगल राज्यों में प्रान्तीय प्रशासन

मुगल साम्राज्य के प्रशासन को विधिवत संचालित करने के लिए निम्नलिखित 18 सूबे थे–

1. काबुल	4. दिल्ली
2. मुल्तान	5. आगरा
3. लाहौर	6. इलाहाबाद
7. अवध	13. खानदेश
8. बंगाल	14. बरार
9. बिहार	15. अहमदनगर
10. अजमेर	16. उड़ीसा
11. मालवा	17. कश्मीर
12. गुजरात	18. सिन्ध

मुगल साम्राज्य में केन्द्रीय प्रशासन

1. **बादशाह** — राजा–शासन का सर्वेसर्वा
2. **वकील** — प्रधानमन्त्री–बादशाह का प्रतिनिधि
3. **दीवान या वजीर** — राजकोष विभाग का अध्यक्ष
4. **मीर बख्शी** — सैन्य विभाग का अध्यक्ष
5. **खान-ए-सामां** — घरेलू विभाग का प्रधान
6. **सद्र-ए-सुदूर** — दान विभाग, न्याय विभाग एवं शिक्षा विभाग का प्रमुख
7. **मुहातसिब** — अनुशासिक अध्यक्ष
8. **मीर-आतिश** — तोपखाने का अध्यक्ष
9. **काजी-उल-कुजात** — न्याय विभाग का अध्यक्ष
10. **दरोगा-ए-डाक-चौकी** — डाक विभाग का अध्यक्ष

सूफी सन्तों द्वारा प्रचलित दस अवस्थाएँ

1. पश्चात्ताप (तौबा)
2. विरक्ति (वारा)
3. अपरिग्रह (फक्र)
4. धैर्य (सब्र)
5. अहसानमंद (शुक्र)
6. जुहद
7. बुराइयों से भय (खौफ)
8. ईश्वर मिलने की आशा (रजा)
9. तवक्कुल
10. ईश्वर की इच्छा (रिजा)

'आइने-अकबरी' के अनुसार सूफी सम्प्रदाय की शाखाएँ

1. चिश्ती	8. काजरूनी
2. सुहरावर्दी	9. तूसी
3. हबीबी	10. फिरदौसी
4. तफूरी	11. इयादी
5. करवी	12. सदहमी
6. शक्ति	13. हुबेरी
7. जुनैदी	

सिख गुरु एवं उनका समय

1. गुरु नानक — 1469-1538 ई.
2. गुरु अंगद — 1538-1552 ई.
3. गुरु अमरदास — 1552-1574 ई.
4. गुरु रामदास — 1574-1581 ई.
5. गुरु अर्जुन — 1581-1606 ई.
6. गुरु हरगोविन्द — 1606-1645 ई.
7. गुरु हरराय — 1645-1661 ई.
8. गुरु हरकिशन — 1661-1664 ई.
9. गुरु तेगबहादुर — 1664-1675 ई.
10. गुरु गोविन्द सिंह — 1675-1708 ई.

सिख मिस्लें एवं उनके संस्थापक

	सिख मिस्लें	संस्थापक
1.	फैजलपुरिया मिस्ल (सिंहपुरिया मिस्ल)	— नवाब कपूर सिंह
2.	अहलूवालिया मिस्ल	— जस्सासिंह आहलूवालिया
3.	भँगी मिस्ल	— सरदार हरिसिंह
4.	रामगढ़िया मिस्ल	— जस्सासिंह इच्छोगिलिया
5.	कन्हियाँ मिस्ल	— जयसिंह
6.	सुकरचकिया मिस्ल	— चरतासिंह
7.	फुलकिया मिस्ल	— चौधरी फूल
8.	डल्लेवासिया मिस्ल	— गुलाब सिंह
9.	निशानवालिया मिस्ल	— संगतसिंह, मोहरसिंह
10.	करोड़ सिंघिया या पंचगढ़िया मिस्ल	— बघेल सिंह
11.	शहीद मिस्ल एवं निहंग मिस्ल	— बाबा दीपसिंह
12.	नक्कई मिस्ल	— सरदार हीरासिंह

इस्लामी न्याय व्यवस्था के स्रोत

1. **कुरान** — मुस्लिम धार्मिक ग्रन्थ
2. **हदीस** — कुरान का स्पष्टीकरण
3. **कियास** — समान निर्णय पद्धति
4. **इजमा** — सर्वसम्मति

मुगलकालीन दण्ड व्यवस्था

1. हद — धर्मविरोधी कार्य, व्यभिचार, शराब पीने, चोरी, डकैती, हत्या के लिए दिया जाने वाला दण्ड.
2. **ताजिर** — अपराधी को सुधारने के लिए दिया जाने वाला जज की इच्छा के अनुकूल दण्ड.
3. **किसास** — गहरी चोट एवं हत्या के बदले दिया जाने वाला दण्ड.
4. **तशहीर** — हिन्दुओं को दिया जाने वाला दण्ड. प्राणदण्ड प्राप्त अपराधी को जिन्दा जलाकर, हाथी से कुचलवाकर एवं जहरीले सर्प से कटवाकर या गड्ढे में दबा दिया जाता था.

मध्यकालीन भारत में मुगल बादशाहों का क्रम

1. बाबर	—	1526-1530 ई.
2. हुमायूँ	—	1530-1556 ई.
3. अकबर	—	1556-1605 ई.
4. जहाँगीर	—	1605-1627 ई.
5. शाहजहाँ	—	1627-1658 ई.
6. औरंगजेब या आलमगीर प्रथम	—	1658-1707 ई.
7. बहादुरशाह प्रथम	—	1709-1712 ई.
8. जहाँदार शाह	—	1712-1713 ई.
9. फर्रुखसियर	—	1713-1719 ई.
10. मुहम्मदशाह	—	1719-1748 ई.
11. अहमदशाह	—	1748-1754 ई.
12. आलमगीर द्वितीय	—	1754-1758 ई.
13. शाहआलम द्वितीय	—	1758-1806 ई.
14. अकबर द्वितीय	—	1806-1837 ई.
15. बहादुरशाह द्वितीय 'जफर'	—	1837-1857 ई.

मध्यकालीन समाज सुधारक

नाम	जन्म समय	जन्म स्थान	अन्य
रामानन्द	1299	प्रयाग	वर्णाश्रम की निन्दा, भक्ति का प्रचार
कबीर	1425	वाराणसी	
गुरुनानक	1469	तलवंडी	सिख धर्म के संस्थापक
चैतन्य	1486	नादिया	'निमाई पंडित' के नाम से और कीर्तन जुलूस के लिए प्रसिद्ध
वल्लभाचार्य	1479	वाराणसी	
तुलसीदास	1497	राजापुर, उ.प्र.	
नामदेव	1326	महाराष्ट्र	

सल्तनतकालीन प्रमुख कर

1. **जकात** — केवल मुस्लिमों से
2. **जजिया** — गैर-मुसलमानों से
3. **उस्र यासद का** — भू-कर
4. **खराज** — गैर-मुसलमानों से भू-राजस्व
5. **खम्स** — युद्ध में लूटा गया धन, जिसका 4/5 सैनिक व 1/5 राजकोष में जमा होता था

दिल्ली के सुल्तानों का क्रम

वंश	शासक	शासनावधि
1. **कुतुबी**	कुतुबुद्दीन ऐबक	1206-1210 ई.
	आरामशाह	1210-1210 ई.
2. **शम्सी**	इल्तुतमिश	1210-1236 ई.
	रुक्नुद्दीन फिरोज	1236-1236 ई.
	रजिया सुल्तान	1236-1240 ई.
	मुईजुद्दीन बहरामशाह	1240-1242 ई.
	अलाउद्दीन मसूदशाह	1242-1246 ई.
	नासिरुद्दीन महमूद	1246-1265 ई.
3. **बलबनी**	ग्यासुद्दीन बलबन	1265-1287 ई.
	कैकूबाद एवं क्यूमर्स	1287-1290 ई.

4. **खिलजी वंश**	जलालुद्दीन खिलजी	1290-1296 ई.
	अलाद्दीन खिलजी	1296-1316 ई.
	शिहाबुद्दीन उमर	1316-1316 ई.
	मुबारक शाह खिलजी	1316-1320 ई.
	खुसरव शाह	1320-(7-15)
5. **तुगलक वंश**	ग्यासुद्दीन तुगलक	1320-1325 ई.
	मु. बिन तुगलक	1325-1351 ई.
	फिरोज शाह तुगलक (द्वितीय)	1351-1388 ई.
	गयासुद्दीन तुगलक (द्वितीय)	1388-1389 ई.
	अबु बक्र	1389-1389 ई.
	नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह	1390-1394 ई.
	अलाउद्दीन सिकन्दर शाह (हुमायूँ)	1394-1394 ई.
	नासिरुद्दीन महमूद	1394-1412 ई.
6. **सैयद वंश**	खिज्र खाँ	1414-1421 ई.
	मुबारक शाह	1421-1434 ई.
	मुहम्मद शाह	1434-1445 ई.
	अलाउद्दीन आलमशाह	1445-1450 ई.
7. **लोदी वंश**	बहलोल लोदी	1451-1489 ई.
	सिकन्दर लोदी	1489-1517 ई.
	इब्राहीम लोदी	1517-1526 ई.

उपकार

सामान्य अध्ययन

मध्यकालीन भारत का इतिहास

YOUR SUCCESS
IS
OUR AIM
SURE SUCCESS
WITH
OUR NAME
THAT IS
UPKAR

ISBN 978-93-5013-615-7

9 789350 136157

उपकार प्रकाशन, आगरा-2